“અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્” ગ્રંથ જીર્ણોધ્ધાર ૧૩૩

કરણ પ્રકાશ

: દ્રવ્ય સહાયક :

પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી પ્રેમભુવનભાનુસૂરિજી સમુદાયના
દીક્ષા દાનેશ્વરી પ.પૂ.આ.શ્રી ગુણરત્નસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના
આજ્ઞાવર્તિની પૂજ્ય પ્રવર્તિની પૂણ્યરેખાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા
પૂજ્ય સાધ્વિજી શ્રી તપોરેખાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી
રજનીગંધા ટાવર, શાહીબાગમાં
આરાધક શ્રાવિકાઓની જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-380005
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૮ ઈ.સ. ૨૦૧૨

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – શાહ બાબુલાલ સરેમલ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૫ (ઈ. ૨૦૦૯) – સેટ નં-૧

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો ***www.jainelibrary.org*** *વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454

026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192
030	शिल्परत्नाकर	श्री नर्मदाशंकर शास्त्री	824
031	प्रासाद मंडन	पं. भगवानदास जैन	288
032	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	520
033	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	578
034	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	278
035	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	252
036	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	324
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – શાહ બાબુલાલ સરેમલ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.jainelibrary.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્ત્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રુમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રુમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.jainelibrary.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.jainelibrary.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाश	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भास्वति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

No. 23] [Price Rupee one.

THE

CHOWKHAMBÂ SANSKRIT SERIES

A

COLLECTION OF RARE & EXTRAORDINARY SANSKRIT WORKS.

करणप्रकाशः ।

श्री ६ ब्रह्मदेवविरचितः ।

काशिकराजकीयप्रधानसंस्कृतपाठशालायां
ज्यौतिषशास्त्रप्रधानाध्यापकेन
महामहोपाध्यायश्रीसुधाकरद्विवेदिना
वासनाभिरासन्नमानाद्यनेकासिद्धान्तैर्विभूष्य
संशोध्य च मुद्रितः ।

KARAṆAPRAKÂŚA

BY

BRAHMADEVA

WITH A COMMENTARY AND THEORY OF NUMBERS

EDITED BY

MAHÂMAHOPÂDHYÂYA SUDHÂKARA DVIVADÎ

Professor of Mathematics and Astronomy
Government Sanskrit-College, Benares,
And Fellow of the Allahabad University

PUBLISHED AND SOLD BY THE SECRETARY,

CHOWKHAMBÂ SANSKRIT BOOK-DEPÔT:
BENARES.

AGENT:—OTTO HARRASSOWITZ, LEIPZIG:

PRINTED BY FREEMAN & Co., Ld, AT THE TARA PRINTING WORKS,
BENARES.

1899.

REGISTERED ACCORDING TO ACT XXV. OF 1867

Aho ! Shrutgyanam

श्रीः ।

आनन्दवनविद्योतिसुमनोभिः सुसंस्कृता ।
सुवर्णाऽङ्कितभव्याभशतपत्त्रपरिष्कृता ॥ १ ॥
चौखम्बा-संस्कृतग्रन्थमाळा मञ्जुलदर्शना ।
रसिकालिकुलं कुर्यादमन्दामोदमोहितम् ॥ २ ॥

स्तबकः २३—

Aho ! Shrutgyanam

चौखम्बा-संस्कृत-ग्रन्थमाला।

(ग्रन्थसंख्या ५)

करणप्रकाशः

श्री ६ ब्रह्मदेवविरचितः।

काशिकराजकीयप्रधानसंस्कृतपाठशालायां
ज्यौतिषशास्त्रप्रधानाध्यापकेन
महामहोपाध्यायश्रीसुधाकरद्विवेदिना
वासनाभिरासन्नमानाद्यनेकसिद्धान्तैर्विभूष्य
संशोध्य च मुद्रितः।

काश्याम्
तारा-यन्त्रालये श्री०-बा०-हरिदासगुप्तेन फ्रीमैन कम्पनी लिमिटेड् द्वारा मुद्रयित्वा प्रकाशितः।

सन् १८९९ ईस्वी।
वैक्रमसंवत् १९५६।

शुभम्।

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

भूमिका ।

ब्रह्मदेवः । (१०१४)

आसीच्चन्द्रदेवतनयो माथुरो ब्राह्मणोऽयम् । एनेनाऽऽर्यभटानुसारेण शक्रदिङ्मिते १०१४ शके करणप्रकाशनामकं करणं विरचितम् । अत्र मध्यमाधिकारः । तिथ्यधिकारः । स्पष्टाधिकारः । त्रिप्रश्नाधिकारः । चन्द्रग्रहणाधिकारः । सूर्यग्रहणाधिकारः । उदयास्ताधिकारः । शृङ्गोन्नत्यधिकारः । ग्रहयुत्यधिकारः । इति नवाधिकाराः संक्षेपतो विलिखिताः सन्ति २२९ श्लोकैः ।

माध्व* मतीया एतत्करणानुसारेणागतान् तिथ्यादीन् व्रतोपवासादिषु स्वीकुर्वन्ति । ब्रह्मदेवस्यान्या कृतिरस्माभिर्नोपलब्धा । करणप्रकाशकस्यातीव दुर्मिलं लिखितपुस्तकं शुद्धं प्राचीनं च काशिकराजकीयपाठशालासरस्वतीभवने वर्त्तते । तस्मादेव मया स्वधिया वासनाभिर्विभूष्य सर्वेषामुपकारायायं संशोध्य मुद्रितः ।

यद्यप्ययं ग्रन्थारम्भे स्वकीयं करणमार्यभटानुसारीति विलिलेख तथापि ग्रन्थस्य सूक्ष्मधियाऽवलोकनेन बहुत्रान्यथा प्रतिभाति बहुत्र लल्लोक्तसदृशमेव ।

शङ्करबालकृष्णदीक्षितलेखानुसारेण ब्रह्मदेवमतेन ४४५ शकेऽयनांशाभावः प्रत्यब्दमेककलायनगतिश्च (भारतीयज्योतिःशास्त्रस्य २४०-२४१ पृष्ठे विलोक्ये) परन्त्वत्रायनभागचर्चा न कुत्रापि दृश्यते ।

---

* माध्वसाम्प्रदायिककृष्णामृतव्याकयार्थे ।

" विष्णोश्च जन्मदिवसानि हरेर्दिनं च विष्णुव्रतानि विविधानि च विष्णुभं च । कार्याणि चार्यभटशास्त्रत एव सर्वै"रित्यादि तथा "आर्यभटसिद्धान्तसंमतकरणप्रकाशग्रन्थः "इति ।

Aho ! Shrutgyanam

राशिद्वयं स्वदेशीयाक्षभागहीनं शेषसमे भानावगस्त्योऽस्तमुपैति । भषट्कमस्तार्कहीनमवशेषसमे द्युमणौ चोदयं व्रजति कुम्भज इति रीतिर्वर्त्तते अगस्त्यास्तोदयसाधने ह्यत्र । अनेन विधिनाऽवन्तिकायां सार्द्धद्विद्विपल-भागपुर्य्यां यदा रविः = १^{रा} । ७° । ३०′ तदाऽगस्त्यास्तः ॥ यदा च रविः = ६^{रा} − (१^{रा} । ७° । ३०′) = ४^{रा} । २२° । ३० तदाऽगस्त्योदयः । अयमुदयश्च बृहत्संहितोक्तेन "तच्चोज्जयिन्यामगतस्य कन्यां भागैः स्वराख्यैः स्फुटभास्करस्ये" त्यादिना प्रायः सम एव । अगस्त्योदयसाधनैतत्प्रकारश्च ।

यदा खरांशुर्भवनद्वयेन स्वाक्षांशहीनेन समस्तदानीम् ।
प्रयात्यगस्त्योऽस्तमयं भषट्कात् तेन च्युतेनोदयमेति तुल्यः ॥

अयं प्रकारश्च ब्रह्मगुप्तलिखितप्रकारसमः ।

अथैनं सांवत्सराः समवलोक्य वासनादित्रुटिं पूरयन्त्विति तान् सप्रश्रयं प्रार्थयते ।

सुधाकरद्विवेदी ।

Aho ! Shrutgyanam

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

अथ सुधाकरद्विवेदिकृतसद्वासनासहितः

करणप्रकाशः प्रारभ्यते ॥

ब्रह्माऽच्युतत्रिनयनाऽर्कशशाङ्कभौम-
सौम्येज्यशुक्रशनिवागधिपागणेशान् ।
नत्वाऽहमार्यभटशास्त्रसमं करोमि
श्रीब्रह्मदेवगणकः करणप्रकाशम् ॥ १ ॥

सत्यव्रतं सततमात्मजनाभिरामं सीतापतिं पितृपरं परिपूर्णकामम् ।
साकेतकेतनमहस्करवंशगामिरामं मनोहरतनुं शिरसा नमामि ॥ १ ॥
श्रीब्रह्मदेवकृतिरत्र कृतिप्रसिद्धा तैर्मानिता विबुध माध्वमतीयसिद्धाः ।
ये साऽथ सत्सुगमवासनया मयैव सम्पूज्यते सुमनसां च मुदे सदैव ॥२॥

अच्युतो विष्णुः । त्रिनयनो महादेवः । अर्कः सूर्यः । ईज्यो गुरुः । वागधिपा सरस्वती । शेषं स्पष्टार्थम् ॥ १ ॥

शाकः शक्रदशो-१०१४ नितो रवि-१२ गुणश्चैत्रादिमासान्वितो
द्विष्ठो दस्र-२हतो द्विराम-३२सहितोऽधो भूपनन्दै-९१६र्हतः ।
लब्धोनो विहृतः शिलीमुखरसै-६५ राप्ताऽधिमासैर्युतः
खत्रिघ्नः सतिथिर्द्विधा कररसै-६२ र्युक्तस्ततोऽधः कृतः ॥ २ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । आर्यभटमते युगसौरमासाः = ९११८४०००० ।

Aho ! Shrutgyanam

युगाधिमासाः = १५९३३३६ । अनुपातेनैकस्मिन् सौरमासेऽधि-
मासाः $= \frac{१५९३३३६}{५१८४००००} = \frac{१३२७७८}{४३२००००} = \frac{६६३८९}{२१६००००}$

$$= \frac{६६३८९ \times ६५}{६५ \times २१६००००} = \frac{६६३८९ \times १३}{६५ \times ४३२०००} = \frac{८६३०५७}{६५ \times ४३२०००}$$

$$= \frac{\frac{८६३०५७}{४३२०००}}{६५} = \frac{२ - \frac{९४३}{४३२०००}}{६५} = \frac{२ - \frac{९४३ \times २}{४३२००० \times २}}{६५}$$

$$= \frac{२ - \frac{२}{\frac{४३२००० \times २}{९४३}}}{६५} = \frac{२ - \frac{२}{९१६}}{६५}$$

। एते इष्टसौरमासगुणिता जाता इष्टाधिमासाः $= \frac{१}{६५} \times$ इसौमा $\left(२ - \frac{२}{९१६}\right)$ अत उपपन्नमधिमासानयनम् । द्विरामा ३२ द्विघ्नेष्टसौरमासयोजनार्हो ग्रन्थादिभवोऽधिमासक्षेपस्तत्साधनं तु ग्रन्थान्ते विलोकनीयम् । ततः खत्रिघ्न इत्यादि सुगमम् ॥ २ ॥

विलोचन–२घ्नस्त्रिखवेदभू–१४०३हृतः
फलान्वितः सागरषड्–६४भिरुद्धृतः ।
फलावमोनो भृगुवारपूर्वको
भवत्ययं रव्युदयादहर्गणः ॥ ३ ॥

ग्रन्थादौ भृगुवार आसीदतो भृगुवारादिकोऽहर्गणो जातः शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । आर्यभटमते युगचान्द्राहाः = १६०३०००८० । क्षयाहाः = २५०८२५८० । अनुपातेनैकस्मिन् चान्द्राहे क्षयदिनमानम् $= \frac{२५०८२५८०}{१६०३०००८०} = \frac{२५०८२५८}{१६०३०००८} = \frac{४१८०४३}{२६७१६६८}$

Aho ! Shrutgyanam

$$=\frac{४१८०४३ \times ६४}{६४ \times २६७१६६६८}=\frac{४१८०४३ \times १६}{६४ \times ६६७९१६७}=\frac{१}{६४}\times\frac{६६८८६८८}{६६७९१६७}$$

$$=\frac{१}{६४}\times\left(१+\frac{९५२१}{६६७९१६७}\right)=\frac{१}{६४}\left(१+\frac{९५२१\times२}{६६७९१६७\times२}\right)$$

$$=\frac{१}{६४}\left(१+\frac{२}{\frac{१३३५८३३४}{९५२१}}\right)=\frac{१}{६४}\left(१+\frac{२}{१४०३}\right) \text{ ।}$$

अनुपातेनेष्टचान्द्राहसंबन्धिक्षयाहाः $=\frac{१}{६४}\times$ इचा $\left(१+\frac{२}{१४०३}\right)$ क्षेपोपपत्तिर्ग्रन्थान्तेऽस्ति । अत उपपन्नं क्षयाहानयनम् ॥ ३ ॥

दस्र-२ घ्नो द्युगणोऽङ्कविश्व-१३९ विहृतो लब्धोनितोऽह्नां गणोऽशाद्याः सूर्यसितेन्दुजा गुरुकुजाऽऽर्कीणां चलोच्चं भवेत् ।
नन्दाष्टेषुतिथीन्दुभिर्द्दिनगणाद्भागांऽशकैश्चोनितो
भागाः खाग्नि-३० हृता गृहा दिनकरै-१२ र्भक्ता गृहाः पर्ययाः॥४॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । आर्यभटमतेन रविभगणाः = ४३२०००० । युगकुदिनानि = १५७७९१७५०० । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मिका गतिः $=\frac{४३२००००\times१२\times३०}{१५७७९१७५००}=\frac{४३२००००\times१२\times३०\div३००\times२५}{१५७७९१७५००\div३००\times२५}$

$$=\frac{२०७३६०}{२१०३८९}=१-\frac{३०२९}{२१०३८९}\text{........}(१)$$

परन्तु $\frac{३०२९}{२१०३८९}=\cfrac{१}{६९+\cfrac{१}{२+\frac{२५३}{१३८८}}}$

तत आसन्नमानानि, $\frac{१}{६९}$, $\frac{२}{१३९}$,

आचार्येणेदं, $\frac{२}{१३९}$ गृहीतम् । ततः $\frac{३०२९}{२१०३८९}=\frac{३०२९}{२१०३८९}-\frac{२}{१३९}+\frac{२}{१३९}$

$$=\frac{२}{१३९}+\left(\frac{३०२९}{२१०३८९}-\frac{२}{१३९}\right)=\frac{२}{१३९}+\frac{३०२९\times१३९-२\times२१०३८९}{२१०३८९\times१३९}$$

Aho ! Shrutgyanam

$=\frac{२}{१३९}+\frac{४२१०३१-४२०७७८}{२१२४४०७१}=\frac{२}{१३९}+\frac{२५३}{२१२४४०७१}$

$=\frac{२}{१३९}+\frac{१}{११५५८९}$ स्वल्पान्तरात् । (१) समीकरणेऽस्योत्थापनेन

भागादिका गतिः $=१-\frac{२}{१३९}-\frac{१}{११५५८९}$ । इयमहर्गणगुणा जाता भागाद्या

रविबुधशुक्राः $=$ अह $-\frac{२\ अह}{१३९}-\frac{अह}{११५५८९}$ ।

एत एव शनिजीवभूभुवां चलोच्चमित्युपपन्नमानयनम् । शेषं ग्रहादिकरणं चातिसुगममिति ॥ ४ ॥

अह्नां गणो गुण–३हतो नगचन्द्र–१७भक्तो
लब्धान्वितो गुणशशाङ्क–१३ हतो दिनौघः ।
चन्द्रोंऽशकादिरिषुभूगुणनाग–८३१५भक्ता-
दंशादिलब्धरहितो भवति द्युवृन्दात् ॥ ५ ॥

आर्यभटमतेन चन्द्रयुगभगणाः$=$५७७५३३३६ । युगसावनदिवसाः$=$१५७७९१७५०० । लल्लमतेन २५० सौरवर्षेषु

$=\frac{१५७७९१७५००\times२५०}{४३२००००}=\frac{१५७७९१७५\times२५}{४३२०}=\frac{५२५९७२५\times५}{२८८}$

सावनदिवसेषु २५ कला ऋणं बीजम् । ततोऽनुपातेनैकस्मिन् दिने भागादिका गतिः$=\frac{५७७५३३३६\times१२\times३०}{१५७७९१७५००}$

$=\frac{५७७५३३३६\times१२\times३०\div६०}{१५७७९१७५००\div६०}=\frac{५७७५३३३६\times६}{२६२९८६२५}=\frac{३४६५२००१६}{२६२९८६२५}$

$=१३\frac{४६३७८९१}{२६२९८६२५}$ । एकस्मिन् दिने भागात्मकमृणं बीजम्$=\frac{२८८\times२५}{५२५९७२५\times५\times६०}$

$=\frac{२४}{५२५९७२५}=\frac{२४०}{५२५९७२५०}$ । उभयोः संस्कारेण भागात्मिका वास्तवा गतिः

Aho ! Shrutgyanam

$$=१३+\frac{४६३७८९१}{२६२९८६२५}-\frac{२४०}{५२५९७२५०}\;....(१)$$

परन्तु $\frac{४६३७८९१}{२६२९८६२५}=\cfrac{१}{५+\cfrac{१}{१+\cfrac{१}{२+\cfrac{५१७२८}{१५२८७२१}}}}$

तत आसन्नमानानि

$\frac{१}{५}, \frac{१}{६}, \frac{३}{१७}$.... । आचार्येणेदं $\frac{३}{१७}$ गृहीतम् । (१) समीकरणेऽस्योत्थापनेन वास्तवा भागादिका गतिः $=१३+\frac{३}{१७}-\frac{३}{१७}+\frac{४६३७८९१}{२६२९८६२५}-\frac{२४०}{५२५९७२५०}$

$$=१३+\frac{३}{१७}-\left(\frac{३}{१७}-\frac{४६३७८९१}{२६२९८६२५}\right)-\frac{२४०}{५२५९७२५०}$$

$$=१३+\frac{३}{१७}-\frac{५१७२८}{२६२९८६२५\times१७}-\frac{२४०}{५२५९७२५०}$$

$$=१३+\frac{३}{१७}-\frac{५१७२८\times२+२४०\times१७}{५२५९७२५०\times१७}=१३+\frac{३}{१७}-\frac{१०७५३६}{८९४१५३२५०}$$

$=१३+\frac{३}{१७}-\frac{१}{८३१५}$ स्वल्पान्तरात् । इयमहर्गणगुणा जातो भागादिको विधुः

$=१३अ+\frac{३अ}{१७}-\frac{अ}{८३१५}$ । अत उपपन्नम् ॥ ५ ॥

अह्नां चयो दश-१० गुणः स्वखरामदस्र-२३०
भागोनितो नवशशाङ्क-१९ हृतो लवादिः ।
क्षोणीसुतो दिनगणात् खगजाऽभ्रभूपै-१६०८०
भक्तादवाप्तकलिकादिफलोनितः स्यात् ॥ ६ ॥

आर्यभटमतेन कुजयुगभगणाः=२२९६८२४ । युगसावनदिवसाः =१५७७९१७५०० । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मिका गतिः

$$=\frac{२२९६८२४\times१२\times३०\div६०}{१५७७९१७५००\div६०}=\frac{१३७८०९४४}{२६२९८६२५}\;.$$

Aho ! Shrutgyanam

$= \cfrac{१}{१+\cfrac{१}{१+\cfrac{१}{९+\frac{११४८३१४}{१२६३२६३}}}}$ अत आसन्नमानानि $\frac{१}{१}, \frac{१}{२}, \frac{१०}{१९},$ । आचार्येणेदं $\frac{१०}{१९}$ गृहीतम् । ततो भागात्मिका गतिः $= \frac{१०}{१९}$

$-\left(\frac{१०}{१९}-\frac{१३७८०९४४}{२६२९८६२५}\right)=\frac{१०}{१९}-\frac{११४८३१४}{१९\times २६२९८६२५}=\frac{१}{१९}\left(१०-\frac{११४८३१४}{२३२९८६२५}\right)$

अथास्या- $\frac{११४८३१४}{२६२९८६२५}$ पि विततभिन्नेनासन्नमानानि विधाय तेषामिदं $\frac{१}{२३}$

$=\frac{१०}{२३०}$ गृहीत्वा भागात्मिका दिनगतिः

$=\frac{१}{१९}\left\{१० -\left(\frac{१०}{२३०}-\frac{१०}{२३०}+\frac{११४८३१४}{२६२९८६२५}\right)\right\}$

$=\frac{१}{१९}\left\{१०-\left(\frac{१०}{२३०}+\frac{११२५१७}{२३\times २६२९८६२५}\right)\right\}$

$=\frac{१}{१९}\left(१०-\frac{१०}{२३०}-\frac{११२५१७}{१९\times २३\times २६२९८६२५}\right.$ अत्र भागात्मकं गतेः प्रथमखण्डमिदं $\frac{१}{१९}\left(१०-\frac{१०}{२३०}\right)$ महर्गणगुणं जातं भागादिफलम् $=\frac{१}{१९}\left(१०\text{अ}-\frac{१०\text{अ}}{२३०}\right)$ एतेन पूर्वार्द्धमुपपन्नम् । अथ गतेर्द्वितीयखण्डं भागात्मकं षष्टिगुणं जातं कलात्मकम् $=\frac{११२५१७\times ६०}{१९\times २३\times २६२९८६२५}=\frac{११२५१७\times १२०}{१९\times २३\times ५२५९७२५०}$ लल्लमतेन २५० वर्षेषु वा $\frac{५२५१७२५\times ५}{२८८}$ सावनदिवसेषु ४८ कला भौमस्य धनं बीजम् । अनुपातेनैकस्मिन् दिने धनं बीजम् $=\frac{४८\times २८८}{५२५१७२५\times ५}$ । पूर्वस्थितक्षयकलात्मकगतिखण्डसंस्कारेण जातमेकास्मिन् दिने गतेः कलात्मकं वास्तवं द्वितीयखण्डम्

$=\frac{४८\times २८८}{५२५१७२५\times ५}-\frac{११२५१७\times १२०}{१९\times २३\times ५२५१७२५०}$

$=१२\left(\frac{४\times २८८\times १९\times २३-११२५१७\times ५}{१९\times २३\times ५\times ५२५१७२५}\right)=\frac{१२\times ५१५६१}{१९\times २३\times ५\times ५२५१७२५}$

$=\frac{७१४७३२}{११४९२४९११२९}=\frac{१}{१६०७१}$ स्वल्पान्तरात् । आचार्येणेदं $\frac{१}{१६०८०}$ गृहीतम् । इदमहर्गणगुणं जातं कलात्मकं द्वितीयखण्डफलम् $=\frac{\text{अ}}{१६०८०}$ ।

अत उपपन्नं सर्वम् ॥६॥

Aho ! Shrutgyanam

रुद्रा-११हतो दिनगणो नवरुद्र-११९भक्तो
लब्धाऽधिको युग-४हतो द्युगणो ज्ञशीघ्रम् ।
अंशादिकं गुणगजाद्रिनवेन्दु-१९७८३भक्ता-
दह्नां चलाद्भवति लब्धलवादिकोनम् ॥ ७ ॥

आर्यभटमतेन बुधशीघ्रयुगभगणाः=१७९३७०२० । युगसावनदिवसाः=१५७७९१७५०० । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मिका गतिः

$$=\frac{१७९३७०२०\times १२\times ३०\div ३००}{१५७७९१७५००\div ३००}=\frac{२१५२४४२४}{५२५९७२५}=४+\frac{४८५५२४}{५२५९७२५}\cdots(१)$$

अथ $\frac{४८५५२४}{५२५९६२५}=\cfrac{१}{१०+\cfrac{१}{१+\cfrac{१}{४+\cfrac{१}{१+\frac{७१०}{८०३२९}}}}}$ ।

तत आसन्नमानानि

$\frac{१}{१०}$, $\frac{१}{११}$, $\frac{५}{५४}$, ...। आचार्येणास्य $\frac{५}{५४}$ द्विगुणलवहरयोरस्य $\frac{१}{११}$ लवहरौ निक्षिप्येदं $\frac{११}{११९}$ गृहीतम् । ततो भागात्मिका गतिः$=४+\frac{११}{११९}-\frac{११}{११९}$

$-\frac{४८५५२४}{५२५९७२५}=४+\frac{११}{११९}-\left(\frac{११}{११९}-\frac{४८५५२४}{५२५९७२५}\right)=४+\frac{११}{११९}-\frac{७१६११}{११९\times ५२५९७२५}$ ।

बुधोच्चस्य २९० वर्षेषु वा $\frac{५२५९७२५\times ९}{२८८}$ सावनदिनेषु ७ भागा धनं बीजम् ।

अनुपातेनैकस्मिन् दिने धनं बीजम्$=\frac{७\times २८८}{५२५९७२\times ९}$ । एतत्संस्कारेण जाता

वास्तवा भागात्मिका गतिः$=४+\frac{११}{११९}-\frac{७१६११}{११९\times ५२५९७२५}+\frac{७\times २८८}{५२५९७२५\times ९}$

$=४+\frac{११}{११९}-\frac{७१६११\times ९}{११९\times ५२५९७२५\times ९}+\frac{७\times २८८\times ११९}{११९\times ९\times ५२५९७२५}$

$=४+\frac{११}{११९}-\frac{३९८०९९-२३९९०४}{३१२९९५३६३७५}=४+\frac{११}{११९}-\frac{१५८१९१}{३१२९९५३६३७५}$

$=४+\frac{११}{११९}-\frac{१}{१९७८३}$ स्वल्पान्तरात् । इयमहर्गणगुणा जातं भागादि बुधचलम्$=४अ+\frac{११अ}{११९}-\frac{अ}{१९७८३}$ । अत उपपन्नं सर्वम् ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अहर्गणोऽधः कुयुगाऽग्नि–३४१ भाजितः
फलोनितः सूर्य–१२ हृतोऽशपूर्वकः ।
गुरुर्भवेद्गोऽग्निखसागरर्तु–६४०३६ भि-
र्दिवागणाद्दाप्तकलादिवर्जितः ॥ ८ ॥

आर्यभटमतेन युगगुरुभगणाः=३६४२२४ । युगसावनदिवसाः =१५७७९१७५०० । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मिका गतिः

$$=\frac{३६४२२४\times१२\times३०\div६०}{१५७७९१७५००\div६०}=\frac{२१८५३४४}{२६२९८६२५}=\frac{१}{१२}-\frac{१}{१२}+\frac{२१८५३४४}{२६२९८६२५}$$

$$=\frac{१}{१२}-\left(\frac{१}{१२}-\frac{२१८५३४४}{२६२९८६२५}\right)=\frac{१}{१२}-\left(\frac{२६२९८६२५-२६२२४१२८}{१२\times२६२९८६२५}\right)$$

$$=\frac{१}{१२}-\frac{७४४९७}{१२\times२६२९८६२५}=\frac{१}{१२}\left(१-\frac{७४४९७}{२६२९८६२५}\right)$$

$$=\frac{१}{१२}\left(१-\frac{१}{३४१}+\frac{१}{३४१}-\frac{७४४९७}{२६२९८६२५}\right)$$

$$=\frac{१}{१२}\left(१-\frac{१}{३४१}+\frac{२६२९८६२५-३४१\times७४४९७}{३४१\times२६२९८६२५}\right)$$

$$=\frac{१}{१२}\left(१-\frac{१}{३४१}\right)+\frac{१}{१२}\,\frac{२६२९८६२५-२५४०३४७७}{३४१\times२६२९८६२५}$$

$$=\frac{१}{१२}\left(१-\frac{१}{३४१}\right)+\frac{८९५१४८}{१२\times३४१\times२६२९८६२५} ।$$

प्रथमखण्डमिदं $\frac{१}{१२}\left(१-\frac{१}{३४१}\right)$ भागात्मकमहर्गणगुणं जातं भागादि फलम् $=\frac{१}{१२}\left(अ-\frac{अ}{३४१}\right)$ एतेन पूर्वार्द्धमुपपन्नम् । गतेर्द्वितीयखण्डं षष्टि-गुणं जातं कलात्मकम् $=\frac{८९५१४८\times६०\div६०}{१२\times३४१\times२६२९८६२५\div६०}=\frac{८९५१४८}{३४१\times५२५९७२५}$ ।

अथ लल्लमतेन २९० वर्षेषु वा $\frac{५२५९७२५\times५}{२८८}$ सावनदिनेषु ४७ कला ऋणं बीजम् । अनुपातेनैकस्मिन् दिने बीजम् $=\frac{४७\times२८८}{५२५९७२५\times५}$ । एतत् सं-

Aho ! Shrutgyanam

स्करेण जातं गतेः कलात्मकं द्वितीयखण्डं वास्तवम् $= \frac{८९५१४८}{३४१\times५२५९७२५}$

$- \frac{४७\times२८८}{५२५९७२५\times५} = \frac{८९५१४८\times५ - ३४१\times४७\times२८८}{३४१\times५\times५२५९७२५} = \frac{४४७५७४० - ४६१५७७६}{३४१\times५\times५२५९७२५}$

$= \frac{१४००३६}{८९६७८३११२५} = \frac{१}{६४०३९}$ स्वल्पान्तरात् ।

इदमहर्गणगुणं जातं कलात्मकं द्वितीयखण्डफलम् $= \frac{\text{अ}}{६४०३९}$ ।
एतेनोत्तरार्द्धमुपपन्नमिति सर्वं चतुरस्रम् ॥ ८ ॥

व्योमाभ्रचन्द्र-१०० गुणितो द्युगणो द्विधाऽसौ
शैलाभ्रचन्द्र-१०७ विहृतः सफलोऽग्निषड्भिः ६३ ।
भक्तोंऽशकादि सितशीघ्रमहर्गणाङ्क-
खाग्न्यष्टषड्क-६८३०१ विहृताच्च फलांशकोनम् ॥ ९ ॥

आर्यभटमतेन शुक्रशीघ्रभगणाः=७०२२३८८ । युगसावनदिनानि =१५७७९१७५०० । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मिका गतिः

$= \frac{७०२२३८८\times१२\times३०\div६०}{१५७७९१७५००\div६०} = \frac{४२१३४३२८}{२६२९८६२५}$

$= \frac{१००}{६३} - \frac{१००}{६३} + \frac{४२१३४३२८}{२६२९८६२५} = \frac{१००}{६३} - \frac{२६२९८६२५०० - ६३\times४२१३४३२८}{६३\times२६२९८६२५}$

$= \frac{१००}{६३} - \frac{२६२९८६२५०० - २६५४४६२६६४}{६३\times२६२९८६२५} = \frac{१}{६३}\left(१००+\frac{२४६००१६४}{२६२९८६२५}\right)$

$= \frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७} - \frac{१००}{१०७} + \frac{२४६००१६४}{२६२९८६२५}\right) = \frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right.$

$\left. + \frac{२३५५००४८}{१०७\times२६२९८६२५}\right) = \frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right) + \frac{२३५५००४८}{६३\times१०७\times२६२९८६२५}$

$= \frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right) + \frac{२६१६७२}{७\times१०७\times२६२९८६२५}$ ।

शुक्रशीघ्रस्य लल्लमतेन २५० वर्षेषु वा $\frac{५२५९७२५\times५}{२८८}$ सावनदिनेषु १५३ कला ऋणात्मकं बीजम् । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मकमृणं

Aho ! Shrutgyanam

बीजम् $=\frac{२८८\times१५३}{५२५९७२५\times५\times६०}=\frac{२४\times१५३}{५२५९७२५\times५\times५}$ । एतत्संस्कारेण वास्तवा

भागात्मिका गतिः $=\frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right)+\frac{२६१६७२}{७\times१०७\times२६२९८६२५}$

$-\frac{२४\times१५३}{५२५९७२५\times५\times५}=\frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right)+\frac{२६१६७२\times५-७\times१०७\times२४\times१५३}{७\times१०७\times२६२९८६२५\times५}$

$=\frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right)-\frac{७\times१०७\times२४\times१५३-२६१६७२\times५}{७\times१०७\times२६२९८६२५\times५}$

$=\frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right)-\frac{२७५०३२८-१३०८३६०}{९८४८८३५०६२५}=\frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right)$

$-\frac{१४४१९६८}{९८४८८३५०६२५}=\frac{१}{६३}\left(१००+\frac{१००}{१०७}\right)-\frac{१}{६८३०१}$ स्वल्पान्तरात् । इय-
महर्गणगुणा जातमंशादि शुक्रशीघ्रोच्चम् $=\frac{१}{६३}\left(१००\,अ+\frac{१००\,अ}{१०७}\right)-\frac{अ}{६८३०१}$।
अत उपपन्नं शुक्रशीघ्रोच्चानयनम्। अत्र भागात्मकगतेरस्या $\frac{४२१३४३२८}{२६२९८६२५}$
विततभिन्नत आसन्नमानानामेषा—$\frac{१}{१}, \frac{२}{१}, \frac{३}{२}, \frac{५}{३}, \frac{८}{५}$, ...मस्य $\frac{८}{५}$ द्वादशगुण-
लवहरयोरस्य $\frac{५}{३}$ लवहरौ निक्षिप्यासन्नमान-$\frac{१०१}{६३}$ मेतद्भवति तत्राचार्येणे-$\frac{१००}{६३}$
तद्गृहीत्वानयनं ग्रथितमिति ध्येयम् ॥ ९ ॥

दिवागणोऽधः खखराम-३०० भाजितः
फलाधिकः खाऽग्नि-३० हृतोऽर्कनन्दनः ।
लवादिरष्टाङ्गनवाङ्ग-६९६८ भाजितात्
कलादिहीनो दिनसञ्चयाद्भवेत् ॥१०॥

आर्यभटमतेन शनियुगभगणाः $=१४६५६४$ । युगसावनदिनानि $=१५७७९१७५००$ । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मिका गतिः

$=\frac{१४६५६४\times१२\times३०\div६०}{१५७७९१७५००\div६०}=\frac{८७९१३८४}{२६२९८६२५}=\frac{१}{३०}+\frac{८७९१३८४}{२६२९८६२५}-\frac{१}{३०}$

$=\frac{१}{३०}+\frac{२६३७४१५२०-२६२९८६२५}{३०\times२६२९८६२५}=\frac{१}{३०}\left(१+\frac{८२८९५}{२६२९८६२५}\right)$

Aho ! Shrutgyanam

$=\frac{१}{३०}(१+\frac{१}{३००}-\frac{१}{३००}+\frac{८२८९५}{२६२१९८६२५})$

$=\frac{१}{३०}(१+\frac{१}{३००}-\frac{२६२१९८६२५}{३००\times२६२१९८६२५}+\frac{२४८६८५००}{३००\times२६२१९८६२५})$

$=\frac{१}{३०}(१+\frac{१}{३००}-\frac{१४३०१२५}{३००\times२६२१९८६२५})=\frac{१}{३०}(१+\frac{१}{३००})-\frac{२८६०२५}{१०००\times५२५१७२५}$

अत्र प्रथमखण्डमिदं—$\frac{१}{३०}(१+\frac{१}{३००})$ महर्गणगुणं जातं भागादिकं फलम् $=\frac{१}{३०}(अ+\frac{अ}{३००})$ एतेन पूर्वार्द्धमुपपन्नम् । गतेर्द्वितीयं खण्डं षष्टिगुणं जातं कलात्मकम्$=\frac{२८६०२५\times६०}{१०००\times५२५१७२५}=\frac{२८६०२५}{१५०\times५२५१७२५}=\frac{५७२०५}{३०\times५२५१७२५}$ $=\frac{११४४१}{६\times५२५१७२५}$ । लल्लमतेन २५० वर्षेषु वा $\frac{५२५१७२५\times५}{२८८}$ सावनदिनेषु २० कला धनं बीजम् । अनुपातेनैकस्मिन् दिने बीजम् $=\frac{२०\times२८८}{५२५१७२५\times५}$ । एतत्संस्कारेण जातं वास्तवं कलात्मकं गतेर्द्वितीयखण्डम् $=\frac{२०\times२८८}{५२५१७२५\times५}$ $-\frac{११४४१}{६\times५२५१७२५}=\frac{४\times२८८}{५२५१७२५}-\frac{११४४१}{६\times५२५१७२५}=\frac{६\times४\times२८८}{६\times५२५१७२५}-\frac{११४४१}{६\times५२५१७२५}$ $=\frac{६९१२-११४४१}{३१५५८३५०}=-\frac{४५२९}{३१५५८३५०}=-\frac{१}{६९६८}$ स्वल्पान्तरात् ।

इदमहर्गणगुणं जातं कलात्मकं द्वितीयखण्डजं फलम् $=-\frac{अ}{६९६८}$ । एतेनोत्तरार्द्धमुपपद्यत इति सर्वं निरवद्यम् ॥१०॥

द्विधा द्युवृन्दः खयुगाब्धि-४४० भाजितः
फलान्वितो नन्द-९ हतो लवादिकम् ।
फलं विधूच्चं सकलं प्रजायते
सप्ताष्टशैलाद्रिहृतादहर्गणात् ॥११॥

आर्यभटमतेन विधूच्चयुगभगणाः=४८८२१९ । युगसावनदिनानि =१५७७९१७५०० । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मिका गतिः

$=\frac{४८८२१९\times१२\times३०\div६०}{१५७७९१७५००\div६०}=\frac{२९२९३१४}{२६२९८६२५}=\frac{१}{९}-\frac{१}{९}+\frac{२९२९३१४}{२६२९८६२५}$

Aho ! Shrutgyanam

$$=\frac{१}{९}+\frac{२९२९३१४\times९-२६२९८६२५}{९\times२६२९८६२५}=\frac{१}{९}+\frac{६५२०१}{९\times२६२९८६२५}$$

$$=\frac{१}{९}\left(१+\frac{६५२०१}{२६२९८६२५}\right)=\frac{१}{९}\left(१+\frac{१}{४४०}-\frac{१}{४४०}+\frac{६५२०१}{२६२९८६२५}\right)$$

$$=\frac{१}{९}\left(१+\frac{१}{४४०}+\frac{६५२०१\times४४०-२६२९८६२५}{४४०\times२६२९८६२५}\right)$$

$$=\frac{१}{९}\left(१+\frac{१}{४४०}+\frac{२३८९८१५}{४४०\times२६२९८६२५}\right)=\frac{१}{९}\left(१+\frac{१}{४४०}\right)+\frac{४७७९६३}{९\times४४०\times५२५९७२५}\text{ ।}$$

भागात्मकं गतेः प्रथमखण्डमिदं $\frac{१}{९}\left(१+\frac{१}{४४०}\right)$ दिनगणगुणं जातं भागादि फलम् $=\frac{१}{९}\left(\text{अ}+\frac{\text{अ}}{४४०}\right)$ । एतेन पूर्वार्द्धमुपपद्यते । भागात्मकं गतेर्द्वितीयखण्डमिदं $\frac{४७७९६३}{९\times४४०\times५२५९७२५}$ षष्टिगुणं जातं कलात्मकम्

$$=\frac{४७७९६३\times६०}{९\times४४०\times५२५९७२५}=\frac{४७७९६३}{३\times२२\times५२५९७२५}$$

। लल्लमतेन २९० वर्षेषु वा $\frac{५२५९७२५\times५}{२८८}$ सावनदिनेषु ११४ कला विधूच्चस्य क्षयं बीजम् ।

अनुपातेनैकस्मिन् दिने बीजम् $=\frac{११४\times२८८}{५२५९७२५\times५}$ । एतत्संस्कारेण जातं कलात्मकं वास्तवं गतेर्द्वितीयखण्डम् $=\frac{४७७९६३}{३\times२२\times५२५९७२५}-\frac{११४\times२८८}{५२५९७२५\times५}$

$$=\frac{४७७९६३\times५-३\times२२\times११४\times२८८}{३\times२२\times५\times५२५९७२५}=\frac{२३८९८१५-२१६६९१२}{१७३५७०९२५०}$$

$=\frac{२२२९०३}{१७३५७०९२५०}=\frac{१}{७७८७}$ स्वल्पान्तरात् । इदमहर्गणगुणं जातं द्वितीयखण्डभवं कलात्मकं फलम् $=\frac{\text{अ}}{७७८७}$ । एतेनोत्तरार्द्धमुपपद्यत इति सर्वं निरवद्यम् ॥११॥

अहर्गणो नाग-८ हतो विभक्तो
रूपेषुचन्द्रैः १५१ फलमंशपूर्वम् ।
गजाब्धिविश्वेषु-५१३४८ हतादिनौघात्
सांशं भचक्रात् पतितं तमः स्यात् ॥१२॥

आर्यभटमतेन युगचन्द्रपातभगणाः=२३२२२६ । युगसावनदिनानि

Aho ! Shrutgyanam

$=$१५७७९१७५०० । अनुपातेनैकस्मिन् दिने भागात्मिका गतिः

$$=\frac{२३२२२६\times१२\times३०\div६०}{१५७७९१७५००\div६०}=\frac{१३९३३५६}{२६२९८६२५}$$

$$=\cfrac{१}{१८+\cfrac{१}{१+\cfrac{१}{६+\cfrac{१}{१+\frac{७७५६}{१६७३८३}}}}}$$

। अत आसन्नमानानि $\frac{१}{१८}$, $\frac{१}{१९}$, $\frac{७}{१३२}$, $\frac{८}{१५१}$,… आचार्येणेदं $\frac{८}{१५१}$ गृहीतम् । ततो

जाता भागात्मिका गतिः $=\frac{८}{१५१}+\frac{१३९३३५६}{२६२९८६२५}-\frac{८}{१५१}$

$$=\frac{८}{१५१}+\frac{१३९३३५६\times१५१-८\times२६२९८६२५}{१५१\times२६२९८६२५}$$

$$=\frac{८}{१५१}+\frac{२१०३९६७५६-२१०३८९०००}{१५१\times२६२९८६२५}=\frac{८}{१५१}+\frac{७७५६}{१५१\times२६२९८६२५}$$ ।

अथ लल्लमतेन राहुमध्ये २५० वर्षेषु वा $\frac{५२५९७२५\times५}{२८८}$ सावनदिनेषु ९६ कला ऋणं बीजं तदेव पाते धनं बीजम् । अनुपातेनैकास्मिन् दिने पाते धनं भागात्मकं बीजम्

$$=\frac{९६\times२८८}{५२५९७२५\times५\times६०}=\frac{९६\times२४}{५२५९७२५\times५\times५}=\frac{९६\times२४}{२६२९८६२५\times५}$$ ।

उभयोः संस्कारेण जाता वास्तवा भागात्मिका गतिः

$$=\frac{८}{१५१}+\frac{७७५६}{१५१\times२६२९८६२५}+\frac{९६\times२४}{५\times२६२९८६२५}$$

$$=\frac{८}{१५१}+\frac{७७५६\times५+१५१\times९६\times२४}{१५१\times५\times२६२९८६२५}=\frac{८}{१५१}+\frac{३८७८०+३४७९०४}{१९८५५४६१८७५}$$

$$=\frac{८}{१५१}+\frac{३८६६८४}{१९८५५४६१८७५}=\frac{८}{१५१}+\frac{१}{५१३४८}$$ स्वल्पान्तरात् ।

इयमहर्गणगुणा जातं भागात्मकं पातमानम् $=\frac{८अ}{१५१}+\frac{अ}{५१३४८}$ । इदं भचक्रात् पतितं तमोमानं भवतीत्युपपन्नं सर्वम् । तमो राहुरिति ॥ १२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

रुद्रा११भूपतयो१६रदा३२नगशरा५७भानौ भवा-११स्तारका२७
व्योमाक्षीणि२०नखा२०विधौ हुतभुजो३विश्वे१३खदस्रा२०रसाः६ ।
भूपुत्त्रे, तुरगा७युगानि४कुगुणाः३१सूर्या१२बुधोच्चे सदा
षड्-६दस्रौ२रससायका५६मुनियमाः२७स्त्वप्या गुरौ भादयः ॥१३॥

आशा १० भवा ११ वसुदृशो-२८ ऽष्टयमाः-२८ सितोच्चे
रामा ३ यमौ २ कृतभुवो-१४ ऽग्निदृशो-२३ ऽर्कसूनौ ।
रूपं १ शरा ५ नवयुगानि ४९ नृपा १६ विधूच्चे
पाते शशी १ हुतभुज-३ स्तुरगेन्दवो-१७ ऽर्काः १२ ॥१४॥

ग्रन्थादौ ये ग्रहास्त एव क्षेपाः पठिताः । ते च भाद्या रव्यादीनामेते

र=११।१६ । ३२ । ५७ ॥ चं=११ । २७ । २० । २० ॥
मं= ३ । १३ । २० । ६ ॥ बु = ७ । ४ । ३१ । १२ ॥
बृ= ६ । २ । ५६ । २७ ॥ शु = १० । ११ । २८ । २८ ॥
श=३।२।१४।२३॥ रा=१।३।१७।१२ ॥ चं. उ.=१।५।४९।१६ ॥

१०१४ शके चैत्रशुक्लप्रतिपदि भृगौ रव्युदये भादीन् रव्यादीनार्यभट-मतानुसारेण प्रसाध्य तत्र

'शाके नखाब्धि—४२० रहिते शशिनोऽक्षदस्रै —२५
स्तत्तुङ्गतः कृतशिवै—१४४ स्तमसः षडङ्कैः ९६ ।
शैलाब्धिभिः ४७ सुरगुरोर्गुणिते सितोच्चात्
शोध्यं त्रिपञ्चकु—१५३ हतेऽभ्रशराक्षि २५० भक्ते ॥
स्तम्बेरमाम्बुधि—४८ हते क्षितिनन्दनस्य
सूर्यात्मजस्य गुणितेऽम्बरलोचनै—२० श्च ।
व्योमाक्षिवेद—४२० निहते विदधीत लब्धं
शीतांशुसूनुचलतुङ्गकलासु वृद्धिम् ॥'

इत्यादिना लल्लमतेन बीजानि संस्कृत्य भाद्या रव्यादिक्षेपाः पठिताः । तदानयनं च ग्रन्थान्ते विलोकनीयम् ॥१४॥

Aho ! Shrutgyanam

सूर्याद्भुक्तिकलाः क्रमान्नवशराः ५९ खाङ्काद्रयो ७९० भूगुणा ३१
बाणाम्भोधियमाः २४५ शरा ५ रसखगा ९६ दस्रौ २ रसा ६ वह्नयः ३।
नागाः ८ सायकवह्नयो ३५ रसयमा २६ दन्ता ३२ नभः ० कुञ्जराः ८
पूर्णं ० रूपयुगानि ४१ रूपशशिनः ११ प्रोक्ता विलिप्ता इमाः ॥१५॥

स्पष्टार्थम् । सूर्यादीनां मध्यमाः कलाद्या गतयश्चेमाः ।
र=५९।८ ॥ चं=७९०।३५॥मं=३१।२६॥ बु=२४५।३२॥
बृ=५।०॥ शु=९६।८॥ श=२।०॥ रा=३।११॥ चं. उ.=६।४१॥
आर्यभटानुसारेण महीमितादहर्गणात् कलादीन् ग्रहान् प्रसाध्य भुक्तयः पठिता इत्यत्र वासना प्रसिद्धैव ॥१५॥

अवन्तिकादक्षिणसौम्यरेखा प्रदेशतः पश्चिमपूर्वदेशे ।
भुक्त्यध्वघातात् खगजै-८०र्विभक्ताः फलं विलिप्ताः स्वमृणं ग्रहेषु॥१६॥

इति श्रीकरणप्रकाशे मध्यमाधिकारः ।

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । स्वष्टभूपरिधिना गतिकलास्तदा देशान्तरयोजनैः किम् । लब्धा देशान्तरकलाः षष्टिगुणा विकला जाताः

$=\frac{\text{भुक्ति}\times\text{दे०यो}\times ६०}{\text{स्पष्टभूप}}$ । अत्र स्थूलतया सर्वदेशेषु स्पष्टभूपरिधिः=४८००

कल्पितः। ततो जाता देशान्तरविकलाः$=\frac{\text{भुक्ति}\times\text{दे०यो}\times ६०}{४८००}=\frac{\text{भुक्ति}\times\text{दे०यो}}{८०}$ ।

अत उपपन्नम् ।

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितो मध्यगतौ तु हेतुः

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायां मध्यमाधिकारः समाप्तः ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ स्पष्टाधिकारः ।

रूपाग्नयो नवयमाः शरलोचनानि नन्देन्दवो दिनकराः श्रुतयः क्रमेण ।
ज्यार्धान्यमूनि वसुशैललवा इनोच्चं खेटं मृदुच्चरहितं मृदुकेन्द्रमाहुः ॥१॥
ज्यार्धानि ३१ । २९ । २५ । १९ । १२ । ४ सूर्यमन्दोच्चांशाः ७८ ।

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । पञ्चदशपञ्चदशभागानां खार्कमितव्यासार्द्धे ज्योत्पत्तिविधिना जीवाः प्रसाध्य ता अधोऽधो विशोध्य वृत्तपादे रूपाग्नयो नवयमा इत्यादि ज्यार्द्धानि षट् पठितानि । आर्यभटेन मन्दोच्चस्यात्यल्पगतित्वात् रविमन्दोच्चभागा ये वसुनगमिताः पठितास्त एव स्वल्पान्तरात् सुस्थिरा एवाचार्येणापि पठिता इति सर्वं स्फुटमेव सिद्धान्तविदामिति ॥ १ ॥

केन्द्रे त्रिभादनधिके सति दोस्तदेव
राशित्रयात् समधिके पतिते भषट्कात् ।
षड्भोनिते, षडधिके रहिते भचक्रा-
न्नन्दाधिके भवति बाहुरिहावशेषम् ॥ २ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । अयुग्मे पदे यातमेष्यं तु युग्म—इत्यादि भास्करविधिना स्फुटैवेति ॥ २ ॥

भागीकृते तत्र शरेन्दु–१५ भक्ते
भुक्तज्यका संगुणितेऽवशेषे ।
भोग्यज्यया बाणशशाङ्क–१५ भक्ते
भुक्तज्यका योगयुते भुजज्या ॥ ३ ॥

स्पष्टार्थम् ।

ज्यार्द्धेभ्यः पठितेभ्यश्चापतो ज्यानयनमनुपातेन स्पष्टमिति वासना सिद्धान्तविदां विदितैव किं लेखप्रयासेनेति ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

ज्यां विशोध्य शरचन्द्र-१५ ताडिते
भोग्यखण्डविहृतेऽवशेषके ।
शुद्धखण्डपरिमाणसङ्गुणै-
र्बाणशीतकिरणैर्युते धनुः ॥ ४ ॥

स्पष्टार्थम् ।

ज्यासाधनवैपरीत्येनास्य वासना प्रकटैवेति ॥ ४ ॥

दोर्ज्या रवेः शत-१०० गुणा गुणनन्द-९३ भक्ता
चन्द्रस्य पञ्च ५-गुणिता द्वि-२हृता फलं स्यात् ।
लिप्तादि तेन रहितौ सहितौ रवीन्दू
केन्द्रे क्रमात् क्रियतुलादिगते स्फुटौ स्तः ॥ ५ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । आर्यभटानुसारलल्लमतेन यद्यपि रविमन्दपरिधिभागाः १३$\frac{१}{२}$ । तथाप्याचार्येण ते भागाः १३$\frac{१}{३}$ = $\frac{४०}{३}$ एते गृहीताः । ततोऽनुपातो यदि भांशैः सूर्यकेन्द्रज्या तदा रविमन्दपरिधिभागैः किम् । लब्धं मृदुभुजफलम् $= \frac{४० \text{ ज्याके}}{३६० \times ३}$ । प्रथमज्यार्धानुपाततो भुजफलस्य भागादिचापं षष्टिगुणं जाता रविमन्दफलकलाः $= \frac{४० \text{ ज्याके} \times १९ \times ६०}{३६० \times ३ \times ३१}$ $= \frac{१०० \text{ ज्याके}}{९३}$ । एवं चन्द्रस्य मन्दपरिधिभागान् ३१ प्रकल्प्य तन्मन्दफलकलाः $= \frac{३१ \text{ ज्याके} \times १९ \times ६०}{३१ \times ३६०} = \frac{५ \text{ ज्याके}}{२}$ । अत उपपन्नं यथोक्तम् । धनर्णवासना चातिसुगमा । आर्यभटमतेन चन्द्रमन्दपरिधिभागाः = ३१$\frac{१}{२}$ एते सन्ति ॥ ५ ॥

भोग्यज्यका शक्र-१४ हृता खरांशो-
र्भवा-११ हता बाण-५ हृता हिमांशोः ।
फलोनयुक्ते मृगकर्कटाद्ये
केन्द्रे गती स्पष्टतरे भवेताम् ॥ ६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

भोग्यज्यका भोग्यखण्डं केन्द्रज्यासाधने । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । पञ्चदशभिरंशैर्वा नवशतकलाभिर्भोग्यखण्डं तदा रविकेन्द्रगतिकलाभिराभिः ५९ किम् । जातमद्यतनश्वस्तनकेन्द्रज्ययोरन्तरम् $=\frac{\text{५९ भो}}{\text{९००}}$ । अस्मात् पूर्वप्रकारेण 'दोर्ज्या रवेः शतगुणा गुणनन्दभक्ते'त्यादिनाऽद्यतनश्वस्तनमन्दफलकलान्तरं गतिफलम् $=\frac{\text{५९ भो} \times \text{१००}}{\text{९००} \times \text{९३}}=\frac{\text{भो}}{\text{१४}}$ स्वल्पान्तरतः ।

एवं चन्द्रस्य केन्द्रगतिः $=$ च म ग $-$ च उ ग $=$ ७९०′ । ३९″ $-$ ६′ । ४१″ $=$ ७८३′ । ५४″ $=$ ७८३′ $\frac{\text{५४}}{\text{६०}}=\frac{\text{७८३९}}{\text{१०}}$ । अद्यतनश्वस्तनकेन्द्रज्ययोरन्तरम् $=\frac{\text{७८३९ भो}}{\text{१०} \times \text{९००}}$ । चन्द्रस्य पञ्चगुणिता द्विहृतेत्यनेनाद्यतनश्वस्तनमन्दफलकलान्तरं गतिफलम् $=\frac{\text{७८३९ भो} \times \text{५}}{\text{१०} \times \text{९००} \times \text{२}}=\frac{\text{७८३९ भो}}{\text{३६००}}$ $=\frac{\text{७८३९भो} \div \text{७२०}}{\text{३६००} \div \text{७२०}}=\frac{\text{११ भो}}{\text{५}}$ स्वल्पान्तरतः । अत उपपन्नं गतिफलानयनम् । धनर्णोपपत्तिः सिद्धान्तोक्त्या स्फुटेति ॥ ६ ॥

भुक्तिर्ग्रहाणां रविदोःफलघ्नी
खखाङ्गभूदस्र-२१६००हृता फलं स्यात् ।
कलादिकं तद्रविवद्विधेयं
सूर्यादिकेषु स्वमृणं ग्रहेषु ॥ ७ ॥

रविदोःफलं रविमन्दफलं कलात्मकं शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । आचार्येण रविमन्दकलासमा एव स्वल्पान्तरतो रविमन्दफलोत्था असवः स्वीकृताः । ततो द्युरात्रासुभिर्ग्रहभुक्तिस्तदा भास्वत्फलोत्थासुभिः किम् । लब्धा भुजान्तरकलाः $=\frac{\text{र म फ} \times \text{ग्रग}}{\text{२१६००}}$ । पूर्वमहर्गणोत्था ग्रहा मध्यमार्कोदये ते भुजान्तरसंस्कारेण स्पष्टार्कोदयकाले क्रियन्ते । 'मध्यमार्कोदयात् प्राक् स्फुटार्कोदयः स्याद्दणे तत्फले स्वे यतोऽनन्तर' मित्यादिभास्करोक्त्या धनर्णवासना चातिसरला ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

त्रिष्ठाऽक्षभा सङ्गुणिता खचन्द्रै-१०

नागै ८ स्त्रिभिः सत्रिलवैः ३।२० क्रमेण ।

अभीष्टदेशे क्रियपूर्वकाणां

विनाडिकाः स्युश्चरखण्डकानाम् ॥८॥

स्पष्टार्थम् ।

'दिङ्नागसत्र्यंशगुणैर्विनिघ्नी'त्यादिभास्करविधिना सुगमा वासनास्येति॥८॥

व्योमाद्रिबाणैः ५७० सहितोऽब्दसङ्घो

भवन्ति षष्ट्या ६० विहृतोऽयनांशाः ।

देया बुधैर्लग्नचरापमानां

सिद्ध्यै ग्रहे दृग्बलनादिकेषु ॥९॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । ४४४ शके ह्याचार्यमतेनायनांशाभावः प्रत्यब्दमेका कला गतिश्च। तत अयनांशकलाः = इश − ४४४ = इश − १०१४ + १०१४ − ४४४ = (इश − १०१४) + (१०१४ − ४४४) = ग्रन्थारम्भतोऽब्दगणः + ५७० । एताः षष्टिभक्ता जाता अयनभागाः = (अब्दग + ५७०) / ६० । अत उपपन्नम् । इदमेवानयनं ग्रहलाघवे गणेशदैवज्ञेनापि निबद्धम् ॥९॥

भुजीकृतस्पष्टसहस्ररश्मेर्भसंख्यया यच्चरखण्डकैक्यम् ।

तद्भोग्यखण्डांशबधात् खरामै-३० राप्तेन युक्तं तु चरार्धकं स्यात् ॥१०॥

स्पष्टार्थम् ।

उपपत्तिश्च । परमभुजराशित्रयमध्ये त्रीणि चरखण्डानि । अतो भुजराशिसंख्यासमं चरार्धैक्यं कृतम् । त्रिंशल्लवैर्भोग्यखण्डं तदा भुजशेषांशैः किम् । लब्धं शेषसम्बन्धि फलं पूर्वागतचरखण्डयोगे युक्तं जातं पलात्मकं चरमित्युपपन्नम् ॥१०॥

द्विष्ठा युतोनाः शरशीतभास-१५ श्चरार्धनाडीभिरिह क्रमेण ।

द्विघ्नाः प्रमाणं द्युनिशोर्भवेत् तत् सौम्येऽन्यथा दक्षिणगोलगेऽर्के ॥११॥

Aho ! Shrutgyanam

स्पष्टार्थम् ।

'चरघटीसहिता रहिताः क्रमात् तिथिमिता घटिकाः खलु गोलयोरि'त्यादिभास्करविधिना स्फुटैव वासना ॥११॥

तुलादिमेषादिभषट्कसंस्थे क्रमाद्ग्रहे दक्षिणसौम्यगोलौ ।
कर्क्यादिषट्कस्थितिभाजि याम्यं सौम्यायनं स्यान्मकरादिषट्के ॥१२॥

स्पष्टार्थम् ॥१२॥

भुक्तिश्चरार्धेन हता विभक्ता खखाङ्गरामैः ३६०० कलिकादिलब्धम्।
सूर्येऽस्तगे स्वं खचरे त्वजादावृणं तुलादावुदितेऽन्यथा स्यात् ॥१३॥

स्पष्टार्थम् ।

यदि षट्त्रिंशच्छतपलैर्ग्रहगतिस्तदा चरपलैः किम् । लब्धाश्चरसम्बन्धिकलाः । 'आदौ स्वदेशेऽथ निरक्षदेशे सूर्योदयो व्यस्तमतोऽस्तकाल' इत्यादिभास्करविधिना धनर्णोपपत्तिः स्फुटा ॥१३॥

अर्कोनशीतांशुकला विभक्ताः खद्स्रशैलै–७२० स्तिथयो गताः स्युः ।
फलं गतैष्ये गगनाङ्ग–६० निघ्ने गत्यन्तरेणापहृते च नाड्यः ॥१४॥

स्पष्टार्थम् ।

द्वादशभिरंशैर्वा खकरनगकलाभिः सूर्यचन्द्रविवरकलाभिरेका तिथिरिति प्रकटैव वासना । गत्यन्तरानुपातेन गतैष्यघटीसाधनं चातिसुगमम् ॥१४॥

कला ग्रहस्याम्बरपूर्णनागै–८०० र्विभाजिता भानि हृते गतैष्ये ।
भुक्त्या दिनान्यर्कशशाङ्कयोगे योगस्तथान्ये गतियोगभक्ते ॥१५॥

ग्रहस्य कलाः खखगजैर्भक्ता लब्धानि भानि गतानि नक्षत्राणि स्युः । शेषकला गतकलास्ता हरतः शुद्धा एष्यकलाः । ते गतैष्ये कले भुक्त्या ग्रहस्य गत्या हृते दिनानि गतैष्यानि भवन्ति । एवमर्कशशाङ्कयोगकलाः खखगजहृता लब्धो योगो गतो भवति । शेषं गतकलास्ता हरात् पतिता एष्यकलाः । एवं ये अन्ये गतैष्यकले ते रविचन्द्रगतियोगहृते गतैष्यदिनानि भवन्तीत्यर्थः ।

Aho ! Shrutgyanam

अत्रोपपत्तिः। यदि चक्रकलाभिः सप्तविंशतिर्भानि तदा ग्रहकलाभिः किम्। लब्धानि गतभानि $=\frac{२७ \text{ग्रक}}{२१६००}=\frac{\text{ग्रक}}{८००}$। शेषं वर्त्तमानभस्य गतकलास्ताः खखगजेभ्यः शुद्धा एष्यकलाः। ततोऽनुपातो यदि ग्रहभुक्त्या एकं दिनं तदा गतैष्यकलाभिः किम्। एवं लब्धानि गतैष्यदिनानि। अथार्कशशियोगरूपग्रहान्नक्षत्रवत् योगः साध्य इति। तत्र गतैष्यकलातोऽर्कशशिगतियोगतो दिनानि पूर्ववदनुपातेन साध्यानीति सर्वं सुगममिति ॥१५॥

व्यर्केन्दुलिप्ताः खरसाग्नि३६०भक्ताः फलं विरूपं नग-७भक्तशेषम्। प्राहुर्मुनीन्द्राः करणं बवाद्यं तिथेरिवात्रापि भवन्ति नाड्यः ॥१६॥

स्पष्टार्थम्।

अत्रोपपत्तिः। एकस्यां तिथौ करणद्वयं भवति। कृष्णपक्षभूतस्योत्तरदलाच्चत्वारि स्थिरकरणानि भवन्ति। अतः पूर्वार्धे प्रतिपदः शुक्लपक्षे चैकं स्थिरकरणम्। तदुत्तरदलतः सप्तचलकरणानां प्रवृत्तिः। तिथिभोगकलाः$=१२\times६०=७२०$। एतदर्धं करणभोगकलाः$=३६०$। अत एतत्कलाभिरेकं करणं तदा व्यर्केन्दुलिप्ताभिः किम्। लब्धगतकरणेभ्यः स्थिरकरणसङ्ख्यां रूपमितां विशोध्य चलकरणसङ्ख्याभिः सप्तमिताभिर्विरूपं फलं विभज्य शेषं बवादितो गतकरणं ज्ञेयम्। रविचन्द्रगत्यन्तरवशतोऽत्रापि गतैष्यनाड्यो भवन्तीति सर्वं निरवद्यम् ॥१६॥

नीहारांशौ परिलघुतनौ या तिथिर्भूतसंज्ञा
नूनं तस्यां भवति शकुनिर्नाम भागे द्वितीये।
ये तिथ्यर्धे तदनु भवतस्ते चतुष्पादनागे
किंस्तुघ्नाख्यं प्रतिपदि दले प्राचि सन्तो वदन्ति ॥१७॥

नीहारांशौ चन्द्रे परिलघुतनौ परिक्षीणशरीरे कृष्णपक्ष इत्यर्थः। शेषं स्पष्टार्थम्। शकुनिः। चतुष्पादः। नागः। किंस्तुघ्नमिति चत्वारि स्थिराणि करणानि सन्तीति ॥१७॥

Aho ! Shrutgyanam

सूर्येन्दुयोगे व्यतिपातवैधृतौ भार्धे भचक्रे गतियोगभाजिते ।
न्यूनाधिके गम्यगतं दिनादि पातः स्फुटः क्रान्तिलवैः समैः स्यात् ॥१८॥

इति करणप्रकाशे तिथ्याद्यधिकारः ॥ २ ॥

यदा रविचन्द्रयोः सायनयोर्योगो भषट्कं चक्रं वा भवति तदासन्ने व्यतिपातवैधृतौ पातौ भवत इति सर्वं भास्करीयपाताधिकारतः स्फुटमिति॥१८॥

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितो भादिविधौ तु हेतुः ॥

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायां तिथ्याद्यधिकारः समाप्तः ॥२॥

अथ पञ्चतारास्पष्टाधिकारः ।

नागेश्वरा११८दशयमा२१०गगनाष्टचन्द्राः १८०
खाङ्का९० रसानलयमा २३६ मृदुतुङ्गभागाः ।
शैघ्र्या गुणा मुनिनगा–७७ स्त्रिकृता ४३ द्विदस्राः २२
षट्कुञ्जरा ८६ दिनकरा–१२ श्च कुजादिकानाम् ॥ १ ॥

शैघ्र्या गुणाः शीघ्रान्त्यफलज्याः खार्कमितव्यासदले भौमादीनामेताः । भौ=७७ । बु=४३ । गु=२२ । शु=८६ । श=१२ । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । मन्दोच्चानामत्यल्पगतित्वात् स्थिरांशा आचार्येण पठिता यथा लल्लेन च स्वतन्त्रे “वस्वीशा दशबाहवोऽम्बरधृतिः खाङ्का रसत्र्यश्विनो मन्दांशा” इति पठिताः । यद्यपि लल्लमतेन युग्मौजपदीयशीघ्रपरिधिभेदेन भिन्ना भिन्नाः शीघ्रफलभागास्तथाप्यत्राचार्येण स्थूलतया स्थिरान् प्रकल्प्य खार्कव्यासदले पूर्वोक्ता भौमादीनां शीघ्रान्त्यफलज्याः पठिताः । लल्लमतेन युग्मान्ते शैघ्र्या गुणाः भौ=९३ । बु=३१ । गु=१६ । शु=९९ । श=९ । ओजान्ते भौ=९१ । बु=२९ । गु=१५ ।

Aho ! Shrutgyanam

शु=९७ । श=८ ॥ एते सार्धचतुर्भिर्गुणिता जाताः शीघ्रपरिधिभागाः ते खार्कत्रिज्याहता भांशहृता युग्मान्ते शीघ्रान्त्यफलज्याः । भौ=७९½ । बु=४६½ । गु=२४ । शु=८८½ । श=१३½ । ओजान्ते भौ=७६½ । बु=४३½ । गु=२२½ । शु=८९½ । श=१२ ॥ स्वल्पान्तरादोजान्तीयशीघ्रान्त्यफलज्यासमा आचार्योक्ताः सन्तीति सुधीभिर्ध्येयम् ॥ १ ॥

शीघ्रोच्चं ग्रहवर्जितं चलभवं केन्द्रं भुजज्या ततः

प्राग्वद्बाहुलवोनिताम्बरनव-९०ज्या कोटिजीवा भवेत् ।

ऐक्यं यच्चलघातकोटिगुणयोः केन्द्रे मृगाद्येऽन्तरं

कर्क्यादौ सति तद्भुजोत्थगुणयोर्वर्गैक्यमूलं श्रुतिः ॥ २ ॥

चलघातश्चलगुणः खार्कत्रिज्यायां शीघ्रान्त्यफलज्या । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । 'स्वकोटिजीवान्त्यफलज्ययोर्यो योगो मृगादावथ कर्कटादौ । केन्द्रेऽन्तरं तद्भुजजीवयोर्यद्वर्गैक्यमूलं कथितः सकर्णः' ॥ इति भास्करविधिना कर्णानयनस्य वासना स्फुटैवेति ॥ २ ॥

दोर्ज्या हता चलगुणेन तु कर्णभक्ता

चापीकृताऽऽशुफलमस्य दलं लवाद्यम् ।

स्वर्णं ग्रहे क्रियतुलादिगते स्वकेन्द्रे

कृत्वा ततो व्यपनयेन्मृदुकेन्द्रभागान् ॥ ३ ॥

ततो मन्दोच्चादर्धशीघ्रफलसंस्कृतमध्यग्रहं व्यपनयेत् शोधयेत् । ततो मृदुकेन्द्रभागान् विधाय बाहुगुणः कार्य इत्यग्रे सम्बन्धः। शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । 'घाताद्भुजज्यान्त्यफलज्ययोर्वा कर्णोद्धृता'दित्यादिना भास्करोक्तेन स्फुटा । धनर्णवासना च गोलयुक्त्या सिद्धान्तविदां विदितैवेति । 'मध्ये शीघ्रफलस्यार्ध'मिति सूर्यसिद्धान्तप्रमाणेनादौ मध्ये शीघ्रफलार्धसंस्कारः कृतः । ततः कर्मद्वयेऽपि समानं मन्दफलं स्वल्पान्तरतोऽङ्गीकृत्य मन्दफलार्धसंस्कारो न दत्त आचार्येण किन्तु मध्यमे सम्पूर्णं मन्दफलमेव दत्तमित्यग्रश्लोकेन सर्वं स्फुटमिति ।

अयमेव विधिर्ग्रहलाघवकारेण गणेशेनापि स्वीकृत इति ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

प्राग्वद्बाहुगुणस्ततः शर५-हतो भक्तो गजाम्भोधिभिः ४८
षड्बाणेन्दुभि-१५६रष्टशून्यशशिभिः१०८खाङ्काग्निभिः३६०षड्रसैः६६ ।
भौमान्मन्दफलं लवाद्यमखिलं तन्मध्यमे पूर्ववत्
तस्माच्छीघ्रफलं तदत्र सकलं कार्यं स्फुटः स्याद्ग्रहः ॥ ४ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः ।आचार्येण भौमादीनां परममन्दफलानि भागात्मकानि भौ=$\frac{१२०\times५}{४८}=\frac{२५}{२}$ । बु=$\frac{१२०\times५}{१५६}=\frac{५०}{१३}$ । गु=$\frac{१२०\times५}{१०८}=\frac{५०}{९}$ । शु=$\frac{१२०\times५}{३६०}=\frac{५}{३}$ । श=$\frac{१२०\times५}{६६}=\frac{१००}{११}$ । एतानि स्थिराणि कल्पितानि तानि च लल्लोक्तेभ्यो भिन्नानि । ततोऽनुपातो यदि खार्कमितकेन्द्रदोर्ज्यया एतानि मन्दफलानि तदा स्वकेन्द्रदोर्ज्यया किम् । परममन्दफलानां पञ्चमांशेन परममन्दफलानि त्रिज्यां चापवर्त्य लब्धो दोर्ज्यायाः सर्वत्र पञ्चगुणः । हरस्थाने च गजाम्भोध्यादय इति सर्वमुपपद्यते । मध्यमे संस्कारस्तु पूर्वश्लोक एव प्रतिपादित इति ॥ ४ ॥

दस्रा-२ हतं स्वमृदुकेन्द्रजभोग्यखण्डं
नन्दै-९ र्नृपै-१६ र्वसुयमेन्दुभि-१२८ रङ्गरामैः ३६ ।
खाभ्राश्विभि-२००श्च विभजेत् कुसुतादिकानां
भुक्तेः फलं कथितवत् स्वमृणं कलादि ॥ ५ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । यदि पञ्चदशभागैर्वा नवशतकलाभिर्भोग्यखण्डं लभ्यते तदा भौमादिमृदुकेन्द्रगत्या किम् । लब्धमद्यतनश्वस्तनमन्दकेन्द्रज्ययोरन्तरम् । तस्मात् पूर्वश्लोकेन यद्ग्रहमन्दफलं लवाद्यं तत् षष्टिगुणं जातमद्यतनश्वस्तनमन्दफलकलान्तरं गतिफलम् ।

एवं भौमस्य केन्द्रगतिः =उ ग − म्र ग = ५९′ । ८″ − ३१′ । २६″ = २८′ स्वल्पान्तरात् । गतिफलम् = $\frac{२८\times भो\times५\times६०}{१००\times४८}=\frac{२८ भो}{३\times४८}$

$= \frac{२८ भो}{१४४} = \frac{२ भो}{१०}$ स्वल्पान्तरादत्राचार्येणे $\frac{२ भो}{९}$ दं गृहीतम् । एवं सर्वे हराः स्वल्पान्तरत उपपद्यन्ते । तद्यथा

बु के ग = ६० । स्वल्पा. ।

गतिफलम् $= \frac{६० भो \times ५ \times ६०}{९०० \times १५६} = \frac{६० भो}{३ \times १५६} = \frac{६० भो}{४६८} = \frac{२ भो}{१६}$ स्वल्पान्तरतः ।

गु के ग = ५ स्वल्पा. । गतिफलम् $= \frac{५ भो \times ५ \times ६०}{९०० \times १०८} = \frac{५ भो}{३२४} = \frac{२ भो}{१२९} = \frac{२ भो}{१२८}$ स्वल्पान्तरतः ।

शु के ग = ६०′ स्वल्पा. । ग फ $= \frac{६० भो \times ५ \times ६०}{९०० \times ३६०} = \frac{६० भो}{३ \times ३६०} = \frac{२ भो}{३६}$

श के ग = २′ स्वल्पा. । ग फ $= \frac{२ भो \times ५ \times ६०}{९०० \times ६६} = \frac{२ भो}{१९८} = \frac{२ भो}{२००}$ स्वल्पा. ।

अत उपपन्नं सर्वम् ॥ ५ ॥

तदूनशीघ्रोच्चगतिः कुरामैः३१क्षुण्णाऽऽशुचापागतखण्डनिघ्नी ।
अष्ट–८घ्नकर्णेन हृताऽऽशुभुक्तेः फलं त्यजेत् खेटगतिः स्फुटा स्यात् ॥६॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । त्रिज्यया १२० यद्याद्यज्या–३१ समं भोग्यखण्डं तदा शीघ्रफलकोटिज्यया किं लब्धं शीघ्रफलज्यासाधने तात्कालिकं भोग्यखण्डं तदेव स्थूलतया शीघ्रफलज्यासाधने धूलीकर्मणि उपलब्धभोगखण्डसममाचार्येण स्वीकृतम् । एवं भोखं $= \frac{३१ कोज्याशीफ}{१२०}$ ∴ कोज्याशीफ $= \frac{१२० भोखं}{३१}$ । ततः 'फलांशखाङ्कान्तरशिञ्जिनीघ्नी द्राक्केन्द्रभुक्ति'रित्यादिना स्फुटकेन्द्रगतिः $= \frac{केग \times कोज्याशीफ}{शीक} = \frac{केग \times १२० भोखं}{३१ \times शीक}$

$= \frac{३१ केग \times भोख \times १२०}{३१ \times ३१ \times शीक} = \frac{३१ केग \times भोखं}{\frac{९६१}{१२०} \times शीक} = \frac{३१ केग \times भोखं}{८ शीक}$ स्वल्पान्तरात् ।

ततः शीघ्रोच्चभुक्तेः स्फुटकेन्द्रगतिं विशोध्य शेषं स्फुटा खेटगतिः स्यादित्यादि भास्करविधित एव स्फुटम् । तात्कालिकभोग्यखण्डज्ञानार्थं मदीयं चलनकलनं वा मन्मुद्रापितसिद्धान्ततत्त्वविवेकस्य ४०१ पृष्ठं

Aho ! Shrutgyanam

विलोक्यम् । अत्राचार्येण प्रथमचापं पञ्चदशभागात्मकं खार्कमितव्यासदलपरिधौ कल्पितम् । तत्र परिधिः $=\frac{२१६००\times१२०\div१८}{३४३८\div१८}=\frac{७२००\times२०}{१९१}$ ।

ततो यदि चक्रांशैरयं $\frac{७२००\times२०}{१९१}$ परिधिस्तदा पञ्चदशभागैः किं लब्धं प्रथमचापम् $=\frac{७२००\times२०\times१५}{३६०\times१९१}=\frac{२०\times२०\times१५}{१९१}=\frac{६०००}{१९१}=३१$ स्वल्पान्तरात् । अतोऽस्मिन्नपि परिधावाद्यज्यासममेवाद्यचापं स्वल्पान्तराद्भवति — इति सर्वमनुक्तमपि बुद्धिमता ज्ञायत एवेति सर्वं चतुरस्रम् ॥ ६ ॥

यदाऽधिकं शीघ्रगतेः फलं स्यात् तदाऽऽशुभुक्तिं फलतोऽभिजह्यात् ।
शेषं कलाद्यं विपरीतगत्या दिने दिने व्योमचरो भुनक्ति ॥ ७ ॥

स्पष्टार्थम् ॥ ७ ॥

रामाङ्कशीतकिरणैः १६३ शरवेदचन्द्रै-१४५
स्तत्त्वेन्दुभिः १२५ शरनृपै-१६५ स्त्रिभवैः ११३ क्रमेण ।
वक्रं प्रयान्ति चलकेन्द्रलवैः कुजाद्या-
श्चक्रच्युतैः क्रमगतिं च समाश्रयन्ति ॥ ८ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्त्यर्थं ग्रहलाघवे मत्कृता त्रिनृपैः शरजिष्णुभिरित्यादिश्लोकस्योपपत्तिर्द्रष्टव्या ॥ ८ ॥

रसर्तवः ६६ शीतमयूखदस्रा २१
यमेन्दुशीतद्युतयो ११२ द्विबाणाः ५२ ।
वेदाग्निचन्द्रा १३४ दिवसा निरुक्ताः
सद्भिः कुजादूवक्रगतौ क्रमेण ॥ ९ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । पूर्वश्लोकेन भौमस्य वक्रारम्भकेन्द्रांशकाः =१६३ । एते चक्रच्युता मार्गकेन्द्रांशकाः =१९७ । एभ्यो वक्रकेन्द्रांशकाः शुद्धाः शेषं वक्रस्थितिपर्यन्तं केन्द्रांशाः $=१९७-१६३=३४^{\circ}$ एषां कलाः =२०४०। यदि मध्यमकेन्द्रगत्या(५९′ । ८″)−(३१′ । ३६″)= २७′ ।

Aho ! Shrutgyanam

४२′ अनयैकदिनं लभ्यते तदा केन्द्रान्तरकलाभि–२०४०′ राभिः किम् ।
लब्धाः स्थूला दिवसाः $= \frac{२०४०'}{२७'।४२''} = \frac{१२२४००}{१६६२} =$ ७० । मध्यममन्दस्पष्टके-न्द्रगतिभेदेन आचार्येण ६६ दिवसाः पठिताः । एवमन्येषां स्थूला दिवसा उत्पादनीया इति । लल्लेनापि 'रसरसाः क्रमतः शशिबाहवो यमनिशाकर-शीतमरीचयः' इत्यादिना एत एव दिवसाः पठिताः ॥ ९ ॥

नागाश्विभिः २८ शरनखै–२०५ र्मनुभि–१८ र्गुणाष्ट-
क्ष्माभि–१८३ र्नखै–२० श्चलभवैर्निजकेन्द्रभागैः ।
अभ्युद्गमः सुरपतेः ककुभि च्युतैस्तै-
श्चक्राद्भवेन्नियतमस्तमयः प्रतीच्याम् ॥१०॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्त्यर्थं ग्रहलाघवे मत्कृता 'क्षितिजोऽष्टयमैरुदेति पूर्वे' इत्यादि श्लोकस्योपपत्तिर्विलोक्या ॥१०॥

रूपेषुभि–५१ र्गुणयमै–२३ रुदयो ज्ञभृग्वोः
पश्चाच्च्युतैर्भगणतोऽस्तमयोऽपि तैः प्राक् ।
संजायते द्विदहनैः ३२ कुनगै–७१ रहोभि-
र्दृश्यतेऽस्तमितयोरुदयस्तयोश्च ॥११॥

स्पष्टार्थमुपपत्तिश्च पूर्वश्लोकवत् सुगमा ॥११॥

व्योमाक्षिक्षितयो १२० नृपाः १६ खदहनाः ३० स्तम्बेरमाः ८ षड्गुणाः ३६
पश्चादस्तदिनानि भूमितनयादीनां भवन्ति क्रमात् ।
षष्ट्यङ्कै–६६० रचलाग्निभि–३७ र्द्वगगुणैः ३७२ शीतांशुबाणाक्षिभि–२५१
र्नेत्राम्भोधिगुणै–३४२ रहोभिरुदितास्तेऽस्तं प्रयान्ति स्फुटम् ॥१२॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । पूर्ववत् केन्द्रान्तरेण मध्यमकेन्द्रगत्या चानुपातेन स्थूला दिवसाः पठिता इति 'अभ्रार्काः क्षितिपा नभोहुतभुज' इत्यादिलल्लोदित-दिवससमा एवेति ॥१२॥

Aho ! Shrutgyanam

वक्रोदयास्तावधितोऽधिकोनाः स्वशीघ्रकेन्द्रस्य कला विभक्ताः ।
भवन्ति मन्दस्फुटभुक्तिहीनस्वशीघ्रगत्या दिवसा गतैष्याः ॥१३॥

इति करणप्रकाशे स्पष्टाधिकारः ॥ ३ ॥

स्पष्टार्थं केन्द्रगत्याऽनुपातेन वासना चातिसरला ॥१३॥

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितः स्पष्टगतौ तु हेतुः ॥

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायां स्पष्टाधिकारः समाप्तः ॥ ३ ॥

सूर्ये तुलाजादिगते दिनार्धजे
छाये युते दस्र–२ हृते पलप्रभा ।
छायाऽर्क–१२ वर्गैक्यपदं श्रुतिर्भवेत्
कर्णार्क–१२ वर्गान्तरजं पदं प्रभा ॥ १ ॥

स्पष्टार्थम् ।

विषुवद्दिने दिनदले द्वादशाङ्गुलनृभा पलभेति प्रसिद्धा । विषुवद्दिनं तु वर्षमध्ये सायनमेषतुलादिगते रवौ द्विर्भवति । अतस्तदुद्भवयोर्भयोर्योगार्द्धसमा पलभाऽङ्गीकृताऽऽचार्येण ततः पलकर्णानयनं पलकर्णतश्छायानयनं च प्रसिद्धमेव । भानौ गते क्रियतुलादिमहर्दले ये छाये तयोर्युतिदलं विषुवत्प्रभा स्यादिति लघ्वानयनमेवाचार्योक्तमिति ॥ १ ॥

सूर्या–१२ क्षभासंगुणिते त्रिभज्ये लम्बाक्षजीवे पलकर्णभक्ते ।
अक्षज्यकाया धनुरक्षभागा याम्याः स्वखार्का–२०शविवर्जिताः स्युः॥२॥

अक्षभागाः स्वस्य खार्क–१२० लवेन विवर्जितास्तदा वास्तवा अक्षभागाः स्युरित्यर्थः । शेषं स्पष्टम् ।

अत्रोपपत्तिः । अत्र भूपृष्ठस्थस्य शङ्कोर्वशेन विषुवद्दिने पलभा विदिता तद्वशतो मध्याह्ने रवेः पृष्ठीया नतांशा अक्षभागा जाताः । अतो रविदृग्लम्बनेन ते हीना गर्भाभिप्रायेण वास्तवा अक्षभागाः स्युः । तत्राक्षभागा गणितागता द्विगुणाः स्वल्पान्तरात् जाता पृष्ठीयनतांशज्या=२अ ।

Aho ! Shrutgyanam

ततोऽनुपातो यदि खार्क—१२० मितया पृष्ठीयनतांशज्यया रवेः परमं लम्बनं तद्गतिपञ्चदशांशसमं स्वल्पान्तरात् कलाचतुष्टयं लभ्यते तदा पृष्ठीयनतज्यया किम् । लब्धा लम्बनकलाः षष्टिहृता जातं भागाद्यं दृग्लम्बनम् $= \frac{\text{२ अ} \times \text{४}}{\text{१२०} \times \text{६०}} = \frac{\text{अ}}{\text{९००}}$ । अतः 'स्वखाकांश' इत्यत्र 'खखाङ्कांश' इति पाठः साधुरिति सुधीभिर्भृशं विचिन्त्यम् ॥ २ ॥

ग्रहस्य दोर्ज्या शरनेत्र–२५ निघ्नी दस्राङ्ग–६२ भक्ताऽऽप्तफलस्य चापम् ।
क्षेपोनयुक्तं स्युरपक्रमांशास्तेषां तु दिग्गोलवशात् खगस्य ॥ ३ ॥

खगस्य सायनखचरस्य गोलवशात् तेषामपक्रमांशानां दिग्ज्ञेयेति । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । खार्कमिते व्यासदले परमक्रान्तिज्या $= \text{४९} - \frac{\text{१}}{\text{४}} = \frac{\text{१९५}}{\text{४}}$ । ततोऽनुपातो यदि त्रिज्यया जिनज्या तदा सायनखेटदोर्ज्यया किं लब्धा क्रान्तिज्या $= \frac{\text{१९५} \times \text{दोर्ज्या}}{\text{४} \times \text{१२०}} = \frac{\text{५} \times \text{३९} \times \text{दोर्ज्या}}{\text{४} \times \text{१२०}}$
$= \frac{\text{५} \times \text{१३} \times \text{दोर्ज्या}}{\text{४} \times \text{४०}} = \frac{\text{५} \times \text{५} \times \text{१३} \times \text{दोर्ज्या}}{\text{४} \times \text{४०} \times \text{५}} = \frac{\text{२५ दोर्ज्या}}{\frac{\text{८००}}{\text{१३}}} = \frac{\text{२५ दोर्ज्या}}{\text{६२}}$ स्वल्पान्तरात् । अस्याश्चापमपक्रमांशा भवन्ति । आचार्येण सूर्यसिद्धान्तादिवत् स्वल्पान्तरात् कदम्बप्रोतीयशरसंस्कारेणैव स्फुटा क्रान्तिः साधितेति सर्वं निरवद्यम् ॥ ३ ॥

लङ्कोदयाः कुञ्जरशैलदस्रा २७८
गोनन्दपक्षा–२९९ स्त्रिरदा ३२३ विनाड्यः ।
ऊनैश्चरार्धैः सहिता विलोमै-
र्व्यस्ताः स्वदेशे भवनोदयाः स्युः ॥ ४ ॥

स्पष्टार्थमुपपत्तिश्च निरक्षोदयासूनां विनाडीकरणेन स्फुटेति ॥ ४ ॥

सूर्येण भोग्यान् भवनस्य भागान् स्वभोदयघ्नान् विभजेत् खरामैः ३० ।
लब्धं त्यजेदिष्टविनाडिकाभ्यो भानौ क्षिपेद्भोग्यमथावशेषात् ॥ ५ ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्पष्टार्थम् ॥ ५ ॥

स्वक्षोदयान् भोदयशुद्धतुल्यान् राशीन् क्षिपेद्भास्वति खाग्नि-३०निघ्नान् शेषाद् विशुद्धोदयमानभक्ताद्भागादि लब्धं च विलग्नमिष्टम् ॥ ६ ॥

स्पष्टार्थम् ॥ ६ ॥

तदेव भार्धान्वितमस्तलग्नं गम्यं रवेः स्यादुदयाद्गतं यत् ।
प्राग्वत् फलं तद्युतिरेव युक्तो मध्योदयैरिष्टविनाडिकाः स्युः ॥ ७ ॥

स्पष्टार्थम् ॥ ७ ॥

सवितुरगतकालाल्पेष्टकालः खरामै-३०
र्गुणित उदय भक्तांशान्वितोऽर्को विलग्नम् ।
रवितनुविवरांशैः सङ्गुणः स्वोदयोऽसौ
खशिखि-३० विहृतकालश्चैकभे लग्नभान्वोः ॥ ८ ॥

स्पष्टार्थम् ॥ ८ ॥

क्रान्त्यक्षयोगविवरं समभिन्नगोले-
ऽनष्टं विशोध्य नवते-९० रवशेषमौर्व्या ।
भक्तेऽविनष्टभवनत्रितयोत्थजीवे १२०
सूर्या-१२ हते दिनदले खलु भाश्रुती स्तः ॥ ९ ॥

अनष्टमविनष्टं च नतांशा दिनार्धजाः । शेषं स्पष्टम् ।

अत्रोपपत्तिः । पलावलम्बावपमेन संस्कृतौ नतोन्नते ते भवतो दिवादले इत्यादिभास्कर प्रकारेण सुगमा । तत उन्नतांशज्यया नतज्यात्रिज्ये तदा द्वादशाङ्गुलशङ्कुना किम् । इत्यनुपातेन छायाकर्णौ भवत इति सर्वं सुगमम् ॥ ९ ॥

कालो गतः प्रागपरत्र शेषः स्यादुन्नतस्तद्रहितं दिनार्धम् ।
नतो रस-६ घ्ना घटिका लवाः स्युर्जीवा नतस्योत्क्रमतो विधेया॥१०॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । स्यादुन्नतं द्युगतशेषकयोर्यदल्पमित्यादिना सुगमम् । इष्टान्त्याज्ञानार्थं नतोत्क्रमज्या साधितेति ॥१०॥

Aho ! Shrutgyanam

मेषादिगेऽर्के चरखण्डजीवया त्रिज्या युताऽन्त्या रहिता तुलादिगे ।
तया नतज्योनितया हृताऽन्त्यका स्यादिष्टकर्णो द्युदलश्रवोहता ॥११॥

नतज्योनितया नतोत्क्रमज्याहीनया । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । 'नतोत्क्रमज्या शर इत्यनेन हीनाऽन्त्यका वाऽभिमताऽन्त्यकास्या' दित्येनेन भास्करविधिना साधिताचार्येणेष्टान्त्या ततो द्युज्याऽनुपातेनेष्टहृतिः $= \frac{\text{इ अं} \times \text{द्यु}}{\text{त्रि}}$ हृतिश्च $= \frac{\text{अन्त्या} \times \text{द्यु}}{\text{त्रि}}$ । त्रिज्यार्कघातः श्रुतिहृन्नरः स्यादित्यादि भास्करविधिना मध्याह्नशङ्कुः $= \frac{\text{१२ त्रि}}{\text{मक}}$ हृतिः कर्णः । मध्याह्नशङ्कुः कोटिः । तच्छङ्कुतलं भुजः । एवमिष्टहृतिः कर्णः । इष्टशङ्कुः कोटिः । तच्छङ्कुतलं भुजः । इति जात्यद्वयमक्षक्षेत्रत्वात् सजातीयम् । ततोऽनुपातो यदि हृतिकर्णेन मध्यशङ्कुस्तदेष्टहृतिकर्णेन किम् । जात इष्टशङ्कुः $= \frac{\text{म शं} \times \text{इ हृ}}{\text{हृ}} = \frac{\text{१२} \times \text{त्रि} \times \text{त्रि}}{\text{अन्त्या} \times \text{द्यु} \times \text{मक}} \times \frac{\text{इ अं} \times \text{द्यु}}{\text{त्रि}}$
$= \frac{\text{१२} \times \text{त्रि} \times \text{इ अं}}{\text{अन्त्या} \times \text{मक}}$ यदीष्टशङ्कुना त्रिज्या कर्णस्तदा द्वादशाङ्गुलशङ्कुना किम् । लब्ध इष्टच्छायाकर्णः $= \frac{\text{१२} \times \text{त्रि}}{\text{इ शं}} = \frac{\text{अन्त्या} \times \text{मक}}{\text{इ अं}}$ । अत उपपन्नम् ॥११॥

इष्टोन्नतो व्योमगजेन्दु-१८० ताडितो भक्तो द्युमानेन फलज्यया हृता ।
त्रिज्या दिनार्धश्रवणेन सङ्गुणाऽङ्गुलादिरिष्टश्रवणोऽथवा भवेत् ॥१२॥

इष्टोन्नत इष्टोन्नतकालः खनागेन्दुभि-१८० राहतो द्युमानेन दिनप्रमाणेन हृतः । फलस्य ज्यया त्रिज्यादिनार्धभाकर्णाहतिर्हृताऽथवेष्टश्रवणो भवेदित्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । दिनार्धमानेन $\frac{\text{दि}}{\text{२}}$ नवतिरंशास्तदेष्टोन्नतकालेन किमिति स्थूलानुपातेनेष्टान्त्यचापसमा भागाः फलसंज्ञकाः $= \frac{\text{९०} \times \text{इ उ}}{\frac{\text{दि}}{\text{२}}} = \frac{\text{१८०} \times \text{इ उ}}{\text{दि}}$ ।
अस्य ज्या फलज्या इष्टान्त्या स्थूलतो भवति ततः पूर्वश्लोकविधिनाऽचार्येणान्त्यां स्थूलां त्रिज्यां प्रकल्प्य साधित इष्टच्छायाकर्णः =

Aho ! Shrutgyanam

$\frac{\text{अन्त्या} \times \text{मक}}{\text{इअं}} = \frac{\text{त्रि} \times \text{मक}}{\text{फज्या}}$ । अत उपपन्नं यथोक्तम् ॥१२॥

अन्त्या दिनार्धश्रवणेन निघ्नी हृतेष्टकर्णेन फलोनिताऽन्त्या ।
शेषस्य यच्चापमथ क्रमेण रसो-६ द्धृतं ता नतनाडिकाः स्युः ॥१३॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । एकादशश्लोकोक्तविधिवैपरीत्येन सुगमा ॥१३॥

दिनार्धकर्णेन हता त्रिभज्यका विभाजितेष्टश्रवणेन तत् फलम् ।
क्रमेण चापं दिनखण्डसङ्गुणं खनन्द-६० भक्तं घटिकाः स्युरुन्नताः ॥१४॥

इति करणप्रकाशे त्रिप्रश्नाधिकारः ॥४॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । द्वादशश्लोकोक्तविधिवैपरीत्येन सुगमा ॥१४॥

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितः प्रश्नविधौ तु हेतुः ॥

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायां त्रिप्रश्नाधिकारः समाप्तः ॥४॥

तिथिगतैष्यघटीगुणिते गती गगनषड्-६० विहृते च कलादिना ।
विरहितौ सहितौ रविशीतगू समकलौ ग्रहणे भवतः सदा ॥१॥

स्पष्टार्थमुपपत्तिश्च चालनविधिना स्फुटा ॥१॥

भुक्तिर्दशां-१० शसहिता दलिता च भानो-
र्बिम्बं विधोर्गुण-३ हता विहृताऽब्धिशैलैः ७४।
आशा-१० हते युगकरै-२४ र्विषयाद्रिभि ५७ पस्ते
भक्ते गती फलकलाविवरं त्वगोः स्यात् ॥२॥

ते रविचन्द्रयोर्गती आशा-१० हते क्रमेण चतुर्विंशत्या विषयाद्रिभि-७५ हृते फलकलानां विवरं तु अगो राहोर्बिम्बं स्यात् । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । भानोर्गतिः स्वदशभागयुतार्धिता वेत्यादिभास्करोक्तेन रविचन्द्रबिम्बानयनं स्फुटम् । भानोर्गतिः शरहता रविभिर्विभक्ते-

Aho ! Shrutgyanam

त्यादिभास्करविधिना भूभाकलात्मकबिम्बम् $=\frac{\text{५ रग}}{\text{१२}} \backsim \frac{\text{२ चग}}{\text{१५}}$
$=\frac{\text{२×५ चग}}{\text{१५×५}}-\frac{\text{५×२×रग}}{\text{१२×२}}=\frac{\text{१० चग}}{\text{७५}}-\frac{\text{१० रग}}{\text{२४}}$ । अत उपपन्नं सर्वम् ॥ २ ॥

आवरणं तिमिरं हिमरश्मेस्तीव्रकरस्य सुधाकरबिम्बम् ।
आवरणावरणीयकयोः स्यान्मण्डलयोगदलं तु तदाख्यम् ॥३॥

तदाख्यं मण्डलयोगदलं वा मण्डलयोगखण्डम् । शेषं स्पष्टार्थम् ॥३॥

पातोनशीतद्युतिबाहुजीवा नन्दा–९ हता वेद–४ हृता शरः स्यात् ।
तद्दिग्–विपातेन्दुवशाच्छरोनं छन्नं भवेन्मण्डलयोगखण्डम् ॥ ४ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । अत्र चक्रशुद्धः पातस्तेनान्येषां सपातेन्दुरत्र विपातेन्दुतुल्यः । ततोऽनुपातो यदि त्रिज्यातुल्यया विपातचन्द्रदोर्ज्यया परमः कलात्मकः शरः खभ–२७० कलासमो लभ्यते तदेष्टविपातचन्द्रदोर्ज्यया किम् । लब्धः कलात्मकः शरः $=\frac{\text{२७०×विपादोर्ज्या}}{\text{१२०}}=\frac{\text{९×दोर्ज्या}}{\text{४}}$ । अत उपपन्नं शरानयनम् । शेषोपपत्तिः स्फुटैव सिद्धान्तविदाम् ॥ ४ ॥

ग्राह्यस्य बिम्बादधिकं यदा स्याच्छन्नं तदानीं ग्रहणं समग्रम् ।
यदा पुनर्मानदलैक्यमूनं विक्षेपतो न ग्रहणं तदा स्यात् ॥ ५ ॥

स्पष्टार्थमुपपत्तिश्च स्पष्टा ॥ ५ ॥

ग्राह्यार्धेन ग्राहकार्धे युतोने स्वघ्ने ताभ्यां क्षेपवर्गं विशोध्य ।
मूले षष्टि–६०घ्ने वियोगेन गत्योर्भक्ते स्युः स्थित्यर्धमर्दार्धनाड्यः ॥५॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । 'मानार्धयोगान्तरयोः कृतिभ्यां शरस्य वर्गेण विवर्जिताभ्या' मित्यादिभास्करविधिना स्फुटा ॥ ६ ॥

स्थित्यर्धमर्दार्धजनाडिकाहता
भुक्तिर्विभक्ता खरसैः ६० कलादिकम् ।
आदौ क्षयोऽन्त्ये धनमर्कचन्द्रयोः
पातेऽन्यथा स्यात् स्वमृणं ततोऽसकृत् ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्पष्टार्थम् । उपपत्तिश्च ' स्थित्यर्धनाडीगुणिता स्वभुक्ति ' रित्यादिना ' एवं विमर्दार्धफलोनयुक्ते'त्यादिना च भास्करविधिना स्फुटा ॥७॥

तिथ्यन्तमूनमधिकं स्थितिखण्डकाभ्यां
प्राग्रासमोक्षसमयं क्रमशो वदन्ति ॥
स्थित्यर्धयोरिह युतिं खलु पर्वकालं
मर्दार्धसंयुतिमदर्शनकालमिन्दोः ॥ ८ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । 'मध्यग्रहः पर्वविरामकाले' इत्यादिना भास्करोक्तेन स्फुटैव ॥ ८ ॥

अभीष्टहीनस्थितिखण्डनिघ्नं गत्यन्तरं षष्टि-६०हृतं भुजः स्यात् ।
तात्कालिकेन्दोरिषुरेव कोटिस्तद्वर्गयोगात् पदमिष्टकर्णः ॥ ९ ॥

अत्रोपपत्तिः । ' वीष्टेन निघ्नाः स्थितिखण्डकेने'त्यादिना भास्करोक्तेन तथा ' कोटिश्च तत्कालशरोऽथ कोटीदोर्वर्गयोगस्य पदं श्रुतिः स्या'दिति भास्करोक्तेनैवेष्टकर्णानयनवासना सुगमैव ॥ ९ ॥

गत्यन्तरे मर्ददलाहते च प्राग्वद्विधेया भुजकोटिकर्णाः ।
पिधानसन्दर्शनकालजाः स्युर्ग्रासो विकर्णस्तनुयोगखण्डः ॥१०॥

गत्यन्तरे मर्ददलाहते प्राग्वत् षष्टिहृते भुजः स्यात् । तत्कालशरश्च कोटिस्तद्वर्गयोगपदं कर्ण इति प्राग्वद्भुजकोटिकर्णाः साध्याः ।

पिधानसन्दर्शनकालजाः संमीलनोन्मीलनकालभवाः । तनुयोगखण्डो मानैक्यार्धं विकर्ण इष्टकर्णरहितस्तदा ग्रास इष्टग्रासो भवतीत्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । संमीलनोन्मीलनकाले वीष्टे स्थितिखण्डे मर्दार्धं एव । अतस्ते एव गत्यन्तरगुणे षष्टिहृते तत्कालयोर्भुजौ भवतः । कर्णोनं मानैक्यार्धमिष्टग्रासो भवतीति सर्वा वासना स्फुटैव ॥ १० ॥

अहर्दलाद्रात्रिदलावसानं यावत् कपालं कथयन्ति पूर्वम् ।
ततो दिनार्धान्तमपूर्वमिन्दोर्भानोर्भवेतां ग्रहणेऽन्यथा ते ॥ ११ ॥

Aho ! Shrutgyanam

इन्दोश्चन्द्रस्य ग्रहणे दिनार्धाद्रात्रिदलपर्यन्तं पूर्वं ततो रात्रिदलाद्दिनदलं यावदपूर्वं पश्चिमं कपालं कथयन्ति सिद्धान्तविद इत्यध्याहार्यम् । भानोर्ग्रहणे ते द्वे कपाले अन्यथा विपरीते भवतः । अर्थात् दिनदलाद्रात्रिदलपर्यन्तं पश्चिमं रात्रिदलाद्दिनदलं यावत् पूर्वं कपालमिति वेदितव्यम् ।

अत्रोपपत्तिः । याम्योत्तरवलयेन गोलस्य प्राक्पश्चिमक्षितिजगतौ यौ भागौ ताविव पूर्वपश्चिमकपालत्वेन व्यवहृतौ । तत्रस्था ग्रहाश्च तत्कपालीया एवोच्यन्ते । चन्द्रग्रहे दिनार्धाद्रात्रिदलं यावत् तावच्चन्द्रः पूर्वकपाले ततः परं पश्चिमकपाले । एवं रविश्च रात्रिदलाद्दिनदलं यावत् तावत् पूर्वकपाले ततः परं पश्चिमकपाल इति सर्वं गोलविदामतिरोहितमेवेति ॥ ११ ॥

स्पर्शादिकालोत्थनतज्यकाभिरक्षप्रभा सङ्गुणिता विभक्ता ।
निजाक्षकर्णेन फलस्य चापं याम्योत्तरं पश्चिमपूर्वयोः स्यात् ॥१२॥

नतज्यकाभिर्नतकालोत्क्रमज्याभिः । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । अत्र नतकालोत्क्रमज्यासमा सममण्डलीयनतभागोत्क्रमजीवा स्थूलाऽऽचार्येण स्वीकृता ततो ज्याऽक्षज्यागुणा द्युज्यया हृता जातमक्षवलनं स्थूलं द्युज्यास्थाने त्रिज्यां परिकल्प्य $\frac{\text{नउ} \times \text{ज्याअ}}{\text{त्रि}}$ $= \frac{\text{नउ} \times \text{त्रि} \times \text{पलभा}}{\text{त्रि} \times \text{पलकर्ण}} = \frac{\text{नउ} \times \text{पलभा}}{\text{पलकर्ण}}$ । उत्क्रमज्यया वलनं न समीचीनं भवतीत्येतदर्थं भास्करीया वलनवासनाऽवलोकनीया । आचार्येण च ' स्पर्शादिकालजनतोत्क्रमशिञ्जिनीभिः क्षुण्णाऽक्षभा पलभवश्रवणेन भक्ता', इति लल्लानयनानुसारेणोत्क्रमज्ययेह वलनमानीतामिति । इदं वलनं पूर्वकपाले उत्तरं पश्चिमे दक्षिणमिति सिद्धान्तविदां विदितमेवेति सर्वं स्फुटम् ॥१२॥

ग्राह्यात् सत्रि-३गृहाद्विलोमविधिना दोर्ज्या विधेया ततः
प्राग्वत् क्रान्तिरसौ ग्रहत्रययुतस्येन्दोर्दिशि स्यादिह ।
योगोऽपक्रमचापयोः समदिशोः कार्यो वियोगोऽन्यथा
तज्ज्या वेद-४हृताऽङ्गुलादिवलनान्येवं भवन्ति स्फुटम् ॥ १३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

चन्द्रग्रहणे ग्राह्यश्चन्द्रः सूर्यग्रहणे च ग्राह्यः सूर्यस्तस्माद्राशित्रयसहिताद्दोर्ज्या विलोमविधिना कार्या । अर्थात् सत्रिभग्रहस्योत्क्रमज्या साध्या ततस्तस्याः प्राग्वत् क्रान्तिः कार्या । अस्यापक्रमस्य पूर्वागताक्षवलनचापस्य च समदिशोर्योगोऽन्यथा वियोगः कार्यः । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । सत्रिभग्रहस्य दोर्ज्या खेटकोटिज्या भवति सा जिनज्यागुणा द्युज्याहृताऽऽयनं वलनं वास्तवं भवति । आचार्येणात्रापि लल्लस्य ‘ ग्राह्यात् सराशित्रितयाद्भुजज्या व्यस्ता ’ इत्यानयनानुसारेणोत्क्रमज्या जिनज्यागुणिता स्थूलतया च त्रिज्यामितया द्युज्यया हृता । एवं तत्क्रान्तिज्या जाता तच्चापं क्रान्तिरायनवलनांशाः सत्रिभग्रहदिक्का जाताः । प्रथमं चापसंज्ञकमक्षवलनचापं साधितम् । तयोः संस्कारेण स्फुटवलनभागानानीय तज्ज्या त्रिंशदङ्गुलव्यासदले परिणामिता जातं स्फुटवलनम् $= \frac{\text{३०} \times \text{तज्ज्या}}{\text{१२०}} = \frac{\text{तज्ज्या}}{\text{४}}$ । अत उपपन्नम् ॥ १३ ॥

स्वाब्ध्यं-४शयुक्तं दिनमुन्नताढ्यं दिनार्धभक्तं विहृतिस्तयाऽऽप्ताः ।
मानार्धमानैक्यदलेषुकर्णदोःकोटयः सन्ति तदङ्गुलानि ॥ १४ ॥

दिनं दिनमानं स्वीयचतुर्थांशेन सहितमुन्नतकालयुक्तं च यद्भवेत् तद्दिनार्धभक्तं विहृतिरर्थात् छेदः स्यात् । शेषं स्पष्टम् ।

अत्रोपपत्तिः । अत्राङ्गुललिप्ताः साध्यन्ते तत्रोदये सार्धकलाद्वयेनै-(२½=५/२) कमङ्गुलं मध्याह्ने सार्धकलात्रयेण चैकमङ्गुलं कल्पितम् । अवान्तरेऽनुपातः । दिनार्धसमोन्नतेनाङ्गुललिप्तान्तरमेका कला तदेष्टोन्नतेन किम् । लब्धं सार्धद्वययुक्तं जाता अङ्गुललिप्ता विहृतिः

$= \frac{\text{५}}{\text{२}} + \frac{\text{उन्न}}{\frac{\text{दि}}{\text{२}}} = \frac{\frac{\text{५दि}}{\text{४}} + \text{उन्न}}{\frac{\text{दि}}{\text{२}}}$, अनया विहृत्यैकमङ्गुलं तदा मानार्धादिना कियन्त्यङ्गुलानि । इत्यनुपातेन तदङ्गुलानि जातानीति सर्वमुपपद्यते ॥१४॥

आदौ व्योमगुणा-३० ङ्गुलैः परिमितं मानैक्यखण्डाङ्गुलैः
पश्चाद्ग्राह्यदलाङ्गुलैश्च वलयं संसाधिताशं लिखेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

आद्ये प्राचि यथादिशं स्ववलनेऽर्केन्द्वोर्विमोक्षादिगे
पश्चात् स्पार्शिकमोक्षजेऽन्यदिशिजे ज्यावत् क्रमात् प्रापयेत्॥१५॥

अत्र स्फुटं वलनं त्रिंशदङ्गुलव्यासार्धे परिणतं प्रागेव कृतमतः प्रथमं वृत्तं वलनदानार्थं त्रिंशदङ्गुलव्यासदलेन विलिखितं ततो 'ग्राह्यार्धसूत्रेण विधाय वृत्त' मित्यादिभास्करविधिनैव सर्वं कृतमिति स्फुटम् ॥१५॥

शिलीमुखस्यात्र ककुप्प्रदेशाद्याम्याच्च सौम्याच्च समान्यकाष्ठे ।
मध्यं नयेत् पश्चिमपूर्वकाष्ठे तिग्मद्युतेश्चन्द्रमसोऽन्यथा स्यात् ॥१६॥

शिलीमुखस्य बाणस्य ककुप्प्रदेशाद्दिक्प्रदेशाद्याम्याद्वा सौम्यात् मध्यं मध्यवलनं समान्यकाष्ठे समभिन्नदिके क्रमेण पश्चिमपूर्वकाष्ठे पश्चिमपूर्वाभिमुखे नयेत् प्रापयेत् । तिग्मद्युतेः सूर्यस्यैवमेव ज्ञेयम् । चन्द्रस्य चातोऽन्यथा विपरीतं स्यात् । अर्थात् शरं विपरीतदिक्कं प्रकल्प्य ततः पूर्ववन्मध्यवलनं देयमित्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिर्भास्करीयपरिलेखलेखनतः 'शरा यथाशा ग्रहणे खरांशोश्चन्द्रग्रहे व्यस्तदिशस्तु वेद्याः' इत्यादि वचनतश्च स्फुटा ॥१६॥

वृत्ते द्वितीये वलनाग्रकेन्द्रस्पृक्सूत्रचिह्नात् प्रथमान्त्यबाणौ ।
केन्द्रान्न्यसेन्मध्यशरं च मध्येऽर्केन्द्वोः स्वकीयान्यदिशि क्रमेण॥१७॥

स्पष्टार्थम् ॥१७॥

ग्राह्यवृत्तेऽथ बाणाऽग्रतः खण्डिते ग्राहकार्धप्रमाणेन सूत्रेण वा ।
स्पर्शमोक्षौ भवेतां दिशौ लक्ष्यते मध्यमग्राससंस्थानमाकारतः ॥१८॥

स्पष्टार्थम् ॥१८॥

प्राग्ग्रासे बाहुरिन्दोः स्ववलनककुभि प्राचि पश्चात् स मोक्षे
केन्द्रात् पूर्णोऽन्यथा स्यात् स्वदिशि दिनपतेः कोटिरिन्दोर्भुजाग्रात् ।
व्यस्ता मध्यात् प्रसार्य श्रुतिमनृजुगतां कोटिकर्णाग्रयोगा-
दिष्टग्रासादिसिद्ध्यै सुमतिरनुलिखेद्ग्राहकार्धेन वृत्तम् ॥१९॥

स्पष्टार्थम् । उपपत्तिश्च भास्करपरिलेखात् स्फुटा ॥१९॥

Aho ! Shrutgyanam

दिनगणे शशिशैलजिनो–२४७१निते शत–१००गुणे द्विनवेषुयमो२५९२द्धृते।
फलतुरङ्गभुजङ्गशरा–५८७धिके खगजचन्द्र–१८०हृतेऽथ दिवागणं॥२०॥

अहर्गणे शशिशैलजिनो—२४७१ निते ततः शतगुणे द्विनवेषुयमै-२५९२ हृते सति यत् फलं तेन तुरङ्गभुजङ्गशरै—५८७ अधिके सहिते दिवागणे खगजचन्द्र—१८० हृतेऽथ यत् फलं तद्गौर्विभजेदित्यग्रे सम्बन्धः इत्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । अत्र सपातार्कस्याहर्गणसम्बन्धिनो दिनानि साध्यन्ते। तत्रार्यभटमतेन रविभगणाः =४३२०००० । पातभगणाः =२३२२२६। द्वयोर्योगे सपातभगणाः= ४५५२२२६ । यदि युगकुदिनैः सपातार्कभगणादिनानि लभ्यन्ते तदैकेन दिनेन किम् । लब्धं रूपमितेऽहर्गणे

$$\text{सपातार्कदिनमानम्} = \frac{\text{४५५२२२६} \times \text{१२} \times \text{३०} \div \text{६०}}{\text{१५७७९१७५००} \div \text{६०}} = \frac{\text{२७३१३३५६}}{\text{२६२९८६२५}}$$

$$= \text{१} + \frac{\text{१०१४७३१}}{\text{२६२९८६२५}} = \text{१} + \cfrac{\text{१}}{\text{२५} + \cfrac{\text{१}}{\text{१} + \cfrac{\text{१}}{\text{११} + \frac{\text{२१५९१}}{\text{८४३८१}}}}}$$

रूपं पृथकृत्थं कृत्वाऽस्य विततभिन्नस्यासन्नमानानि, $\frac{\text{१}}{\text{२५}}$, $\frac{\text{१}}{\text{२६}}$, $\frac{\text{१२}}{\text{३११}}$,… एतानि स्वल्पान्तराद्वास्तवभिन्न–(वाभि) समानि । अतः वाभि $= \frac{\text{१२}}{\text{३११}}$

$\therefore$ ३११ वाभि = १२

वा, ३११ × ८ वाभि = २४८८ वाभि = ९६ । अथ वाभि $= \frac{\text{१}}{\text{२६}} = \frac{\text{४}}{\text{१०४}}$।

अतः १०४ वाभि = ४

द्वयोर्योगे २५९२ वाभि = १०० । अतः वाभि $= \frac{\text{१००}}{\text{२५९२}}$;

तत एकाहर्गणे सपातार्कदिनमानम् $= \text{१} + \frac{\text{१००}}{\text{२५९२}}$ । इदमहर्गणगुणं सपातार्कदिनानि $= \text{अ} + \frac{\text{१०० अ}}{\text{२५९२}}$ । प्राचीनैर्वराहाद्यैः सपातार्कस्य षड्भिः षड्भिर्मासैरर्थात् खगजचन्द्र—१८० दिनैरेकैकः पर्वपतिरङ्गीक्रियते । ते च पर्वेशाः सप्त सन्ति।(मन्मुद्रापित-भट्टोत्पलविवृति-सहित-वराह-बृहत्संहिताया राहुचारे १२८ – १२९ पृष्ठे विलोक्य) । शशिशैलजिन-

Aho ! Shrutgyanam

णक्षेपस्य तथा तुरङ्गभुजङ्गशरधनक्षेपस्य साधनं ग्रन्थान्ते भविष्यति । इह तु दिनगणस्य गुणहाराविवोपपन्नाविति ॥२०॥

फलमगै-७ र्विभजेत् कमलासनाद्भवति पर्वपतिस्त्ववशेषकः ।
द्रुहिण-चन्द्र-पुरन्दर-वित्तपा वरुण-पावक-दण्डधराधिपाः ॥२१॥

स्पष्टार्थम् । उपपत्तिश्च पूर्वश्लोकेनातिसुगमा ॥२१॥

आद्यन्त्ये चाऽऽधूम्रवर्णानुरूपं खण्डग्रासे भृङ्गवृन्दानुकारि ।
ग्रासो रक्तश्यामवर्णोऽधिकोऽर्धात् सर्वग्रासे पिङ्गलः शीतरश्मिः॥२२॥

इति करणप्रकाशे चन्द्रग्रहणाधिकारः ॥५॥

भृङ्गवृन्दानुकारि भ्रमरपुञ्जसदृशमर्थात् कृष्णमित्यर्थः । शेषं स्पष्टार्थम् ॥२२॥

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितश्चन्द्रयुतौ तु हेतुः ॥

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायां चन्द्रग्रहणाधिकारः समाप्तः ॥५॥

अथ सूर्यग्रहणाधिकारः ।

तिथेर्नताद्बाण-५ हृताद्गृहाद्यं तेनोनितः प्राचि युतोऽपरत्र ।
सूर्यस्ततः क्रान्तिलवा युतोनाः स्वाक्षेण तुल्यान्यदिशोर्लवाः स्युः॥१॥

तिथेर्नताद्दर्शान्तकालिकनतकालाद्घट्यात्मकात् पञ्चभक्ताद्यद्गृहाद्यं फलं तेन प्राचि प्राक्कपाले सूर्यो हीनोऽपरत्र पश्चिमकपाले युक्तस्ततो ये क्रान्तिलवास्ते तुल्यान्यदिशोः स्वाक्षांशेन युतोना लवा वित्रिभनतलवाः स्वल्पान्तरतः स्युरित्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । नतघटिकाः षड्गुणा भागास्ते त्रिंशद्धृता राशयः स्युरेवं नतघटिकाः पञ्चभक्ता नाडीवृत्ते रविगतध्रुवप्रोतयाम्योत्तरवृत्तान्तर्गता राशय एव स्वल्पान्तरादर्कदशमलग्नान्तरांशा वा वित्रिभार्कान्तरांशा जातास्ततः संस्कारेण वित्रिभमानं स्फुटम् । वित्रिभक्रान्तिपलभागानां संस्कारेण वित्रिभनतांशाः साधिता इति सर्वमुपपन्नम् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

लवोनपूर्णाङ्क–९० जशिञ्जिनीहता गृहाद्यमौर्व्या खखषड्गुणो ३–६०० द्धृता।
ऋणं धनं स्याद्‌घटिकादि लम्बनं तिथौ हि पूर्वापरभागयोर्मुहुः ॥२॥

लवाः पूर्वागता वित्रिभनतांशास्तैरूनाः पूर्णाङ्का नवतयो वित्रिभोन्न-तांशास्तेषां शिञ्जिनी वित्रिभशङ्कुः सा पूर्वागतस्य गृहाद्यस्य नतकाल-पञ्चमांशसमस्य वित्रिभाकान्तिरस्य मौर्व्या ज्यया हता षट्त्रिंशच्छतै-र्विहृता लब्धं घटिकादि लम्बनं पूर्वापरकपालयोस्तिथौ क्रमेण ऋणं धनं स्यात् तच्च मुहुरसकृत् साध्यमित्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । 'त्रिभोनलग्नार्कविशेषशिञ्जिनी कृताहता व्यासदलेन भाजिते' त्यादिभास्करप्रकारेण $लं = \frac{ज्या\ (वि \backsim र) \times विशं \times ४}{त्रि \times त्रि}$ $= \frac{४\ ज्यागृ \times ज्या\ (९० - ल)}{१२० \times १२०} = \frac{ज्यागृ \times ज्या\ (९० - ल)}{३६००}$ इत्युपपन्नं लम्बनानयनम् ॥ २ ॥

लम्बनेन गुणिता ग्रहभुक्तिर्व्योमषट्क–६० विहृता च कलाद्यम् ।
तद्विलम्बनवशाच्छशिभान्वोः स्वर्णमत्र तमसोऽपरथा स्यात् ॥ ३ ॥

स्पष्टार्थम् । उपपत्तिश्च लम्बनघटीचालनानयनेन स्फुटा ॥ ३ ॥

भुक्त्यन्तरं लवगुणेन हतं विभक्तं
व्योमाभ्रनागशशिभि–१८०० र्लवदिङ्नतिः स्यात् ।
तात्कालिकामृतमयूखशरो युतोनो
नत्या समान्यककुभोर्भवति स्फुटोऽसौ ॥ ४ ॥

लवगुणेन पूर्वागतवित्रिभनतांशज्यया दृक्क्षेपेणेत्यर्थः । भुक्त्यन्तरं रविचन्द्रगत्यन्तरम् । शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । गत्यन्तरपञ्चदशांशसमाः परमा नतिकलाः $= \frac{गअं}{१५}$ । त्रिज्यया १२० परमा नतिकलास्तदा दृक्क्षेपेण किमिति लब्धा नति-कलाः $= \frac{गअं \times लवगुण}{१५ \times १२०} = \frac{गअं \times लवगुण}{१८००}$ । शेषोपपत्तिः स्फुटेति ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्थितिविमर्ददले शशिपूर्ववत्

समभिधाय यतश्च तिथेः स्फुटात् ।

स्थितिदलोनयुतादिह लम्बने

स्थितिदले च मुहुर्मुहुरानयेत् ॥ ५ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । 'तिथ्यन्ताद्गणितागतात् स्थितिदलेनोनाधिका'दिति भास्करविधिना स्फुटा ॥ ५ ॥

प्राग्लम्बनं मध्यविलम्बनाद्भवे-

दनल्पमल्पं यदि मोक्षलम्बनम् ।

ऋणाख्ययोः स्याद्धिकं विमोक्षजं

प्राग्ग्रासमल्पं यदि वा धनाख्ययोः ॥ ६ ॥

प्राग्ग्रासं स्पर्शकालिकामित्यर्थः । शेषं स्फुटम् ॥ ६ ॥

तदन्तरेण स्थितिखण्डजं निजं

युतं स्फुटं स्याद्वियुतं ततोऽन्यथा ।

युत्या युतं लम्बनयोर्धनर्णयो-

रयं विधिः स्यात् खलु मर्दखण्डयोः ॥ ७ ॥

धनर्णयोर्लम्बनयोर्युत्या योगेन स्थितिखण्डजमिष्टं युतं तदा स्फुटं स्थित्यर्धं स्यात् । शेषं स्पष्टम् ।

अत्रोपपत्तिः । स्पर्शकालः=दर्शान्त—स्थि $\pm$ स्पालं

मध्यका= दर्शान्त $\pm$ मलं

स्फुटस्थि=मका—स्पका= स्थि $\pm$ (मलं—स्पालं) अत्र प्राक्कपाले यदि स्पालं $>$ मलं वा, स्पालं $<$ मलं तदा ऋणधनचिह्नग्रहणेन स्फुस्थि=स्थि $\mp$ (मलं—स्पालं) =स्थि + लअं । मोक्षे तु स्फुटस्थित्यर्धम् = मोका—मका = दर्शा—स्थि $\pm$ मोलं— (दर्शा $\pm$ मलं)

=स्थि $\pm$ (मोलं—मलं) अत्र प्राक्कपाले ऋणलम्बने यदि मोलं $<$ मलं तदा मौक्षिकं स्थित्यर्धं स्फुटम् = स्थि + लअं । अतो-

f

Aho ! Shrutgyanam

ऽन्यथा स्थित्यर्धे लम्बनान्तरमृणं भवति । यदि मध्यस्पर्शकालिकयोर्वा मध्यमोक्षकालिकयोर्लम्बने धनर्णे भवतस्तदा तयोरन्तरे तद्योगो भवतीति । एवं मर्दखण्डयोः स्फुटयोर्मध्येऽपि विधिरित्यादि सर्वं स्फुटमिति सर्वमुपपद्यते ॥७॥

स्याद्वाहुरत्राभिमतः स्फुटेषुजः
स्थित्यर्धनिघ्नोऽपहृतः स्फुटेन सः ।
स्फुटस्ततो ग्रासविधिर्यथोक्तवत्
ततोऽप्यनेहा विपरीतकर्मणा ॥ ८ ॥

तत इष्टग्रासाद्विपरीतकर्मणाऽनेहा इष्टकालः साध्य इत्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । 'शेषं शशाङ्कग्रहणोक्तमत्र स्फुटेषुजेन स्थितिखण्डकेन' इत्यादिना भास्करविधिना स्फुटा । तत्रैव भास्करविधौ मदीयो विशेषश्च चिन्त्यः । (मन्मुद्रायित—लल्लसिद्धान्तशिष्यधीवृद्धिदतन्त्रस्य ३९ पृष्ठे मदीया टिप्पणी विलोक्या) ॥ ८ ॥

मार्तण्डबिम्बस्य दिवाकरां—१२शः
संलक्ष्यते नो खलु खण्डितोऽपि ।
सुतीव्रभावान्महसः सुधांशोः
सुनिर्मलत्वादपि षोडशां—१६शः ॥ ९ ॥

इति करणप्रकाशे सूर्यग्रहणाधिकारः ॥ ६ ॥

स्पष्टार्थमुपपत्तिश्च ' इन्दोर्भागः षोडशः खण्डितोऽपि तेजःपुञ्जच्छन्नभावान्न लक्ष्यः—' इत्यादिभास्करोक्तेनोपलब्धिरेवेति ॥ ९ ॥

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितः सूर्ययुतौ तु हेतुः ॥

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायां सूर्यग्रहणाधिकारः समाप्तः ॥६॥

अथोदयास्ताधिकारः

ऊनो ग्रहो लघुगतिस्तरणेरुदेति
प्राच्यामतोऽधिकगतिस्त्वधिकः प्रतीच्याम् ।
शक्रस्य दिश्यधिकभुक्तिखगः स ऊनो
याम्यस्तमूनगतिरप्यधिको Sपरस्याम् ॥ १ ॥

Aho ! Shrutgyanam

तरणेः सूर्याल्लघुगतिरल्पगतिर्ग्रहो यथा भौमगुरुमन्दा वक्रिणौ बुध-शुक्रौ च यदा तरणेरूनोऽल्पस्तदा प्राच्यां दिश्युदेति रात्रिशेषे। अधिकगतिर्ग्रहश्च यथा चन्द्रोऽवक्रिणौ ज्ञशुक्रौ च यदा रवेरधिकस्तदा प्रतीच्यामुदेति । एवं सोऽधिकगतिर्ग्रहो यदा रवेरूनस्तदा शक्रस्येन्द्रस्य दिशि अर्थात् प्राचि ऊनगतिश्च रवेर्यदाधिकस्तदाऽपरस्यां पश्चिमायां दिश्यस्तं यातीत्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । 'रवेरूनभुक्तिर्ग्रहः प्रागुदेती'त्यादिभास्करप्रकारतः स्फुटैव सिद्धान्तविदामिति ॥ १ ॥

कालांशकैर्दिनकरै-१२ र्नवाभिः ९ कुचन्द्रै-११
र्विश्वै-१३र्दिनै-१५ स्तुरगशीतकरैः १७ क्रमेण ।
शीतांशुशुक्रगुरुसोमसुतार्किभौमा
हीनाधिका दिनपतेः स्युरदृश्यदृश्याः ॥ २ ॥

स्पष्टार्थम् । कालांशाश्च प्राचीनैरेतावन्त एवोपलब्धा इत्यत्र तेषां वागेव कारणं कालांशानां स्थिरत्वे नान्यत् कारणं वक्तुं शक्यत इति। चन्द्रादीनां कालांशाश्च । चं १२ । मं १७ । बु. १३ । गु. ११ । शु. ९ । श. १५ । भास्करादिमतेन बुधशुक्रकालांशा भिन्नाः सन्ति ॥२॥

ग्रहस्य दोर्ज्यारहिता त्रिभज्यका
क्षेपाहता शैलनवाश्वि-२९७ भिर्भजेत् ।
लिप्तादि बाणायनयोःसमाशयोः
कुर्याद्दणं भिन्नदिशोर्धनं ग्रहे ॥ ३ ॥

त्रिभज्यका ग्रहदोर्ज्यारहिता कार्या। एवं भुजकोट्युत्क्रमज्या जाता सा क्षेपेण ग्रहशरेणाहता तां शैलनवाश्वि – २९७ भिर्भजेद्गुणक इत्यध्याहार्यम् । लब्धं लिप्ताद्यायनदृक्कर्मकलाः स्युरिति। शेषं स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । स्थूलतया द्युज्या त्रिज्या गृहीता । नाडीमण्डलासन्न एव क्रान्तिवृत्ते कलाः कल्पिता उत्क्रमज्ययाऽऽयनवलनं च साधितम् । तत 'आयनं वलनमस्फुटेषुणा सङ्गुणं द्युगुणभाजित' मित्यादिभा-

Aho ! Shrutgyanam

स्करविधिना स्थूला आयनदृक्कर्मकला:

$$=\frac{\text{आव}\times\text{श}}{\text{१२०}}=\frac{\text{भुकोउज्या}\times\text{त्रिज्या}\times\text{श}}{\text{१२०}\quad\text{१२०}}=\frac{\text{भुकोउज्या}\times\text{११९}\times\text{श}}{\text{१२०}\times\text{४}\quad\text{१२०}}$$

$$=\frac{\text{भुकोउज्या}\times\text{श}}{\text{२९६}}=\frac{\text{भुकोउज्या}\times\text{श}}{\text{२९७}}$$ स्वल्पान्तरात् ।

अत उपपन्नमायनदृक्कर्मकलानयनम् । धनर्णोपपत्तिः स्फुटा ॥३॥

क्षेपेऽक्षभासङ्गुणितेऽर्क-१२ भाजिते
लब्धं कलाद्यं स्वमृणं विधीयते ।
याम्योत्तरं क्षेपभवं नभश्चरे
प्राचीस्थिते पश्चिमभागगेऽन्यथा ॥ ४ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । इदानीमक्षजं दृक्कर्म साध्यते तत्र क्षितिजे स्थूलतयाऽक्षजं वलनमक्षज्यासमं गृहीतम् । ततो 'लम्बज्ययाऽक्षजं चेत् स्याद्वलनं किं स्फुटेषुणा' इत्यादिभास्करविधिना मध्यममेव विक्षेपं स्वल्पान्तरात् स्फुटं परिकल्प्य त्रिज्यासमां द्युज्यां च गृहीत्वाऽक्षजदृक्कर्मकला:

$$=\frac{\text{अक्षज्या}\times\text{श}}{\text{लम्बज्या}}=\frac{\text{पलभा}\times\text{श}}{\text{१२}}$$ । अत उपपन्नमानयनम् । धनर्णोपपत्तिः सिद्धान्तयुक्त्या स्फुटा ॥ ४ ॥

एष्योऽल्पादधिकाद्गतोऽर्कखगयोर्यः स्याद्विनाडीगणो
युक्तोऽसौ विवरोदयैर्विधिरयं पश्चात् सचक्रार्धयोः ।
एकर्क्षस्थितयोस्तयोः पुनरसौ साध्योऽन्तरस्थैर्लवैः
कालांशाश्च दशो-१० द्धृताः स कथितात्पैस्तैर्ग्रहो नेक्ष्यते ॥ ५ ॥

स्पष्टार्थम् । 'ऊनस्य भोग्योऽधिकभुक्तयुक्त' इत्यादिभास्करविधिना दृग्ग्रहार्कमध्ये विनाड्यः साधिताः कालांशाश्च दशहृता विनाड्यो जातास्तदल्पे साधितदृग्ग्रहार्कान्तरविनाडीगणे रविप्रभाच्छन्नमूर्त्तित्वाद्दृग्ग्रहो नेक्ष्यत इति सर्वा वासना स्फुटैवेति ॥ ५ ॥

इष्टांशकेभ्योऽभ्यधिका ध्रुवांशा
यदा तदाख्यानि गतान्यहानि ।

Aho ! Shrutgyanam

अस्तेऽल्पका गम्यदिनान्यवेहि
विलोमतस्तान्युदये ग्रहाणाम् ॥ ६ ॥

ध्रुवांशाः कालांशाः पठिता इष्टांशेभ्योऽभ्यधिकास्तदा तदन्तर्वर्त्तिदिनानि गतानि अल्पाश्चेद्गम्यानि अस्ते अवेहि जानीहि । यदि कालांशाः पठिता इष्टांशेभ्योऽभ्यधिकास्तदा एष्यदिनानि अल्पास्तदा गतदिनानीत्यर्थः ।

उपपत्तिरर्थत एव स्फुटा ॥ ६ ॥

उक्तोक्तितकाललवान्तरलिप्ता भुक्त्योर्विवरेण हृता ग्रहभान्वोः ।
वक्रोपगते द्युचरे गतियुत्या गम्यानि गतानि च सन्ति दिनानि ॥७॥

स्पष्टार्थमुपपत्तिश्चानुपाततो गतगम्यदिनानयनस्य स्फुटा ॥ ७ ॥

यदा खरांशुर्भवनद्वयेन स्वाक्षांशहीनेन समस्तदानीम् ।
प्रयात्यगस्त्योऽस्तमयं भषट्कात् तेन च्युतेनोदयमेति तुल्यः ॥ ८ ॥

इति करणप्रकाशे उदयास्ताधिकारः ॥ ७ ॥

स्पष्टार्थम् । (मन्निर्मितगणकतरङ्गिण्यां ३१—३३ पृष्ठानि विलोक्यानि)

अत्रोपपत्तिः । अगस्त्यस्य याम्याः शरांशाः=८० लह्ममतेन तज्ज्या =११८ । यदि लम्बज्ययाऽक्षज्या तदा शरज्यया किं लब्धा स्थूलाऽक्षदृक्कर्मज्या$=\frac{\text{ज्याअ}\times ११८}{\text{ज्याल}}$ । अत्र स्वल्पान्तरात् प्रथमज्याखण्डानुपातेनाक्षज्या$=\frac{३१\,\text{अ}}{१९}$ । लम्बज्या च स्थूला=१२० । ततोऽक्षदृक्कर्मज्या $=\frac{३१\times\text{अ}\times ११८}{१२०\times १९}$ । एतच्चापांशाः स्थूलाः$=\frac{\text{अ}\times ११८}{१२०}$= अ, स्वल्पान्तरात् ।

स्वल्पान्तरात् कालक्षेत्रयोः समविभागकल्पनया द्वादशकालांशसमान् क्षेत्रांशान् प्रकल्प्यास्तभानुः=$८०^\circ-१२^\circ-$अ$=६८^\circ-$अ। अत्राक्षदृक्कर्मागः स्थूलत्वात् ६८° स्थाने ६०° एते गृहीतास्तारतम्यादाचार्येणात उपपद्यते सर्वम् । उदयभानुरस्तभानुहीनभार्धसमः स्वल्पान्तरादिति ॥८॥

Aho ! Shrutgyanam

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितः खेटगमे तु हेतुः ॥

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायामुदयास्ताधिकारः समाप्तः ॥ ७ ॥

अथ शृङ्गोन्नत्यधिकारः ।

अक्षप्रभा क्षेपहता यमस्वरै-७२
भक्ता फलेनोनयुतं स्फुटं भवेत् ।
इन्दोश्चरार्धं रविवत् प्रसाधितं
भिन्नैकविक्षेपशशाङ्कगोलयोः ॥ १ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । अत्र शरकलावशेन स्थूलत्वात् कुज्याकलासमा एव चरासवः साधितास्ते षड्भक्ताः शरजनितं पलात्मकं चरं स्यात् । तत्संस्कारेण मध्यक्रान्तिभवचरार्धं स्पष्टं चरं स्यादिति ।

श. क=श । ज्याश=$\frac{\text{श} \times ३१}{६० \times १५}$ । कुज्या=$\frac{\text{त्रि} \times \text{श} \times ३१}{१२ \times ६० \times १५}$ ।
एतच्चापभागाः=$\frac{\text{त्रि} \times \text{श} \times ३१ \times १५}{१२ \times ६० \times १५ \times ३१} = \frac{\text{त्रि} \times \text{श}}{१२ \times ६०}$ । एते षष्टिगुणाः कुज्याकलाः=$\frac{\text{त्रि} \times \text{श}}{१२}$ । एते षड्भक्ताः शरजं पलात्मकं चरम्=$\frac{\text{त्रि} \times \text{श}}{७२}$ । अत उपपन्नमानयनम् । धनर्णोपपत्तिरतिसुगमा ॥ १ ॥

प्राग्वत् प्रागुदयेन्दुलग्नयोः
पश्चात् षड्भयुतास्तचन्द्रलग्नयोः ।
यः कालोऽन्तरजः स उन्नतो भवेत्
साध्याऽतः स्वचरार्धतोऽर्कवत् प्रभा ॥ २ ॥

प्राक्क्षितिज उदयेन्दुः प्राग्दृग्ग्रह आयनाक्षजदृक्कर्मसंस्कृत इन्दुः । लग्नं चानयोर्मध्ये प्राग्वत् 'ऊनस्य भोग्योऽधिकभुक्तियुक्तो मध्योदयाढ्य' इत्यादिना कालश्चन्द्रस्योन्नतकालो भवेत् । पश्चिमक्षितिजे षड्भयुतास्तचन्द्रलग्नयोर्मध्ये प्राग्वदुन्नतकालः साध्यः । तत उन्नतकालात् स्पष्टचरार्धतश्च शङ्कुं विधाय अर्कवत् प्रभा छाया चन्द्रस्य साध्येत्यर्थः ।

Aho ! Shrutgyanam

उपपत्तिश्चात्रातिसुगमा ॥ २ ॥

चन्द्रार्कयोः क्रान्तिलवान्तरैक्यतो
जीवा विधेया समभिन्नगोलयोः ।
चन्द्रेष्टभाकर्णगुणा विभाजिता
स्याल्लम्बमौर्व्या फलमिन्दुदिग्भवेत् ॥ ३ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । सूर्यास्तकाले सूर्याग्रैव सूर्यभुजः क्रान्त्यंशा द्विगुणाः स्वल्पान्तरात् क्रान्तिज्या= २रक्रां । अग्रा=$\frac{\text{त्रि}\times\text{२रक्रां}}{\text{ज्यालं}}$ । चन्द्राग्रा=$\frac{\text{२चक्रा}\times\text{त्रि}}{\text{ज्यालं}}$ । अभयोः संस्कारेण रव्यपेक्षया चन्द्राग्रा=$\frac{\text{त्रि}}{\text{ज्यालं}}\times$२ (रक्रां $\pm$ चंक्रां) =$\frac{\text{त्रि}}{\text{ज्यालं}}\times$संस्कारज्या । इयं चन्द्रच्छायाकर्णगुणा त्रिज्याहृता जाता रव्यपेक्षया चन्द्रकर्णवृत्ताग्रा =$\frac{\text{इक}\times\text{संस्कारज्या}}{\text{ज्यालं}}$ । इयमक्षप्रभया याम्यया संस्कृता जातो लघुशङ्कुप्राच्यपरसूत्रान्तररूपो भुज इत्यग्रे संबन्धः ॥ ३ ॥

चान्द्रेऽपमेऽल्पे समदिग्भवेऽन्यथा
तद्याम्ययाऽक्षप्रभया च संस्कृतम् ।
स्यादङ्गुलादिः स भुजो दिवाकराः
कोटिस्तयोर्वर्गयुतेः पदं श्रुतिः ॥ ४ ॥

समदिग्भवे चान्द्रेऽपमे सूर्यक्रान्तितोऽल्पे पूर्वागतं कर्णवृत्ताग्रारूपं फलमिन्दुदिक्कादन्यथा विपरीतदिक्कं ज्ञेयं तद्याम्ययाऽक्षप्रभया संस्कृतं सोऽङ्गुलादिर्भुजः स्यात् । दिवाकरा द्वादश लघुशङ्कुः कोटिः । तयोर्वर्गयुतेः पदं श्रुतिः कर्णः स्यादिति ।

अत्रोपपत्तिः । 'त्रिभज्याहृताऽर्काग्रका कर्णनिघ्नी' त्यादिभास्करविधितो लघुशङ्कुप्राच्यपरान्तररूपो बाहुः सूर्यापेक्षया चन्द्रस्य साधित इति पूर्वश्लोके ह्युपपादितः । ततः सूर्यास्तकाले रविशङ्क्वभावादपवर्तितशङ्कुर्द्वादशैव चन्द्रशङ्कुर्जातस्तयोर्वर्गयुतेःपदं कल्पितरविचन्द्रयोरपवर्तितं

Aho ! Shrutgyanam

विम्बान्तरसूत्रं स्यादिति सर्वं स्फुटमेव ॥ ४ ॥

भानुवार्जितसुधाकरांशकाः
स्यात् सितं तिथि-१५ विभाजिताः सिते ।
व्योमकुञ्जरशशाङ्क-१८० वर्जिताः
स्यात् तथैव बहुलेऽसितं भवेत् ॥ ५ ॥

सिते शुक्लपक्षे भानुवार्जितसुधाकरांशकाः सूर्योनचन्द्रांशकाः पञ्चदशभक्ताः सितं सिताङ्गुलानि स्यात् । बहुले कृष्णपक्षे तेऽन्तरांशा व्योमकुञ्जरशशाङ्कतो वर्जितास्ततः पञ्चदशहृता असितं स्यादित्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । पञ्चदशभिरंशैरेकं सिताङ्गुलं प्रकल्प्यानुपातेन शुक्लाङ्गुलानि भवन्ति शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे तु सितम्$=\frac{\text{अं}}{१५}$ ।

इदं द्वादशशुद्धं जातमसितम्$=१२-\frac{\text{अं}}{१५}=\frac{१८०-\text{अं}}{१५}$ । अत उपपन्नं सर्वम् ॥ ५ ॥

विन्दोर्बाहुः संनिवेशो यथाऽऽशं
पश्चाद्देशे प्राङ्मुखी कोटिरस्मात् ।
प्राच्यामिन्दोः पश्चिमाशामुखी स्यात्
कर्णस्तिर्यग्बाहुकोट्यग्रमध्ये ॥ ६ ॥

स्पष्टार्थम् ॥ ६ ॥

कर्णकोटियुजि षड्भिरङ्गुलैर्मण्डलं शशभृतः समालिखेत् ।
आनयेदपरतः सितं विधोः कर्णमार्गगमथासितेऽसितम् ॥ ७ ॥

स्पष्टार्थम् ॥ ७ ॥

सिताङ्ग-६विश्लेषदलेन नन्दा ९ हृता धिकाः स्यात् परिलेखसूत्रम् ।
नीतेन शुक्लादनुकर्णगत्या वृत्तं लिखेत् तेन सितप्रसिद्धै ॥ ८ ॥

इति करणप्रकाशे शृङ्गोन्नत्यधिकारः ॥ ८ ॥

सिताङ्गयोरन्तरार्धेन नव हृता लब्धिश्च सिताङ्गान्तरार्धेनाधिका परिलेखसूत्रं स्यादिति ।

Aho ! Shrutgyanam

अत्रोपपत्तिः । सितोनाः षट् विभास्वभासूत्रयोरन्तरं कोटिकर्णयोः स्यात् । भुजश्च षट् । ततो 'भुजाद्वार्गितात् कोटिकर्णान्तराप्त' मित्यादिना कोटिकर्णयोगः $= \frac{३६}{अं}$ । कर्णः $= \frac{\frac{३६}{अं} + अं}{२} = \frac{१८}{अं} + \frac{अं}{२} = \frac{१}{\frac{अं}{१८}} + \frac{अं}{२}$ । अत उपपन्नम् ।

शेषोपपत्त्यर्थं भास्करशृङ्गोन्नतिर्निरीक्ष्या ।

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितः शृङ्गविधौ तु हेतुः ॥

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायां शृङ्गोन्नत्यधिकारः समाप्तः ॥८॥

अथ ग्रहयुत्यधिकारः ।

अनल्पभुक्तौ खचरेऽल्पभुक्ते-
रूनेऽथ वक्रिण्यधिकेऽनुलोमात् ।
वक्रस्थयोः शीघ्रगतावनल्पे
गम्या युतिः स्यात्तु गताऽन्यथा स्यात् ॥ १ ॥

अनल्पभुक्तावधिकगतौ खचरेऽल्पभुक्तेर्ग्रहादूनेऽल्पेऽथ वक्रिणि खगेऽनुलोमादवक्रगाद्ग्रहादधिके द्वयोर्वक्रस्थयोर्ग्रहयोः शीघ्रगतावल्पगतेर्ग्रहादनल्पेऽधिके ग्रहयोर्युतिर्गम्या एष्या स्यादतोऽन्यथा तु गता स्यादित्यर्थः । अत्रोपपत्तिर्ग्रहगतिसंस्थानतोऽतिस्फुटा ॥ १ ॥

अवक्रयोर्वक्रगयोश्च भक्ता
भुक्त्यन्तरेणाऽन्तरलिप्तिकाः स्युः ।
दिनानि वक्रिण्यथ भुक्तियुत्या
ज्ञेया युतिस्तैरगता गता वा ॥ २ ॥

स्पष्टार्थमुपपत्तिश्चाग्रिमश्लोकोपपत्तितः स्फुटा ॥ २ ॥

गतिरन्तरलिप्तिकाहता गतियोगाऽन्तरभाजिता तथा ।
अगते स्वमृणं गते कला योगे वक्रगतेऽन्यथा समौ ॥ ३ ॥

गतिर्ग्रहयोरन्तरलिप्ताभिर्हता एकस्मिन् ग्रहे वक्रिणि गत्योर्योगेनान्यथाऽन्तरेण भाजिता । लब्धाः कला अगते गम्ये योगे स्वं कार्या गते योगे च ऋणं कार्याः । वक्रगते ग्रहे तु अन्यथा विपरीतं कार्याः। गम्ये ऋणं गते धनं कार्यास्तदा तौ खेटौ समौ भवत इत्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । यद्येकस्मिन् ग्रहे वक्रिणि गतियोगेनान्यथा गत्यन्तरेणैकं दिनं तदा ग्रहान्तरलिप्ताभिः किम् । लब्धानि गम्यगतदिनानि $= \frac{\text{अंक}}{\text{गयो. वा गअं}}$ । तत एकेन दिनेन ग्रहगतिकलास्तदा पूर्वागत गतगम्यदिनैः किम् । लब्धाश्चालनकलाः $= \frac{\text{ग्रग} \times \text{अंक}}{\text{गयो. वा गअं}}$ । धनर्णवासना चातिस्फुटा॥३।

नवदिनेशरसाऽर्कदिवाकरा

दशगुणाः खलु बाणकलाः कुजात् ।

९०।१२०।६०।१२०।१२०

युगयमाऽष्टरसाऽम्बरभूमयो

दशहृता इह पातलवाःस्मृताः ॥ ४ ॥

४०।२०।८०।६०।१००

कुजादीनां मध्यमाः परमाः शरकलाः कु. ९० । बु. १२० । गु. ६० । शु. १२० । श. १२० । पातभागाश्च कु ४० । बु. २० । गु. ८० । शु. ६० । श. १०० ।

अत्रोपपत्तिः । शीघ्रप्रतिवृत्तगोले ये शराः परमा उपलब्धास्ते पठितास्तथा ग्रहमन्दोच्चवत्कुजादिपातानामत्यल्पगतित्वात् स्वसमयोपलब्धाः स्थिरा भागाः पठिताः ।

तथा च स्वतन्त्रे लल्लः ।

नन्दसूर्यरससूर्यभानवो दिग्गुणाः शरकलाः कुजादितः ।

वेदलोचनगजाङ्गखेन्दवः पातजाः स्युरथ दिग्गुणा लवाः ॥

आचार्येण लल्लोदिता एव पठिता इति ॥ ४ ॥

युगाश्विनः षट्कृतिरश्ववेदा स्तम्बेरमाम्भोनिधयः खरामाः ।

व्योमेन्दुनिघ्ना निजकर्णभक्ताः कुजादितो बिम्बकला भवन्ति ॥५॥

Aho ! Shrutgyanam

२४ । ३६ । ४७ । ४८ । ३० एताः संख्या दशगुणा निजनिज-शीघ्रकर्णभक्तास्तदा भौमादितः क्रमेण बिम्बकला भवन्ति—इति ।

अत्रोपपत्तिः । 'पञ्चभिर्दशभिरिन्द्रियेन्दुभिर्व्योमबाहुभिरथेषुलोचनैः । चन्द्रयोजनतनुर्हतास्फुजिज्जीवसौम्यशनिभौममूर्त्तयः ॥' इति लल्लोदितेन स्वल्पान्तराद्भौमादीनां तनुयोजनानि

$$भौ = \frac{४८०}{२५} = १९ \text{ स्वल्पान्तरात्}$$

$$बु = \frac{४८०}{१५} = ३२ \;॥\; गु = \frac{४८०}{१०} = ४८ \;।$$

$$शु = \frac{४८०}{५} = ९६ \;॥\; श = \frac{४८०}{२०} = २४ \;॥$$

ततो 'योजनानि दशभिर्हृतानि वा मध्यमाः स्युरथ मानलिप्तिकाः । ताडितास्त्रिभवनज्यया पुनर्भूग्रहान्तरविभाजिताः स्फुटाः' ॥ इति लल्लो-दितेन भौमादीनां स्वल्पान्तरात् मध्यबिम्बकलाः । भौ. २ । बु. ३ । गु. ४ । ३० शु. १० । श. २ । ३० स्फुटबिम्बकलाश्च

$$भौ = \frac{२ \times १२०}{शीक} = \frac{२४ \times १०}{शीक} \;।\; बु = \frac{३ \times १२०}{शीक} = \frac{३६ \times १०}{शीक} \;।$$

आचार्येण गुरोर्मध्यमबिम्बकलाः = ३ $\frac{५१}{६०}$ शुक्रस्य च ४, एताः कला गृहीतास्तत पूर्वविधिना स्फुटबिम्बकलाः । $गु = \frac{३\frac{५१}{६०} \times १२०}{शीक} = \frac{४७ \times १०}{शीक}$ ।

$शु = \frac{४ \times १२०}{शीक} = \frac{४८ \times १०}{शीक}$ । $श = \frac{२\frac{१}{२} \times १२०}{शीक} = \frac{३० \times १०}{शीक}$ । अत्र गुरु-शुक्रबिम्बयोर्लल्लेन सह महान् विरोधः सुधीभिर्भृशं विभावनीयः ॥ ९ ॥

भौमसूर्यसुतवाक्पतिपाताः संस्कृताश्चलफलेन यथा ते ।
स्युः स्फुटा ज्ञसितपातलवाः स्युः स्वीयमन्दफलयुक्तविहीनाः ॥८॥

स्वीयमन्दफलयुक्तविहीना व्यस्तमन्दफलसंस्कृता इत्यर्थः ।

अत्रोपपत्तिः । अत्र चक्रशुद्धः पातः पातत्वेन गृहीतः । अत्रः 'पातेऽथ वा शीघ्रफलं विलोममिति भास्करविधिनाऽत्र यथा संस्कृताः पात-लवाः स्फुटग्रहशोधनार्थं स्फुटा भवन्ति । बुध शुक्रपातयोर्मन्दफलसंस्का-

Aho ! Shrutgyanam

रार्थं 'ये चात्र पातभगणाः पठिता ज्ञभृग्वोस्ते शीघ्रकेन्द्रभगणैरधिका यतः स्यु-' रित्यादि भास्करवचनं सभाष्यं विलोक्यमिति ॥ ६ ॥

स्वं स्वं पातं सदृशकलिकात् सौम्यभृग्वोश्चलोच्चात्
त्यक्त्वा दोर्ज्या निजशरहता शीघ्रकर्णोद्धृता च ।
क्षेपः स्पष्टो भवति दिशि पातोनितव्योमगस्य
नत्या सूर्यग्रहणविधिना संस्कृतः शीतरश्मेः ॥ ७ ॥

सदृशकलिकात् स्पष्टग्रहात् । शीतरश्मेश्चन्द्रस्य बाणो नत्या संस्कृतः स्फुटः स्यात् ।

अत्रोपपत्तिः । मन्दस्फुटात् खेचरतः स्वपातयुक्ताद्भुजज्या पठितेषुनिघ्नीत्यादिना चक्रशुद्धपाततः स्फुटा आचार्येण शरभागाः साधिताः। चन्द्रस्य च नतिर्महत्त्वात् स्वीकृताऽन्येषां स्वाल्पन्तरात् त्यक्ता तेन भौमादीनां गणितागतः क्षेप एव स्फुटो नतिसंस्कृतो ज्ञेयः ॥ ७ ॥

शरयोः समभिन्नगोलयोर्विवरैक्यं भवति ग्रहान्तरम् ।
अस्मिँस्तनुखण्डयोगतो भेदोऽल्पे खरसो ६० द्धृते कराः ॥ ८ ॥

समभिन्नगोलयोः शरयोः क्रमेण विवरमैक्यं च ग्रहान्तरं भवेत् । अस्मिन्नन्तरे तनुखण्डयोगतो मानैक्यार्द्धतोऽल्पे भेदो भवति । अधःस्थेनोर्ध्वस्थश्छाद्यत इत्यर्थः । ग्रहयोर्दक्षिणोत्तरान्तरं शरयोः संस्कारसमं कलात्मकं षष्टिहृतं हस्ता भवन्ति ॥

अत्रोपपत्तिः । अत्रैकमङ्गुलं सार्द्धद्विकलं $\frac{5}{2}$ गृहीतं तच्चतुर्विंशतिगुणं हस्ताङ्गुललिप्ताः=६० । अतः कलात्मकमन्तरं षष्टिहृतं हस्ता भवन्ति । शेषोपपत्तिरतिसुगमा ॥ ८ ॥

पलप्रभाघ्नेन कलेषुणा द्युगै७२-
र्हृतेन संस्कृत्य चरं ततो दिनम् ।
ग्रहैष्ययुग्लग्नगताऽन्तरोदयै-
र्युतौ भवेद्दृश्ययुतौ विधिः स हि ॥ ९ ॥

Aho ! Shrutgyanam

कलेशुणा कलात्मकशरेण पलप्रभागुणेन द्युगे ७२ हृतेन फलेन ग्रहस्य मध्यमक्रान्तिभवं चरं संस्कृत्य स्फुटं चरं साध्यं ततः स्फुटाच्चरात् दिनं दिनमानं साध्यम् । ग्रहस्यैष्यो भोग्यकालस्तात्कालिकलग्नस्य गतकालेनान्तरोदयैश्च युक् एवं युतौ युतिसमये ग्रहस्योन्नतकालो भवेदिति शेषः । एवं दृश्ययुतौ स चन्द्रशृङ्गोन्नतिवद्विधिर्ग्रहावलोकनार्थं कार्य इति शेषः ॥ ९ ॥

अत्रोपपत्तिः । आचार्यस्य शृङ्गोन्नत्यध्यायस्य प्रथमश्लोकेन स्फुटचरोपपत्तिः स्फुटा । तेनैवाध्यायेनान्यत् सर्वं च स्फुटमिति ॥ ९ ॥

यदा समकलौ रात्रावूनौ तत्काललग्नतः ।
अधिकौ चाऽस्तलग्नात् स्तस्तदा दृश्ययुतिर्भवेत् ॥ १० ॥

स्पष्टार्थमुपपत्तिश्च स्फुटा ॥ १० ॥

असमदिशोः शरयोर्युतिभाजौ
निजनिजबाणदिशि द्युचरौ स्तः ।
समककुभोः खलु यस्य शरोऽल्पो-
ऽपरदिशि सोऽन्यनभश्चरतः स्यात् ॥ ११ ॥

स्पष्टार्थम् ।

अत्रोपपत्तिः । भास्करग्रहयुत्यधिकारतः स्फुटा ॥ ११ ॥

समकलयोर्ग्रहयोरुदयो यः
स्फुटमनयोरुदयात् समयेन ।
स भवति येन सति ग्रहभेदे
स तिथिरतः कुरु लम्बनपूर्वम् ॥ १२ ॥

समकलयोरेकस्थानस्थितयोर्ग्रहयोर्य उदय उदयकालो भवेत् तस्मात् उदयादुदयकालाद्येन समयेनानयोर्ग्रहयोः स्फुटं स युतिकालो ग्रहभेदे सति भवेत् स एव तिथिर्दर्शान्तः कल्प्यस्ततः सूर्यग्रहणवल्लम्बनपूर्वं लम्बनादिकं कुर्वित्यर्थः। उपपत्तिरत्रातिसरला ॥ १२ ॥

Aho ! Shrutgyanam

आसीत् पार्थिववृन्दवन्दितपदाम्भोजद्वयो माथुरः
श्रीचन्द्राख्यबुधो गुणैकवसतिः ख्यातो द्विजेन्द्रः क्षितौ ।
नत्वा तस्य सुतोऽङ्घ्रिपङ्कजयुगं खण्डेन्दुचूडामणे-
र्वृत्तैः स्पष्टमिदं चकार करणं श्रीब्रह्मदेवः कृती ॥ १३ ॥

इति श्रीब्रह्मदेवगणकविरचिते करणप्रकाशे ग्रहयुत्यधिकारः॥ ६ ॥

समाप्तश्चायं करणप्रकाशः ।

स्पष्टार्थम् ॥१३॥

श्रीमत्कृपालोस्तनयेन येन नयेन सत्येन सुधाकरेण ।
सद्वासनाऽकारि बहुत्र तेन विदोदितः खेटयुतौ तु हेतुः ॥

इति करणप्रकाशस्य सद्वासनायां खेटयुत्यधिकारः समाप्तः ॥९॥

श्रीसुधाकरकलासुधाकरा वासना बहुविधा बुधा वराः ।
भास्करीयकृतिकृत्यमण्डिताः सम्पिबन्तु सततं सुपण्डिताः ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ करणप्रकाशारम्भे १०१४ शके चैत्रशुक्लप्रतिपदि भृगौ सूर्योदये आर्यभटमूलकलङ्कमतेन कल्यादिरहर्गणः साध्यते ।

$$
\begin{array}{rr}
\text{श}= & १०१४ \\
 & ३१७९ \\ \hline
\text{क. व.} = & ४१९३ \\
 & १२ \\ \hline
 & ८३८६ \\
 & ४१९३ \\ \hline
\end{array}
$$

क. सौमा=५०३१६

क. सौ. दि=१५०९४८०

$$\frac{\text{क. सौदि} \times \text{युअ}}{\text{युसौदि}} = \frac{२४०५९१०८८२५२८०}{१५५५२००००००} = १५४६ = \text{अधिमासाः ।}$$

अधिशेषं च=७६९६२५२८० ।

कल्यादितश्चान्द्राहाः=१५४६×३०+१५०९४८०=१५५५८६० ।

$$\frac{\text{क. चादि} \times \text{युक्ष}}{\text{यु. चादि}} = \frac{३९०२४९८२९१८८००}{१६०३०००००८०} = २४३४४ = \text{क्षयाहाः ।}$$

क्षयशेषं च=१५४८९७१२८० ।

कल्यादिरहर्गणः=१५५५८६०−२४३४४=१५३१५१६ ।

एकादिगुणा अहर्गणाः		एकादिगुणा युगसावनदिवसाः ।	
१५३१५१६	१	१५७७९१७५००	१
३०६३०३२	२	३१५५८३५०००	२
४५९४५४८	३	४७३३७५२५००	३
६१२६०६४	४	६३११६७००००	४
७६५७५८०	५	७८८९५८७५००	५
९१८९०९६	६	९४६७५०५०००	६
१०७२०६१२	७	११०४५४२२५००	७
१२२५२१२८	८	१२६२३३४००००	८
१३७८३६४४	९	१४२०१२५७५००	९
१५३१५१६०	१०	१५७७९१७५०००	१०

Aho ! Shrutgyanam

अधिशेषम्=७६९६२५२८०
६५
―――――――
३८४८१२६४०
४६१७७५१६८
―――――――
१५५५२००००००)५००२५६'४३२००(३२
४६६५६
―――――
३३६९६
३११०४
―――――
२५९२४३२००

यदि युगसौरदिनैरिदं पूर्वागतमधिशेषं तदा ६५ हरेण किम् । लब्धं ३२ विलोमेन स्वाल्पष्टिनव ९१७ भागयुतं च स्वल्पान्तराज्जातं तदेव ३२ द्विघ्नमासयोजनार्हं क्षेपमानम् । (द्रष्टव्यो मध्यमाधिकारस्य २ श्लोकः ।) एवं सञ्चारेण ६४ हरसंबन्धि पूर्वागतं क्षयशेषम्

क्षयशेषम्= १५४८९७१२८०
६४
―――――――
६१९५८८५१२
९२९३८२७६८
―――――――
१६०३००००८'०)९९१३४१६१९२'०(६२ स्वल्पान्तरात्
९६१८०००४८
―――――――
२९५४१५७१२

अस्य द्विघ्नस्य १२४ त्रिखवेदभू १४०३ भागः शून्यसमः स्वल्पान्तरात् तेन तिथिगणे योजनार्हं क्षेपमानं ६२ मिदमेव । (द्रष्टव्यो मध्यमाधिकारस्य २–३ श्लोकौ)

Aho ! Shrutgyanam

अथ रविक्षेपानयनम् ।

अह = १५३१५१६
रभ = ४३२००००
३०६३०३२
४५९४५४८
६१२६०६४

१५५५२०००'००) अह × रभ = ६६१६१४९१'२०००'०० (४११२।११।१६।३२।५६
६३११६७००
३०४४७९१२   रा
१५७७९१७५   रक्षे = ११।१६°।३२'।५६"
१४६६८७३७०
१४२०१२५७५
४६७४७९५०
३१५५८३५०
१५१८९६००
१२
१८२२७५२००
१५७७९१७५
२४४९३४५०
१५७७९१७५
८७०४२७५
२६११२८२५०
१५७७९१७५
१०३३३६५००
९४६७५०५०
८६६१४५०
५१९६८७०००
४७३३७५२५
४६३११७५०
३१५५८३५०
१४७५३४००
८८५२०४०००
७८७९५८७५
९७२४५२५०
९४६७५०५०
२५७०२००

आचार्येण ५६ विकलास्थाने ५७ विकला गृहीताः

Aho ! Shrutgyanam

अथ चन्द्रक्षेपानयनम् ।

अह = १५३१५१६
चम = ५७७५३३३६

११८१०१६
४५१४५४८
४५१४५४८
४५१४५४८
७६५७५८०
१०७२०६१२
१०७२०६१२
७६५७५८० । । ।

युकु = १५७७९१७५००) अह X चम = ८८४५०१५८१३७३'७६(५६०५४।११।२८।११।४२
७८८९५८७५
१५५४२८३१
१४६७५०५०
८६७७८१३७
७८८९५८७५
७८८२२६२३
६३११६७००
१५७०५९२३७६
१२
३१४११८४७५२
१५७०५९२३७६
१८८४७१०८५'१२
१५७७९१७५
३०६७९२३५
१५७७९१७५
१४९०००६०१२
४४७००१८०३'६०
३१५५८३५०
१३१४१८३०३
१२६२३३४००
५१८४१०३६०
३११०१४२१६'००
२५७७९१७५
१५३३०२४६६
१४२०१२५७५
११२८१८११००
६७७३१३४६०'००
६३११६७००
४६२२६४६०
३१५५८३५०
२४६६८११०

' शाके नखाब्धि ४२० रहिते '
इत्यादि लक्षोक्तेन चन्द्रस्य
कलात्मकं वीजमृणम्

= (१०१४–४२०) X २५ / २५०

= ५९४/१० = ५९'।२४"

रा

अहर्गणोत्पन्नश्चन्द्र = ११।२८°।१९'।४३"
वीजमृणम् = ५९।२४

वास्तवश्चन्द्रक्षेपः = ११।२७।२०।१९
आचार्योक्तक्षेपेण सहैकाविकलान्तरम्

Aho ! Shrutgyanam

अथ भौमक्षेपानयनम् ।

अह = १५३१५१६
भौम = २२९६८२४

६१२६०६४
३०६३०३२
१२२५२१२८
९१८९०९६
१३७८३६४४
३०६३०३२
३०६३०३२

कु = १५७७९१७५००) अह × भौम = ३५१७६२२७०५१'८४ (२२२९।३।११।२६।३
३१५५८३५०
३६१७८७७०
३१५५८३५०
४६२०४२०५
३१५५८३५०
१४६४५८५५१
१४२०१२५७५
४४४५१७६८४
१२
८८९११५३६८
४४४५९७६८४
५३३५९७२२'०८
४७३३७५२५
६०१४११७०८
१८०४२५९१२'४०
१५७७९१७५
२२६३४१६२
१५७७९१७५
६८५४९८७४०
४११२९१२४४'००
३१५५८३५०
९५७१५७७४
९४६७५०५०
१०४०६१४००
६२४४१६४०'००
४७३३७५२५
१५१०४११५

लब्धमेतत भौमस्य
कलात्मकं बीजं धनम्
$= \frac{(१०१४-४२०) \times ४८}{२५०}$
$= \frac{५९४ \times ४८}{२५०}$ = ११४'।३''
= ०।१।५४'।३'
अह. भौ = ३।११।२६।४
वा. भौ. क्षे = ३।१३।२०।७
आचार्योक्तक्षेपेणैकाविकलान्तरम्

अथ बुधोच्चक्षेपायनम् ।

अह = १५३१५१६
बु. उ. भ = १७९३७०२०

३०६३०३२
१०७२०६१२
४५९४५४८
१३७८३६४४
१०७२०६१२
१५३१५१६

युकु = १५७७९१७५'००) अह × बु.उ.भ = २७४७०८३३१२२३'२० (१७४०९।६।१७।५३।१६
१५७७९१७५
११६९१६५८१
११०४५४२२५
६४६२३५६२
६३११६७००
१५०६८६२२३
१४२०१२५७५
८६७३६५८२०
१२
१७३४७२९६४
८६७३६४८२
१०४०८३७७८'४०
९४६७५०५०
९४०८७२८४०
२८२२६१८५२'००
१५७७९१७५
१२४४७०१०२
११०४५४२२५
१४०१५८७७००
८४०९५२६२०'००
७८८९५८७५
५११९३८७०
४७३३७५२५
४६५६३४५००
२७९३८०७००'००
१५७७९१७५
१२१५८८९५०
११०४५४२२५
१११३४७२५

लल्लमतने बुधोच्चबीजं कलात्मकं धनम्

$$= \frac{(१०१४-४२०) \times ४२०}{२५०}$$

$$= \frac{५९४ \times ४२}{२५} = \frac{३५६४ \times ७}{२५}$$

$$= \frac{२४९४८}{२५} = ९९७'।५५''$$

= १६° । ३७′ । ५५″

ग. भौ = ६।१७ । ५३ । १७

वा. क्षे = ७। ४ । ३१ । १२

अयमाचार्योक्तसम एव

अथ गुरुक्षेपानयनम् ।

अह = १५३१५१६
गुभ = ३६४२२४

६१२६०६४
३०६३०३२
६१२६०६४
९१८९०९६
४५९४५४८

गुकु = १५७७९१७५००) अह × गुभ = ५५७८१४८८३५'८४ (३५३।६।४।४८।६
४७३३७५२५

८४४३१६३३
७८७१५८७५

५५४३७५८५
४७३३७५२५

८१०००६०८४
१२

१६२००१२१६८
८१०७०६०८४

९७२००७३०'०८
९४६७५०५०

२५२५६८००८
७५७७०४०२'४०
६३११६७००

१२६५३७०२४०
७५९२२२१४४'००
६३११६७००

१२८०५५१४४
१२६२३३४००

१८२१७४४००
१०९३४६४०'००
९४६७५०५०

१४६२१५९०

लक्षमतेन बीजं कलात्मकमृणम्
= (१०१४−४२०) × ४७ / २५०
= ५९४ × ४७ / २५० = १११',।४०'',,
अह. गु = ६ । ४ । ४८ । ७
बीजम् = १ । ५१ । ४०
वा. क्षे = ६ । २ । ५६ । २७
अयमाचार्योक्तक्षेपसम एव

Aho ! Shrutgyanam

अथ शुक्रोच्चक्षेपानयनम् ।

अह = १५३१५१६
शु. उ. भ = ७०२२३८८

१२२५२१२८
१२२५२१२८
४५९४५४८
३०६३०३२
३०६३०३२
१०७२०६१२

शु. कु. = १५७७९१७५००) अह × शु. उ. भ = १०७५४८९९५८०२'०८(६८१५।१०।१७।३२।२
९४६७५०५०
१२८७३९४५८
१२६२३३४००
२५०६०५८०
१५७७९१७५
१२८१४०५२
७८८९५८७५
१३११८१७७०८
१२
२७८३६३५४१६
१३११८१७७०१
१६७०१८१२४'९६
१५७७९१७५
१२२६३७४९६
२७६७९१२४८'८०
१५७७९१७५
११८९९९४९८
११०४५४२२५
८५४५२७३८०
५१२७१६४२८'००
४७३३७५२५
३९३४११७८
३१५५८३५०
७७८२८२८००
४६६१६१६८०'००
३१५५८३५०
१५१३८६१८०
१४२०१२५७५
९३७३६०५००

लल्लमतेन शुक्रोच्चबीजं कलात्मक-
मृणम्

$$= \frac{(१०१४-४२०) \times १५३}{२५०}$$

$$= \frac{५९४ \times १५३}{२५०} = ३६३'।३२''$$

$$= ६^{\circ} । ३' ३२''$$

रा
अह. शु. उ. = १०।१७°।३२'।२९''
बीजम् = ६। ३।३२
वा. क्षे. = १०।११।२८।५७

अत्राचार्योक्तक्षेपेण सहैकोनात्रिंशल्लिकलान्तरं पतन्तीति महद्वैषम्यमतस्तत्र 'वसुशराः' इति पाठः साधुरिति सुधीभिश्चिन्त्यम् ।

Aho ! Shrutgyanam

अथ शनिक्षेपानयनम् ।

अह = १५३१५१६
शभ = १४६५६४

६१२६०६४
९१८९०९६
७६५७५८०
९१८९०९६
६१२६०६४
१५३१५१६

युक्त = १५७७९१७५००)अह × शभ = २२४४६५१११०'२४(१४२।३।१।२६।५२
१५७७९१७५
६६६७३३६१
६३११६७००
३५५६६६१०
३१५५८३५०
४००८२६०२४
१२
८०१६५२०४८
४००८२६०२४
४८०९९१२२'८८
४७३३७५२५
७६१५९७८८
२२८४७९३६'४०
१५७७९१७५
७०८६७६१४०
४२४१२५६८४'००
३१५५८३५०
१०८५४२१८४
९४६७५०५०
१३८६७१३४००
८३२०२८०४०'००
७८८९५८७५
४३०६१२१०
३१५५८३५०
११५१०९४०००

लल्लमतेन शनिबीजं कलात्मकं धनम्

= (१०१४−४२०) × २० / २५०

= ५९४/२५ × २ = ११८८/२५

= ४७'।३१"

रा

अहर्ग श० = ३।१°।२६'।५२"

बीजम् = ४७। ३१

वास्तवशनिक्षेपः = ३।२। १४। २३

अयमा यौक्तक्षेपसम एव

Aho ! Shrutgyanam

अथ राहुक्षेपानयनम् ।

अह = १५३१५१६
पा भ = २३२२२६

११८१०१६
३०६३०३२
३०६३०३२
३०६३०३२
४५९४५४८
३०६३०३२

शुक्र = १५७७९१७५००) अह × पाभ = ३५५६५७८३४६'१६ (२२५।४।२२।५४।४२ पातक्षेपः६

पातः = १०।२२।५४।४२
अयं चक्र शुद्धो जातो
राहुः = १।७।५।१८

३१५५८३५०
४००७४३३४
३१५५८३५०
८५१५१८४६
७८८९५८७५
६२६३९७११६
१२
१२५२७९४२३२
६२६३९७११६
७५१६७६५३'१२
६३११६७००
१२०५०९५३१२
३६१५२८६१७'६०
३१५५८३५०
४५१४५११७
३१५५८३५०
१४३८६७६७६०
८६३२०६०५६'००
७८८९५८७५
७४२४७३०६
६३११६७००
१११३०६०६००
६६७८३६३६०'००
६३११६७००
३६६६१३६०
३१५५८३५०
५११११०१०००

लल्लमतेन राहुबीजं
कलात्मकंमृणम्
$= \frac{(१०१४-४२०) \times १६}{२५०}$
$= \frac{५९४ \times १६}{२५०} = २२८'।६''$
$= ३^{\circ}।४८'।६''$
रा
अह. रा = १ । ७° । ५' । १८''
बीजम् = ३ । ४८ । ६''
वा. क्षे = १ । ३ । १ ७ । १२
अयमाचार्योक्तक्षेपसम एव

Aho ! Shrutgyanam

अथ चन्द्रोच्चक्षेपानयनम् ।

अह = १५३१५१६
च. उ. भ = ४८८२११

१३७८३६४४
१५३१५१६
३०६३०३२
१२२५२१२८
१२२५२१२८
६१२६०६४

युक्त=१५७७११७५'८०) अह × च.उ.भ=७४७७१५२१००'४०(४७३।१०।१०।२०।७

६३११६७००　　उच्चक्षेपः ३

११६५४८२१०　　उच्चम् = १।१०।२०।७
११०४५४२२५

६०९३९८५०
४७३३७५२५

१३६०२३२५०४
१२

२७२०४६५००८
१३६०२३२५०४

१६३२२७९००'४८
१५७७११७५

५४३६१५०४८
१६३०८४५१४'४०
१५७७११७५

५२१२७६४४०
३१७५६५५८६४'००
३१५५८३५०

११८२३६४४००
११८९४१८४०'००
११०४५४२२५

८४८७६१५००

लल्लमतेने बुधोच्चबीजं कलात्मकं मृणम्

$$= \frac{(१०१४-४२०) \times ४१४}{२५०}$$

$$= \frac{५९४ \times ११४}{२५०} = २७०' \mid ५५''$$

$$= ४^\circ \mid ३०' \mid ५२''$$

अह.च.उ. = १।१० । २० । ८
बीजम् = ४ । ३० । ५२
बा. क्षे = १। ५ । ४९ । १६

अयमाचार्योक्तसम एव

Aho ! Shrutgyanam

चन्द्रग्रहणस्य २० श्लोके ।

आर्यभटमते सर्वे युगपादाः समाः । अतः कलियुगादौ सपातार्क-भगणाः$=\frac{३\times४५५२२२६}{४}$ एते द्विगुणाः सप्ततष्टाः शेषमितः पर्वपतिः । अतस्ते द्विगुणाः$=\frac{३\times४५५२२२६\times२}{४}=\frac{१३६५६६७८}{२}=$६८२८३३९ । एते सप्ततष्टाः शेषं शून्यम् । अतस्तत्र वर्त्तमानो विधिः पर्वपतिः ।

अथ कलेरहर्गणस्य २७३१३३५६ एतैर्गुणनार्थं न्यासः ।

अह = १५३१५१६
गु = २७३१३३५६
———————
९१८९०९६
७६५७५८०
४५९४५४८
४५९४५४८
१५३१५१६
४५९४५४८
१०७२०६१२
३०६३०३२
———————
२६२९८६२५)अह × गु = ४१८३०८४१७२७६९६(१५९०६०९
२६२९८६२५
———————
१५५३२२१६७
१३१४९३१२५
———————
२३८२९०४२२
२३६६८७६२५
———————
१६०२७९७६
१५७७९१७५०
———————
२४८८०२६९६
२३६६८७६२५
———————
१२११५०७१

Aho ! Shrutgyanam

अतो ग्रन्थारम्भे सपातार्कदिनानि वर्त्तमानानि=१५९०६१० एतानि १८० हृतानि लब्धाः पर्वपतयः ८८३६ शेषदिनानि वर्त्तमानस्य=१३० । लब्धाः पर्वपतयः सप्ततष्टाः शिष्टौ २ तत्संबन्धीनि दिनानि=३६० वर्त्तमानपर्वपतिदिनसाहितानि जातानि विधितः सपातार्कदिनानि=३६०+१३०=४९० ।

अथाचार्योक्तप्रकारतः

$\frac{१०० (अह-२४७१)}{२५१२}=\frac{१००अ}{२५१२}-\frac{२४७१\times१००}{२५१२}=\frac{१००अ}{२५१२}-९६$ (स्वल्पान्तरतो वर्त्तमानलब्ध्यर्थं ९५ स्थाने ९६ गृहीता) अत्र ५८७ अधिके कृते जातम्=$\frac{१००अ}{२५१२}-९६+५८७=\frac{१००अ}{२५१२}+४९१$ । अनेनाधिकेऽहर्गणे जातानि विधितः सपातार्कदिनानि=अ+$\frac{१००अ}{२५१२}+४९१$ । अत्र प्रथमं खण्डद्वयमहर्गणसम्भूतमहर्गणसंवन्धिनः सपातार्कदिवसास्ते पूर्वागतैर्ग्रन्थारम्भे विधितः समागतैः सपातार्कदिवसै ४९० रेभिः साहिता जातानि पर्वान्ते सपातार्कदिनानि=अ+$\frac{१००अ}{२५१२}+४९०$ । पर्वसमाप्तिः प्रतिपदि भवति अतस्तदा पूर्वागतानि सैकानि जातान्याचार्यानीतसमानि सपातार्कदिनानि=अ+$\frac{१००अ}{२५१२}+४९१$ । खगजचन्द्र १८० हृतानि लब्धाः पर्वपतयो भवन्तीति सुधीभिर्भृशं विभावनीयम् ।

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ प्रसङ्गाद्ग्रहगणितोपयुक्तत्वादासन्नमानार्थक्रिया प्रदर्श्यते,

$$\frac{१००}{६३}=१+\frac{३७}{६३}=१+\frac{१}{\frac{६३}{३७}}=१+\frac{१}{१+\frac{२६}{३७}}=१+\frac{१}{१+\frac{१}{\frac{३७}{२६}}}=१+\frac{१}{१+\frac{१}{१+\frac{११}{२६}}}$$

$$=१+\frac{१}{१+\frac{१}{१+\frac{१}{\frac{२६}{११}}}} \qquad =१+\frac{१}{१+\frac{१}{१+\frac{१}{२+\frac{४}{११}}}}$$

$$=१+\frac{१}{१+\frac{१}{१+\frac{१}{२+\frac{१}{\frac{११}{४}}}}} \qquad =१+\frac{१}{१+\frac{१}{१+\frac{१}{२+\frac{१}{२+\frac{३}{४}}}}}$$

$$=१+\frac{१}{१+\frac{१}{१+\frac{१}{२+\frac{१}{२+\frac{१}{\frac{४}{३}}}}}} \qquad =१+\frac{१}{१+\frac{१}{१+\frac{१}{२+\frac{१}{२+\frac{१}{१+\frac{१}{४}}}}}}$$

अत्र प्रथमलब्धिग्रहणेन मानम् $=\frac{१}{१}=\frac{१}{१}$ ।

प्रथमलब्धिद्वयग्रहणेन मानम् $=१+\frac{१}{१}=\frac{२}{१}$ ।

प्रथमलब्धित्रयग्रहणेन मानम् $१+\frac{१}{१+\frac{१}{१}}=\frac{३}{२}$ ।

Aho ! Shrutgyanam

प्रथमलब्धिचतुष्कग्रहणेन मानम् $=\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{२}}}}=\frac{\text{८}}{\text{५}}$।

प्रथमलब्धिपञ्चकग्रहणेन मानम् $=\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{२}+\cfrac{\text{१}}{\text{२}}}}}=\frac{\text{१९}}{\text{१२}}$।

प्रथमलब्धिषट्कग्रहणेन मानम् $=\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{१}+\cfrac{\text{१}}{\text{२}+\cfrac{\text{१}}{\text{२}+\cfrac{\text{१}}{\text{१}}}}}}=\frac{\text{२७}}{\text{१७}}$।

एवमत्र $\frac{\text{१}}{\text{१}}$, $\frac{\text{२}}{\text{१}}$, $\frac{\text{३}}{\text{२}}$, $\frac{\text{८}}{\text{५}}$, $\frac{\text{१९}}{\text{१२}}$, $\frac{\text{२७}}{\text{१७}}$, वास्तवभिन्न। स्या $\frac{\text{१००}}{\text{६३}}$ स्यासन्नमानानि कथ्यन्ते। अत्र $\frac{\text{१}}{\text{१}}$ इदं मानं वास्तवभिन्नमानादल्पम्। $\frac{\text{२}}{\text{१}}$ इदं चाधिकं द्वितीयखण्डस्याधिक्यात्।

$\frac{\text{३}}{\text{२}}$ इदं चाल्पं तृतीयखण्डस्याल्पत्वात्। एवं प्राग्युक्तभजनरीत्या स्फुटमवगम्यते यद्विषमासन्नमानानि वास्तवभिन्नादल्पानि समानि चाधिकानि सन्तीति।

एवं वर्णविन्यासेन $\frac{\text{अ}}{\text{क}}=\text{ग}+\cfrac{\text{१}}{\text{घ}+\cfrac{\text{१}}{\text{च}+\cfrac{\text{१}}{\text{छ}+\cfrac{\text{१}}{\text{ज}+\cfrac{\text{१}}{\text{त}+\cfrac{\text{१}}{\text{द}+\cfrac{\text{१}}{\text{न}+\cdots}}}}}}}$

पूर्ववल्लब्धिग्रहणेनासन्नमानानि

Aho ! Shrutgyanam

$$\frac{\text{ग}}{१},\ \frac{\text{गघ}+१}{\text{घ}},\ \frac{\text{च}(\text{गघ}+१)+\text{ग}}{\text{चघ}+१},\ \frac{\text{छ}\{\text{च}(\text{गघ}+१)\}+(\text{गघ}+१)}{\text{छ}(\text{चघ}+१)+\text{घ}}।$$

अत्र तृतीये माने तृतीयलब्धिद्वितीयमानांशवधः प्रथममानांशयुक्तो ह्यंशः । तृतीयलब्धिद्वितीयमानहरवधः प्रथममानहरयुक्तो हि हर इति दृश्यते । एवं चतुर्थमानादिषु च रीतिर्दृश्यते तेनासन्नमानद्वयज्ञानाल्लब्धिभ्योऽन्यासन्नमानानि सुखेन ज्ञायन्ते ।

अथ पूर्वागतप्रथमद्वितीययोरासन्नमानयोरन्तरेण यद्भिन्नमुत्पद्यते तत्रांशस्थाने रूपमिति दृश्यते । अथ कल्प्यते त्रीण्यासन्नस्थितान्यासन्नमानानि $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1}$। $\frac{\text{अ}_2}{\text{क}}$। $\frac{\text{अ}_3}{\text{क}_3}$।

$\frac{\text{अ}_3}{\text{क}_3}$ एतत् सम्बन्धिनी लब्धिश्च ल, तदा पू-

र्वप्रकारेण $\frac{\text{अ}_3}{\text{क}_3}=\frac{\text{लअ}_2+\text{अ}_1}{\text{लक}_2+\text{क}_1}$ अतः

$$\frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}\backsim\frac{\text{अ}_3}{\text{क}_3}=\frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}\backsim\frac{\text{लअ}_2+\text{अ}_1}{\text{लक}_2+\text{क}_1}=\frac{\text{लअ}_2\text{क}_2+\text{अ}_2\text{क}_1\backsim(\text{लअ}_2\text{क}_2+\text{अ}_1\text{क}_2)}{\text{क}_2(\text{लक}_2+\text{क}_1)}$$

$=\frac{\text{अ}_2\text{क}_1\backsim\text{अ}_1\text{क}_2}{\text{क}_2(\text{लक}_2+\text{क}_1)}$ । अत्रांशमानं $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1}$, $\frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}$ अनयोरन्तरांशमानसममत इष्टपृष्ठस्थयोरन्तरे यदंशमानं तदेवाग्रिमेष्टयोरन्तरे भवत्यंशमानम् । परन्तु प्रथम–द्वितीयासन्नमानयोरन्तरे त्वंशमानं रूपसमं पूर्वसिद्धं तेनासन्नस्थयोर्द्वयोरासन्नमानयोरन्तरे सर्वदांशमानं रूपं भवतीति सिध्यति ।

अथ पूर्वयुक्तितः $\text{अ}_2\text{क}_1\backsim\text{अ}_1\text{क}_2=१$ अतः पूर्वयुक्तितः $\text{अ}_1,\text{क}_1$ एतौ वा अ_2, क_2 एतौ परस्परं दृढौ भविष्यतो यतोऽन्यथा तदपवर्त्तनाङ्केन रूपमपवर्त्यं भवति तदयुक्तमित्यत आसन्नमानेषु सर्वेषु हरांशौ दृढौ भवत इति सिध्यति ।

Aho ! Shrutgyanam

कल्प्यते $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1}, \frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}, \frac{\text{अ}_3}{\text{क}_3},$ आसन्नस्थानि मानानि तदा पूर्ववत्

$\frac{\text{अ}_3}{\text{क}_3} = \frac{\text{ल}\text{अ}_2 + \text{अ}_1}{\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1}$ वास्तवभिन्नं च, ल स्थाने ल+इ, इत्यस्योत्थापनेन जातं

$= \frac{(\text{ल} + \text{इ})\,\text{अ}_2 + \text{अ}_1}{(\text{ल} + \text{इ})\,\text{क}_2 + \text{क}_1}$। इ=रूपाल्पसंख्या

अतः $\text{भिन्नं} - \frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2} = \frac{\text{ल}\text{अ}_2 + \text{इ}\text{अ}_2 + \text{अ}_1}{\text{ल}\text{क}_2 + \text{इ}\text{क}_2 + \text{क}_1} - \frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}$

$$= \frac{\text{ल}\text{क}_2\text{अ}_2 + \text{इ}\text{क}_2\text{अ}_2 + \text{अ}_1\text{क}_2 - \text{ल}\text{क}_2\text{अ}_2 - \text{इ}\text{क}_2\text{अ}_2 - \text{अ}_2\text{क}_1}{\text{क}_2\,(\text{ल}\text{क}_2 + \text{इ}\text{क}_2 + \text{क}_1)}$$

$$= \frac{\text{क}_2\text{अ}_1 - \text{क}_1\text{अ}_2}{\text{क}_2(\text{ल}\text{क}_2 + \text{इ}\text{क}_2 + \text{क}_1)} = \frac{1}{\text{क}_2 \left\{ \text{क}_2\,(\text{ल} + \text{इ}) + \text{क}_1 \right\}}$$

$$\text{एवं}\ \frac{\text{अ}_3}{\text{क}_3} - \text{भिन्नं} = \frac{\text{ल}\text{अ}_2 + \text{अ}_1}{\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1} - \frac{\text{ल}\text{अ}_2 + \text{अ}_1 + \text{अ}_2\text{इ}}{\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1 + \text{क}_2\text{इ}}$$

$$= \frac{\text{ल}^2\text{क}_2\text{अ}_2 + \text{ल}\text{क}_1\text{अ}_2 + \text{ल}\text{क}_2\text{अ}_2\text{इ} + \text{ल}\text{क}_2\text{अ}_1 + \text{अ}_1\text{क}_1 + \text{अ}_1\text{क}_2\text{इ}}{\text{क}_3\,(\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1 + \text{क}_2\text{इ})}$$

$$- \frac{\text{ल}^2\text{क}_2\text{अ}_2 + \text{ल}\text{क}_2\text{अ}_1 + \text{ल}\text{क}_2\text{अ}_2\text{इ} + \text{ल}\text{क}_1\text{अ}_2 + \text{अ}_1\text{क}_1 + \text{क}_1\text{अ}_2\text{इ}}{\text{क}_3\,(\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1 + \text{क}_2\text{इ})}$$

$$= \frac{\text{इ}\,(\text{अ}_1\text{क}_2 - \text{क}_1\text{अ}_2)}{\text{क}_3(\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1 + \text{क}_2\text{इ})} = \frac{\text{इ}}{\text{क}_3\,(\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1 + \text{क}_2\text{इ})}$$

प्रथमान्तरस्यांशमानादस्यान्तरस्य मानमल्पं तदीयहरमानादस्य हरमानं चाधिकमत उत्तरत आसन्नमानानि सूक्ष्माणि वास्तवभिन्नस्य निकटस्थत्वादिति सिध्यति ।

अथैषां सिद्धान्तानां सूत्राणि ।

आसन्नमानस्य हरांशमाने अग्राप्तिगुण्ये सहिते क्रमेण ।
पृष्ठस्थितासन्नहरांशकाभ्यां तदा हरांशौ भवतोऽग्रिमस्य ॥ १ ॥
आसन्नमानयोरासन्नस्थयोरन्तरे भवेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

अंशस्थाने सदा रूपं चिन्त्यमेतच्च सर्वदा ॥ २ ॥
सर्वेष्वासन्नमानेषु हरांशौ भवतो दृढौ ।
तथोत्तरोत्तरं सूक्ष्माण्यासन्नानि भवन्ति हि ॥ ३ ॥

कल्प्यते $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1}$ इदमासन्नमानं वास्तवभिन्नात् किञ्चिदल्पम् । $\frac{\text{स}}{\text{र}}$ अस्य भिन्नस्य हरमानं क_1 । अस्मादल्पं तदा $\frac{\text{स}}{\text{र}}$ अस्मात् $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1}$ इदमेव निकटतरं वास्तवभिन्नस्य। यद्येवं न तर्हि $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1}$, $\frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}$ अनयोरन्तरात् $\frac{\text{स}}{\text{र}}$, $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1}$, अनयोरन्तरमल्पतरम् ।

यतः $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1} < \frac{\text{स}}{\text{र}} < \text{वाभि} < \frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}$ ($\frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}$ = अग्रिमासन्नम्)

अतः $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1} \backsim \frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2} = \frac{1}{\text{क}_1\text{क}_2} > \frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2} - \frac{\text{स}}{\text{र}}$

वा $\frac{1}{\text{क}_1\text{क}_2} > \frac{\text{अ}_2\text{र} - \text{क}_2\text{स}}{\text{क}_2\text{र}}$ वा, $\frac{1}{\text{क}_1} > \frac{\text{अ}_2\text{र} - \text{क}_2\text{स}}{\text{र}}$

अथ $\text{क}_1 > \text{र}$ । अतः $1 > \text{अ}_2\text{र} - \text{क}_2\text{स}$ । इदमसम्भवं यतः $\text{अ}_2\text{र}$, $\text{क}_2\text{स}$ अनयोरभिन्नसंख्ययोरन्तरं रूपाल्पमवशिष्यते ॥

कल्प्यते $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1}$, $\frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}$ आसन्नस्थमासन्नमानद्वयं तदा $\frac{\text{अ}_1\text{अ}_2}{\text{क}_1\text{क}_2}$ इदं वास्तवभिन्नवर्गादधिकं यदि $\frac{\text{अ}_1}{\text{क}_1} > \frac{\text{अ}_2}{\text{क}_2}$, अन्यथाल्पमिति । यतो यदि सावयवलब्धिः = ल तदा वास्तवभिन्नम् $= \frac{\text{ल}\text{अ}_2 + \text{अ}_1}{\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1}$

अतः $\frac{\text{अ}_1}{\text{वाभि}.\text{क}_1} - \frac{\text{वाभि}.\text{क}_2}{\text{अ}_2} = \frac{\text{क}_2}{\text{वाभि}\,\text{अ}_2}\left(\frac{\text{अ}_1\text{अ}_2}{\text{क}_1\text{क}_2} - \text{वाभि}^2\right)$

$= \frac{\text{अ}_1(\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1)}{\text{क}_1(\text{ल}\text{अ}_2 + \text{अ}_1)} - \frac{\text{क}_2(\text{ल}\text{अ}_2 + \text{अ}_1)}{\text{अ}_2(\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1)}$ । अथ दक्षिणपक्षस्थसंख्ययोरन्तरांशमानम् $= \text{अ}_1\text{अ}_2(\text{ल}\text{क}_2 + \text{क}_1)^2 - \text{क}_1\text{क}_2(\text{ल}\text{अ}_2 + \text{अ}_1)^2$

$= \text{अ}_1\text{अ}_2\,\text{ल}^2\text{क}_2^2 + 2\,\text{अ}_2\text{अ}_1\,\text{ल}\text{क}_2\text{क}_1 + \text{अ}_1\text{अ}_2\text{क}_1^2$

Aho ! Shrutgyanam

$- क_1 क_2 ल^2 अ_2^2 - २ अ_1 अ_2 ल क_2 क_1 - क_1 क_2 अ_1^2$

$= ल^2 अ_2 क_2 (अ_1 क_2 - अ_2 क_1) - अ_1 क_1 (अ_1 क_2 - अ_2 क_1)$

$= (ल^2 अ_2 क_2 - अ_1 क_1) (अ_1 क_2 - अ_2 क_1)$

अत्र $(ल^2 अ_2 क_2 - अ_1 क_1)$ इदं सर्वदा धनमेव

यतः $ल > १ \therefore ल^2 > १$ अथ $अ_2 > अ_1$ । $क_2 > क_1$

$\therefore अ_2 क_2 > क_1 अ_1$। अथ $अ_1 क_2 - अ_2 क_1 = क_1 क_2 \left(\frac{अ_1}{क_1} - \frac{अ_2}{क_2} \right)$

इदं तु यदा $\frac{अ_1}{क_1} > \frac{अ_2}{क_2}$ तदा धनमतस्तदा

$\frac{क_2}{वाभि.अ_2} \left(\frac{अ_1 अ_2}{क_1 क_2} - वाभि^2 \right)$ इदं वा

$\frac{अ_1 अ_2}{क_1 क_1} - वाभि^2$ इदं धनं भविष्यति ।

ततः $\frac{अ_1 अ_2}{क_1 क_2} > वाभि^2$ इदमुपपन्नं भवति ।

अतः सूत्रावतारः ।

आसन्नमानहरतो यद्भिन्नस्य हरो भवेत् ।
अल्पः साऽऽसन्नमानात् स्यान्नाहो सूक्ष्मतरो विदः ॥ १ ॥
द्वयोरासन्नयोरासन्नस्थयोराहतिर्भवेत् ।
कृतेर्वास्तवभिन्नस्याधिका पूर्वाधिकेऽग्रिमात् ॥ २ ॥

अथ प्रसङ्गाच्चक्रवालोपपत्तिः ।

कल्प्यते प्र, प्रकृतौ क्षे, क्षेपे क, कनिष्ठं, ज्ये, ज्येष्ठं तथा तस्यामेव प्रकृतौ रूपसमे कनिष्ठे इ, ज्येष्ठम् । $इ^2 - प्र =$ क्षेपस्ततो भावनया

क,	ज्ये,	क्षे,	आभ्यां नूतनकनिष्ठज्येष्ठक्षेपाः ।
१,	इ,	$इ^2 - प्र$	

$क' = इक + ज्ये$ । $ज्ये' = क प्र + इ ज्ये$ । $क्षे' = क्षे (इ^2 - प्र)$ "इष्टवर्गहृतः क्षेप" इत्यादिना क्षे इष्टं प्रकल्प्य जाताः कनिष्ठज्येष्ठक्षेपाः

$क'' = \frac{इ.क + ज्ये}{क्षे}$, $ज्ये'' = \frac{प्र.क + इ.ज्ये}{क्षे}$, $क्षे'' = \frac{इ^2 - प्र}{क्षे}$ अतोऽत्र चेत् क-

Aho ! Shrutgyanam

निष्ठमभिन्नमपेक्षितं तदा प्रथमकनिष्ठं तथा केनचिदिष्टेन गुण्यं ज्येष्ठयुक्तं क्षेपभक्तं यथा विशुध्येत् । तदर्थमाचार्येण कुट्टकः कृतः । अत उपपन्नं ह्रस्वज्येष्ठपदक्षेपान् इत्यादि भास्करोक्तं चक्रवालम् । एवमभिन्नं यत्कनिष्ठमुत्पद्यते तत्र क्षेपश्च $\frac{\text{इ}^2-\text{प्र}}{\text{क्षे}}$ अयम् ।

अत्र भाज्यसंख्या यदि विपरीतशोधनेन सिद्धा स्यात्तदा क्षेपहृता लब्धिः क्षेपविजातीयातो 'व्यस्तः प्रकृतितश्च्युत इति युक्तमुक्तं भास्कराचार्यैः ।

अथ नूतनः क्षेपः $\frac{\text{इ}^2-\text{प्र}}{\text{क्षे}}$ अयं सर्वदाऽभिन्न एवागच्छति तेन $\text{इ}^2-\text{प्र}$ इयं क्षेपेण निःशेषा भवतीत्यस्य कारणज्ञानार्थं कतिपयदृढाङ्कसिद्धान्तान् प्रतिपादयामि ।

कल्प्यते अ, क, संख्ये मिथो दृढे । क, ग अनयोर्घातश्च अ, संख्यया शुध्यति तदा अ संख्यया ग संख्या निःशेषा भवति ।

अ < क इति कल्पनीयम् । तथा परस्परभजनाल्लब्धयः ल, ल', ल'', इत्यादयः शे, शे', शे'', इत्यादयः शेषाश्च कल्प्यास्तदा $\text{क}=\text{अ}.\text{ल}+\text{शे}$, $\text{अ}=\text{शे}\ \text{ल}'+\text{शे}'$, $\text{शे}=\text{शे}'\ \text{ल}''+\text{शे}''$, प्रत्येकं ग संख्यया संगुण्य असंख्यया यदि विभज्यते तदा $\frac{\text{क}.\text{ग}}{\text{अ}}=\text{ग}.\text{ल}+\frac{\text{ग}.\text{शे}}{\text{अ}}$ । $\text{ग}=\frac{\text{ग}.\text{शे}}{\text{अ}}\ \text{ल}'+\frac{\text{ग}.\text{शे}'}{\text{अ}}$

$\frac{\text{ग}.\text{शे}}{\text{अ}}=\frac{\text{ग}.\text{शे}'}{\text{अ}}\times\text{ल}''+\frac{\text{ग}.\text{शे}''}{\text{अ}}$,........ ...., अथ $\frac{\text{क}.\text{ग}}{\text{अ}}$ इयं संख्या ह्यभिन्ना तेन $\frac{\text{ग}.\text{शे}}{\text{अ}}$ इयमपि अभिन्ना भविष्यति, ततः $\frac{\text{ग}\times\text{शे}'}{\text{अ}}$ इयं चाभिन्ना ततः $\frac{\text{ग}\times\text{शे}''}{\text{अ}}$ इयमपि अभिन्ना सिध्यति ।

एवं सर्वे शेषा ग गुणिताः अहृताः शुध्यन्तीति सिध्यति ।

अथ अ, क संख्ये मिथो दृढे तेनान्तिमः शेषो रूपसमस्तद्गुणिता ग संख्या, अविकृता अहृता शुद्धा भवतीति सिध्यति ।

Aho ! Shrutgyanam

अथ वा यदि $\frac{\text{क}}{\text{अ}}$ भिन्नस्य यत्र हरांशौ मिथो दृढौ पृष्ठस्थासन्नमा-
नम्$=\frac{\text{क}_{2}}{\text{अ}_{2}}$ तदा आसन्नसिद्धान्तेन $\frac{\text{क}_{2}}{\text{अ}_{2}} \backsim \frac{\text{क}}{\text{अ}} = \frac{\text{अक}_{2} \backsim \text{अ}_{2}\text{क}}{\text{अ अ}_{2}}$
अत्र $\text{अक}_{2} - \text{अ}_{2}\text{क} = \pm 1$ इदं ग गुणितं जातम् ।

$\text{अ क}_{2}\text{ग} - \text{अ}_{2}\text{क ग} = \pm \text{ग}$ अत्र वामभागस्था संख्या अभक्ता निःशेषा भवतीत्यतः ग संख्यापि अभक्ता निःशेषा भवतीति लाघवेन सिध्यति ।

अथ पूर्वकनिष्ठज्येष्ठवशेन पूर्वक्षेपः $= \text{प्रक}^{2} - \text{ज्ये}^{2}$ अतो ज्येष्ठकनिष्ठ-महत्तमापवर्त्तनवर्गेण क्षेपोऽपवर्त्यस्तेनेष्टवर्गेण हृतः इत्यादिना लघुक्षेपे सुखेन कनिष्ठज्येष्ठे ज्ञातुं शक्येते । एवं यदाऽपवर्तनाभावस्तदैव लघुतमक्षेपे तत्कनिष्ठज्येष्ठे गृहीत्वा ततो ह्रस्वज्येष्ठपदक्षेपेभ्यः परस्परं दृढेभ्यः कुट्टकः कर्त्तव्यः । अतोऽत्र ये कनिष्ठज्येष्ठक्षेपास्ते परस्परं दृढा एव ।

ततोऽभिन्नं नूतनकनिष्ठम् $= \frac{\text{इ}\cdot\text{क} + \text{ज्ये}}{\text{क्षे}}$ अस्मादिष्टमानम् $= \frac{\text{नूक}\cdot\text{क्षे} - \text{ज्ये}}{\text{क}}$

अस्य नूतनज्येष्ठस्या $\frac{\text{प} \times \text{क} + \text{इ} \times \text{ज्ये}}{\text{क्षे}}$ स्यांशमाने ह्युत्थापने कृते जातमंश-
मानम् $= \frac{\text{ज्ये}\cdot\text{नूक}\cdot\text{क्षे} - \text{ज्ये}^{2} + \text{प्र}\cdot\text{क}^{2}}{\text{क}} = \frac{\text{ज्ये}\cdot\text{नूक}\cdot\text{क्षे} - \text{क्षे}}{\text{क}} = \frac{\text{क्षे}\,(\text{ज्ये}\cdot\text{नूक} - 1)}{\text{क}}$

अथेदमंशमानमभिन्नं क्षेपकनिष्ठे च मिथो दृढे तेन कनिष्ठभक्त-

$(\text{ज्ये}\cdot\text{नूक} - 1)$ मिदं शुध्येदेव पूर्वयुक्त्या, ततो जातमंशमानं नूतन-ज्येष्ठस्य $= \text{क्षे} \times \text{ल}$ । अत्र $\text{ल} = \frac{\text{ज्ये}\cdot\text{नूक} - 1}{\text{क}} =$ अभिन्नसंख्यासमा ।

अथ नूतनज्येष्ठांशमानं हरेण क्षेपसमेन भक्तं जातमभिन्नं नूतनज्येष्ठमानम् $=$ ल, ततः प्रकृतिकनिष्ठज्येष्ठाणामभिन्नत्वान्नूतनक्षेपोऽप्यभिन्न एवेत्यर्थत एव सिध्यति । इदं ज्येष्ठक्षेपयोरभिन्नत्वसाधनं पूर्वैर्न क्वापि स्पष्टमतो मदुक्तं बुद्धिमद्भिर्भृशं विचिन्त्यम् । नूतनज्येष्ठज्ञानं च नूतनकनिष्ठवर्गादिना विनैव मत्कृतमतीवोपयुक्तमिदम् ।

पूर्वज्येष्ठहतं नूत्नकनिष्ठं रूपहीनितम् ।
पूर्वह्रस्वहृतं लब्धं नवीनज्येष्ठसंमितिः ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ यद्यासन्नमानोक्तविधिनाऽवर्गस्य मूलमानीयते तदाऽधोलिखितक्रियोत्पद्यते। तस्यां च शान्तो विततभिन्नो न भविष्यति यतस्तथात्वे करणी परिच्छिन्नमाना भविष्यति तच्चासम्भवम्। अतो विततभिन्नेऽनन्ते पुनस्ता एव लब्धय आवर्त्तरूपा आगमिष्यन्ति। ताभिरुत्तरोत्तरं करणीमानासन्नमानानि सूक्ष्माणि भविष्यन्ति।

यथा $\sqrt{\text{११}} = \frac{\sqrt{\text{११}}+\text{०}}{\text{१}} = \text{३} + \frac{\sqrt{\text{११}}-\text{३}}{\text{१}} = \text{३} + \frac{(\sqrt{\text{११}}-\text{३})(\sqrt{\text{११}}+\text{३})}{\sqrt{\text{११}}+\text{३}}$

$$= \text{३} + \frac{\text{२}}{\sqrt{\text{११}}+\text{३}} = \text{३} + \frac{\text{१}}{\frac{\sqrt{\text{११}}+\text{३}}{\text{२}}} = \text{३} + \frac{\text{१}}{\text{३}+\frac{\sqrt{\text{११}}+\text{३}-\text{६}}{\text{२}}} = \text{३} + \frac{\text{१}}{\text{३}+\frac{\sqrt{\text{११}}-\text{३}}{\text{२}}}$$

$$= \text{३} + \frac{\text{१}}{\text{३}+\frac{\text{२}}{\text{२}(\sqrt{\text{११}}+\text{३})}} = \text{३} + \frac{\text{१}}{\text{३}+\frac{\text{१}}{\sqrt{\text{११}}+\text{३}}} = \text{३} + \frac{\text{१}}{\text{३}+\frac{\text{१}}{\frac{\sqrt{\text{११}}+\text{३}}{\text{१}}}}$$

$$= \text{३} + \frac{\text{१}}{\text{३}+\frac{\text{१}}{\text{६}+\frac{\sqrt{\text{११}}-\text{३}}{\text{१}}}} = \text{३} + \frac{\text{१}}{\text{३}+\frac{\text{१}}{\text{६}+\frac{\text{२}}{\sqrt{\text{११}}+\text{३}}}}$$ इत्यादि,

एवमत्र ३, ३, ६, इत्यादिलब्धिग्रहणेनैकादशमूलस्यासन्नमानानि आसन्नमानोक्त्याऽऽगमिष्यन्ति।

एवमक्षरविन्यासेन

$\frac{\sqrt{\text{न}}+\text{०}}{\text{१}} = \text{अ} + \frac{\sqrt{\text{न}}-\text{अ}}{\text{१}} = \text{अ} + \frac{\text{शे}}{\sqrt{\text{न}}+\text{अ}}$ यदि $\text{शे} = \text{न} - \text{अ}^{\text{२}}$ तथा न इत्यस्य निरग्रमूलम् $= \text{अ}$।

$\frac{\sqrt{\text{न}}+\text{अ}}{\text{शे}} = \text{क} + \frac{\sqrt{\text{न}}+\text{अ}-\text{शे क}}{\text{शे}} = \text{क} + \frac{\text{शें}}{\sqrt{\text{न}}+\text{अं}}$, यदि $\text{अं} = \text{शे}.\text{क} - \text{अ}$।

k

Aho ! Shrutgyanam

तथा $\text{शे}' = \frac{\text{न} - \text{अ}'^2}{\text{शे}}$ । अत्र न इत्यस्य निरग्रमूलं अ—संज्ञकेन युक्तं शे—संज्ञया भक्तं यन्निरग्रलब्धं भवेत्तत् क—संज्ञं बोध्यम् ।

एवं तथैव

$$\frac{\sqrt{\text{न}} + \text{अ}'}{\text{शे}'} = \text{क}' + \frac{\sqrt{\text{न}} + \text{अ}' - \text{शे}'.\text{क}'}{\text{शे}'} = \text{क}' + \frac{\text{शे}''}{\sqrt{\text{न}} + \text{अ}''} \text{ यदि } \text{अ}'' = \text{शे}'.\text{क}' - \text{अ}',$$

तथा $\text{शे}'' = \frac{\text{न} - \text{अ}''^2}{\text{शे}'}$ ।

अत्र न इत्यस्य यन्निरग्रमूलं तत् अ'—संज्ञकेन युक्तं शे'—संज्ञया भक्तं यन्निरग्रलब्धं तत् क'—संज्ञं ज्ञेयमेवमग्रेऽपि बोध्यमित्येवं यद्यप्यत्र स्फुटं दृश्यते शे, शे', शे'', इत्यादीनां तथा अ, अ', अ'', इत्यादीनां च धनत्वं तथापि स्पष्टार्थं सद्युक्तिः प्रदर्श्यते ।

कल्प्यते कस्याप्यासन्नमूले क्रमेण त्रयाणां राशिसमूहानां मानानि ।

०, अ, अ', अ'', अ''', ... (१)

१, शे, शे', शे'', शे''', ... (२)

अ, क, क', क'', क''', ... (३)

कल्प्यते (१) अस्मिन् क्रमेण किमपि राशित्रयमानं अ_1, $\text{अ}'_1$, $\text{अ}''_1$, तत्सम्बन्धिराशित्रयं (२) अस्मिन् शे_1, $\text{शे}'_1$, $\text{शे}''_1$, । क_1, $\text{क}'_1$, $\text{क}''_1$, च राशित्रयं (३) अस्मिन्, तथा क_1, $\text{क}'_1$, $\text{क}''_1$, वशादासन्नमूलस्यासन्नमानानि $\frac{\text{प}}{\text{ल}}$, $\frac{\text{प}'}{\text{ल}'}$, $\frac{\text{प}''}{\text{ल}''}$, चेति । तदाऽऽसन्नमानानयनविधिना

$\frac{\text{प}''}{\text{ल}''} = \frac{\text{क}''_1 \text{प}' + \text{प}}{\text{क}''_1 \text{ल}' + \text{ल}}$, अथ $\text{क}''_1$ स्थाने यदि सावयवा वास्तवा लब्धिः

$\frac{\sqrt{\text{न}} + \text{अ}''_1}{\text{शे}''_1}$ इयं गृह्यते तदा $\sqrt{\text{न}} = \dfrac{\frac{\sqrt{\text{न}} + \text{अ}''_1}{\text{शे}''_1}\text{प}' + \text{प}}{\frac{\sqrt{\text{न}} + \text{अ}''}{\text{शे}''_1}\text{ल}' + \text{ल}} = \dfrac{\text{प}'(\sqrt{\text{न}} + \text{अ}''_1) + \text{शे}''_1\text{प}}{\text{ल}'(\sqrt{\text{न}} + \text{अ}''_1) + \text{शे}''_1\text{ल}}$

Aho ! Shrutgyanam

पक्षौ समच्छेदीकृत्यासम्भवसम्भवयोः पृथक् पृथक् समीकरणं कृत्वा जातं समीकरणद्वयम्। $\text{अ}''_1\,\text{प}' + \text{शे}''_1\,\text{प} = \text{न}\,\text{ल}'$ । $\text{अ}''_1\,\text{ल}' + \text{शे}''_1\,\text{ल} = \text{प}'$ । ततः

$$\text{अ}''_1(\text{प}.\,\text{ल}' - \text{प}'.\,\text{ल}) = \text{प}.\,\text{प}' - \text{ल}.\,\text{ल}'.\,\text{न} = \text{ल}\,\text{ल}'\left(\frac{\text{प}.\,\text{प}'}{\text{ल}.\,\text{ल}'} - \text{न}\right)$$

$$\text{शे}''_1(\text{प}.\,\text{ल}' - \text{प}'.\,\text{ल}) = \text{ल}'^2\text{न} - \text{प}'^2 = \text{ल}'^2\left(\text{न} - \frac{\text{प}'^2}{\text{ल}'^2}\right)$$

$$\text{वा,}\ \text{ल}\text{ल}'\text{अ}''_1\left(\frac{\text{प}}{\text{ल}} - \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}\right) = \text{ल}\text{ल}'\left(\frac{\text{प}\text{प}'}{\text{ल}\text{ल}'} - \text{न}\right)$$

अतः $\text{अ}''_1\left(\frac{\text{प}}{\text{ल}} - \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}\right) = \frac{\text{प}.\,\text{प}'}{\text{ल}.\,\text{ल}'} - \text{न}$ । अत्र यदि $\frac{\text{प}}{\text{ल}} > \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}$ तदा

$\frac{\text{प}.\,\text{प}'}{\text{ल}.\,\text{ल}'} > \text{न}$ यदि च $\frac{\text{प}}{\text{ल}} < \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}$ तदा $\frac{\text{प}\text{प}'}{\text{ल}\text{ल}'} < \text{न}$

आसन्नमानान्तिमसूत्रात् । तेन $\text{अ}''_1$ इत्यस्य मानं सर्वदा धनम् ।

एवं $\text{ल}\text{ल}'\text{शे}''_1\left(\frac{\text{प}}{\text{ल}} - \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}\right) = \text{ल}'^2\left(\text{न} - \frac{\text{प}'^2}{\text{ल}'^2}\right)$

अतः $\text{ल}\text{शे}''_1\left(\frac{\text{प}}{\text{ल}} - \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}\right) = \text{ल}'\left(\text{न} - \frac{\text{प}'^2}{\text{ल}'^2}\right)$ अत्र ल, ल', सर्वदा धनं तथा यदा $\frac{\text{प}}{\text{ल}} > \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}$ तदा $\text{न} > \frac{\text{प}'^2}{\text{ल}'^2}$ यदा च $\frac{\text{प}}{\text{ल}} < \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}$ तदा $\text{न} < \frac{\text{प}'^2}{\text{ल}'^2}$

अतः $\text{शे}''_1$ इत्यस्य मानं सर्वदा धनं सिध्यति,

अथ (१) अस्मिन् ०, अ एतद्द्वयं धनं तथा (२) अस्मिन् १, शे, इति च धनमस्तीति स्फुटं दृश्यते, तेन किमपि राशित्रयं गृहीत्वा पूर्वोक्तरीत्या यदि क्रिया कर्त्तव्या तदा तृतीयो धनात्मकः सिध्यति । अतः (१), (२) अनयोः सर्वे राशयो धनात्मकाः सन्ति ।

(१) अस्मिन् महत्तमपदमानं " अ " भविष्यति यतः पदानां

Aho ! Shrutgyanam

रचनानुसारेण $\text{शे}_1\,\text{शे}'_1 = \text{न} - \text{अ}_1^2$ परन्तु $\text{शे}_1\,\text{शे}'_1$ इदं धनं तेन $\text{न} > \text{अ}_1^2$, अतो निरग्रमूलात् अमानात् अ_1 इदमल्पमेव । (२), (३) अनयोः किमपि पदं २अ—अस्मादधिकं न भविष्यति यतो रचनानुसारेण $\text{अ}_1 + \dot{\text{अ}}_1 = \text{शे}'_1\,\text{क}'_1$ । अथ अ_1, $\dot{\text{अ}}_1$ एतद्द्वयमपि "अ" अस्मादल्पमतः $\text{शे}'_1$ इदं वा क_1 इदं द्वयमपि २अ—मानादल्पं भविष्यति । यदि $\text{शे}''_1 = 1$ तदा $\text{अ}_1 = \text{अ}$ । यतः पूर्वयुक्त्या $\dot{\text{अ}}_1 + \text{शे}''_1 \frac{\text{ल}}{\text{ल}'} = \frac{\text{प}'}{\text{ल}}$, अतो यदि $\text{शे}''_1 = 1$ तदा $\dot{\text{अ}}_1$+एको भिन्नो रूपाल्पः$= \frac{\text{प}'}{\text{ल}'}$ । परन्तु $\frac{\text{प}'}{\text{ल}'}$ अयं "अ" अस्मात् सूक्ष्मोऽस्य $\sqrt{\text{न}}$ मानमेव तेन $\frac{\text{प}'}{\text{ल}'} > \text{अ}$ । अतः $\ddot{\text{अ}}_1 = \text{अ}$ ।

(१) अस्मिन् प्रथमं पदं विहायान्यत् किमपि यदि "अ" अस्मात् शोध्यते तर्हि शेषं (२) अस्मिन् तत्सम्वन्धि यत्पदं तस्मादल्पं भविष्यति । यतः पूर्वयुक्त्या $\ddot{\text{अ}}_1\,\text{ल}' + \text{शे}''_1\,\text{ल} = \text{प}'$ अतः $\frac{\text{ल}}{\text{ल}'} = \frac{1}{\text{शे}''_1}\left(\frac{\text{प}''}{\text{ल}'} - \ddot{\text{अ}}_1\right)$ तेन $\text{शे}''_1 > \frac{\text{प}'}{\text{ल}'} - \ddot{\text{अ}}_1$ यतः $\frac{\text{ल}}{\text{ल}'} < 1$ परन्तु $\frac{\text{प}'}{\text{ल}'} > \text{अ}$ । अतः $\text{अ} - \ddot{\text{अ}}_1$ सुतरां $\text{शे}''_1$ अस्मादल्पम् ।(१) अस्मिन् सर्वाणि पदानि "अ" मानादल्पानि (२) अस्मिंश्च २अ—मानादल्पानि । अस्थानेषु अमानादल्पाः भिन्ना भिन्नाः संख्याः २अस्थानेषु च २अ—मानादल्पाःभिन्ना भिन्नाः संख्याः स्थातुं योग्याः । अतः श्रेढीद्वये भिन्ना भिन्नाः संख्याः २अ तुल्यस्थानतोऽल्पेष्वेव स्थानेषु स्थातुं योग्या नाधिकेषु । अतः श्रेढीद्वये कतिपयपदानन्तरं पुनः पुनस्तान्येव मानानि आगमिष्यन्ति ।

कल्प्यते (१), (२), (३) श्रेढीषु क्रमेण पदानि ।

$\text{अ}_1, \text{अ}_2, \text{अ}_3, \ldots \text{अ}_{\text{न}-1}, \text{अ}_{\text{न}}, \text{अ}_{\text{न}+1} \ldots \text{अ}_{\text{म}-1}, \text{अ}_{\text{म}}, \text{अ}_{\text{म}+1}$ ।

$\text{त}_1, \text{त}_2, \text{त}_3, \ldots \text{त}_{\text{न}-1}, \text{त}_{\text{न}}, \text{त}_{\text{न}+1}, \ldots \text{त}_{\text{म}-1}, \text{त}_{\text{म}}, \text{त}_{\text{म}+1}, \ldots$

$\text{क}_1, \text{क}_2, \text{क}_3, \ldots \text{क}_{\text{न}-1}, \text{क}_{\text{न}}, \text{क}_{\text{न}+1} \ldots \text{क}_{\text{म}-1}, \text{क}_{\text{म}}, \text{क}_{\text{म}+1}, \ldots$

पूर्वयुक्तित इदं सिद्धमेव यतः पुनः पुनस्तानि मानानि भविष्यन्ति ।

कल्प्यते न, (म—१) एतदन्तर्गतेषु पदेषु एतद्द्वयसहितेषु पदमानानामावर्त्तो जातस्तदा ।

Aho ! Shrutgyanam

$अ_म = अ_न$, $अ_{म+१} = अ_{न+१}$, $अ_{म+२} = अ_{न+२}$,................

$क_म = क_न$, $क_{म+१} = क_{न+१}$, $क_{म+२} = क_{म+२}$,................

$त_म = त_न$, $त_{म+१} = त_{न+१}$, $त_{म+२} = त_{न+२}$,................

एवं सति—

$अ_{म-१} = अ_{न-१}$, $क_{म-१} = क_{न-१}$, $त_{म-१} = त_{न-१}$, एवं भविष्यति ।

क्रियाकरणानुसारेण—

$त_{न-१}\, त_न = ना - अ_न^२$, $त_{म-१}\, त_म = ना - अ_म^२$ ।

परन्तु $त_म = त_न$ तथा $अ_म = अ_न$ । अतः $त_{म-१} = त_{न-१}$ ।

पुनः $अ_{न-१} + अ_न = त_{न-१}\, क_{न-१}$, $अ_{म-१} + अ_म = त_{म-१}\, क_{म-१}$

अतः $अ_{म-१} - अ_{न-१} = त_{न-१}\,(क_{म-१} - क_{न-१})$

$$\therefore \frac{अ_{म-१} - अ_{न-१}}{त_{न-१}} = क_{म-१} - क_{न-१}$$ इदं शून्येन वा केनचिदभिन्नेन

समं भविष्यति । परन्तु पूर्वयुक्त्या $अ - अ_{न-१} < त_{न-१}$,

$अ - अ_{म-१} < त_{म-१}$ अर्थात् $< त_{न-१}$ । अतः $अ_{म-१} - अ_{न-१} < त_{न-१}$ ।

तेन $\frac{अ_{म-१} - अ_{न-१}}{त_{न-१}} < १$ तेन $क_{म-१} - क_{न-१} < १$

परन्तु पूर्वसिद्धमिदं $अ_{म-१} - अ_{न-१}$ शून्येन वाऽभिन्नेन सममतः समीकरणविषमीकरणयोरैक्यात् $अ_{म-१} - अ_{न-१}$ इदं शून्येन समं भविष्यति तेन $अ_{म-१} = अ_{न-१}$ अतो यदि न—पदमावर्त्तं तदा न—१ पदमपि आवर्त्तं भवति । परन्तु एतादृशी स्थितिस्तदैव यदा न > ३ यतः पूर्वयुक्तिर्या प्रतिपादिता सा पदत्रयाधिकपदेष्वेव ।

एवं क्रियाकरणेऽभिन्ना निरग्रा लब्धिः २अ—समा भविष्यति । यतो यदि अन्तिमा समग्रा लब्धिः $= \frac{\sqrt{ना} + अ_म}{त_म}$ तदा ततोऽनन्तरं $\frac{\sqrt{ना} + अ}{त}$ एवं भविष्यति ततः पूर्वयुक्त्या ।

$अ_म + अ = त_म क_म$, $त_म त = ना - अ^2$ अत्र, सर्वत्र ना=अवर्गसंख्यामानम् । परन्तु $त = ना - अ^2$ । अतः $त_म = १$ ततः पूर्वयुक्त्या $अ_म = अ$ ∴ २ $अ = क_म$ ।

$$कल्प्यते\ य = अ + \cfrac{1}{क + \cfrac{1}{\ddots\ च + \cfrac{1}{ज + \cfrac{1}{र + }}}}$$

यत्र अ, क,........इत्यादिलब्धयोऽनावर्तास्तथा

$$र = त + \cfrac{1}{स + \cfrac{1}{\ddots\ स_1 + \cfrac{1}{स_2 + \cfrac{1}{र}}}}$$

यत्र त, स,........इत्यादि—लब्धय आवर्त्ताः ।

कल्प्यते $\frac{प'}{ल'}$ इदमासन्नमानं $\sqrt{ना}$ अस्य अनावर्त्तलब्धिवशेन तत्पृष्ठासन्नमानं च $\frac{प}{ल}$ । तदासन्नमानानयनयुक्त्या र-सावयवलब्धिग्रहणेन

$$य = \frac{प' र + प}{ल' र + ल} \quad .... (१)$$

कल्प्यते $\frac{पा'}{ला'}$ इदमासन्नमानं त, स,....$स_2$ आवर्त्तलब्धिवशेन तत्पृष्ठासन्नमानं च $\frac{पा}{ला}$ तदा र-सावयवलब्धिग्रहणेन ।

$$र = \frac{पा' र + पा}{ला' र + ला} \quad .... (२)$$

(१) (२) अभ्यां वर्गसमीकरणविधिना द्विविध—र—मानेन द्विविधं यमितिरागमिष्यति । तयोर्या धनात्मिका सैवात्रोपयुक्ता ।

(२) अनेन $ला' र^2 + ला र = पा' र + पा$ ∴ $ला' र^2 +$ (ला—पा')र=पा

Aho ! Shrutgyanam

ततः $र = \frac{पां - ला}{२ लं} \pm \sqrt{\frac{(ला - पां)^2 + ४लांपा}{४लं^2}}$

पूर्वप्रतिपादितसमीकरणेऽस्मिन् ।

$शे_1'' (प. लं - पं. ल) = लं^2 न - पं^2$ ।

आसन्नमानानयनयुक्त्या $प. लं - पं. ल = \pm १$

तेन $\pm शे_1'' = लं^2 न - पं^2$

पक्षान्तरानयनेन $पं^2 = लं^2 न \pm शे_1''$

अतो यस्या आसन्नमूलमपेक्षितं सा संख्या चेत्प्रकृतिः कल्प्यते तदा तदासन्नमानस्य हरः कनिष्ठं लवश्च ज्येष्ठं भवति तदग्रिमशेषसमे क्षेपे, इति सिध्यति, अर्थादासन्नमानस्य समत्वे तदग्रिमशेषसमधनक्षेपे विषमत्वे तु तदाग्रिमशेषसमर्णक्षेपे हरांशमाने क्रमेण कनिष्ठज्येष्ठे भवत इति । अतो यदा तच्छेषमानं रूपसमं स्यात्तदा यदासन्नमानं तत्र हरांशमाने रूपक्षेपे वा रूपशुद्धौ ह्रस्वज्येष्ठे अभिन्ने भवतोऽतो मदुक्तं सूत्रम् ॥

निरग्रं पदं यद्गुणात् स्यात् फलाख्यं
धनाख्यं तदेवात्र शेषं तदग्रम् ।
पदाढ्यं धनं शेषहृद्यग्रमन्यत्
फलं तद्धतं शेषमूनं धनेन ॥ १ ॥
धनाख्यं नवं तस्य कृत्या विहीनो
गुणः शेषभक्तोऽन्यशेषस्य मानम् ।
मुहुस्त्वेवमन्ते यदा शेषमानं
भवेद्रूपतुल्यं तदा लब्धितोये ॥ २ ॥
गुणाप्ती विधुक्षेपके कुट्टकेन
भवेतां पदे ते समा लब्धयश्चेत् ।
विधुक्षेपकेऽथान्यथा रूपशुद्धा-
वभिन्ने सकृत्कुट्टकेनैव तूर्णम् ॥ ३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

यथा भास्कराचार्योक्तप्रश्ने प्रकृतिः ६७ । अस्या निरग्रं पदम् ८ । शेषं ३ ततः सूत्रानुसारेण ।

ध	शे	फ	वल्ली
८	३	८	८
७	६	५	५
५	७	२	२
२	९	१	१
७	२	१	१
७	९	७	७
२	७	१	१
५	६	१	१
७	३	२	२
८	१	५	५
			१
			०

वल्लीतो जाते गुणाप्ती ५९६७ । ४८८४२ लब्धयः समाः सन्त्यतो जाते कनिष्ठज्येष्ठे रूपक्षेपे क ५९६७ ज्ये ४८८४२ एते एव मुहुः कुट्टकविधिना समासभावनया च चक्रवालनाचार्योक्त्याप्यागच्छतः।

अथ प्रकृतेरासन्नमूलज्ञानार्थं मदुक्तं सूत्रम् ।

रूपक्षेपे कनिष्ठं यज्ज्येष्ठं तेन हृतं पदम् ।

आसन्नं प्रकृतेर्ज्ञेयं सूक्ष्मं बहुकनिष्ठतः ॥

अत्रोपपत्तिः । कनिष्ठज्येष्ठवर्गरूपाभ्यामितिसुगमेति किं ग्रन्थगौरवेण।

Aho ! Shrutgyanam

अथ चक्रवालगणिते दृढाङ्कसिद्धान्तेन नूतनः क्षेपो निरग्रो जातस्तदर्थं कतिपयदृढाङ्कसिद्धान्तान् प्रदर्शये । अत्र संख्याशब्देनाङ्केन वा सर्वत्र पूर्णा धनसंख्या ग्राह्या ।

(१) या संख्या स्वीयेन वा रूपेणैव निःशेषा भवति सा दृढसंख्या यथा, २, ३, ५, ७ इत्यादयः । अतोऽन्यथाऽदृढसंख्या ज्ञेया । यथा, ४, ६, ८, ९, इत्यादयः ।

(२) रूपाद्येकोत्तरा अङ्का यथेच्छाः क्रमेण स्थाप्याः । यथा

१,	२,	३,	४,	५,	६,	७,	८,	९,	१०
११,	१२,	१३,	१४,	१५,	१६,	१७,	१८,	१९,	२०
२१,	२२,	२३,	२४,	२५,	२६,	२७,	२८,	२९,	३०
३१,	३२,	३३,	३४,	३५,	३६,	३७,	३८,	३९,	४०
४१,	४२,	४३,	४४,	४५,	४६,	४७,	४८,	४९,	५०

(इत्यादयः)

अत्र प्रथमं २ दृढसंख्या ग्राह्या । अनया या या एकान्तरा अपवर्त्त्या भवन्ति तासामुपरि विन्दुः स्थाप्यः । ततोऽपरा अचिन्हिता ३ संख्या ग्राह्या । अनया या या द्व्यान्तरा अपवर्त्त्यास्तासामुपरि पुनर्विन्दुः स्थाप्यः । ततोऽप्यपरा अचिन्हिता ५ संख्या ग्राह्या । अनया चतुरन्तरिता या या अपवर्त्त्यास्तासामुपरि पुनर्विन्दुः स्थाप्यः । ततोऽपरा अचिन्हिता ११ संख्या ग्राह्या । अनया या या दशान्तरिता अपवर्त्त्यास्तासामुपरि पुनर्विन्दुः स्थाप्यः । एवं ततोऽप्यपरामचिन्हितां संख्यां गृहीत्वा क्रिया कार्या । एवं यावतीः संख्याः संगृह्य क्रिया कृता तासामचिन्हिता दृढा ज्ञेयाः । यथा अत्र १-५० संख्या गृहीतास्तत्र २, ३, ५, ७, ११, १३, १७, १९, २३, २९, ३१, ३७, ४१, ४३,

Aho ! Shrutgyanam

४७ अचिन्हिता दृढा ज्ञेया यतस्ताः स्वीयेन वा रूपेणैवापवर्त्या भवन्ति ।

(३) एकद्वित्र्यादिभेदा अभिन्ना धनात्मकाश्च सन्तीति प्रत्यक्षतो दृश्यते। अतो यदि न—संख्यकानां र—संख्यका भेदाः न भे$_{\text{र}}$ अनेन द्योतनीयाः स्युस्तदा भेदानयनेन नभे$_{\text{र}}$ $=\frac{\text{न (न-१) (न-२)...(न-र+१)}}{\text{१. २. ३.......र}}$ एते अभिन्नाः। अतो व्यस्तगणनया एकोत्तराणां र—संख्यकानां बधः एकाद्येकोत्तर—र—संख्यकाबधेन निःशेषो भवतीति सिध्यति। एकाद्येकोत्तर-र—संख्यकानां बधो लाघवेन $\underline{|\text{र}}$ अनेन प्रकाश्यते । यथा

१. २. ३.....न = $\underline{|\text{न}}$, १.२.३....म = $\underline{|\text{म}}$

१. २. ३..... र = $\underline{|\text{र}}$ इत्यादयो भवन्ति । एवमेतत्सङ्केतेन $\underline{|\text{न}}$ अयं लाघवेन न—भावितमित्युच्यते ।

$$\text{नभे}_{\text{र}}=\frac{\text{न (न-१) (न-२)...(न-र+१)}}{\text{१. २. ३. ... र}}=\frac{\text{न(न-१) (न-२)...(न-र+१)}}{\underline{|\text{र}}}$$

$$=\frac{\text{न (न-१) (न-२) ... (न-र+१)}\ \underline{|\text{न-र}}}{\underline{|\text{र}}\ \underline{|\text{न-र}}}=\frac{\underline{|\text{न}}}{\underline{|\text{र}}\ \underline{|\text{न-र}}}$$ इति सिध्यति ।

एवम्, $\text{नभे}_{\text{र}}=\frac{\underline{|\text{न}}}{\underline{|\text{र}}\ \underline{|\text{न-र}}}=\text{न भे}_{\text{न-र}}$ .... (१)

(४) अ, क, ग अङ्कानां मध्ये यदि अ, क मिथो दृढौ, क. ग अयं च अ—भक्तो निःशेषो भवति तदा अ—संख्यया ग—संख्या निःशेषा भवतीति पूर्वं प्रतिपादितम् । एतत्सिद्धान्तबलेनाधो लिखिताः सिद्धान्ताः सुखेनोपपद्यन्ते ।

(आ) यदि अ, क मिथो दृढौ तदा $\text{अ}^{\text{न}}$, $\text{क}^{\text{म}}$ एतौ च दृढौ भवतः ।

(का) यदि अ, क, ग, घ.... मिथो दृढास्तदा

$\text{अ}^{\text{न}}$, $\text{क.}^{\text{प}}$ $\text{ग.}^{\text{म}}$ $\text{घ.}^{\text{ब}}$....मिथो दृढौ भवतः ।

Aho ! Shrutgyanam

(गा) अ_1, अ_2, अ_3....,क_1, क_2, क_3....इत्यादिषु यदि अ_1,....अ_3....प्रत्येकं क_1, क_2....प्रत्येकेनाङ्केन दृढं तदा $\text{अ}_1\text{अ}_2\text{अ}_3$...., $\text{क}_1\text{क}_2\text{क}_3$....मिथो दृढौ भवतः ।

(५) $\frac{\text{य}}{\text{र}}$ इत्यत्र या निरग्रा लब्धिः सा नि$\left(\frac{\text{य}}{\text{र}}\right)$ अनेन प्रकाश्यते । अथ अ-दृढसंख्यायाः कः स महत्तमघातो येना $|\underline{\text{न}}$ यं निःशेषो भवतीति विचार्यते ।

$|\underline{\text{न}}$ अत्र यावन्ति गुणकखण्डानि अ, २अ, ३अ,....इत्यादि, तत्खण्डसंख्याप्रमाणम् = नि $\left(\frac{\text{न}}{\text{अ}}\right)$ = नि_1 । एवं यानि अ^2 शुद्धानि खण्डानि तत्प्रमाणम् = नि $\left(\frac{\text{न}}{\text{अ}^2}\right)$ । एवं न^3, न^4....शुद्धानां प्रमाणानि विदितानि भवन्ति ततः सर्वखण्डसंख्यायोगसमः अ-दृढाङ्कघातो महत्तमो येना $|\underline{\text{न}}$ यं निःशेषो भवति । यथा

उदा. (१), १. २. ३.....१५ = $|\underline{१५}$ अयं २ दृढाङ्कस्य केन महत्तमघातेन निःशेषो भवति । अत्र

$$\text{नि}\left(\frac{१५}{२}\right) = ७ \text{ । नि}\left(\frac{१५}{२^2}\right) = ३ \text{ । नि}\left(\frac{१५}{२^3}\right)$$

= १ । नि$\left(\frac{१५}{२^4}\right)$ = ० । अतः ७+३+१= ११ अयमेव महत्तमघाताङ्कः । येन अर्थात् $२^{११}$ अनेना $|\underline{१५}$ यं निःशेषो भवतीति ।

(६) $\text{मभे}_\text{र} = \frac{\text{म}(\text{म}-१)(\text{म}-२)\ldots(\text{म}-\text{र}+१)}{१.२.३\ldots\ldots\text{र}}$, अयं पूर्वयुक्तितोऽभिन्नः । अथ यदि म—दृढसंख्या भवेत्तर्हि तदल्पाः १,२,...., र सर्वा मतो दृढा भविष्यन्ति । अतः (म−१)(म−२)....(म−र+१) इयं संख्या $|\underline{\text{र}}$ अनेन निःशेषा भविष्यति । अतो यदि

$$\frac{(\text{म}-१)(\text{म}-२)\ldots(\text{म}-\text{र}+१)}{|\underline{\text{र}}} = \text{ल, तदा } \text{मभे}_\text{र} = \text{म. ल ।}$$

अतस्तदा $\text{मभे}_\text{र}$ अयं म—दृढाङ्केनापवर्त्यो भवति । म, अङ्केन योऽपवर्त्यो भवति सोऽ अप(म) नेन द्योत्यते ।

Aho ! Shrutgyanam

(७) द्वियुक्पदसिद्धान्तेन $(य+र)^{म}=य^{म}+म\,य^{म-१}\,र + \frac{म(म-१)}{\lfloor २}\,य^{म-२}\,र^{२}+\ldots र^{म}$ । अत्र म, $\frac{म(म-१)}{\lfloor २}$, $\frac{म(म-१)(म-२)}{\lfloor ३}$ एते सर्वे गुणका अभिन्नाः । आद्यन्तगुणकविहीनाः सर्वे गुणका यदि म–दृढाङ्को भवेत्तर्हि, म–दृढाङ्केनापवर्त्त्या भवन्ति । एवं द्वियुक्पदसिद्धान्तेनैव यदि म–दृढाङ्को भवेत्तदा

$(य+र+ल+व+\ldots)^{म}=य^{म}+र^{म}+ल^{म}+\ldots+अप\,(म)$

इति सिध्यति । अत्र यदि य, र, ल, वादीनां संख्या ना भवेत्तथा सर्वे वर्णा रूपसमाः स्युस्तदा $(१+१+\ldots)^{म}=ना^{म}=ना+अप\,(म)$

$\therefore ना^{म}-ना=ना\,(ना^{म-१}-१)=अप\,(म)$

अत्र यदि ना, म–दृढश्चैतौ मिथो दृढौ तदा पूर्वयुक्तितः

$ना^{म-१}-१=अप\,(म)$ इति सिध्यति ।

अयमेव फरमट–गणकस्य सिद्धान्तः (Fermat's Theorem)

(८) यदि $अ_{१}+क_{१}य+क_{२}य^{२}+क_{३}य^{३}+\ldots$ (१) अनेन दृढसंख्यैव विदिता भवेत् तदा कल्प्यते यदि य=न, तदाऽनेन दृढसंख्या म भवतीति । तदा $म=अ_{१}+क_{१}न+क_{२}न^{२}+क_{३}न^{३}+\ldots$ (२)

(१) अस्मिन् यदि $य=न+न_{१}म$ तदा (१) समीकरणस्य

रूपम्$=अ_{१}+क_{१}न+क_{१}न_{१}म+क_{२}\,(न+न_{१}म)^{२}+\ldots$

$=अ_{१}+क_{१}न+क_{२}न^{२}+क_{३}न^{३}+\ldots+अप\,(म)$

$=म+अप\,(म)$

अर्थात्, इदं म–संख्ययाऽपवर्त्त्यं भवेत् । अतो न किमपि बीजगणितेन सूत्रं कर्तुं शक्यते येन दृढसंख्यैव द्योतिता भवेत् ।

(९) यदि न–दृढसंख्या स्यात्तर्हि $१+\lfloor न-१$ अयं न–संख्ययाऽपवर्त्त्यो भवति । अयमेव विलसन–गणकस्य सिद्धान्तः (Wilson's Theorem)

अस्योपपत्त्यर्थं प्रथमं दीर्घवृत्तलक्षणेन

$$इ^{य}=१+य+\frac{य^{२}}{१\cdot२}+\frac{य^{३}}{१\cdot२\cdot३}+\dots$$

$$\therefore इ^{य}-१=य+\frac{य^{२}}{१\cdot२}+\frac{य^{३}}{१\cdot२\cdot३}+\dots$$

$(इ^{य}-१)^{प}=(य+\frac{य^{२}}{१\cdot२}+\dots)^{प}$ । अत्र द्वियुक्पदसिद्धान्तेन दक्षिणपक्षे $य^{प}$ अस्य गुणकः $=१$ । वामपक्षे चा-

$$(इ^{य}-१)^{प}=इ^{यप}-प\,इ^{य(प-१)}+\frac{प(प-१)}{|\underline{२}}इ^{य(प-२)}-\dots$$

स्मिन्

प्रथम पदे $इ^{यप}$, $य^{प}$ गुणकः $=\frac{प^{प}}{|\underline{न}}$ (दीर्घवृत्तलक्षणेन)

२ पदे $य^{प}$ गुणकः $=-\frac{प(प-१)^{प}}{|\underline{न}}$

३ .... $=\frac{प(प-१)}{|\underline{२}}\frac{(प-२)^{प}}{|\underline{न}}$

अतः सरूपसमीकरणसिद्धान्तेन वामपक्षीयो य--गुणकः

$$=\left\{प^{प}-\frac{प(प-१)^{प}}{}+\frac{प(प-१)}{|\underline{२}}(प-२)^{प}-\frac{प(प-१)(प-२)}{|\underline{३}}(प-३)^{प}+\dots\right\}\div|\underline{प}$$

$=१=$दक्षिणपक्षीयो $य^{प}$ गुणकः । ततश्छेदगमेन

$$प^{प}-प(प-१)^{प}+\frac{प(प-१)}{|\underline{२}}(प-२)^{प}-\dots=|\underline{प}\quad,\dots(१)$$

अत्र यदि न--दृढसंख्या तथा स्याद्यथा न$-१=$प । तदा (१) समीकरणेन $|\underline{न-१}=(न-१)^{न-१}-\frac{न-१}{१}(न-२)^{न-१}$

$$+\frac{(न-१)(न-२)}{|\underline{२}}(न-३)^{न-१}-\dots\quad(२)$$

अत्र न--दृढसंख्या तेन $(न-१)^{न-१}$ अस्मिन् सर्वाणि पदानि न--अपवर्त्यानि अन्तिमं चे $१^{न-१}$ इदं फरमटसिद्धान्तेन रूपहीनं तदा न--अपवर्त्यं भवेदेवं $(न-२)^{न-१}$, $(न-३)^{न-१}$ इत्यादिषु च स-

Aho ! Shrutgyanam

र्वाणि पदानि न—अपवर्त्त्यानि, अन्तिमानि $२^{न-१}$, $३^{न-१}$ इत्यादीनि च रूपहीनानि न—अपवर्त्त्यानि। एवं $(न-१)^{न-१}$, $(न-२)^{न-१}$ इत्यादिषु यदि लब्धयः $ल_१$, $ल_२$, $ल_३$,....इत्यादयः स्युस्तदा (२) समीकरणेन

$$\lfloor न-१ = ल_१ न+१ - \frac{न-१}{१}(ल_२ न+१)$$

$$+\frac{(न-१)(न-२)}{\lfloor २}(ल_३ न+१) - ....$$

$$= अप(न)+१-\frac{न-१}{१}+\frac{(न-१)(न-२)}{\lfloor २}+....,$$

(न—१) पदपर्यन्तम्

$$= अप(न)+(१-१)^{न-१}-१ = अप(न)-१।$$

$\therefore १+\lfloor न-१ = अप(न)$ अनेन विलसन--सिद्धान्त उपपद्यते।

अनेन सिद्धान्तेन निर्दिष्टसंख्या दृढा वाऽदृढाऽस्तीति सुखेन ज्ञायते। यथा ११ इयं दृढा वाऽदृढेति प्रश्ने—

अत्र न=११, $\lfloor न-१ +१=१+१.२.३.४.५.६.७.८.९.१०$ =३६२८८०१ इयं न(११) संख्यया शुध्यति। अत ११ इयं संख्या दृढास्तीति।

(१०) (९) सिद्धान्तेन काचित्संख्या दृढाङ्कघातगुण्यगुणकखण्डरूपा भवितुमर्हति। अतः काचित् संख्या $= सं = अ^{न}.क^{त}.ग^{म},....$। यत्र अ, क, ग दृढाः। अथात्र प्रत्यक्षतो दृश्यते यदियं $सं=अ^{न}.क^{त}.ग^{म},....$

$$(१+अ+अ^२+..+अ^न)(१+क+क^२+....+क^त)$$

$$(१+ग+ग^२+....+ग^म)....$$

एतेषां वधे यानि पदानि तेभ्यः सर्वेभ्योऽपवर्त्त्या भवति।

अतः सर्वापवर्त्तकानां योगः = $(१+अ+अ^२+....)$.

$$(१+क+क^२+....)(१+ग+ग^२+....)....$$

Aho ! Shrutgyanam

$$= \frac{अ^{न+१} - १}{अ - १} \cdot \frac{क^{त+१} - १}{क - १} \cdot \frac{ग^{म+१} - १}{ग - १} \cdots$$

तथापवर्त्तकानां संख्या च=(न+१) (त+१) (म+१)....

यत्र रूपं सा संख्या चापि अपवर्त्तकत्वेन गृहीता ।

अथोपयोगिनां सिद्धान्तानां सूत्राणि ।

निजेनैव भुवा वा या संख्या शुध्यति सा दृढा ।
सन्त्यनन्ता दृढाश्चात्र संख्याः संख्यार्णवे ध्रुवम् ॥ १ ॥
परस्परं दृढा याः स्युस्तद्वर्गाद्यपि वै दृढम् ।
अन्यवर्गादिघातोऽपि स्वीयतः स्यात्तथा दृढः ॥ २ ॥
दृढयोर्भाज्यहरयोर्हरहृच्चेद्विशुध्यति ।
भाज्यश्च यद्गुणस्तर्हि गुणः शुध्यति हारहृत् ॥ ३ ॥
दृढैकयुग्मादिवधेन संख्यका
पृथक् हृता याश्च निरग्रलब्धयः ।
दृढस्य तद्योगसमानघातत-
स्तत्संख्यकाभावितमेव शुध्यति ॥ ४ ॥
आद्यो दृढश्चेदपरेण वै दृढ-
स्तदा परस्य प्रथमेन तुल्यः ।
व्येकेन घातो विधुना विहीन-
आद्येन भक्तः परिशुद्धिमेति ॥ ५ ॥
तादृक् सूत्रं च युक्तिश्च यद्वशाज्ज्ञायते बुधैः ।
केवलं दृढसंख्यानां मानं नैवोपलभ्यते ॥ ६ ॥
कश्चित् स्वयं दृढश्चेत्स्यात्तर्हि तेन विशुध्यति ।
विधुना सहितं धीमन् व्येकतद्दृढभावितम् ॥ ७ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथैतन्मूलकाः कतिपयसिद्धान्ताः।

या या हरहृताः सन्ति तुल्यशेषा हि संख्यकाः ।
तासां तुल्याग्रसंज्ञा स्यात्तद्धरस्य वशादिह ॥ ८ ॥
एकाद्येकोत्तरा अङ्का व्येकहारसमा गुणाः ।
भाज्येन हारविहृतास्तर्ह्यग्राण्यसमानि हि ॥ ९ ॥
एकाद्येकोत्तरा अङ्का व्येकहारसमाश्च ये ।
तान्येवाप्यग्रकाणीह यदि भाज्यहरौ दृढौ ॥१०॥
श्रेढ्योर्द्वयोः पदे द्वे द्वे क्रमात्तुल्याग्रके यदा ।
तदा द्वयोः सर्वपदाहती तुल्याग्रके हरात् ॥११॥
यद्धारवशतस्तुल्यशेषौ राशी तदन्तरम् ।
तद्धारविहृतं शुध्येदिति चिन्त्यं विपश्चिता ॥१२॥
दृढः कोऽपि रसैर्भक्त एकाग्रो भवति ध्रुवम् ।
पञ्चाग्रो वा सदा विद्वन् रामानल्पः स चेद् दृढः ॥१३॥
कोऽपि वर्गः शरहृतो विशुध्येदथवा भवेत् ।
एकाग्रो वेदशेषो वा दृढसिद्धान्तयुक्तितः ॥१४॥
दृढाङ्कघातः संख्यायाः कस्या अपि विहीनतः ।
तत्संख्ययैव विहृतस्तद्दृढेन विशुध्यति ॥१५॥
इत्थं संक्षेपतश्छात्रबुद्धिवृद्ध्यै द्विवेदिना ।
सुधाकरेण लिखिताः सिद्धान्ता दृढसम्भवाः ॥१६॥

इति दृढाङ्कसिद्धान्ताः समाप्ताः ॥

शुभं भूयात् । श्रीरामोऽवतु ।

Aho ! Shrutgyanam

॥ श्रीः ॥

विज्ञप्तिः ।

—o—

१ अस्यां चौखम्बा-संस्कृतग्रन्थमालायां प्रतिमासं पृष्ठशतके सुन्दरैः सीसकाक्षरैरुत्तमेषु पत्रेषु एकः स्तबको मुद्रयित्वा प्रकाश्यते

२ एकस्मिन् स्तबके एक एव ग्रन्थो मुद्र्यते ।

३ प्राचीना दुर्लभाश्चाऽमुद्रिता मीमांसावेदान्तादिदर्शन,व्याकरण,धर्मशास्त्र,साहित्य, पुराणादिग्रन्था एवात्र सुपरिष्कृत्य मुद्र्यन्ते ।

४ काशिकराजकीयप्रधानसंस्कृतपाठालयाऽध्यापकाः पण्डिता एव एतत्परिशोधनादिकार्यकारिणो भवन्ति ।

५ भारतवर्षीयै,र्ब्रह्मदेशीयैः, सिंहलद्वीपवासिभिश्च एतद्ग्राहकैर्देयं

वार्षिकमग्रिमं	मूल्यम् मुद्राः ७	आणकाः ८ ।
मासिकं (व्याल्युपेबल्-द्वारा)	,, ,, ०	,, १२ ।
६ कालान्तरे प्रतिस्तबकं	,, ,, १	,, ०

७ प्रापणव्ययः पृथग् नास्ति ।

८ साम्प्रतं मुद्र्यमाणा ग्रन्थाः— मुद्रिताः स्तबकाः

(१) संस्काररत्नमाला । गोपीनाथभट्टकृता (संस्कारः) २

(२) शब्दकौस्तुभः । भट्टोजिदीक्षितकृतः (व्याकरणम्) १०

(३) श्लोकवार्तिकम् । भट्टकुमारिलविरचितम् पार्थसारथिमिश्रकृत-न्यायरत्नाकराख्यया व्याख्यया सहितम् (मीमांसा) ९

(४) भाष्योपबृंहितं तत्त्वत्रयम् विशिष्टाद्वैत दर्शनप्रकरणम् । श्रीमल्लोकाचार्य्यप्रणीतम् ॥ (वेदान्तः) १

(५) करणप्रकाशः । श्रीब्रह्मदेवविरचितः १

९ अग्रे मुद्रणीयत्वेनाभीप्सितौ ग्रन्थौः—

विधिरसायनम् । अप्पयदीक्षितकृतम् (मीमांसा)

न्यायकणिका । वाचस्पतिमिश्रकृता ,,

एतदन्यानि कानि चित्पुस्तकानि अपेक्ष्यन्ते चेदस्मत्कार्यालयपुस्तकानां मुद्रिता महती सूची आणकार्धं संप्रेष्य द्रष्टव्या ।

पत्रादिप्रेषणस्थानम् } कार्याध्यक्षः-हरिदासगुप्तः, चौखम्बा--संस्कृतपुस्तकालयस्य बनारस सिटी ।

Aho ! Shrutgyanam

The Chowkhambâ Sanskrit Series, Benares.

This Monthly Magazine consists of very rare and valuabl ancient Sanskrit works on Vedic Literature, Hindu Philosophy different sciences, general literature and Purânas &c, that hav never been published before. The monthly issue of this Magazin dealing with one subject contains 100 pages of Demy octavo size printed neatly in beautiful types on good thick paper, after bein carefully corrected by the Pandits of the Government Sanskri College, Benares.

The works included in the Magazine hitherto issued and thos in course of preparation for publication are as follows :—

Names of Books,		*Fasciculus ready for Sal*
1. Sanskâraratnamâlâ, by Gopînâtha Bhatta.	(Sanskâra)	2.
2. Śabdakaustubha, by Bhattoji Dîkshita.	(Vyâkarana)	10.
3. Śloka Vârtika of Kumârila Bhatta together with the Commentary called Nyâya-ratnâkara, by Pârthasârathi Miśra	(Mîmânsâ)	9.
4. The Vedânta-Tatwatraya of Śri Lokacharyya	(Vedanta)	1.
5. Karana-Prakash by Bramhadeva	(Complete)	1.
6. Nyâyakanikâ of Vâchaspati Miśra.	(Mîmânsâ)	(in preparation.)
7. Vidhirasâyana of Appaya Dîkshita.	do.	do.

FOR INDIA, BURMA & CEYLON.

Annual subscription	(in advance)	Rs.	7	8	0
Monthly Do.	(Per V. P. Post)	"	0	12	0
Single copy		"	1	0	0

FOR FOREIGN COUNTRIES.

			£.	s.	d.
Annual subscription	(in advance)	...	0	15	0
Single copy ...	... ...	...	0	1	9

Postage free.

To be had from :—

H. D. GUPTA, *Secretary*,

The Chowkhambâ Sanskrit Bk. Depot,

BENARES CITY.

Aho ! Shrutgyanam

प्राकृत-व्याकरणम्।

इङ्गलण्डीयभाषानुवाद सहितम्

श्री हृषीकेश शास्त्रि भट्टाचार्य्येण

सङ्कलितम्

पञ्चनद महाविद्यालयाध्यक्षानुमत्या लवपुरसंस्कृत

पुस्तकालयाध्यक्ष लाला मेहरचन्दनामधेयस्य

साहाय्येन प्रकाशितञ्च

कलिकाता राजधान्यां कोन्स कम्पानि यन्त्रे

श्री केदार नाथ दत्तेन

मुद्रितम्।

A

PRAKRITA GRAMMAR

WITH

ENGLISH TRANSLATION

BY

PUNDIT RISHIKESH SASTRI.

PUBLISHED

BY

LALLA MEHARCHAND, LAHORE.

CALCUTTA:

CONES AND CO., No. 307, BOW BAZAR STREET.

1883.

[All rights reserved with the Author.]

Price Rs. 1-12.

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

प्राकृत-व्याकरणम् ।

इङ्गलण्डीयभाषानुवाद सहितम्

श्री हृषीकेश शास्त्रि भट्टाचार्य्येण

सङ्कलितम्

पञ्चनद महाविद्यालयाध्यक्षानुमत्या लवपुरसंस्कृत
पुस्तकालयाध्यक्ष लाला मेहरचन्दनामधेयस्य
साहाय्येन प्रकाशितञ्च
कलिकाता राजधान्यां कोन्स कम्पानि यन्त्रे
श्री केदार नाथ दत्तेन
मुद्रितम् ।

A PRAKRITA GRAMMAR

WITH

ENGLISH TRANSLATION

BY

PUNDIT RISHIKESH SASTRI.

PUBLISHED
BY
LALLA MEHARCHAND, LAHORE.

CALCUTTA:
CONES AND CO., No. 307, BOW BAZAR STREET.
1883.

[All rights reserved with the Author.]

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

Contents (सूचिपत्रम्)

विषयः	पत्रं	पंक्तिः
साधारणनियमाः	१	२
सन्धिः	३	१५
लुक्	५	३
अनुस्वारः	९	८
लिङ्गविवेकः	१३	१०
विशेष नियमाः	१६	१२
अज्विधिः	२०	१
असंयुक्तव्यञ्जनलोपादयः	४७	१०
संयुक्तव्यञ्जनलोपादयः	५४	३
प्रत्ययविधानं	६८	१०
स्वार्थे प्रत्ययाः	७२	१७
विशेषपदानि	७३	१९
अव्ययं	९४	२१
शब्द साधन विधिः	९७	२
शब्द रूपाणि	९८	८
सर्व्वनाम शब्दाः	११७	६
तिङन्त प्रकरणं	१२९	३
धात्वादेश विधिः	१४१	६

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

शुद्धि पत्रं ।

पत्रं	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
१	४	आनन्तर्य्यो	आनन्तर्य्या
,,	,,	भव	भवं
७	१९	नस्य	वस्य
,,	२३	putport	purport
८	४	शुति	श्रुति
१०	२४	वक्रादिष्व	वक्रादिष्वे
३५	१६	ri	ri
३६	४	syllable	vowel
३८	१	शौद्धदणि	शौद्धौदणि
४०	१६	प्राप्त	प्राप्ते
,,	२४	स्थान	स्थाने
५०	६	पस्य	फस्य
,,	२४	इए	इएव
५६	१२	preceeding	preceding
,,	१३	do	dv
५७	२	लुम्वा	लुग्वा
६०	२५	इत्त	इत्तु
६२	२०	॥ र्त्तस्या इत्यादि	॥ टः र्त्तस्या इत्यादि
,,	२३	वड्ढो	वड्ढो

Aho ! Shrutgyanam

६२	२३	णट्ट	णट्ट
६३	२१	त्तट्टयो	त्तट्टयों
८८	१०	in all the cases	before all the case affixes
११२	१	उकारान्त	ऊकारान्त
११७	१२	दुर्व्वा मा	दुर्व्वासा
१२८	१८	several pronouns	several persons
१३०	१५	स्मर्त्व्यं	स्मर्त्तव्यं
१३१	१८	विशेष नियमननु	विशेष नियमाननु
१४४	२	मिप	मिच

Aho ! Shrutgyanam

PREFACE.

The word *kávya* in Sanskrit has a more extensive signification than the word poetry in English. Our ancient authorities paid greater attention to the spirit of the composition than to its external form. The rythmical structure of composition was not considered essential to its being classed among the *kávyas.* Thus the author of Sáhitya Darpaṇa divides kávyas into two classes viz:—*Dṛisya* or what is to be seen (represented on the stage) and *s'ravya* or what is to be heard. All dramatic poems come under the former, while epic and lyric poems are included in the latter.

The Dṛisyakávyas or dramas are of twenty eight varieties, of which ten are called *Rupakas* and the rest *Uparupkas.*

Every *Dṛis'yakávya* is composed partly in Sanskrit and partly in Prakrita.

It is needless to speak here about the Sanskrit. My remarks accordingly will be confined to the Prákrita. Prákṛita, according to Hemchandra is derived from *prakṛiti* "the Sanskrit." Prákṛita is a common name given to all the different dialects originally derived from the Sanskrit such as the Mahárastri, S'aurasení &c.

Modern philologists have not yet satisfactorily solved the question whether these dialects are derived directly from the Sanskrit or (through) some of its corruptions. It is contended by some that Páli was the medium through which all the Prákṛita dialects came into existence others, consider it more reasonable to hold that the Prákrita dialects have been directly derived from the Sanskrita. This question has been discussed in the introduction to my Híndí Vyakarana in Bengalì, and what I have said there I need not repeat.

So long as the Sanskrit speaking *Aryans* were confined to their favourite home of Brahmavarta,no great confusion of this language was possible. But when they began to emigrate into different parts of India the pure sanskrit Euphony became affected by the climatic and other influences of the several places to which they resorted. Thus several dialects differing from each other in minute points gradually sprang up under the common name of *Prákrita.*

Aho ! Shrutgyanam

The number of these dialects necessarily increased with the extension of the emigration. Thus professor Cowel in his introduction to Bararuchi's grammar says "the later gramarians include many varieties under the name (Prákrita) but most of them are probably the subtle refinements of a later age, as the older the grammarian is, the fewer we find the dialects to be, and the oldest Vararuchi has only treated of four."

Lalla Dikshita, in his commentary on *Mṛichchhakatika* says :—

" केषाञ्चिन्मते चतस्रो भाषाः। शौरसेनी, अवन्तिका, प्राच्या, मागध्यः। केषाञ्चिन्मते "मागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यर्द्धमागधी वाह्लीका दाक्षिणात्याच सप्त भाषाः प्रकीर्त्तिताः " ।

"Some say there are only four varieties of the Prákṛita language, viz:—the *s'auras'eni*, the *avantiká*, the *Práchyá* and the *Mágadhi*; according to others there are seven, as the *Mágadhí*, the *avantí*, the *pra'chya*, the *s'auraseni*, the *arddha mágadhi*, the *báhlika* and the *da'kshinátya*.

It is obvious from the above that the number of prákṛita dialects increased gradually and not all at once.

However we must not suppose that the different Prákṛita dialects differed from the mother Sanskrit in no other way than through the necessary influence of time and place. Many such dialects received, more or less, copious accessions of words and forms from the aboriginal and foreign languages with which they in process of time came into contact. Thus the Pra'krita dilects in later times came to be of three classes viz :—*Tadbhava, Tatsama* and *Desi.** Tadbhava means one mainly and directly derived from the sanskrit ; *Tatsama* means one which retains the *same* form and euphony as the sanskrit ; and by *Desi* we understand those dialects of which an aboriginal dialect forms the ground work. All *Des'i* dialects are called by a common name *apabhrans'a*.

Of all the Prákrita dialects *mahárashtri* undoubtedly is the chief, and it is in this dialect that the beautiful works like the *setubandha* &c. are composed. † The other Prákrita dialects follow the *Mahárastrí*,

* " तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेकप्राकृतक्रमः" । इति दण्डी।

† महाराष्ट्रोद्भवां भाषां प्रकृष्टप्राकृतं विदुः सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादियन्मयः"
इति दण्डी

Aho ! Shrutgyanam

only differing from it in some minor particulars. Next in importance to the *Mahárastri*, we may mention the *sauraseni*, *mágadhi*, *paishachi* and *apabhrans'a*. *Mágadhi* again has a subdialect called the *ardhamágadhi*. *Apaphrans'a* appears to be the general name of the following dialects, viz :—*nágara*, *upanágara*, *drábiḍa* (or *sindhi*), *ṭakka*, *ma'laví*, *pa'nchálí*, *kálindí gurjarí*, *drábiḍí*, *baitálíkí*, *ka'nchí*, *abhírí sávarí** &c.

Hemachandra, the great grammarian of Prákrita dialects, treats of *apabhrans'a* only generally, but the authors of the Kalpalatiká and other grammars give separate rules for each of the different dialects that come under the term.

Whether the pure Sanskrit language remained a spoken dialect for any great length of time even in its native land the Brahmavarta, seems to be open to question. But that the learned and the higher classes long continued to use it in their daily conversation and exchange of thought, may be assumed from the universal practice of the dramatists in putting the divine language into the mouth of their higher personages.

It was the peculiarity of our ancient forefathers to bind every practice by rigid rules, so that even when the reality had ceased to exist no departure was allowed from the practice of dramatic representation having the sanction of ages. In the same manner, any uniformity or fanciful excellence which they thought they had discovered in a people speaking a particular dialect, came to be regarded as inherent in them forever afterwards and the work of a dramatist who ventured to violate any of such recognised principles was pronounced unfit to be considered a classic.

Mark how boldly and dogmatically the author of the Sahitya Darpaṇa regulates the application of the different Prákrita dialects in a drama.

"High born and educated persons must speak the Sanskrit and women similarly circumstanced are to speak the *S'auraseni* dialect. Those latter however should employ the *Mahárastri* in their songs and verses. The ma'gadhí is mentioned as the tongue of those who move

---

* It will be observed that the names of the different Prákrita dialects mostly refer to different teritorial divisions.

Aho ! Shrutgyanam

in the inner apartment of a king. The dialect of servants, princes, and merchants is the half *Mâgadhi.* The *Prâchya* (eastern i.e. gaudiya is the dialect of the Vidúshaka and others, and the *Abanti* of the gamesters. *Drâvidi* or the southern dialect is spoken by the soldiers and gamblers. The *Sákári* should be used by the left-hand brother-in-law of kings, by the Sakas and others. The *Vahlikí* dialect belongs to the people of northern India, and the *Chândalí* to the Chandals and others. The *Abhirí* and *Sávarí* are spoken by workers upon wood and by charcoal makers. The *Pais'achi* is the tongue of the Pisáchas and also of female attendants (see Sahityadarpan, chapter vi.)

The different dialects of the Pra'krita are so copiously employed in the Sanskrita dramas that it is impossible to go through an ordinary work of this species of composition without a fair acquaintance with the main principles of those dialects. A comprehensive Prakrita grammar is accordingly much in request among Sanskrit Students.

There already exist a good many works on the Prákrita dialects such as the Prakritaprakás'a of Vararuchi, Prakritalakshmana of Chanda, Prakrita sarvaswa of Márkandeya, Prákritástadhyáyi of Hemchandra, Prakrita sanjibaní of Vasantraj, Prakrita lankeswara, Prakritakalpalatika &c. Besides we find in the Prakrita sarvaswa of Markandeya names of many former grammarians, such as Sákalya, Sarata, Kahala, Bhamaha &c. whose works appear to be however no longer extant.

Of the extant works many still lie buried in manscripts ; a few others which have been published by European scholars are inaccessible to students of moderate means. Moreover the system adopted in these works is so repulsive and unmethodical that even a devoted student can only with great difficulty benefit by them.

With a view to remove these difficulties from the path of the reader of Sanskrit dramas, I have ventured to compile the present prâkrita grammar. In it I have adopted an entirely new system, with what success it is for the public to judge.

I beg to mention that the work is mainly a compilation from almost all the extant works on the subject. I lay claim to no originality save the entirely new method of arrangement and treatment of

Aho ! Shrutgyanam

the subject. The system pursued by me may be explained in a few words :—

(a) Unlike the ancient grammarians, who have generally laid down rules for the different Prákrita dialects in separate chapters, I have adopted the simpler plan of treating the Maharastri or the main dialect of the Prákrita in the body of the work, showing in notes its points of difference with other dialects.

(b) Instead of following the ancient authors in giving rules that are applicable only to the forms of special words, I have prefered giving a list of those words with their Sanskrit and Prakrita forms side by side. It is hoped much unprofitable trouble to the learner will be saved by this means.

(c) I have given, in easy sanskrit, rules for the declension of nouns and conjugation of verbs, and like modern grammarians illustrated these rules by showing declensions of similar classes of nouns as well as the conjugation of similar classes of verbs.

In order to make the work more widely useful English version of almost every sentence has been interpolated, though at the cost of making it a little too bulkey.

The mighty impetus given to the study of the Sanskrit language by the direct encouragement of our Enlightened Government and the indirect encouragement afforded by the example of the German linguists, is a subject of deep congratulation and the consciousness of having endeavoured to contribute in a humble way to the attainment of a dear object, will amply repay me for the time and labour I have given to this compilation.

I cannot omit to mention here that my deep obligations are due to my esteemed friend Babu S'as'ibhushan Mukerjee M. A., B. L., professor of the Government College, Lahor, who has kindly revised the work in its passage through the press and has given me valuable suggestions which while materially diminishing my labours, have rendered the work more complete than it otherwise would have

RHISHIKESH BHATTACHA

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

प्राकृत-व्याकरणम्।

साधारण नियमाः।

।अथ प्राकृतम्॥ १ ।

अथशब्द आनन्तर्यार्थोऽधिकारार्थ श्च । प्रकृतिः संस्कृतं, तत्र भवं तत आगतम्वा "प्राकृतम्" प्राकृते च प्रकृति, प्रत्यय, लिङ्ग, कारक, समास, संज्ञादयः संस्कृतवद्वेदितव्याः ।

The word 'Atha' 'अथ' means both proximity and dependence on subsequent rules (अधिकार). Prakrita is a common name given to the dialects which sprang up or were derived from "Prakriti, the Sanskrita." There is no difference between the radical forms of words, the affixes, the genders, cases, samasas and nouns, &c. of the Sanskrita and those of the Prakrita.

प्राकृतमधिक्रियते Hence prakrita dialects are to be illustrated by the following rules :—

॥ लोकाद्‌वगन्तव्यः ॥ २ ।

प्राकृते वर्ण-समाम्नायो लोकाद्‌वगन्तव्यः । यथा—

(१) अत्र ऋ, ॠ, ऌ, ऐ, औ इत्येतान् विहायापरे स्वरा तिष्ठन्ति ।

(२) ङ, ञ, श, ष, न, य, इत्येते व्यञ्जनवर्णा प्राकृते न सन्ति । परं वर्गसंयुक्तयो ङ ञो व्यवहारः क्वचिद् दृश्यते ।

(३) प्राकृते भिन्नवर्गीयानां वर्णानां परस्परं संयोगो न भवति। यथा त्क, प्क, क्त, क्य; क्र, क्ल, क्व, क्ष, इत्येतेषां क्क इति रूपं भवति । ङ्ग, द्ग, ग्न, ग्य, ग्र, र्ग, ल्ग इत्येतेषां ग्ग इति रूपं भवति । इत्यादि; पञ्चम-वर्ण-संयोगश्चात्र विरल एव ।

Aho ! Shrutgyanam

(४) अत्र स्वर-रहितं व्यञ्जनं नास्ति ।

The following are specialities of the 'Prakrita' and must be known from other sources than the Sanskrita.

(1) It retains all Sanskrita vowels sxcept ऋ, ॠ, ऌ, ऐ and औ.

(2) The Prakrita discards the following consonants ङ, ञ, श, ष, न, य, but sometimes the use of ङ, ञ, may be seen in their combination with letters of their own class.

(3) The Prakrita avoids union of two consonants of different classes and only a few words are found with letters combined with the fifth letters of their own class.

(4) No mute consonants occur in Prakrita; all are vocalized.

इदमपि च लोकादवगन्तव्यं यत् प्राकृते द्विवचनं चतुर्थी च न भवतः।

Be known that the Prakrita has no dual number nor the dative case (the latter being replaced by the genetive.)

॥ बहुलम् ॥ ३ ।

बहुल मित्यधिकृतं वेदितव्यं, आशास्त्र परिसमाप्तेः ।

Bahula 'बहुल' is a term generally meaning "variously" or "optionally." It must be understood that this (Bahula) is to be implied in the succeeding Sūtras, till the work is finished.

॥ दीर्घ ह्रस्वौ मिथोवृत्तौ ॥ ४ । १ ।

१। एतदध्यायस्थित दशमसूत्र तिलकं द्रष्टव्यम्। See the notes on the tenth Sūtra of this chapter. शौरसेन्यादौ नैषविधिरस्ति। This rule does not apply to Śaurasení or other Prakrita dialects.

Aho ! Shrutgyanam

वृत्तौ समासे, स्वराणां दीर्घ ह्रस्वौ बहुलं भवतः । मिथः परस्परं ह्रस्वस्य दीर्घो दीर्घस्य च ह्रस्वः ।

Some times in *Samasa* or compound words a long vowel is converted into a short one and a short into a long as—अंतावेइ, (अन्तर्वेदी); सत्तावीसा, (सप्तविंशतिः) क्वचिन्न भवति, sometimes such change does not take place as जुवइअणो, (युवतिजनः); क्वचिद्विकल्पः, and in some instances it is optional as पईहरं, पइहरं (पतिगृहं) णईसोत्तं णइसोत्तं (नदीस्रोतः); बहुमुहं, बहूमुहं (बहु[धू]मुखं); कण्णउरं, कण्णऊरं (कर्णपुरं); सिरोवेअणा, सिरवेअणा, (शिरोवेदना); पीआपीअं, पिआपिअं (पीतापीतं) सरोरुहं, सररुहं (सरोरुहं); भुअवत्तं, भुआवत्तं (भूर्जपत्रं) पल्लिवइ, पल्लीवइ (पल्लीपति); गामणीसुओ, गामणिसुओ (ग्रामणीसुतः); अंतउरं, अंतेउरं (अन्तःपुरं); अक्खउहिणी, अक्खोहिणी (अक्षौहिणी);

॥ पदयोः सन्धिर्वा ॥ ५ ।

संस्कृतोक्तः सर्व्वः सन्धिः प्राकृते पदयोर्व्यवस्थितविभाषया भवति ।

When two words come in immediate conjunction, all sorts of union (सन्धिः) under the rules of the Sanskrita grammar, are optional in the Prakrita; as दहि ईसरो, दहीसरो, (दधीश्वरः); वासेसी, वास इसी, (व्यासर्षिः) पदयोरिति किं? Note that the above rule applies to the case of immediate conjunction of *two words*, for there is never any union in one word, as पाओ, (पादः)।

Aho ! Shrutgyanam

॥ न युवर्णस्यास्वे ॥ ६ ।

इवर्णस्य उवर्णस्य चाऽस्वे वर्णे परे सन्धि र्न भवति ।

The letters इ (i) and उ (u) do not unite with vowels of different kinds as विश्व, (इव) ; मइुइं, (मधूनि) ; अस्व इति किं? Why did we say that *i* and *u* do not unite with vowels of different kind? for the union takes place with vowels of the *same* kind, as पुऋवीसः (पृथिवीशः) ।

॥ एदोतोः स्वरे ॥ ७ ।

एकार ओकारयोः स्वरे परे सन्धि र्न भवति ।

The vowels (é) ए and (o) ओ do not nnite with any vowel which is in immediate conjunction with them, as देवीए एत्थ (देव्याश्च) ; एओ एत्थ, (एकोऽत्र) ।

॥ स्वरस्योद्वृत्ते ॥ ८ ।

व्यञ्जन-संपृक्तः स्वरो व्यञ्जने लुप्ते योऽवशिष्यते, स उद्वृत्त इत्योच्यते स्वरस्य उद्वृत्ते स्वरे परे सन्धि र्न भवति । The word *udvritta* means here a vowel which remains alone after its inherent cosonant is elided. An *udvritta* vowel does not unite with any vowel coming before it, as गुहअउलनारी, (गुह्यक कुलनारीः); णिसाअरो, (निशाचरः); क्वचिद्विकल्पः in some instances this rule is optionally applied, as सुउरिसो, सूरिसो, (सुपुरुषः); क्वचित् सन्धिरेव, In some special instances the union (सन्धिः) must take place, as चक्काओ (चक्रवाकः) ।

॥ त्यादेः ॥ ९ ।

तिवादीनां स्वरस्य (स्वरे परे) सन्धि र्न भवति ।

Aho ! Shrutgyanam

The vowels of the affixes *ti* (ति) &c., do not unite with any vowel, as होइ्इह, (भवतीह) ।

॥ लुक् ॥ १० । १ ।

स्वरस्य स्वरे परे वहुलं लुक् भवति ।

When a vowel comes after another vowel the latter is elided optionally, as तिअसीसो, तिअसईसो, (त्रिदशेशः); राउलं, राअउलं (राजकुलं); तुहद्धं, तुहअद्धं (तवार्द्धं); महद्धं महअद्धं (ममार्द्धं); पावडणं, पाअवडणं (पादपतनं); कुंभारो, कुंभआरो (कुंभकारः); पवणुद्धअं पवणोद्धअं (पवणोद्धतम्); २ मो

---

(१) प्राकृत प्रकाशे सूत्रमिदं किमप्याधिक्यमुद्दहति, यथा "सन्धा वचामज् लोपविशेषा बहुलम्"। (प्रा० १सू।४अ) सन्धौ वर्त्तमानानामचां स्थाने अज्विशेषा लोपविशेषाश्च बहुलं भवति। सूत्रस्यास्य अचां स्थानेऽज्विशेषा अचां लोपविशेषाश्चेति अंशद्वयं वर्त्तते, तदत्र सूत्रद्वयेन सुव्यक्तमस्ति, एतदध्यायान्तर्गत चतुर्थं सूत्रेण प्रथमांशस्य व्यक्तिरनेन च द्वितीयांशस्य। In Prakritaprakasa we find this Sutra somewhat more comprehensive for "when vowels are in Sandhi or in a state of immediate con_junction, various kinds of vowels and elisions arise." This Sutra has two parts i e (1) appearance of various kinds of vowels, (2) that of elisions ; for the first part we have the 4th Sutra of this chapter, and for the second the present one. शौरसेन्यादौ नैषविधिः This rule does not apply to Sáuraseni or other Prákrita dialects.

(२) प्राकृत प्रकाशे चात्राधिकः पाठो वर्त्तते यथा " संयोगे परे सर्व्वत्र पूर्व्वस्याचोलोपः। When a conjunct consonant follows, it is always the first of the two meeting vowels, which is elided, as णत्थि (नास्ति) ; सक्कंती, (संक्रान्ति) &c., क्वचिन्नित्यं, क्वचिदन्यदेव बहुलग्रहणात्। तेनान्यदपि लाक्षणिक कार्य्यं भवति ; From the use of bahula, or 'variously' in the sutra we conclude that these changes are in some cases absolute, in others they admit of different forms ; hence when other forms are met with, they are still to be considered as provided for in this Lakshana or Sutra, प्राकृतकल्पलति

Aho ! Shrutgyanam

अमलं, सोअलं (सौकुमार्य्यं); अन्धआरो, अंधारो (अन्धकारः); खन्दआरो, खंदारो (स्कन्दावारः) ; पाअवीडं पावीडं (पादपीठ) ।

॥ अन्त्य व्यञ्जनस्य ॥ ११ ।

शब्दानां यदन्त्यं व्यञ्जनं तस्य लुग् भवति ।

A final consonant is generally elided ; (exception is observed in the case of *m* & *n* which always become *Anuswara*). as जाव, (यावत्) ताव, (तावत्) जसो, (यशः) ; णहं (नभः) ; सरो (सरस्) ; (कम्मो) कर्म्मन् ; समासेतु वाक्य विभक्त्य-पेक्षाया मन्त्यत्वं मनन्त्यत्वं वा तेनहि—The finality in the compounded words, is determined according to their declension (विभक्तिः) i. e., the final consonant of the words forming a samasa is also elided ; as—सभिक्खु, (सद्भिक्षुः) ; एअगुणः (एतद्गुणः) ॥ १ ।

न श्रदुदोः ॥ १२ ।

अत्, उत् इत्येतयोरन्त्यस्य व्यञ्जनस्य लुक् न भवति ।

कायामतःपरं " परसंयोगस्थे ङोर्ह्रस्वः " संयोगे परवर्तिनि एङो ह्रस्वः स्यात् । एकारस्य इकारः, ओकारस्य उकारः ie " i (इ) and u (उ) are substituted for e and o respectively when a conjunct immediately follows," as मइन्दो (मृगेन्द्रः) ; कणुप्पलं (कर्णोत्पलं) ।

(१) प्राकृत प्रकाशे सूत्रमिदमित्यमस्ति यथा " अन्त्यस्यहलः " इतिसूभयत्र तुल्यरूपे वाधिक्यन्तु " वेति निवृत्त" मित्येतद्वचनं । In Prakritaprakasa this Sutra has a slight different form with the same meaning as—Antyasya Halah, it adds " वेति निवृत्त " i e the option of the preceding Sutras ends here. अनेन सूत्रेण प्राकृते हलन्ताः शब्दा न सन्तीति ध्वनितं ।

Aho ! Shrutgyanam

The final t of the words (श्रुत्) *srat* and उत् *ut* is not elided a ; as—सद्धा, (श्रद्धा) ; उण्णयं (उन्नयं) ।

॥ निर् दुरोर्व्वा ॥ १३ ।

निर् दुर् इत्येतयोरन्त्य व्यञ्जनस्य वा न लुग् भवति ।

The final r of *nir* (निर्) and *dur* (दुर्) is elided optionally, as—णिस्सहं, णीसहं (निस्सहं); दुस्सहो, दूसहो (दुस्सहः) ।

॥ स्वरेऽन्तरश्च ॥ १४ ।

अन्तरोनिर्दुरश्चान्त्य व्यञ्जनस्य स्वरे परे लुक् न भवति।

The final r of *Antar* (अन्तर्) *nir*, (निर्), and *dur* (दुर्) shall not be elided if followed by a vowel ; as अन्तरप्पा, (अन्तरात्मा) ; णिरंतरं (निरन्तरं) ; दुरुत्तरं (दुरुत्तरं) ; १

॥ स्त्रियामादविद्युतः ॥ १५ । २ ।

विद्युत् शब्दं वर्ज्जयित्वा स्त्रियां वर्त्तमानस्य शब्दस्यान्त्य व्यञ्जनस्यात्त्वं भवति ; लुगपवादः । आ (á) is substituted for the final conso-

---

(१) प्राकृत प्रकाशेऽन्यान्यपि लोप-विधायक-सूत्राणि दृश्यन्ते । यथा "उदुम्बरे दोर्लोपः" (२।४) In *udumbara* du is elided as उवरं, "कलायसे यस्य वा" (३।४) In *kalayasa* ya is optionally elided ; as कालासं, कालाअसं ; "भाजने जस्य" (४।४) In Bhajana ja is optionally elided as भाणं, "भाअणं ; यावदादिषु वस्य" (५।४) In the words *yavat* &c., v is optionally elided as—जा, जाव ; ता, ताव ; पाराओ, पारावओ (पारावतः) अनुत्तन्तो अनुवत्तन्तो (अनुवर्त्तमानः) ; जीअम्, जीविअम्, (जीवितं) ; एअं, एव्वं (एवम्) ; एअ एव्व (एव) ; कुलअं, कुवलअं (कुवलयं) ।

(२) प्राकृत प्रकाशे सूत्रमिदं द्विधा विभक्तमस्ति । यथा "स्त्रियामात्" (७।४), "न विद्युति" (९।४); Bararuchi's grammar contains two *Sutras* on this purport instead of one as—" striyam át " (7ch.4) and " na vidyuti " (9ch.4).

Aho ! Shrutgyanam

nant of a feminine word, except that of *vidyut* (विद्युत्) The "elision" of the preceding sutras ends here; thus. सरिआ, (सरित्); पडिवआ,, (प्रतिपत्); संपआ (सम्पत्); वाआ, (वाच् वा वाक्); बहुलाधिकारादिषत् पृष्टतर 'य' श्रुतिरपि। The 'option' being continued, we find in some instances that the letter á आ is uttered as if accompanied with *ya* (य) as सरिया, पडिवया, इत्यादि।

॥ रोरा ॥ १६ ।

स्त्रियां वर्त्तमानस्य रेफस्य 'रा'देशो वा भवति। आत्वापवादः। १।

रा (rá) is substituted for a final *r* in a feminine word as गिरा, धुरा, पुरा।

॥ क्षुधो हा ॥ १७ ।

क्षुत् शब्दस्यान्त व्यञ्जनस्य 'हा'ऽऽदेशोभवति।

The final consonant of the word *kshut* (क्षुत्) is changed into 'हा' as क्षुहा (क्षुत्)।

॥ शरदादेरत् ॥ १८ । २ ।

In the word *sarat* (शरत्) &c. *a* (अ) is substituted for the final consonant as सरअ, (शरत्); भिसअ, भिषक्;

॥ दिक् प्रावृषोः सः ॥ १९ । ३ ।

एतयोरन्त्य व्यञ्जनस्य सो भवति।

---

१ सूत्रमिदं प्राकृत प्रकाशे समरूपं दृश्यते। Prakrita Prakasa contains this sutra without any addition or alteration (see 8ch.4 of Pra).

२ प्राकृत प्रकाशे सूत्रमिदं भिन्नार्थकं भिन्न स्वरूपञ्च वर्त्तते यथा In Prakrita Prakasa the corresponding sutra is of different form and teaches us entirely a different thing as "शरदो दः" *d* द् is substituted for the final t त् of sarat. as सरदो।

३ Prakrita Prakasa contains this sutra in the same form (see 11ch.4.)

Aho ! Shrutgyanam

स 'sa' is substiuted for the final sibilant of *diś* (दिश्) and Právṛish (प्रावृष्) ; as दिसो (दिक्) ; पाउसो (प्रावट्) ;

॥ आयुरप्सरसो र्वा ॥ २० ।

एतयो रन्त्यव्यञ्जनस्य सो वा भवति ।

Sa स is optionally substituted for the final consonant of the words *áyush* (आयुष्) and *apsaras* (अप्सरस्). As दीहाउसो, दीहाऊ, (दीर्घायुः) अच्छरसो, अच्छरा, (अप्सरा) ;

॥ मोऽनुस्वारः ॥ २१ । १ ।

अन्त्यमकारस्यानुस्वारो भवति ।

Anuswara (अनुस्वार) is substituted for final *m* (म) ; as जलं, फलं, क्वचिदनन्त्यस्यापि In some instances *m* म, though not a final one becomes an *anuswara* optionally; as वणम्मि वणंमि (वने) ;

॥ वास्वरे मश्च ॥ २२ । २ ।

अन्त्यमकारस्य स्वरे परेऽनुस्वारो वा भवति । पक्षे लुगपवादः मस्य मकारश्च ॥

When a vowel immediately follows, the final *m* (म) becomes *Anuswara* optionally. If no *Anuswara* is substituted *m* remains unchanged, or in other words, Sandhi in this case is allowed : as फलं आहरइ,

---

१ प्राकृत प्रकाशे सूत्रमिदं किञ्चिद्भिन्नाकारं दृश्यते यथा "मो बिन्दुः" (१२अ.४) A little difference is seen in the form of the corresponding sutra of Prakrita Prakasa as "mo Vinduh" (12ch.4).

२ एतदपि सूत्रं प्राकृत प्रकाशे भिन्नाकृति विद्यते यथा "अचि मश्च" The corresponding sutra of Prakritaprakasa is "Achimascha" (13ch.4).

Aho ! Shrutgyanam

फलमाहरइ, (फलमाहरति) :—वऊलाधिकारात् अन्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकार: The option being carried on any other final consonant besides *m* म, also becomes *m* म, as विस्वक् वीसुम्; पृथक् पिहम्; सम्यक् सम्मम् ।

॥ ङ, ञ, ण नो व्यञ्जने ॥ २३ ॥ १ ।

ङ, ञ, ण, न इत्येतेषां स्थाने व्यञ्जने परेऽनुस्वारो भवति ।

Anuswara is substituted for the nasals ङ, ञ, ण, न when a consonant follows, as:—पंत्ती, (पङ्क्तिः); परंमुहो, (पराङ्मुखः); कंचुश्रो (कञ्चुकः); वंचणं (वञ्चनम्); संमुहो, (षण्मुखः); उक्कंठा, (उत्कण्ठा); कंसो, (कन्सः) अंसो, (अनशः);

॥ वक्रादावन्तः ॥ २४ । २

वक्रादिषु यथादर्शनं प्रथमादेः स्वरस्यान्त आगमोरूपोऽनुस्वारो भवति ।

In the words Vakra &c., *Anuswara* is inserted as an augment (आगमः); as वंकं (वक्रं); तंसं (त्रस्रं); अंसु (अश्रु); मंसु

---

१ प्राकृत प्रकाशे "नजोर्हलि" इत्येवं सूत्रमस्ति। तद्वृत्तिस्तु नकार ञकारयोर्हलिपरतो विन्दुर्भवति मकारस्य। (१४.अ४) The corresponding sutra of Prakrita Prakasa teaches us that Anuswara is substituted for *n* न and ṅ ञ only when a cosonant follows, and so also is *m* म, as कंसो कमसो (कंसः) वंचं वम्चनं (वञ्चनं)।

२ In Prakritaprakasa the corresponding sutra is "वक्रादिषु" (Pra १५.अ ४). In Prakrita-kalpa-latika, Vakradi class (वक्रादिगण) is thus enumerated वक्रत्र्यस्र, वयस्याश्रु श्मश्रु, पुच्छातिमुक्तकौ गृष्टिर्मनस्विनी, स्पर्शः, श्रुतप्रतिश्रुतं तथा निवसनं दर्शनश्चैव वक्रादिष्वेवमादयः।

Aho ! Shrutgyanam

(श्मश्रु); गुंठो (गृष्टिः); मंथं (मस्तं); पुंच्छं (पुच्छं); गुंच्छं (गुच्छं); मुंडं (मूर्द्धन्); फंसो (स्पर्शः); वुंधो (वृध्नः); कंकोडो (कर्कोटः) कुंपलं (कुड्मलं); दंसणं (दर्शनं); वंणो (वर्णः); अंसो (अश्वः); विंच्छिओ (वृश्चिकः); मंजारो (मार्ज्जारः); एषु आद्यस्य; वयंसो (वयस्यः); मणंसिणी (मनस्विनी); मणंसिला (मनःशिला); पडिंसुदं (प्रतिश्रुतं); पडिंसुआ (प्रतिश्रुत्) एषु द्वितीयस्य; उवरिं, (उपरि); अहिमुंको (अभिमुक्तः)।

॥ क्त्वास्यादेर्णस्वोर्वा ॥ २५ । ९ ।

क्त्वायाः स्वादीनां च यो णः सुस्व तयोरनुस्वारोऽन्ते वा भवति।

---

१ प्राकृत प्रकाशेऽनभिज्ञार्थकमेव सूत्रं वर्त्तते; यथा "क्त्वऊणः" (२३.अ४) क्त्वः स्थाने ऊण स्यात्। *úna* is substituted for ktwá (the affix of the indeclinable past participle) (see pra. 23ch.4) यथा घेऊण (गृहीत्वा); सोउण (श्रुत्वा) काऊण (कृत्वा); दाऊण (दत्वा);

कल्पलतिकामते "काऊणं" इत्यादिवर्ज्जं क्त्वः स्थाने तुणं तूणौ स्यातां According to Kalpa-Latika except a few cases as सुणिऊणं (श्रुत्वा) काऊणं (कृत्वा) *túnam* (तूणं) and *túna* are substituted for the affix ktwá (क्त्वा) as घेतूणं, घेतूण (गृहीत्वा); कल्पलतिकायां निम्नलिखितानि सूत्राणि सन्ति Kalpa Latika has the following sutras "उआणः क्त्वापि वक्तव्यः" यथा घेउआण (गृहीत्वा); सोउआण (श्रुत्वा); "क्तवतोर्वतोर्वन्तः"। क्तवत् प्रत्यये वतः स्थाने वन्तःस्यात्। *Bantah* (वन्तः) is substituted for *bat* (वत्) of the affix *ktabat* (क्तवत्) as कअवन्तो, (कृतवान्); गअवन्तो (गतवान्);

शौरसेन्यां "क्त्वः स्थाने इअ दूणौ स्यातां" In Sauraseni dialect *iya* (इय) and *dúna* (दूण) are substituted for the affix *ktwá* (क्त्वा) as भविय, भोदूण (भूत्वा); पैशाच्यान्तु "तूणःस्यात्" *Paisáchi tuna* is substituted for ktwá (क्त्वा) as गंतूण, (गत्वा);

Aho ! Shrutgyanam

Ṇ ण and *su* सु of the affixes ktwá (क्त्वा) and *swadi* (स्वादि-सु,औ &c.) have optionally *Anuswara* on their top; as—क्त्वा–काऊणं, काऊण, (कृत्वा); स्वादि–वच्छेणं, वच्छेण (वृक्षेण); वच्छेसुं वच्छेसु (वृक्षेषु);

॥ विंशत्यादेर्लुक्॥ २६ । १ ।

विंशत्यादीनामनुस्वारस्य लुग्भवति ।

The *Anuswara* (अनुस्वार) of *vinsati* &c. is elided as वीसा, (विंशतिः); तीसा (त्रिंशत्); सक्कअं (संस्कृतं); सक्कारो (संस्कारः); सत्तुअं (संस्तुतं);

॥ मांसादेर्वा ॥ २७ ।

मांसादीनामनुस्वारस्य लुग् वा भवति ।

In such words as *Mánsa* मांस &c. the use of *Anuswara* अनुस्वार is optional as मासं, मंसं (मांसं); मासलं, मंसलं (मांसलं); कासं, कंसं (कांसं); पासू, पंसू (पांसु); कह, कहं (कथं); एव एवं (एवं); णूण, णूणं (नूनं); कि, किं (किम्); इआणि, इआणीं दाणि, दाणिं (इदानीं); समुहं, संमुहं (सम्मुखं); किसुअं, किंसुअं (किंशुकं); सीहो, सिंघो (सिंहः);

---

१ कल्पलतिकायां सूत्रस्यास्यैवं रूपमस्ति In kalpalatika the corresponding sutra is as follows "लुग्विन्दो विंशति समेषु दीर्घश्चादेः" The Anuswara अनुस्वार of such words as *vinsati* and the like, is elided and the initial vowels become long; वीसई, वीसा &c., (विंशतिः); वामनाचार्य्यस्य मते केवलं संस्कृत, संस्कार, संस्तुत शब्देषु नित्यमनुस्वार लोपः ।

Aho ! Shrutgyanam

॥ वर्गेऽन्त्यो वा ॥ २८ । १ ।

अनुस्वारस्य वर्गे परे तस्यैव वर्गस्यान्त्यो वा भवति ।

When any consonant of the five classes (वर्ग) immediately follows, *Anuswára* may optionally become the nasal of the class to which the letter belongs, as—पंको, पङ्को (पङ्कः); कञ्चुओ, कंचुओ (कञ्चुकः); संका, सङ्का (शङ्का); संखो सङ्खो (शङ्खः); संतरइ, सन्तरइ (संन्तरति); वर्ग इतिकिं Why do we use the word *Barga* in the *sutra*? for in other cases *Anuswára* is not alterable; as किंसुओ, (किंशुकः)।

॥ लिङ्गविवेकः ॥

॥ प्रावृट् शरत्तरण्यः पुंसि ॥ २९ । २ ।

प्रावृट्, शरत्, तरणि इत्येताः शब्दाः पुंसि प्रयोक्तव्याः ।

The words právrish, *sarad*, and taruni although feminine are to be used in the masculine gender only, as पाउसो (प्रावृट्); सरओ (शरत्); तरणी (तरणिः);

---

१ In Prakritaprakasa this sutra is more comprehensive. as "ययि-तद्वर्गान्तः" (१७.अ४) i e when any cosonant immediately follows except *h* (ह) and the sibilants, Anuswara may optionally be the nassal of the class to which the letter belongs.

२ प्राकृत प्रकाशे, कल्पलतिकायाञ्च सूत्रद्वयमेवं वर्त्तते Prakritaprakasa and kalpalatika contain these two sutras as.

"न सान्त प्रावृट शरदः पुंसि" (Pra. 18.ch4).

"न शिरो नभसी" (Pra. 19.ch4).

Aho ! Shrutgyanam

॥ न्सामदामशिरो नभः ॥ २० । १ ।

दामन्, शिरस्, नभस्, वर्ज्जितं सकारान्तं नकारन्तञ्च शब्दरूपं पुंसि प्रयोक्तव्यम्।

Nouns ending in *n* and *s* except *Daman* (दामन्), *Siras*, (शिरस्), and *Nabhas* (नभस्), are to be used in the Masculine gender only the final *n* and *s* being elided (see *sutra* 10).

सान्तः–जसो (यशस्); पओ (पयस्); तमो (तमस्); तेओ (तेजस्); सरो (सरस्); नान्तः जम्मो (जन्मन्) नम्मो (नर्म्मन्); कम्मो (कर्म्मन्); वम्मो (वर्म्मन्); अदाम, शिरो नभ इतिकिं? Why did we except tbe words *Daman, Siras,* and *Nabhas*? examine the following दामं (दाम); शिरं (शिरः); नहं (नभः); यच्च "वअं (वचस्); सुमणं (सुमनस्); सम्मं (शर्म्मन्), चम्मं (चर्म्मन्)" इति दृश्यते तद्वक्तलाधिकारात्, option being carried on, some nouns of the above mentioned classes are also found in the neuter; as वअं, सुमणं &c.

॥ वाऽक्ष्यर्थवचनाद्याः ॥ २१ ।

अक्षिपर्य्याया, वचनादयश्च शब्दाः पुंसि वा प्रयोक्तव्याः ।

Words having the same meaning with *akshi* (the eye) and those belonging to the *vachana* class, are optionally used in the masculine gender; as अच्छी, अच्छीइं (अक्षि); अंगुल्यादि पाठादक्षिशब्दः स्त्रीलिङ्गेऽपि, the word *Akshi* being

१ २९ सूत्रस्यतिलकं द्रष्टव्यं Look the note on 29 sutra.

Aho ! Shrutgyanam

enumerated among *Anguli* &c., is also used in the feminine gender as एसा अच्छी; चक्खू, चक्खूइं (चक्षुः); णअणो, णअणं (नयनं); लोअणो, लोअणं (लोचनं) १ वचनादि वअणो, वअणं (वचनं); कुलो, कुलं (कुलं); माहप्पो माहप्पं (माहात्म्यं); इत्यादि।

"पृष्ठाक्षि प्रश्नाः स्त्रियां वे"ति केचित्, According to some authorities the words *Prishtha* पृष्ठ, *Akshi* अक्षि, and *Prasna* प्रश्न are used optionally in the faminine gender; as पुट्ठी, पुट्ठं (पृष्ठं), अच्छी, अच्छं (अक्षि); पण्हा, पण्हो (प्रश्नः)।

॥ गुणाद्याः क्लीबे वा ॥ २२।

गुणादयः क्लीबे वा प्रयोक्तव्याः।

The words *Guna* (गुण) &c., are optionally used in the neuter gender. गुणं, गुणो (गुणः); देवं देवो (देवः); मंडलग्गं मंडलग्गो (मंडलाग्रः); कररुहं, कररुहो (कररुहः);

॥ वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् ॥ २३। २।

इमान्ता अञ्जल्यादयश्च शब्दाः स्त्रियां वा प्रयोक्तव्याः।

Words having the affix *Iman* (इमन्) at the end and *Anjali* &c., are optionally used in the feminine gender,

---

१ The following kariká is found in kalpalatika कल्पलतिकायां कारिकैषा वर्त्तते "शाकल्यः शरदं स्त्रीत्वे क्लीबे नान्तश्च कुण्डिनः। पुं क्लीबयोस्तथाख्यातं नयनादि तथा परैः।" According to kalpalatiká the word Rasmi (रश्मि) is optionally used in the feminine gender as "रश्मिः स्त्रियां वेति वक्तव्यं" कल्पलतिका।

२ कल्पलतिकायां अञ्जल्यादिस्थाने "काश्मीरोष्मसीमशब्दाः पठिताः" In this sutra kalpalatika reads the words kasmira, ushma, and síma instead of Anjali &c., "काश्मीरोष्म सीमेमनि च स्त्रियां" and does not mention of option, कम्हीरा, (काश्मीरः); उम्हा उम्ह; सीमा सीम;

Aho ! Shrutgyanam

as.— एसा गरिमा, एसो गरिमा, एसा महिमा, एसो महिमा ; एसा अंजली, एसो अंजली ; अंजलि, पृष्ठाऽचि, प्रश्न, चौर्य्य, निधि, विधि, रश्मि, ग्रन्थीत्येता अञ्जल्यादय: उक्तपूर्व्वेभ्यः पृष्ठादिभ्य: शेषा उदाह्रियन्ते यथा "चोरिआ, चोरिओ (चौर्य्यं); निही (पुंस्त्री) (निधिः); विही (पुंस्त्री) (विधिः); गंठी पुंस्त्री (ग्रन्थीः) ;

॥ वाहोरात् ॥ ३४ ।

बाहुशब्दस्य स्त्रियामाकारोऽन्तादेशो भवति ।

When the word *Báhu* वाहु is used in the feminine gender, *á* आ is substituted for its u (उ) as वाहा (वाहु); स्त्रियामित्येव when used in the masculine gender its form is *Báhú* (वाहुः) ।

॥ विशेषनियमाः ॥

॥ अतओविसर्गस्य ३५ ।

संस्कृत लक्षणोत्पन्नस्य अतःपरस्य विसर्गस्य स्थाने ओ इत्यादेशो भवति ।

When a *visarga* follows *a*, *ó* is substituted for it as सव्वओ (सर्व्वतः); पुरओ (पुरतः); अग्गओ (अग्रतः); मग्गओ (मार्गतः); एवं सिद्धावस्थापेक्षया It does not matter whether the words really ends in *a* or not. as भवओ (भवतः); भवंतो (भवन्तः); संतो (सन्तः); कुदो (कुतः) ।

॥ निष्प्रति ओत्परी, माल्यस्थोर्व्वा ॥ ३६ ।

निर्, प्रति, इत्येतौ माल्य शब्दे स्था धातौ च परे यथासंख्यं ओत् परी इत्येवं रूपौ वा भवतः । अभेदनिर्द्देशः सर्व्वादेशार्थः ।

Aho ! Shrutgyanam

O and *Pari* are optionally substituted for *nir* and *Prati* when they are followed by the word *málya* and the root *sthá* respectively, as ओमल्लं निम्मल्लं (निर्माल्यं); परिट्ठा, पइट्ठा (प्रतिष्ठा); परिट्ठिअं, पइट्ठिअं (प्रतिष्ठितं)।

॥ आदेः ॥ २७।

आदेरित्यधिकारः क, ग, च, जेत्यादिसूत्रात् प्रागविशेषो वेदितव्यः।

By virtue of the authority (अधिकारः), *Adeh* ie "for the first" is implied in all the succeeding *sutras* down to the *sutra* "ka, ga, cha," &c.

॥ त्यदाद्यव्ययात् तत्-स्वरस्य लुक्॥ २८।

त्यदादेरव्ययाच्च परस्य तयोरेव त्यदाद्यव्यययोरादेः स्वरस्य बहुलं लुग्भवति।

When either a *pronoun* of tyad class or an *avyaya* is followed by a pronoun of the same class or an *avyaya*, the first vowel of the latter is optionally elided; as अम्हेव्व, अम्हेएव्व (वयमेव); जइहं, जइअहं (यद्यहं)।

॥ पदादपेर्व्वा ॥ २९।

पदात् परस्य अपेरव्ययास्यादेर्लुग् वा भवति।

The first vowel of *api* (अपि) is optionally elided when it is preceded by a word, as—तंपि, तमपि; किंपि, किमपि; केणवि, केणावि (केनापि); कहंपि, कहमपि (कथमपि)।

Aho ! Shrutgyanam

॥ इतेः स्वरात् तश्चद्विः ॥ ४० ।

पदात् परस्य 'इते'रव्ययस्यादेर्लुग् वा भवति। स्वरात् परस्य तकारोद्विर्भवति।

The first vowel of the word *iti* is optionally elided, when it immediately follows a word, and in the case where the preceding word ends in a vowel, the *t* (त) of the word *iti* (इति) is doubled. as—किंति, किमिति; जंति, यदिति; स्वरात् तहत्ति, पिओत्ति; पुरिसोत्ति, (तथेति, प्रियइति, पुरुष इति)।

॥ लुप्त य र व श ष सां दीर्घः ॥ ४१ ।

प्राकृत लक्षणवशाल्लुप्ता याद्या उपर्य्यधो वा येषां शकार, षकार, सकाराणां तेषां आदेः स्वरस्य दीर्घो भवति।

The preceding vowel of *s′ sh* and *s* becomes long, when *y*, *r*, *v*, *s′*, *sh* or s (as the case may be) adherent to them is elided, as शस्य य लोपे (in the case where *y* adherent to *s′* is elided) (पासइ पश्यति); कासवो, (कश्यपः); रलोपे (when *r* adherent to *s′* is elided) वीसमइ (विश्राम्यति); वीसामो (विश्रामः); संफासं (संस्पर्शः); व लोपे (where *v* adherent to *s′* is elided) आसो (अश्वः): वीससइ (विश्वसिति); वीसासो (विश्वासः); श लोपे (where *s′* adherent to *s′* is elided) दूसासणो (दुश्शासनः); मणासिला (मनश्शिला); षस्य य लोपे (where *y* adherent to *sh* is elided) सीसो (शिष्यः); पूसो (पुष्यः); मनूसो (मनुष्यः); र लोपे (where *r* adherent to *sh* is elided) कासओ (कर्षकः); वर्षा (वासा); व लोपे वीसुं (विष्वक्); सस्य य लोपे (where *y* ad-

Aho ! Shrutgyanam

herent to *s* is elided) **सासं (शस्य)** ; **कासइ (कस्यचित्)** ; **र लोपे** (where *r* adherent to *s* is elided) **ऊसो (उस्रः)** ; **व लोपे** (where *v* adherent to *s* is elided) ; **विकासारो (विकस्वरः)** ; **नीसो (निस्वः)** ; **स लोपे** (where *s* adherent to *s* is elided) **नीसहो (निस्सहः)** ; **न दीर्घानुस्वारादिति प्रतिषेधात् सर्व्वत्रानादौ शेषादेशयोर्द्वित्वमिति द्वित्वाभावः ।**

॥ अतः समृद्ध्यादौ वा ॥ ४२ । १

समृद्धि इत्येवमादिषु शब्देष्वादेरकारस्य दीर्घो वा भवति ।

In the words *samriddhi* &c., the first *a* is optionally changed to *á* as **सामिद्धी, समिद्धी, (समृद्धिः)** ; **पाअडं, पअडं (प्रकटं)** ; **पासिद्धी, पसिद्धी (प्रसिद्धिः)** ; **पाडिवआ, पडिवआ (प्रतिपत्)** ; **पासुत्तं, पसुत्तं (प्रसुप्तं)** ; **पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी (प्रतिसिद्धिः)** ; **सारिच्छो, सरिच्छो (सदृक्षः)** ; **माणंसी, मणंसी (मनस्वी)** ; **माणंसिणी, मणंसिणी (मनस्विनी)** ; **आहिजा(आ)ई, अहिजा(आ)ई (अभिजातिः)** ; **पारोहो, परोहो (प्ररोहः)** ; **पावासू, पवासू (प्रवासी)** ; **पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी (प्रतिस्पर्द्धी)** ।

---

१ Prákritaprakás'a reads this *sutra* as "आ समृद्ध्यादिषु वा" (प्रा॰ १अ१) and the word *aswa* अश्व is also included in the *samridhi* class as आसो असो (अश्वः) In kalpalatika कल्पलतिका the *samridhi* class is thus enumerated as "समृद्धिः प्रतिसिद्धिश्च प्रसिद्धिः प्रकटं तथा । प्रसुप्तश्च प्रतिस्पर्द्धी प्रतिपच्च मनस्विनी । अभिजातिः सदृक्षश्च समृद्ध्यादिरयंगणः ।

अज्विधिः ।

॥ इः स्वप्नादौ ॥ ४३ । १

स्वप्न इत्येवमादिष्वादेरस्य इत्त्वं भवति ।

In the words *Swapna* &c., *i* (इ) is substituted for the first *a* (अ). as सिविणो, आर्षे उकारोऽपि according to the authority of the rishis *u* (उ) is also substituted for the first a in the word *Swapna* सुविणो (स्वप्नः); इसि, (ईषत्); वेडिसो (वेतसः); विलिअं (वग्लीकं); विअणं (वग्जनं) मुइंगो (मृदङ्गः); किविणो (कृपणः); उत्तिमो (उत्तमः); मिरिअं (मरिचं); दिण्णं (दत्तं), बहुलाधिकारात् णत्वाऽभावे न भवति; In cases, where on account of option ṇ has not been substituted for त्त tta in (Datta) दत्त, *i* इ also is not substituted for the first *a* (अ) as दत्तं ।

॥ मयट्य इर्वा ॥ ४४ ।

मयट् प्रत्यये आदे रत स्थाने 'अइ' इत्यादेशो वा भवति ।

In the affix *mayat* (मयट्) *ai* (अइ) is optionally substituted for the first *a*; as विसमइओ, विसमओ (विषमयः) ।

॥ उण्णो णत्वेऽभिज्ञादौ ॥ ५५ ।

अभिज्ञ एवं प्रकारेषु णत्वे कृते ज्ञस्यावात उत्त्वं भवति ।

In the words *abhijna* &c., *u* is substituted for *a* in the syllable *jna* in cases where it takes the form of ṇ; as अहिण्णू (अभिज्ञः); सव्वण्णू (सर्व्वज्ञः); आगमण्णू (आगमज्ञः); 'णत्वे'

---

१ Prakritaprakas'a (प्राकृत प्रकाशः) reads this sutra as follows "इदीषत्, पक्व, स्वप्न, वेतस, व्यजन मृदङ्गाङ्गारेषु" (pra. 3ch.I) अतःपरं वेतिनिवृत्तमिति पाठश्च वर्त्तते" the optionally of the former rule does not apply to this.

In the Saurasini dialect in the words angára and vetasa i is not substituted for the first *a* (शौरसेन्यां आङ्गार वेतसयोरित्त्वं नास्ति) ।

Aho ! Shrutgyanam

इति किं? why did we say in cases where the syllable *jna* takes the form of ṇ? Compare the following अहिज्ञो सव्वज्ञो। अभिज्ञादाविति किं this rule does not apply to the words not belonging to this class; as पण्णो (प्राज्ञः); येषां ज्ञस्य णत्वे कृते उत्त्वं दृश्यते, तेऽभिज्ञादयः We have to understand the *Abhijna class* by means of application of this rule only.

॥ ए शय्यादौ ॥ ४६। १

शय्यादिषु आदेरस्य एत्त्वं भवति।

In the words *sayya* &c. e (ए) is substituted for the first *a*; as सेज्जा (शय्या); सुंदेरं; (सुंदरं) गेंडुअं (कन्दुकं)।

॥ वाऽर्प्पौ ॥ ४७।

अर्पयतौ धातौ आदे रस्य ओत्वं वा भवति।

O is optionally substituted for the first a in the root *arpi* as ओप्पेइ, अप्पेइ, (अर्पयति); ओप्पिअं, अप्पिअं (अर्पितं)।

॥ स्वपावुच्च ॥ ४८।

स्वपितौ धातौ आदे रस्य ओत् उच्च भवति।

The first *a* in the root *swapa* is changed to o or u, as सोवइ, सुवइ, (स्वपिति)।

॥ नात् पुनरादाइर्वा ॥ ४८।

नञः परे पुनः शब्दे आदे रस्य आ, आइ, इत्यादेशौ वा भवतः।

(१) In Kalpalatika sayyadi class is thus enumerated. "शय्या, सौन्दर्य पर्य्यन्तोत्‌करायर्य्यन्तुयोदश। वल्लीचेत्यादयो ज्ञेयाः शय्यादौलक्ष्यदर्शनात।"

Aho ! Shrutgyanam

When the word *Punar* immediately follows the word *n* the first *a* in the former takes sometimes the form of *a* and sometimes that of *ái* (आइ) and sometimes it remains unchanged; as णउणा, णउणाइ, पक्षे णउण (नपुनः)।

॥ वा, अव्ययोत्खातादावदातः॥ ४८ ।१

अव्ययेषु उत्खातादिषु च शब्देषु आदे राकारस्य अद्वा भवति।

In *avyayas* (indeclinable) and *utkháta*, &c., *á* is optionally changed to a; *as* अव्ययं-जह, जहा. (यथा), तह, तहा, (तथा), अहव, अहवा (अथवा); उत्खातादि-उक्खअं, उक्खाअं (उत्खातं); चमरं, चामरं (चामरं); कलओ, कालओ (कालकः); ठविअं, ठाविअं (स्थापितं); परिठविअं, परिठाविअं (प्रतिस्थापितं); संठविअं, संठाविअं (संस्थापितं); पउअं, पाउअं, (प्राकृतं); तलवेण्टं, तालवेण्टं (तालवृन्तं); हलिओ, हालिओ, (हालिकः); णराओ, णाराओ (नाराचः); वलआ, वलाआ (वलाका); कुमरो, कुमारो (कुमारः); खइअं, खाइअं (खादितं); 'ब्राह्मणपूर्व्वाह्णयोरपि' This rule may also be applied to

---

१ प्राकृत प्रकाश कल्पलतिकयोः सूत्रमेतदित्थं पठ्यते। यथा, "अदातो यथादिषु वा" (१०।१) Both Prakritaprakasa and kalpalatika read this *sutra* as follows "adátoyathadishu va" (10ch.1).

Kalpalatika thus enumerates the yatha class as.—"यथा, तथा तालवृन्त, प्राकृतोत्खात चामरं। चाटुप्रहाव, प्रस्तार, प्रवाहा हालिक स्तथा। मार्जारश्च कुमारश्च मार्ज्जारेयकलोपिनि। संस्थापितं खादितश्च मरालश्चैवमादयः।

Aho ! Shrutgyanam

the words bráhmaṇa and purbáhṇa ; as बह्मणो, बाह्मणो (ब्राह्मण:) ; पुव्वह्णो पुव्वाह्णो (पूर्व्वाह्णः) । १

॥ घज वृद्धेर्व्वा ॥ ५० ।

घज निमित्तो यो वृद्धिरूप आकार आदिभूतस्य तस्य अद्वा भवति ।

a is optionally substituted for the á which owes its existence to the action of the affix ghaṇ (घञ्) *as* पवहो, पवाहो (प्रवाहः) ; पअरो, पआरो (प्रकारः) ; २ कचिन्न भवति this rule does not apply to some words such as रागः राओ ।

॥ मांसादिष्वनुस्वारे ॥ ५१ ।

---

१ प्राकृतप्रकाश कल्पलतिकायोर्मते वच्यमाणानामपि वाक्यानां विकल्पेनात्त्वं भवति । According to prakritaprakas'a and kalpalatika this rule may also be applied to the following words : such as—प्रस्तारः, प्रहारः, दावाग्निः, चाटु माज्जारः, मरालः प्रवाहः । क्रमेण यथा, पत्थरो, पत्थारो, पहारो, पहरो ; दवग्गी, दावग्गी ; चडु, चाडु ; मज्जारो माज्जारो ; मरलो, मरालो ; पवहो, पवाहो । कल्पलतिकायां स्थापितादेर्नित्यमित्यपि सूत्रान्तरमस्ति । Kalpalatika contains a supplimentary rule that in the words sthapita &c., *a* is always substituted for the first á, as ठविअं, (स्थापितं) ; पंसुरं ; (पांशुरं) मधुरीअं (माधुर्य्यं) ; शौरसेन्यादौकचिदत्वं निषिद्धं । In Sauraseni &c., such substitution is prohibited in some instances, as जधा, (यथा) ; तधा, (तथा) ; &c.

२ प्राकृत प्रकाशादौ प्रवाह प्रहारादयः कतिपय घजन्त शब्दा यथाद्यन्तर्निविष्टा अत्रतु सूत्रेनानेन घञन्तमात्रं । In prákritaprakas'a &c., only a few words *such as* Prabáha, Prakára &c., are included in the *yathá* class, but here we find a *sutra* to be applied to all the words having the affix ghaṇ generally.

Aho ! Shrutgyanam

मांस प्रकारेष्वनुस्वारे सत्यादेरातोऽद्भवति ।

In the word *Mánsa* &c., *a* is substituted for the first *á* in those cases only when the *Anuswara* adherent to the same is not elided (see sutra 29 chap. I) as **मंसं (मांसं)**; **पंसू (पांशुः)**; **पंसनो (पांसनः)**; **कंसं (कसं:)**; **कंसिओ (कांसिकः)**; **वंसिओ (वांसिकः)**; **संसिधिओ (सांसिद्धिकः)**; **संजत्तिओ (सांयात्रिकः)**; **अनुस्वार इति किं ?** The limitation in the rule emplies that it does not apply to cases where *Anuswara* is elided *as* **मासं, पासू इत्यादि ।**

॥ इः सदादिषु ॥ ५२ ।

सदादिषु शब्देषु आत इत्वं वा भवति ।

In the word *sadá* &c., *i* इ is optionally substituted for *á as* **सइ, सआ (सदा)**; **तइ तआ (तदा)**; **जइ, जआ (यदा)**; **णिसिअरो णिसाअरो (निशाचरः)** । १

॥ आर्य्यायां र्यं ऊः श्वश्वां ॥ ५३ ।

श्वश्वां वाच्यायां आर्य्याशब्दे र्यस्यात ऊद्भवति ।

When the word *A'ryá* is used in the sense of mother-in-law, *u* is substituted for *á* in *ryá as* ऊज्जा ; श्वश्र्वामिति किं ? why did we say when it is used in the sense of mother-in-law ? Compare the following अज्जा आर्य्या श्रेष्ठा इत्यर्थः ।

---

१ प्राकृत प्रकाश कल्पलतिकादौ "इत्सदादिषु" इत्येवं सूत्ररूपमस्ति । Prakritaprakasa &c., read it as "itsadádishu".

Aho ! Shrutgyanam

॥ मात्रटि वा ॥ ५४ ।

मात्रट् प्रत्यये आत एद् वा भवति ।

The *á* of the affix *Mátrat* is optionally changed to *é*, *as* एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं (एतावन्मात्रं) ; बहुलाधिकारात् क्वचिन्मात्र शब्देऽपि, The law of option being applied, the substitution of *é* for *á* also takes place in the word *Mátra*, *as* भोअणमेत्तं (भोजनमात्रं) ।

॥ ह्रस्वः संयोगे ॥ ५५ ।

संयोगे परे दीर्घस्य च यथादर्शनं ह्रस्वो भवति ।

A long vowel immediately followed by a conjunct is sometimes found to become short as अंबं (आम्रं) ; तंबं (ताम्रं) ; विरहग्गी (विरहाग्निः) ; अस्सं (आस्यं) मुणिंदो (मुनीन्द्रः) ; तित्थं (तीर्थं) ; गुरुल्लावा: (गुरूल्लापाः) ; चुण्णं (चूर्णं) ; णरिंदो (नरेन्द्रः) ; मिलिच्छो (म्लेच्छः) ; अहरुट्ठं (अधरोष्ठं) ; णीलुप्पलं (नीलोत्पलं) ; संयोग इतिकिं ? why did we say when a conjuct immediately follows ? Compare following आयासो (आयासः) ।

॥ इत एद्वा ॥ ५५ । १

संयोग इति वर्तते आदेरिकारस्य संयोगे परे एकारो वा भवति ।

When a conjunct immediately follows, the first *i* in a word becomes *é* as—पेण्डं, पिण्डं (पिण्डं) ; गेट्ठा, णिट्ठा

१ प्राकृत प्रकाशे कल्पलतिकायांच सूत्रमिद् मित्थं वर्त्तते यथा "एत्पिण्डसमेषु"
Prakrita Prakasa and Kalpalatika read this as follows *"etpindasameshu"*
In words like *pinda* &c. *e* is optionally substituted for the first *i*.

Aho ! Shrutgyanam

(निद्रा) ; सेंदूरं, सिंदूरं (सिन्दूरं) ; धम्मेल्लं, धम्मिल्लं (धम्मिल्लं) ; वेण्हू, विण्हू (विष्णुः) ; पेट्ठं पिट्ठं (पृष्ठं) चेण्हं, चिण्हं (चिह्नं) ; वेल्लं, विल्लं (विल्वं)। १

॥ अ इतौ तौ वाक्यादौ ॥ ५६ ॥ २ ॥

वाक्यादिभूते इतिशब्दे यस्तस्तत्सम्बन्धिन इकारस्याकारो भवति ।

When the word *iti* comes before a sentence, *a* is substituted for *i* adherent to *t* as इअ जं पिअवसाणे (इति यत् प्रियावसाने), इअ उअह अण्ह वअणं (इतिपश्यतान्यथा-वचनं), वाक्यादाविति किं ? From the restriction in the rule we infer that it does not hold in a case where *iti* does not begin a sentance as पिओत्ति (प्रिय इति) ; पुरिसोत्ति (पुरुष इति) ।

॥ र-लुकि निरः ॥ ५७ ।

निर् उपसर्गस्य रेफ लोपे सति इत ईकारो भवति ।

Where *r* in the *prefix nir* is elided, *i'* is substituted for *i* adherent to *n* in the same *as*, णीसहो (निस्सहः) ; णीसासी

---

१ समग्रहणं संयोग परस्योपलक्षणार्थं the word *sama* or 'like' is used to indicate that the rule only applies when *i* is followed by a conjunc cosonant.

शौरसेनी भाषादौ "पिण्डादिष्वेत्" न भवति। In sauraseni &c., no such substitution takes place as पिण्डं धम्मिल्लं ।

(२) The only difference between this *Sutra* and that of *Prakrita prakása* is, that the latter reads "*Padádau*" instead of Vakyadau as here.

Aho ! Shrutgyanam

(निःश्वासः) ; लुकीतिकिं ? Why is the elision of *r* a condition for the application of this rule ? examine the following, णिरओ (निरयः) ; णिस्सहो (निःसहः) ।

॥ द्विन्योरुत् ॥ ५८ ।

द्वि शब्दे नावुपसर्गे च इत उद्भवति ।

u is substituted for *i* in the word *dwi* and the prefix *ni*, *as* द्वि—दुआई दुवे (द्वौ) ; दुवअणं (द्विवचनं) ; वङ्कलाधिकारात् क्वचिद्विकल्पः, as option continues throughout, this rule holds but optionally in some instances ; *as* दुउणो दिउणो (द्विगुणः) ; दुईओ, दिउओ (द्वितीयः) ; क्वचिन्न भवति । This rule does not apply to some instances at all, *as* दिओ (द्विजः) ; दिरओ (द्विरदः); क्वचिदोत्त्वमपि in some instances o' is also substituted for *i* as दोवअणं (द्विवचनं) ; नि-णुमज्जइ (निमज्जति) ; णुमलो (निमग्नः) ; क्वचिन्न भवति, the rule has also some exceptions as णिवडइ (निपतति) ;

॥ ओच्च द्विधाकृञः ॥ ५९ ॥ १

द्विधा शब्दे कृञ धातोः प्रयोगे इत ओत्वं चकारादुत्त्वं च भवति ।

O' or *u* is optionally substituted for *i* in the word *Dwidha'* when used with the root kriṇ *as* दोहाकियं, दोहाइअं, दुआइअं, (द्विधाकृतं) ; दोहाइज्जइ, दुहाइज्जइ (द्विधा क्रियते) ; कृञ इतिकिं ? why did we say "when used with the root kriṇ ? Compare following दिहागअं (द्विधागतं) ; क्वचित्

१ प्राकृत प्रकाशे सूत्रमिदं "ओच् द्विधा कृञः" इत्येवं दृश्यते। (प्रा० १९।१) ।

Aho ! Shrutgyanam

केवलस्यापि sometimes this rule does apply to the word dwidhá even when without kriṇ, *as* दुहा ।

॥ पानीयादिष्वित् ॥ ६० । १

पानीयादिषु शब्देषु ईतदूद्भवति ।

In the words Pániya, &c. *í* becomes short (*i*) as—

प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं
पाणिश्रं	पानीयं	करिसो	करीषो
अलिअं	अलीकं	सिरिसो	शिरीषः
जिअदू	जीवति	दुदू अं	द्वितीयं
जिअउ	जीवतु	तदूअं	तृतीयं
विलिअं	व्यलीकं	गहिरं २	गभीरं
उवणिअं	उपनीतं	आणिअं	आनीतं
पदिविअं	प्रदिपितं	ओसिअंतो	अवसीदन्
पसीद	प्रसीद	गहिअं	गृहीतं
वम्मिओ	वल्मीकः	तआणिं	तदानीं

बहुलाधिकारादेषु कचिन्नित्यं कचिद्विकल्पः

Under the extensive option previously noticed this rule is found to apply invariably to some words of this class and optionally to others, as पाणीअं, अलीअं, जीअदू ;

---

१ प्राकृत प्रकाशे "इदीतः पानीयादिषु" (१८।१) इत्येवं सूत्रमस्ति । *Prákrita-Prakás'a* does not include the following words *as* उपनीत, आनीत, जीवतु, जीवति, प्रदीपित, प्रसीद, शिरीष, गृहीत, वल्मीक अवसीदन्, in the *Pánya class.* कल्पलतिकायां पानीयगणइत्थं निर्दिष्ट Kalpalatiká thus enumerates the *Pániya* class. "पानीयं, व्रीडिता, लीक, द्वितीयश्च, तृतीयकं, तथागृहीत मानीतं, गभीरश्च करीषवत्, इदानीश्च, तदानीश्च पानियादिगणो यथा ;

२ गहेर हिन्दी ।

Aho ! Shrutgyanam

॥ तीर्थे हे ॥ ६ । १ । १

तीर्थ शब्दे हे सति इत ऊत्वं भवति ।

In the word tirtha *ú* is substituted for *í* in cases where *rtha* (र्थ) is replaced by *ha* (ह) as तूहं । 'हे' इति किं from the condition attached we infer that this rule does not apply where *rtha* is not replaced by *ha* (ह) as तित्थं ।

॥ उतोऽन्मुकुलादिषु ॥ ६ । २ । २

मुकुल इत्येवमादिषु शब्देषु आदेरुतोऽत्वं भवति ।

In the words Mukula, &c. *a* is substituted for the first *u* as.

प्रा०	सं	प्रा०	सं	प्रा०	सं
मउलं	मुकुलं	मउलो	मुकुरः	अगरु	अगुरुः
गरुई	गुर्वी	मउरो		सोअमल्लं	सौकुमार्यं
गलोई	गुडुची	जहुट्ठिलो	युधिष्ठिरः		
		जहिट्ठिलो			

क्वचिदाकारोऽपि In some cases *á* is also substituted for the first *u*; as विद्दाओ (विद्रुतः) ।

॥ गुरौ के वा ॥ ६ । ३ । ३

गुरौ स्वार्थे के सति आदे रुतोऽद्वा भवति ।

---

१ केषाञ्चिन्मते उद्गीर्णे शब्दस्यापि इत उत् भवति । According to some in the word *Udgírna* also *u* is substituted for í as उग्गुणं ।

२ प्राकृत प्रकाशे "अन्मुकुटादिषु" इत्येवं सूत्ररूपं विद्यते । In Kalpalatiká Mukuta class is thus enumerated (कल्पलतिकायां मुकुटादिगणो यथा) ।
मुकुटं, कर्बुरं, गुर्वी, सौकुमार्यं युधिष्ठिरः, गुरुकश्चोपरीत्यादौ मुकुटादिषुलक्षयेत् ।
कर्बुरशब्दस्य कव्वरमितिरूपम् ।

३ प्राकृत प्रकाशे "उपरि" "गुरु" शब्दौ मुकुटादिष्वन्तर्भावितौ तेन न तयोर्विकल्पः In Prakritaprakás'a the words *upari* and *guru* are included in the *mukuta* class so the substitution invariably takes place to them.

Aho ! Shrutgyanam

In the word *Guruka* when the superfluous affix *ka* (क) does not affect its meaning the first *u* is changed to *a*; as गरुओ, गुरुओ (गुरुकः); कइतिकिं। when the affix *ka* affects its meaning the rule does not apply, as गुरुओ (गुरुकः) meaning a lesser *Guru*.

॥ ऊत्तोऽनुत्साहोच्छन्नेत्सच्छे ॥

उत्साह, उच्छन्नवर्ज्जिते शब्दे यः त्सः च्छ स्‍ न तयोः परयो रादे रुत ऊद्भवति।

When the initial *u* of a word is followed by *ts* or *chchh* it changes to *ú* (ऊ). The words utsáha and uchchhanna are excepted, *as* ऊसुओ (उत्सुकः); ऊसवो (उत्सवः) ऊसवो (उत्सवः); ऊसित्तो (उत्सिक्तः); ऊच्छुओ (उच्छुकः)-उद्गताः शुकायस्मात् सः); अनुत्साहोच्छन्न इति किं? Why did we except the words *utsáha* and *uchchhanna*? Compare the following उच्छाहो, उच्छणो;

॥ लुकि दुरोवा ॥

दुरुपसर्गस्य रेफलोपेसति उत ऊत्वं वा भवति।

Where r of the prefix *dur* is elided, *u* is optionally lengthened as दूसहो, दुसहो (दुःसहः); दूहओ दुहओ (दुर्भगः); लुकीतिकिं? This rule does not apply when *r* is not elided, as दुस्सहो विरहो।

॥ ओत संयोगे ॥ ६४।१।

संयोगेपरे आदेरुत ओत्वं भवति।

---

१ प्राकृत प्रकाशे "उत् ओत्तुण्डरूपेषु" (प्रा० १०।१) इत्येवं सूत्रमस्ति। Though the corresponding *Sútra* of the Prákritaprakás'a does not seem at first

Aho ! Shrutgyanam

When the first u of a word is immediately followed by a conjunct, it is changed to ó as तोण्डं (तुण्डं) ; मोण्डं (मुण्डं) ; पोक्खरं (पुष्करं) ; कोट्टिमं (कुट्टिमं) ; पोत्थअं (पुस्तकं) लोद्धओ (लुब्धकः) ; मोत्ता (मुक्ता) ; वोक्कंतं (व्युत्क्रान्तं) ; कोंतलो (कुन्तलः) ; १ ।

॥ ऋतोऽत् ॥ ६ ५ ।

आदेरिकारस्यात्वं भवति।

A' is substituted for ṛi in the first syllable of a word *as* घअं (घृतं) ; तणं (तृणं) ; कअं (कृतं) ; वसहो (वृषभः) ; मओ (मृगः, मृतोवा) ; वढ्ढो (वृद्धः) ; घट्टो (घृष्टः) ।

॥ इत् कृपादौ ॥ ६ ६ । १ ।

कृपा इत्येवमादिषु शब्देषु आदे ऋत इत्वं भवति ।

---

so comprehensive, the explanation of the commentator removes the, doubt as रूपग्रहणं संयोग परलक्षणार्थं The word *rúpa* or like is used in the *Sútra* to indicate that the *u* must be followed by a conjunct consonant. कल्पलतिकायां तुण्डादिगणो यथा, Kalpalatika thus enumerátes Tundadi class *as* तुण्ड, कुट्टिम, कुद्दाल, मुक्ता, मुद्गर, लुब्धकाः । पुस्तकश्चैवमन्येऽपि कुम्भी, कुन्तल, पुष्कराः ।

शौरसेन्यां ओत्वस्य नित्यता नास्ति ; In S'auraseni option is made for such substitution.

१ प्राकृत प्रकाशे "ऋष्यादिषु" (प्रा० २८।१) इत्येवं सूत्रमस्ति । Prakritaprakás'a reads rishyádi instead of kripádi कल्पलतिकायां ऋष्यादिगणो यथा Kalpa-latiká thus enumerates the ṛishyadi class ऋष्यादिषु कृतिः कृत्या घृष्टो, वृषभ, वृश्चिकः । दृषद्, पृथुलो, गृध्रो, मृगाङ्को मसृणं, कृषिः। सृष्टि, दृढो, [illegible] तो, [illegible]ष्टि, [illegible] तृष्ण कृत, कृतयः । संज्ञावाचक कृष्णोऽयमृष्यादिगण ईदृशः ।

Aho ! Shrutgyanam

In the words *kripa'* &c. *i* is substituted for the initial ṛi *as*.

प्रा०	सं०	प्रा०	सं०	प्रा०	सं०
किवा	कृपा	हिअअं	हृदयं	मिट्ठं	मृष्टं
दिट्ठं	दृष्टं	दिट्ठी	दृष्टिः	सिट्ठं	सृष्टं
सिट्ठि	सृष्टिः	गिट्ठी	गृष्टिः	पिथ्वि	पृथ्वी
भिऊ	भृगुः	भिंगो	भृङ्गः	भिंगारो	भृङ्गारः
सिङ्गारो	शृङ्गारः	सियालो	शृगालः	घिणा	घृणा
घुसिणं	घुसृणं	विढ्डी	वृद्धिः	समिद्धी	समृद्धिः
इढ्डी	ऋद्धिः	गिढ्डी	गृद्धिः	किसो	कृशः
किसाणू	कृशानुः	किसरो	कृशरः	किच्छं	कृच्छ्रं
किई	कृतिः	धिई	धृतिः	किवो	कृपः
किवणो	कृपणः	किवाणं	कृपाणं	विञ्चुओ	वृश्चिकः
तिप्पं	तृप्तं	किसिओ	कृषितः	निवो	नृपः
किच्चं	कृत्यं	वित्तं	वृत्तं	वित्ती	वृत्तिः
हिअं	हृतं	वाहित्तं	व्याहृतं	विंहिओ	वृंहितः
विसी	वृषिः	इसी	ऋषिः	विहा	स्पृहा
सइ	सकृत्	वितिण्हो	वितृष्णः	उक्किट्ठं	उत्कृष्टं[१]

१ कल्पतिकामते निम्नलिखितेषु ऋतोनित्यमित्त्वं । According to kalpala tika' *i* is invariably substituted for ṛi in the following words as—भृङ्ग भृङ्गार, शृङ्गाराः कृपाणं, कृपणः, कृपा । शृगाल हृदये वृष्टिर्दृष्टिर्वृंहितमेव च । समृद्धि कृसरा, तृप्तिर्दृष्टिर्वृद्धिस्तु कृत्रिमं कृकराकुसथेत्यादौ नित्यमित्त्वं ऋतोमतं । ततोऽन्यत्र विकल्पः । It follows from this that in all other words the substitution takes place optionally as विसो वसो (वृषः) ।

Aho ! Shrutgyanam

कल्पलतिकामते विष्णु-वाचिनि कृष्ण शब्दे च विकल्पेनेत्वं भवति ;
According to kalpalatika when the word *krishna* means *vishnu*, *i* is optionally substituted for ṛi *as* किण्हो, कण्हो (कृष्णः) ;

॥ पृष्ठे वाऽनुत्तर पदे ॥ ६६ ।

॥ पृष्ठशब्देऽनुत्तरपदे ऋत इद्भवति वा ।

When the word *Pṛisṭha* is not preceded by any other words *ie* does not stand as a last word in a compound, the ṛi optionally becomes *i* ; *as* पिट्ठं, पट्ठं (पृष्ठं) ; अनुत्तरपद इति किं ? Why did we say when it is not preceded by any other word ? Examine the following ; मह्विवट्ठं (मही-पृष्ठं) ;

॥ उदृत्वादौ ॥ ६७ । १ ।

ऋतु इत्यादिषु शब्देषु आदे ॠत उद्भवति ।

In ṛitu &c. *u* is substituted for the first ṛi *as* :

प्रा०	स०	प्रा०	स०	प्रा०	स०
उदू	ऋतु	परामुट्ठो	परामृष्टः	पुट्ठं	पृष्ठं
		पउट्ठं	प्रवृष्ठं	पुहई पुहवी	पृथिवी
पउत्ती	प्रवृत्तिः	पाउसो	प्रावृष्	पाउत्रं	प्रावृतं

१ प्राकृत प्रकाशे "उदृत्वादिष्वित्येवं सूत्रमस्ति (प्रा०१९।१) *Prakritaprakasa* puts *ritwadi* in plural instead of *singular, as* ऋत्वादिषु ; Ritwadi is thus ennumerated in *kalpalatika* (कल्पलतिकायां ऋत्वादिगणो यथा । ऋतुर्मृदङ्गो निभृतं, वृतः, परभृतो मृतः । प्रावृट्, प्रवृत्तिर्वृत्तान्तो, मातृका मातृकस्तथा । मृणाल पृथिवी वृन्दावन जामातृका अपि । वृन्दारकश्च प्रभृतिः इष्ट वृद्धादयः परे लक्ष्यानुसारतो ज्ञेयाः ।

प्रा०	स०	प्रा०	स०	प्रा०	स०
भुइ	भृतिः	पहुदि	प्रभृति	पाहुदं	प्राभृतं
परहुओ	परभृतः	णिहुअं णिहुदं	निभृतं	णिउअं	निवृतं
विउअं	विवृतं	संवुदं	संवृतं	वुत्तंतो	वृत्तान्तः
णिव्वुअं णिव्वुदं	निर्वृतं	णिव्वुइ	निर्वृतिः	वुंदं	वृन्दं
वुंदावणं	वृन्दावनं	वुढ्डो	वृद्धः	वुढ्डी	वृद्धिः
उसहो	ऋषभः	मुणालं	मृणालं	उजु	ऋजुः
जामाउओ जामादुओ	जामातृकः	माउआ	मातृका	माऊ मादु	माता
भाउओ	भ्रातृकः	पिउओ	पितृकः	पुहवी	पृथिवी

According to others, the ṛi of *mrigánka* also is optionally changed to *u*, मृगाङ्के च विकल्पेनोत्वमिच्छन्ति केचित् यथा मुअंको, मअंको ;

॥ गौणान्त्यस्य ॥ ६८ ।

गौणपदस्य योऽन्त्य ऋत् तस्य उद्भवति ।

The final ṛi in the dependant (गौण) of two words forming a compound (समास) is changed to u, *as* माउ(दु)-मण्डलं (मातृमण्डलं) ; माउ(दु)-हरं (मातृगृहं) ; पिउवणं (पितृवनं);

॥ मातुरिद्वा ॥ ६९ ।

मातृशब्दस्य गौणस्य ऋत इद्वा भवति ।

When the word *mátri* is compounded with any other word and stands dependant to the same, *i* is optionally

Aho ! Shrutgyanam

substituted for its ṛi, *as* माइहरं, माउहरं (मातृगृहं) ; क्वचिद-गौणस्यापि sometimes this rule is applied to it even when it stands single, *as* माइणो (मातुः) ;

॥ रिः केवलस्य ॥ ७० ॥ १

केवलस्य व्यञ्जनेनासंपृक्तस्य ऋतो रिरादेशो भवति।

The initial vowel ṛi (ऋ) of a word when not adherent to any letter takes the form of *ri* (रि) ; as रिद्धी, (ऋद्धिः) ; ऋण, ऋजु, ऋषभ ऋतु, ऋषिषु विकल्पेन रिरादेशो भवति। This rule is optionally applied to words ṛina &c ; as रिणं (ऋणं) ; रिज्जु, उज्जू (ऋजुः) ; रिसहो, उसहो (ऋषभः) ; रिऊ, उदू (ऋतुः) ; रिसी, इसी (ऋषिः)।

॥ दृशः क्विप् टक्सकः ॥ ७१ ।

क्विप्, टक्, सक्, इत्येतत्प्रत्ययान्तस्य दृशोधातो ऋतो रिरादेशो भवति।

When the root *Dṛis'* takes the krit suffixes of *kwip tak* and *sak*, the vowel ṛi adherent to *d* changes into the form of ṛi (रि) ; as एआरिसो, तारिसो, सरिसो, सरिच्छो, एरिसो, केरिसो, अम्हारिसो, अम्हारिसो, तुम्हारिसो, टक्, सक्, साहचर्य्यात् त्यदाद्यन्यादिसूत्रविहितः क्विबिह गृह्यते। २

As the suffix kwip is mentioned here along with *tak* and *sak*, we are to infer that it is in reference to sútra त्यदाद्यन्यादि ; in other words the rule applies only

---

१ In Prakritaprakasa this sutra appears as "अयुक्तस्य रिः"।

२ The corresponding rule of Prakritaprakasa is more comprehensive as—The syllable *ri* is sometimes substituted for an initial ṛi even when it is not connected with another letter. शौरसेन्यां यादृशादीनां जादिसं इत्यादिरूपं भवति। In the sauras'eni the words यादृश &c. assume the form of जादिस &c. ; as जादिसं तादिसं। अपभ्रंशे In the apabhrans'a—जइसं, तइस मित्यादि ; पैशाच्यां जातिसं, तातिस मित्यादि ;

where the root dṛis′ takes the suffix kwip coupled with the pronoun *Tyad* class.

We find an extra rule in kalpalatika as "Lṛitah kebalasya." When the syllable *Lṛi* is not connected with any consonant, *Li* is substituted for it *as* ऌकारः लिकारो । कल्पलतिकायां वर्णान्तरासंयुक्तस्य ऌकारस्य लिः स्यादिति पाठोदृश्यते ।

॥ ऐतः एत् ॥ ७२ ।

ऐकारस्यादौ वर्त्तमानस्य एत्वं भवति ।

e (ए) is substituted for the first ai (ऐ) in a word as सेलो (शैलः) ; सेत्तं, सेच्चं (शैत्यं) ; एरावणो (ऐरावणः) ; तेलुक्कं (त्रैलोक्यं) ; केलासो (कैलासः) ; केढवो (कैतवः) ; वेहव्वं (वैधव्यं) ।

॥ अइ दैत्यादौ ॥ ७३ । १

दैत्य इत्येव मादिषु च ऐतो अइ इत्यादेशो भवति । एत्वापवादः ।

In the words daitya (दैत्य) &c., a-i (अइ) and not (ए) is substituted for ai ऐ as दइच्चो, (दैत्यः) दइण्णं (दैन्यं); अइसरिअं (ऐश्वर्य्यं) ; भइरवो (भैरवः) ; दइवअं (दैवतं) ; वइआलीओ (वैतालीकः) ; वइएसो (वैदेशः) ; वइएहो (वैदेहः) ; वइअवओ

---

१ In Prakritaprakasa this sútra is given in a different form as "दैत्यादिष्वइ" but having same meaning, kalpalatika thus enumerates *Daityadi* class (दैत्यादिगणः) ।

दैत्यादौ वैश्य, वैशाख, वैशम्पायन कैतवाः ।
स्वैर, वैदेह, वैदेश, चैत्र, वैषयिका अपि ॥
दैत्यादिष्वपि विज्ञेया स्तथा वैदेशिकादयः ।

According to Hemchandra this rule applies optionally to कौच्चेयक।

Aho ! Shrutgyanam

(वैदर्भः) ; वइस्साणरो (वैश्वानरः) कइअवं (कैतवं) ; वइसाहो (वैशाखः); वइसालो (वैशालः) इत्यादि ।

॥ वैरादौवा ॥ ७४ । १

वैरादिष्वैतोऽइ (अइ) रादेशो वा भवति ।

In the words Vaira &c., *a-i* अइ is optionally substituted for *ai*, as वइरं, वेरं (वैरं) ; कइलासो, केलासो (कैलासः) ; कइरवं केरवं (कैरवं) ; वइसवणो, वेसवणो (वैश्रवणः) , वइसंपाअणो, वेसंपाअणो (वैशम्पायनः) ; वइआलिओ, वेआलिओ (वैतालिकः) ; वइसिओ, वेसिओ (वैशिकः) ; चइत्तो, चेत्तो (चैत्रः) ;

॥ औत ओत् ॥ ७५ ।

औकारस्यादे रोद्भवति ।

Initial *au* औ of a word changes to ō (ओ) as ; कोमुई (कौमुदी) ; जोव्वणं, (यौवनं) ; कोत्थुहो (कौस्तुभः) ; कोसंवी (कौशाम्बी) ; कोंचो (क्रौञ्चः) ; कोसिओ (कौशिकः) ; सोहग्गं (सौभाग्यं) ; दोहग्गं (दौर्भाग्यं); गोदमो (गौतमः) ।

॥ उत् सौन्दर्य्यादौ ॥ ७६ ।

सौन्दर्य्यादिषु शब्देषु औत उद्भवति ।

In the words Soundarya सौन्दर्य्य (beauty) &c. u (उ) is substituted for *au* औ as सुंदेरं, सुंदरिअं, (सौन्दर्य्यं) ; सुंडो

१ We find the following karika in kalpalatika instead of a separate *sūtra as* वैर, कैतव, चैत्राश्व कैलास, दैव भैरवाः । अइदिच्छन्ति विकल्पेन च कोविदाः । शौरसेन्यां दैवे नैषविधिः, in saurasini this rule is not applied to the word दैव ।

२ Kalpalatika thus enumerates saundarya class (कल्पलतिकायां सौन्दर्य्यादयो) यथा—

सौन्दर्य्यं शौण्डिको दौवारिकः शौण्डोपरिष्टकं ।
कौचेयः पौरुषः पौलोमि मौञ्ज दौस्साधिकादयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

(औण्ड्रः) ; सुद्दोअणी (औद्दुदनिः) ; दुवारिओ (दौवारिकः) ; मुंजाअणो (मौञ्जायणः) ; सुगंधत्तणं (सौगन्ध्यं) ; पुलोमी (पौलोमी) ; सुवण्णिओ (सौवर्णिकः) ;

॥ अउः कौक्षेयक पौरादौवा ॥ ७७ । १ ।

कौक्षेयक पौरादिषु च औत अउ रादेशो भवति ।

In the words *kaukksheyaka* and Paura &c. *a*-u, अ उ is substituted for *au* औ, as कउक्खेअअं, पउरो, (पौरः); कउरवो, (कौरवः) ; कउसलं, (कौशलम्) ; पउरिसं, (पौरुषं) ; सउहं (सौधम्) ; गउडो, (गौडः) ; मउली, (मौलिः) ; मउणं, (मौनं) ; सउरा, (शौराः) ; कउला:, (कौलाः) ।

॥ अवापोते ॥ ७८ । २

अवापयोरुपसर्गयो रादेः स्वरस्य परेण सस्वरव्यञ्जनेन सह ओदा भवति । उत इति विकल्पार्थं ।

O is optionally substituted for the prefixes *aba* अव and *apa* अप । The word uta in the sutra denotes the option, as ओआसो, अवआसो (अवकाशः) ; ओसरइ अवसरइ (अपसरति) ; ओहणं अअहणं (अपघनं) क्वचिन्न भवति । These are exceptions to this rule, as अवगअं (अपगतं); अवसदो (अपसदः) ।

---

१ Kalpalatika thus enumerates *Pauradi* (कल्पलतिकायां पौरादयो यथा
पौर पौरुष शैलानि गौड चौरित कौरवाः ।
कौशल मौलि वौचित्यं पौराकृति गणा मताः ॥

In the sauraseni dialect *a-u* is not substituted for a *u* in the words पौर and कौरव ।

शौरसेन्यां पौर कौरवयोः क्रमेण पोरो कोरवो इति रूपं भवति ।

२ प्राकृत प्रकाशे "ओदवापयोः" २१४) इत्येव सूत्रं विद्यते ।

In the Mágadhi dialect *u*, is also substituted for *Aba* and *Apa* (मागध्यां अवापयो रुत्वं चोत्वं च) ।

Aho ! Shrutgyanam

॥ ऊच्चोपे ॥ ७९ । १

उपशब्दे आदेः स्वरस्य परेण व्यञ्जनेन सह ऊत् ओच्चादेशौ भवतः ।

U′ ऊ and ó ओ are substituted for the prefix *upa* (उप) ; as **ऊहसिअं, ओहसिअं, (उपहसितं) ऊआसो, ओआसो (उपवासः)** ;

इति प्राकृत व्याकरणे प्रथमोऽध्यायः ।

---

१ । एतदध्यायोक्तानियमाः प्रायः सर्व्वास्वपि प्राकृतभाषासु प्रवर्त्तन्ते ; केवलं ५५ सूत्रमेतत् शौरसेन्यां पिण्डादिषु न प्रवर्त्तते ।

The rules mentioned in this chapter hold good with respect to other dialects the sutra 55, however is not applicable to the words पिण्ड &c. in the sauras′eni.

Aho ! Shrutgyanam

। अथ द्वितीयोध्यायः ।

॥ स्वरादसंयुक्तस्यानादेः ॥ १ । १

अधिकारोऽयं । यदित ऊर्द्धमनुक्रमिष्याम स्तत् स्वरात् परस्यासंयुक्तस्यानादेर्भवतीति वेदितव्यम् ।

This sútra being an *Adhikara,* will be implied in the succeeding *Sútras.* The rules here in after mentioned shall be taken to refer to a single consonant which does not stand at the begining of a word and has a vowel immediately preceding it.

॥ क, ग, च, त, द, प, य वां प्रायोलुक् ॥ २ । २ ।

---

१ The corresponding *sútra* of Prakritaprakasa stands thus :—"अयुक्तस्यानादौ" (प्राकृत प्रकाशे द्वितीयाध्यायस्य प्रथम सुत्रम्) the phrase "*swarát*" i.e., immediately preceded by a vowel, is omitted there (नच स्वरादिति पदं नास्ति) "अत्रासंयुक्तस्येत्येवं कथनेनैव प्रयोजन-सिद्धि र्भवति तत् स्वरादिति पदं व्यर्थेति न शङ्कितव्यम्" यत्रानुस्वारस्य पञ्चम वर्णेन जातस्तत्र परवर्त्तिनो व्यञ्जनस्यासंयुक्तत्वात् लोपे प्राप्ते स्वरादित्यनेन निषेधः । The condition swarát may appear superfluous for the phrase asanyuktasya (of single consonant) serves the purpose.

But I have preferred to put down both as to exclude those cases where anuswara is not replaced by the fifth letter and consequently the consonant which follows it is still a single one.

२ । अपभ्रंशे तादृशानां क, ख, त, थ, प, फां ग, घ, द, ध, व, भा भवन्ति । In the Apabhransa the third and fourth letters of a barga are respectively substituted for the first and second of the same when not joined to any consonant &c. (see the sútra) ; पैशाच्यां नैषविधिः ; तत्रतु तृतीयतुर्य्ययोः स्थाने यथाक्रमं प्रथमद्वितीयौ । In the Pais'áchi the first and second letters of a barga is substituted for the third and fourth of the same respectively, as नगरं, नकरं, भगवती फकवती ।

Aho ! Shrutgyanam

स्वरात् परेषामनादिभूतानामसंयुक्तानां क, ग, च, ज, त, द, प, य, वानां प्रायोलुग्भवति ।

The nine non-initial consonants *k*, *g*, *ch*, *j*, *t*, *d*, *p*, *y*, and *v*, when not joined to any other consonant and immediately preceded by a vowel, are *generally* elided; as क—लोओ (लोकः); सअढं (शकटं); मुउलः (मुकुलः); णउलो (नकुलः); णोआ (नौका); मुउलिदा (मुकुलिता); ग—णओ (नगः); णअरं (नगरं); मअंको (मृगाङ्कः); साअरो (सागरः); भाईरही (भागीरथी); भअवदा (भगवता); च—सई (शची); कअग्गहो (कचग्रहः); वअणं (वचनं); सूई (सूची); रोअदि, (रोचते); उइदं (उचितं); सूअअं (सूचकं); ज—रअओ (रजकः); पआवई (प्रजापतिः); गओ (गजः); रअदं (रजतं); त—विआणं, (वितानं); किअं (कृतं); रसाअलं (रसातलं); रअणं (रत्नं); द—जइ (यदि); नई (नदी); गआ (गदा); मअणो (मदनः); वअणं (वदनं); मओ (मदः); प—रिऊ (रिपुः); सुउरिसो (सुपुरुषः); कई (कपिः); विउलं (विपुलं); य—दआलू (दयालुः); णअणं (नयनं); विओओ (वियोगः); वाउणा (वायुना); व—जीओ (जीवः); दिअहो (दिवसः); लाअण्णं (लावण्यं); विओहो (विबोधः); वलआणलो (वडवानलः); प्रायो ग्रहणात् क्वचिन्न भवति The word Práyas (generally) in the *Sútra* indicates that there are exceptions, specially when, as *Prakritaprakása* says (प्राकृत प्रकाशे) यत्र श्रुति सुखमस्ति

Aho ! Shrutgyanam

euphony wants a different use (१) as, सुकुसुमं ; प्रयाग-जलं ; पियगमणं ; सुगदो (सुगतः) ; अगुरू ; सचावं (सचापं) ; विजणं ; अतुलं ; सुतरं ; विदुरो ; आदरो ; अपारो ; अजसो ; दवो ; दाणवो ; सवङ्कमानं ; इत्यादि ; "स्वरादितिकिं ?" Why did we say *Swarát*, preceded by a vowel ? Compare the following— संकरो ; संगमो ; णक्क'चरो (नक्तञ्चरः) ; धणंजओ ; पुरंदरो ; संवरो ; "अयुक्तस्येतिकिम् ?" as illustrations of what we mean by "single consonant" अक्को ; वग्गो ; अग्घो ; मग्गो (मार्गः) ; अच्चो (अर्च्यः) ; उद्दामो "अनादे"रितिकिं ? "what do we mean by non-initial" ? compare—कालो, गन्धो, चोरो, जारो, तरू, दवो, पावं (पापं) ; समासे तु वाक्यविभक्त्यपेक्षया भिन्न-पदत्वमपि वक्ष्यते तेन तत्र यथादर्शनमुभयमपि भवति । In a compound word where the members are easily distinguishable, the initial letter of the last member is optionally considered as non-initial ; accordingly elision takes place optionally, as सहअरो, सहचरः ; जलअरो, जलचरः सहआरो, सहकारः ; प्राकृतप्रकाशकारस्तु तमेवार्थं भिन्नभङ्ग्या सूचयति Prakritaprakása expresses

---

१ Kalpalatiká has (कल्पलतिकामते) the following karika.

प्रायो गृहणतस्वात्र पूर्व्वप्राकृतकोविदैः ।
यत्र न श्रुति सौभाग्यं तत्र लोपो न मन्यते ॥

According to the ancient Prakrita grammarians, elision is not allowed where it violates the rules of euphony ; as चुचुअं (चूचूकं) ; सुपविच्चं (सुपवित्रं) ; सतेओ (सतेजः) ; केचित्तु 'गत्वं' मदकले कस्य तथा मरकते भवेत्" इति वदन्ति । Some say that in the words *marakata* and *madakala g*, is ubstituted for *k* as मरगअं (मरकतं) ; मअगलो (मदकलः) ;

Aho ! Shrutgyanam

same opinion as लोपो भवतीत्यनेन ज्ञापयति सूत्रकारो यथा उत्तर पदादिरनादिरेव ; Hemchandra declares that "the initial letter of the last member of a compound word is considered as "non-initial" ; केचित्तु कैपुचित् कस्य गत्वमेवेच्छन्ति न तु लोपम् according to others instead of an elision, *g* is substituted for *k* in many words, as एगत्तणं (एकत्व); एगो (एकः); अमुगो (अमुकः); आगारो (आकारः); आगरिसो (आकर्षः)। आर्षे अन्यदपि दृश्यते The Rishis allow substitution of any letter for any other letter, as आउंजणं for आकुञ्चनं। १

लोप इति निवृत्त We pass now from elision to substitution.

॥ नावर्णात् पः ॥ ४

अवर्णात् परस्यानादेः पस्य लुग् न भवति ।

When a non-initial *p* is preceded by *abarna* (ie á or a) it is not elided, *as* सवहो (शपथः) सावो (शापः) ।

॥ अवर्णे यश्रुतिः ॥ ५ ।

---

१ In the sauraseni dialect (शौरसेन्यां) d is substituted for t ; पताकादिकं वर्ज्जयित्वा तस्य स्थाने दो भवति as तादो (तातः); but in the words पताका व्यापृत and गर्भित are excepted as पडाआ वावडो गब्भिणं and in the word (भरते तस्य धः) bharata dh is substituted for t as भरधो। and the elision of d is not generally allowed (दलोपः प्रायेण निषिद्धः) as वदणं, सौदामिणी there are however exceptions (प्रायोग्रहणात् क्वचिदस्य लोपोऽपि) as हिअअं (हृदयं) ; मागध्यां छस्यस्थाने श्चो भवति in the mágadhi dialect *sch* is substituted for *chh* ; तथा जयघोः स्थाने यः and y for *j* and *gh* ; and य लोपोन *y* is not elided. पैशाच्यां तदयोःस्थाने तो भवति In the paisaichi *t* is substituted for both *t* and d हृदयस्य हितपमिति रूपं भवति the word hṛidaya assumes the form of hitapa.

Aho ! Shrutgyanam

क, ग, च, जेत्यादीनां लुकि सति, यः शेषोऽवर्णस्तस्मात् परतो लघु-प्रयत्नतर यकार श्रुति र्भवति ।

Where *k*, *g*, *ch*, and *j* &c., are elided, the inherent *a*, which survives them, if preceded by an *abarna* (*a* or *á*) is pronounced like *ya*.

ख, घ, थ, ध, भां हः ॥ १२

स्वरात् परेषामसंयुक्तानामनादिभूतानां ख, घ, थ, ध, भ इत्येतेषां वर्णानां प्रायो हो भवति

H is substituted for the five consonants *kh*, *gh*, *th*, *dh* and *bh*, when they are single, non-initial and preceded by a vowel ख—मुहो (मखः); मुहं (मुखं); मेहला (मेखला); लिहइ (लिखति); पमुहेण (प्रमुखेण); सही (सखी); आलिहिदा (आलिखिता); घ—मेहो (मेघः); जहणं (जघनं); माहो (माघः); लाहवं (लाघवं); लहु (लघु); थ१—नाहो(नाथः); गाहा (गाथा); मिहुणं (मिथुनं); सवहो (शपथः); कहेहि (कथय); कहेदु (कथयतु); कहइस्सं (कथयिष्यामि); कहं (कथं); मणोरहो (मनोरथः); ध—साहु (साधुः); राहा (राधा); वाहो (वाधः); वहिरो (वधिरः); वाहइ (वाधते); इंदहणू (इन्द्रधनुः); अहिअं (अधिकं); माहवीलदा (माधवीलता); महुअरो (मधुकरः) भ—सहा (सभा); सहावो (स्वभावः); णहं (नभः); घणहरो (घणभरः); सोहइ (शोभते); सोहणं (शोभनं); आहरणं (आभरणं); दुल्लहो (दुर्लभः); वल्लहो (वल्लभः); २ स्वरादितिकिं?

---

१ In the sauraseni except in *prithivi* and *prathama*, *dh* is substituted for *th*, *as* जधा (यथा); तधा (तथा); अणधा (अन्यथा) &c., in *prithivi*, and *prathama*, *h* and dh are respectively substituted for *th*, as पुहवी, पढमं; पृथिवी प्रथमश्च वर्जयित्वा शौरसेन्यां थकारस्य प्रायो धो भवति ।

२ शौरसेन्यां ध भयोः क्रमेण दकार वकार वदुच्चारणं विहितं न तु लेखन : स्वारथं In the sauraseni *dh* and *bh* are pronounced as *d* and *v* respectively, but they do not change their forms.

Aho ! Shrutgyanam

why did we say "when preceded by a vowel" ? compare संखो (शङ्खः) ; संघो (संङ्घः) ; कंथा (कन्था), &c. असंयुक्तस्य इतिकिं ? as illustrations of what we mean by the letters being single, compare लुम्पइ (लुम्पति); सिङ्घउ (सिध्यतु); अक्खइ (अचति) ; अनादेरितिकिं as for the letters being non-initial, compare गज्जंतो (गर्ज्जयन्) ; खे ; गज्जइ घणो (गर्ज्जयति घनः) ; प्राय इत्येवं *Praya* being still implied (see *Sût* 2ch. 2) we also find such forms *as* पखलो (प्रखलः) ; पलम्बघणो (प्रलम्बघ्नः) ; अधीरो ; अधणो (अधन्यः) ; उपलङ्घभावो (उपलब्धभावः) ; जिणधम्मो (जिनधर्म्मः) ; इत्यादि दृश्यते ।

॥ टोडः ॥ ६ ।

स्वरात् परस्यासंयुक्तस्यानादेष्टस्य डो भवति ।

Single, non-initial ṭ preceded by a vowel changes into ḍ, *as* णडो, (नटः), भडो (भटः), विडवो (विटपः), घडो (घटः) ; घडइ (घटते), &c. स्वरादितिकिं Why did we say when preceded by a vowel ? compare घंटा असंयुक्तस्य इतिकिं ? the ṭ should be single, for compare खट्टा अनादेरितिकिं ? and also noninitial, for compare टंको. क्वचिन्नभवति This rule does not hold good in some instances, *as* अटइ (अटति) ;

॥ पाटौ लो वा ॥ ७ ।

एयन्ते पटधातौ टस्य लो वा भवति ।

When the root *paṭ* is in causal form, *l* is optionally substituted for ṭ, as फालेइ, फाडेइ (पाटयति) ।

ठोढः ॥ ८ ।

स्वरात् परस्यासंयुक्तस्यानादेष्ठस्य ढो भवति ।

Aho ! Shrutgyanam

Dh is substituted for ṭh, when it is single, noninitial and preceded by a vowel, *as* मढो (मठः) ; सढो (शठः) ; कमढो (कमठः) ; कुढारो (कुठारः) ; स्वरादित्येव why did we say when preceded by a vowel ? look on the, following वेकुंठो (वैकुण्ठः) ; असंयुक्तस्येतिकिं ? as for its being 'single' compare चिट्ठइ (तिष्ठति) ; अनादेरितिकिं ? and for its being noninitial compare ठाई (स्थायी) ;

॥ डोलः ॥ २८ । १ ।

स्वरात् परस्यासंयुक्तस्यानादे र्डः प्रायो लो भवति ।

single and noninitial ḍ preceded by a vowel, generally becomes *l* ; *as* वलवामुहं (वडवामुखं) ; गरुलो (गरुडः); कीलइ (क्रीड़ति) ; तलाओ (तड़ागः) ; वलही (वड़भी) ; स्वरादित्येव this is the case only when ḍ is preceded by a vowel, for compare such forms *as* मोंडं, (मुण्डं) ? कोंडं (कुण्डं?) ; असंयुक्तस्य इत्येव as illustrations of ḍ when not single we have खड्गो ; अनादावित्येव ḍ does not change to *l* when initial as डिंभो ; 'प्रायो'ग्रहणात् क्वचिद्विकल्पोऽपि from the use of *Práya* (generally) in the *sútra* we conclude that option is allowed in some words *as,* वलिसं, वडिसं; दालिमं, दाडिमं ; गुलो, गुडो ; णालो, णाडो ; णलं, णडं ; क्वचिन्न भवति this rule does not at all apply to some instances *as* निविडं, पीडिअं (पीड़ितं) ; णीडं । २ ।

---

१ प्राकृत प्रकाशे " डस्य च " इति सूत्ररूपमस्ति (sec. Pra 23su. ch.2).

२ । प्राकृतप्रकाशकारमते दाडिम, वडिस, निविडानां लत्वं न भवति According to Prákritaprakása *l* is not substituted at all in the words Dáḍima, Baḍisa, and Nibiḍa कल्पलतिकामते केवलं पीडित, गुड, शब्दयोर्विकल्पेन लत्वं भवति । According to *kalpalatika* the substitution of *l* for ḍ is optional in Piḍita and Guḍa only.

Aho ! Shrutgyanam

॥ प्रतौ डः ॥ १०

प्रत्युपसर्गे तस्य डो भवति ।

In the prefix *prati* ḍ is substituted for *t as* पडिवस्रं (प्रतिपन्नं); पडिसरो (प्रतिसरः); पडिमा (प्रतिमा) &c प्राय इत्येव the word *Práya* (generally) still continues to be implied, so we find also many exceptions of the rule, as पइवं (प्रतीपं); संपइ (संप्रति); पइट्ठाणं (प्रतिष्ठानं); पइट्ठा (प्रतिष्ठा); पइण्णा (प्रतिज्ञा) ।

प्राकृत प्रकाशे ऋत्वादिषु तोदः (प्रा० ७।२) इति सूत्रं पठितं हेमचन्द्रस्तु विधिमिमं शौरसेनीमागधी विषयं मन्यते तन्मते साधारण प्राकृतेतु ऋत्वादीनां उऊ इत्यादिरूपं भवति ।

In Prákritaprakasa we find a Sútra "ritwadishu todah"(Prá 7su, ch2) in ritu &c., *d* is substituted for *t*. But Hemehundra says सतु शौरसेनी मागधी विषय एव दृश्यते इति नोच्यते "as this does generally apply to Sauras'eni and mágadhi dialects I omit it—In common Prakrita however no such substitution takes place" ; *as* उऊ (ऋतुः); रअअं (रजतं); एअं (एतं); गओ (गतः); संपअं (साम्प्रतं); जओ (यतः); तओ (ततः); कअं (कृतं); हआसो (हताशः); ताओ (तातः); इत्यादि । १

---

१ ऋतुः, किरातो, रजतञ्च, तातः, सुसङ्गतं, संयत साम्प्रतञ्च ।
सुसंस्कृति प्रीति समान शब्दा स्तथा कृतिर्निर्वृति तुल्यमेतत् ॥
उपसर्ग समायुक्ते कृति हती हतागतौ ।
ऋत्वादिगणने नेयाश्चन्ये शिष्टानुसारतः ॥

According to kalpalatika d is invariably substituted for t in the word sutra ; as सुदं श्रुतं and optionally in hata (हत) as हओ हदो (हतः)

॥ दन्श दहोः ॥ ११ ।

अनयोर्धात्वोर्दस्य डो भवति ।

D is substituted for *d* in the roots *Dansa* and *Daha*; *as* डसइ (दशति) ; डहइ (दहति) ;

॥ प्रदीपौ लः ॥ १२ ।

प्रपूर्व्वे दीप्यतौ धातौ दस्य लो भवति ।

L is substituted for *d* in the root *dipa* having the prefix *pra* before it, *as* पलीवेइ (प्रदीपयति) ; पलित्तं (प्रदीप्तं);

॥ दीपौ धोवा ॥ १३ ।

दीप धातौ दस्यधो वा भवति ।

Dha is optionally substituted for *d* in the root *Dipa* as धिप्पइ, दिप्पइ (दीप्यति) ;

॥ नोणः ॥ १४ । १ ।

स्वरात् परस्यासंयुक्तस्यानादेर्नस्य णो भवति ।

Ṇ (cerebral) is substituted for dental n when it occurs single and noninitial, and is also preceded by a vowel, as कण्णा (कन्या) ; सअणं (शयनं) ; इत्यादि ।

अत्र वररुचि हेमचन्द्रयोर्मह्दन्तरं दृश्यते, यथा प्राकृतप्रकाशे "नोणः सर्व्वत्र" (पा० ४२ सू २ अ) इति सूत्रं दृश्यते, तस्य वृत्तिस्तु सर्व्वत्र आदौ अनादौ वा नकारस्य णकारो भवति ।

With regard to this rule difference of opinion is found to exist between *Vararuchi* and *Hemchandra*, for while the former substitutes cerebral ṇ for a single *n* every where, the latter attaches the conditions mentioned in the

---

पैशाच्यां णकारस्य 'न' कारो भवति । In the Paisachi dental n is substituted for cerebral ṇ.

Aho ! Shrutgyanam

sútra. Thus for instance *Vararuchi* writes the word *Narayana* as *Ṇáráyana,* while Hemchandra both *Náráyaṇa* and *Ṇáráyaṇa* (see next *sutra*). The Rishis do not pay any regard to this *rule,* as अनलो अनिलो।

॥ वादौ ॥ १ ५ ।

असंयुक्तस्यादौ वर्त्तमानस्य नस्य णो वा भवति ।

Ṇ is optionally substituted for a single and initial *n as* णरो, नरो ; णइ, नइ, (नदी) ; असंयुक्तस्येत्येव this is only when *n* is single, for compare न्यायः ।

॥ पोवः ॥ १ ६ । १ ।

स्वरात् परस्यायुक्तस्यानादेः पस्य प्रायो वो भवति ।

Single noninitial *p* when preceded by a vowel, generally becomes *v.*

as सवहो (शपथः) ; सावो (शापः) ; उलवो (उलपः) ; उवसग्गो (उपसर्गः) ; पईवो (प्रदीपः) ; कासवो (काश्यपः) ; पावं (पापं) ; उवमा (उपमा) ; महिवालो (महीपालः) ; गोवेइ (गोपयति) ; कलावो (कलापः) ; तवइ (तपति) ; कवोलो (कपोलः) ; स्वरादित्येव as for *p* not preceded by a vowel, compare कम्पइ ; असंयुक्तस्येत्येव *as* for its being conjoined to another consonant, compare अप्पमत्तो अनादिरित्येव ; also when it occurs at the begining of words, compare पढ़इ (पठति) ; प्राय इत्येव the use of práyas (generally) in the sútra signifies that this rule is not universal or in other words it applies only to cases where no elision takes place by sútra (1 chap 2.) *as* रिऊ (रिपुः) ; १।

---

१ । प्राकृत प्रकाशे सूत्ररूपं सममेव विद्यते (see Prá. 15-2.)

शौरसेन्यां अपूर्व्व शब्दस्य "अवरूवं," "अउव्वं," इति रूपद्वयं भवति In the Sauraseni dialect the word *Apurba* has two forms as just shewn in Nágri character. पस्य च वः *v* is generally substituted for *p.*

Aho ! Shrutgyanam

॥ पटौ फः ॥ १७ ।

ण्यन्ते पटि धातौ पस्य फो भवति ।

Ph is substituted for *p* in the root *Pat* when in the causal form ; as फालेइ, फाडेइ (पाटयति) ।

॥ फो भहौ ॥ १८ ।

स्वरात् परस्यासंयुक्तस्यानादेः पस्य भहौ भवतः ।

Bh or *h* is substituted for a single and noninitial *ph* when preceded by a vowel. क्वचिद्भः In some words *bh* only is substituted ; as रेभो (रेफः) ; सिभा (शिफा) ; क्वचित्तु ह in other instances *h* only is substituted मुत्ताहलं (मुक्ताफलं); क्वचिदुभावपि instances may be found where both *bh* and *h* are substituted in same words *as* सेभालिआ, सेहालिआ (शेफालिका) ; सभरी सहरी (शफरी) ; स्वरादित्येव the substitution does not occur when ph is not preceded by a vowel, *as* गुंफइ (गुम्फति) ; असंयुक्तस्येत्येव neither when it is not single as पुप्फं (पुष्पं) ; अनादावित्येव nor when *ph* is initial *as* फणी । १

॥ बोवः ॥ १९ ।

स्वरात् परस्यायुक्तस्यानादेर्बस्य वो भवति ।

V is substituted for a single and noninitial *B* when preceded by a vowel, *as* अलावू अलाऊ ।

॥ विसिन्यां भः ॥ २० ।

विसिन्यां वस्य भो भवति ।

१ । शौरसेन्यां फस्य हए In the Sauraseni only *h* is substituted for *ph*. In Jaina Prakrita b is substituted for म (जैन प्राकृते मस्थाने वो भवति) वम्महो (मन्मथः) ।

Aho ! Shrutgyanam

In the word visini *bh* is substituted for the initial letter, *as* भिसिणी स्त्रीलिङ्ग निर्द्देशादिह न भवति from the express mention of the feminine we infer that this rule does not hold in the neuter form of the word *as* विसम् ।

॥ आदेर्योजः ॥ २१ ।

पदादेर्यस्य जो भवति ।

J is substituted for initial *y* *as* जसो (यशः); जमो (यमः); जाई (जातिः); आदे रितिकिं ? as for cases where y is not initial compare अवअवो; वहुलाधिकारात् सोपसर्गस्यानादे रपि the implication of option being continued we have to understand that even in many cases where *y* is preced by a prefix and consequently is not initial, the substitution is allowed; *as* संजमो (संयमः); संजोओ (संयोगः): अवजसो (अपयशः); कल्पलतिका मते सामान्यत उत्तर पदस्थितस्यापि यकारस्य जादेशो भवति । According to *kalpalatiká* the substitution takes place also when *y* stands first in the last word in a compound; *as* गाढ़जोव्वणा (गाढ़यौवना); अजोग्गो (अयोग्यः); आर्षे लोपोऽपि according to the Rishis initial *y* is also sometimes elided; *as* अहाजाअं (यथाजातं) ।१

॥ युष्मद्यर्थपरे तः ॥ २२ ।

युष्मच्छब्दार्थ परे यस्य तो भवति ।

The *y* of the word *yusmad* changes to *t* as तुम्हारिसो (युष्मादृशः) ।

---

१ । मागध्यां यस्य जादेशो न भवति । In the Magadhi *y* remains the same.

Aho ! Shrutgyanam

॥ तीयकृद्यो ज्जः ॥ २३ ।

तीय प्रत्यये, कृदन्तेषु च यो यस्तस्य द्विरुक्तो जो(ज्जः) वा भवति।

The single unconnected *y*, which occurs in a word on account of affix tíya, or any of the kṛit affixes attached to it optionally becomes *jj* as करणिज्जं, करणीअं ; रमणिज्जं, रमणीअं ; दोज्जो, द्वीओ (द्वितीयः); पेज्जं, पेअं (पेयं) ।

॥ छायायां होवाकान्तौ ॥ २४ ।

अकान्तौ वर्त्तमाने छाया शब्दे यस्य हो वा भवति ।

The *y* of the word chháyá when it is used in any sense other than *kánti,* optionally changes to *h*; *as* वच्छस्सच्छाहा (वृक्षस्यछाया) ; ।

॥ हरिद्रादौलः ॥ २५ ।

हरिद्रादिषु शब्देष्वसंयुक्तस्य रस्य लो भवति ।

In the words Haridrá &c. *l* is substituted for the single *r* ; as हलद्दा (हरिद्रा) : दलिद्दो (दरिद्रः) ; कल्पलतिकायां हरिद्रादिगणो यथा in kalpalatika the Haridra—class is thus enumerated as.

हरिद्रा, मुखरा, ङ्गार, सुकुमार, युधिष्ठिराः ।

करुणा चरणश्चैव परिखा परिघावपि ॥

किरातश्चाङ्गुरीचैव दरिद्रश्चैवमादयः ।

आदिशब्दात् पारिभद्रः जठर निष्ठुरापद्वार शब्दानां संग्रहः ।

Bahula (option) being still implied we have to understand that in the word *charana* the r changes into *l* only when it means a foot and used not in any other

Aho ! Shrutgyanam

sense; as पद्दस्स चरणं, so we also find such forms as जठरं, निट्ठुरो । १ ।

॥ शषोः स ॥ २६ । २ ।

शकार षकारयोः सो भवति ।

S is substituted for *s'* and *sh*; as कुसो (कुशः); सेसो (शेषः); इत्यादि in fact s' and *sh* (श&ष) do not exist in the prakrita alphabet.

॥ हो घोऽनुस्वारात् ॥ २ ।

अनुस्वारात् परस्य हो घो भवति ।

gh is optionally substituted for *h* when it is preceded by anuswara as सिंघो, सीहो, (सिंहः); संघारो, संहारो (संहारः); क्वचिदननुस्वारादपि we find the substitution of gh in some instances even where *h* is not preceded by an *anuswára* as दाघो (दाहः) ।

इति द्वितीयोऽध्यायः ।

---

१ मागध्यां र स्थाने लो भवति। In the maghadhi l is generally substituted for r. पैशाच्यामपि र स्थाने लः। In the Paisachi *l* is also substituted for *r*.

In Jaina Prakrita s and ṇ are substituted for r (जैन प्राकृते रस्थाने णसौ विहितौ) । (In Prakrita lakshaṇa sutra 18 to 19) as सीसं (शिरः) ।

२ मागध्यां श ष सां श एव In the maghadhi s' (श) is invariably used every where for s', sh and s.

In Jaina Prakrita r, jha and bh are substituted for h (जैने ह, स्थाने र, झ, भा भवन्ति) (In Prakrita lakshaṇa sútra 19, 20, 21) घरं (गृहं) वज्झो (वह्निः), जिब्भा (जीह्वा) ।

Aho ! Shrutgyanam

अथ तृतीयोध्यायः।

प्रथमः पादः ।

॥ संयुक्तस्य ॥ १ ।

यदित ऊर्द्ध्वमनुक्रमिष्यामस्तत्संयुक्तस्येति वेदितव्यम् ।

Now we come to conjunct consonants. This *Sútra* is an *adhikára*, that is, in all the succeeding sútras the rules laid down refer to conjunct consonants.

। क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष, सां मूर्द्ध्व लुक्; शेषाणां द्वित्वञ्चानादौ ॥ २ ।

मूर्द्ध्वस्थितानां संयुक्तवर्णसम्बन्धिनामेषां लुग्भवति । अनादौस्थितानां शेषाणां द्वित्वञ्च ।

The consonants *k*, *g*, *ṭ*, *ḍ*, *t*, *d*, *p*, *s'*, *sh*, and *s* when occurring as the first letter in a conjunct are elided; and except when they occur in the beginning of a word, the surviving consonant of the conjunct is doubled, as—

	प्रा०	सं	प्रा०	सं	प्रा०	सं	प्रा०	सं
क—	भुत्तं	भुक्तं ;	सित्थं	सिक्थं ;	भत्तं	भक्तं ;	मुत्तं	मुक्तं
ग—	दुद्धं	दुग्धं ;	मुद्धं	मुग्धं ;	सिणिद्धो	स्निग्धः।		
ट—	सप्पओ	षट्पदः ;	कप्फलं	कट्फलं।				
ड—	खग्गो	खड्गो ;	सज्जो	षड्जः ।				
त—	उप्पलं	उत्पलं ;	उप्पाओ	उत्पातः।				
द—	मुग्गो	मुद्गः ;	मुग्गरो	मुद्गरो।	मग्गू	मद्गुः ।		

Aho ! Shrutgyanam

प्रा०	सं	प्रा०	सं		
प–सुत्तं	सुप्तं ;	पज्जत्तं	पर्य्याप्तं ;	गुत्तो	गुप्तः ।
श–निच्चलो	निश्चलः ;	चुअद्द	श्चुतति ।		
ष–गोट्ठी	गोष्ठी ;	निट्ठुरो	निष्ठुरः ।		
स–खलिअं	स्खलितं ;	णेहो	स्नेहः ।		

॥ अधो म,न,यां, शेषाणां द्वित्वञ्चानादौ ॥ ३ ।

म, न, यां संयुक्तस्याधोवर्त्तमानानां लुगभवति। अनादौ वर्त्तमानानां शेषाणां द्वित्वञ्च ।

The consonants *m*, *n*, and *y* forming the last letters in conjuncts are elided ; and except when the conjunct occurs in the begining of a word the surviving consonants are doubled. *as*—

प्रा०	सं	प्रा०	सं	प्रा०	सं
म–जुग्गं	युग्मं	रस्सी	रश्मिः	सरो	स्मरो
न--नग्गो	नग्नः	भग्गो	भग्नः	लग्गं	लग्नं ।
य–सोम्मो	सौम्यः ।				

॥ सर्व्वत्र लवरामचन्द्रे शेषाणां द्वित्वञ्चानादौ ॥ ४ ।

चन्द्रशब्दादन्यत्र सर्व्वत्र ल, व, रां संयुक्तस्योर्द्धमधःस्थितानां लुगभवति।

अनादौ स्थितानां शेषानाञ्च द्वित्वं स्यात् ।

The letters *l*, *v*, and *r* are always elided, whether they occur first or last in a conjunct ; and the surviving letters, provided they are not in the beginning of a word, are doubled ; as—

Aho ! Shrutgyanam

	प्रा०	सं	प्रा०	सं
ल—ऊर्द्धं	उक्का	उल्का ;	वक्कलं	वल्कलं
व— ,,	सद्दो	शब्दः ;	अद्दो	अब्दः
	लुद्धो	लुब्धः ;	लोद्धओ	लुब्धकः
र— ,,	अक्को	अर्कः ;	वग्गो	वर्गः
ल—अधः	सण्हं	श्लक्ष्णं ;	विक्कवो	विक्लवः
व—अधः	पिक्कं	पक्वं ;	धत्थं	ध्वस्तं
र— ,,	चक्कं	चक्रं ;	गहो	ग्रहो
	रात्तिः	रत्ती ।		

Exception ;—In the word chandra *r* is not elided, as

चंद्रो चन्द्रः (१) ।

अत्र 'द्व' इत्यादिसंयुक्तानामुभय लोपप्राप्तौ यथादर्शनं लोपः ।

According to the preceeding *sûtra* in such conjunct as dva &c. both the first and last letters are subject to elision. In such cases we have only to follow ancient authorities to elide either of them, thus क्वचिदूर्द्ध्वं in some instances the first letter is elided, as उव्विग्गो (उद्विग्नः); विउणो (द्विगुणः) ; कम्मसं (कल्मषं) ; सव्वं (सर्व्वं) ;—क्वचिदधः—in some instances the last is elided as कव्वं (काव्यं) ; कुल्ला (कुल्या) ; मल्लं (माल्यं) ; दिओ (द्विपः) ; दुआई (द्विजातिः) ; क्वचित् पर्य्यायेण in some instances the elision of either is good, as वारं, दारं (द्वारं) ;

१ । We find the form चंद्रो in many manuscripts.

Aho ! Shrutgyanam

॥ द्रे रो वा ॥ ५ । १ ।

द्र-शब्दे रेफस्य लुग्वा भवति ।

In the conjunct *dr*, the elision of *r* is optional; as द्रोहो (द्रोहः); रुद्दो (रुद्रः); भद्दं (भद्रं); समुद्दो (समुद्रः);

॥ ज्ञाञः जस्य द्वित्वञ्चानादौ ॥ ६ । २ ।

ज्ञासम्बन्धिनो ञस्य लुग्वा भवति । जस्य च द्वित्वमनादौ ।

In the conjunct *jṇa* ṇ (ञ) is optionally elided and the remaining j is doubled, provided it does not stand at the beginning of a word; as सव्वज्जो, सव्वण्णू (सर्व्वज्ञः); अप्पज्जो, अप्पण्णू (अल्पज्ञः); अहिज्जो, अहिण्णू (अभिज्ञः); णाणं, जाणं (ज्ञानं); संजा, सण्णा (संज्ञा); अज्जो, अण्णो (अज्ञः); क्वचिन्नभवति in some instances the elision does not take place; as विण्णाणं ।

॥ अनादावादेशस्य द्विर्व्वचनम् ॥ ७ ।

अनादौ वर्त्तमानस्यादेशस्य द्वित्वं भवति ।

A single consonant which is substituted for a conjunct by rules herein-after stated, is doubled, provided

---

१ अवन्त्यामपि नियम एष सर्व्वत्र वर्त्तते In the abanti this rule is universally applied.

२ शौरसेन्यां ज्ञ स्थाने ञ्ञो भवति In the sauraseni ṇ is is substituted for jṇ (ज्ञ); मागध्यां ज्ञस्य ञ्ञो भवति in the mágadhi jṇ (ज्ञ) is replaced by doubled ṇ; पैशाच्यामपि मागधीवत् ज्ञस्य ञ्ञो राजन् शब्दसम्बन्धिनो ज्ञस्य तु विञ, वा in the pais'áchí also ṇṇ is substituted for jṇ (ज्ञ) but the jṇ (ज्ञ) of the word Rájan is optionally changed to विञ । शौरसेनी, मागधी पैशाचीषु न्यण्यो रपि ञ्ञो भवति । ṇṇ is also substituted for nya and ṇya in the *sauraseni mágadhi* and pais'áchi dialects.

Aho ! Shrutgyanam

it does not stand at the beginning of a word ; as लट्ठी, (यष्टिः) ; दिट्ठी, (दृष्टिः) ; इत्थी इत्यादि ।

॥ द्वितीय तुर्य्ययो रुपरि पूर्व्वः ॥ ८ ।

द्वितीय तुर्य्ययोर्द्वित्वप्रसङ्गे उपरि पूर्व्वौ भवतः । द्वितीयस्योपरि प्रथमश्चतुर्थस्योपरि तृतीय इत्यर्थः ।

When the second or the fourth letter of a class (वर्ग) is to be doubled, it shall, instead of being doubled, be conjoined to the first and the third letter of the same *barga* respectively, over it ; as वक्खाणं (व्याख्यानं) ; अग्घो (अर्घः) ।

॥ न दीर्घानुस्वारात् ॥ ९ ।

दीर्घानुस्वाराभ्यां परयोः शेषादेशयोर्द्वित्वं न भवति ।

A consonant preceded by a long vowel or *Anuswara* is never doubled ; *as* ईसरो (ईश्वरः) ; लासं (लास्यं) ; संकंतो (संक्रान्तः) ; संभा (सन्ध्या) ।

॥ रहोः ॥ १० ।

रेफ हकारयोर्द्वित्वं न भवति ।

R and *h* are never doubled ; as—र—सुंदेरं, (सौन्दर्य्यं) ; बम्हचेरं (ब्रह्मचर्य्यं) ; धीरं (धैर्य्यं) ; विहलो (विह्वलः) ; कहावणो (कार्षापणः) ।

॥ समासे वा ॥ ११ ।

समासे द्वित्वं वा भवति ।

Aho ! Shrutgyanam

The foregoing rules for doubling a letter, optionally applies to the compound words; as नईग्गामो, नईगामो (नदीग्रामः); बहुलाधिकारादन्यत्रापि option being carried on, any letter in a compound word though not coming under the foregoing rules, may be optionally doubled; as—तेल्लोक्कं, तेलोक्कं (त्रैलोक्यं)।

॥ तैलादौ ॥ १२ । १ ।

तैलादिष्वनादौ यथादर्शन मन्त्यस्यानन्त्यस्य च व्यञ्जनस्य द्वित्वं भवति।

In the words *taila* &c. any consonant except the first is doubled; but ancient usages can alone determine whether the medial is doubled or the final, as तेल्लं (तैलं); मंडुक्को (मण्डूकः); वेइल्लं (विचकिलं); उज्जू (ऋजुः); सोत्तं (श्रोतः); पेम्मं (प्रेम); विड्डा (व्रीडा); जोव्वणं (यौवनं);

॥ सेवादौ वा ॥ १२ । २ ।

---

१ प्राकृत कल्पलतिकायां प्राकृत प्रकाशे च सूत्रस्यास्य "नीडादिषु" इत्येवं रूपमस्ति। Both Prakritakalpalatika and Prakritaprakasa read Nídádi instead of tailádi; kalpalatika thus enumerates Nidádi (कल्पलतिकायां नीडादिो गणोयथा—

नीड, व्याहृत, मण्डूक, श्रोतांसि, प्रेम यौवने।
ऋजुः स्थूलं, तथा तैलं, त्रैलोक्यञ्च गणो यथा॥

णेड्डं (नीडं) वाहित्तं (व्याहृतं)।

२ Kalpalatika thus enumerates the Sevá class (कल्पलतिकायां सेवादिगणो यथा)—

सेवा, कौतूहलं, दैवं, विचितं, नख जानुनि।
पिवादयः सवा शब्दा एतदाद्या यथार्थकाः॥
त्रैलोक्यं कर्णिकारश्च वेश्या भूर्ज्जश्च दुःखितं।
रात्रि विश्वास निश्वासा मनोऽस्वेश्वर रश्मयः॥
दीर्घैक शिव तूष्णीक मित्र पुष्पासिदुर्लभाः।
दुष्करो निष्कृपः कर्म्म करेव्वास परस्परं।
नायकाद्या स्थायशब्दाः सेवादिगणसम्मताः।

Aho ! Shrutgyanam

सेवादिष्वनादौ यथादर्शनमन्त्यस्यानन्त्यस्य च वा द्वित्वं भवति ।

The above rule is optionally applied to the words *sevá* &c. as.

सेव्वा, सेवा ; विहित्तो, विहिओ ; कोउहल्लं कोउहलं, वाउल्लो, वाउलो इत्यादि ।

॥ क्षः खः क्वचित्तु छझौ ॥ १४ । १ ।

क्षस्य खो भवति क्वचित्तु छझा वपि ।

Kh is generally substituted for *ksh* but in some cases chh or jh is also found in its place; as खओ (क्षयः) ; लक्खणं (लक्षणं) ; क्वचित्तु छझा वपि, the examples of the latter cases are छीणं, खीणं, (क्षीणं) ; झिज्जइ, खिज्जति (क्षिज्यति) ;

॥ छोऽक्ष्यादौ ॥ १५ ।

In *Akshi* &c. *chh* and not *kh* is substituted for the conjunct; as अच्छी, (अक्षि) ; उच्छू, (इक्षुः) इत्यादि ; क्वचित् स्थगित शब्देऽपि sometimes chh is also substituted for *sth* in the word sthagita, as छइअं । २ ।

शौरसेन्यां सेवादिषु द्वित्वं न भवति । This rule does not apply in the Sauraseni dialect.

१ मागध्यामनादौ वर्त्तमानस्य क्षस्य ष्को भवति ; प्रेक्षाचक्षोस्तु स्कः । In the mágadhi s'k is substituted for a noninitial ksh but in the words preksha and áchaksha the substitute is sk.

२ Kalpalatika thus enumerates the *akshi* class (कल्पलतिकायां अक्ष्यादिगणो यथा) अक्षाक्षि, चक्षु, रक्षुष, क्षार उत्क्षिप्तमक्षिकैः । दक्षोवक्षः सदृक्षोऽच्च क्षेव क्षीरेक्षुकुक्षयः । क्षुधाचेत्यादयः शब्दा अक्ष्यादिगण सम्मताः । आर्षे According to rishis the words *ikshu* (इक्ष), *kshíra* (क्षीर) and *sadriksha* (सदृक्ष) have the following forms also, as इक्खू खीरं, सरिक्खं । शौरसेन्यां सदृक्ष क्षार शब्दयो च्छत्वं निषिद्धं In the sauraseni dialect chh is not substituted for *ksh* in the words *sadriksha* and *kshára*.

Aho ! Shrutgyanam

॥ क्षण उत्सवे ॥ १६ । १ ।

क्षण शब्दे उत्सवाभिधायिनि संयुक्तस्य छो भवति ।

When the word *kshaṇa* denotes festival *chh* is substituted for *ksh.* But when it denotes a *moment* the substitution does not take place ; as खणो ।

॥ क्म त्मोः पः ॥ १७ । २ ।

क्म त्मोः पो भवति ।

The cunjucts *km* and *tm* change into *P*, as रुप्पं (रुक्मं); रुप्पिणी (रुक्मिनी) ; कुप्पलं (कुड्मलं) ; क्वचित् च्मापि in some instances 'च्म' is also substituted for क्म as रुच्मी (रुक्मी) ;

॥ ष्क, स्कयो र्नाम्नि खः ॥ १८ ।

अनयो र्नाम्नि संज्ञायां खो भवति ।

Kh is substituted for *shk* or *sk* in a substantive ; *as* ष्क—पोक्खरं, (पुष्करं) ; पोक्खरिणी, (पुष्करिणी) ; निक्खं (निष्कं) ; स्क—खंधो (स्कन्धः) ; खंधावारः (स्कन्धावारः) ; नाम्नीति किं ? when *shk* and *sk* occur in a verb or verbial adjective such substitution does not take place, as दुक्करं, (दुष्करं) ; निक्कामं, (निष्काम्यं) ; सक्कअं (संस्कृतं) ; ३ ।

---

१ । शौरसेन्यां क्षणशब्दे छत्वं न । In the sauraseni *chh* is never substituted for *ksh* in the word *kshaṇa.*

२ । प्राकृत कल्पलतिकायां "क्म स्य च" इत्येवं सूत्ररूपमस्ति According to Prkrita Kalpalatika the substitution of *P* is held for *km* only.

३ । हेमचन्द्रमते मागध्यां संयोगे वर्त्तमानयोः सकार षकारयोः सो भवति तथाहि ष्कस्कयोः स्क इति रूपं ष्टस्य स्ट इति रूपं । According to Hemchandra *s* is substituted for *s* and *sh* when they conjoined to another letter, in the ma'gadhi dialect. Thus the conjuncts *shk* and *sk* assume the form of *sk* and *sht* the form *st.* कल्पलतिकामते तत्रापि शकार एव According to kalpalatika the substitute is s' even in these instances.

Aho ! Shrutgyanam

॥ ष्टस्य ठोऽनुष्ट्रे, ष्टा, संदष्टे ॥ १८ ।

उष्ट्रादिवर्ज्जिते ष्टस्य ठो भवति ।

Ṭh is used for *sht* in all words except *ushṭra, ishṭá,* and *sandashṭa*; as लट्ठी (यष्टिः) ; मुट्ठी (मुष्टिः) ; दिट्ठी (दृष्टिः) सिट्ठी (सृष्टिः) ; इत्यादि अनुष्ट्रेष्टा संदष्टइतिकिं ? the words *ushṭra ishṭa* and *sandashṭa* have the following forms.

उट्टो, इट्टा, संदट्टो ।

॥ त्यस्योऽचैत्ये ॥ २० ।

चैत्यवर्ज्जिते त्यस्य चो भवति ।

Ch is substituted for tya in all words except chai*tya*; *as* सच्चं (सत्यं) ; पच्चओ (प्रत्ययः) ; निच्चं (नित्यं) ; पच्चक्खं (प्रत्यक्षं) ; अचैत्यइतिकिं ? the word चैत्यं becomes चइत्तं ।

॥ त्व, थ्व, द्व, ध्वां च, च्छ, ज्ज, ज्झाः क्वचित् ॥ २१ ।

एषां (त्व, थ्व, द्व, ध्वां) यथा संख्यमेते (च, च्छ, ज्ज, ज्झाः); क्वचिद्भवन्ति ।

In some instances *chch, chchh, jj,* and *jjh* are substituted for *twa, thwa, dwa,* and *dhwa* respectively, as णच्चा (ज्ञात्वा) ; सोच्चा (श्रुत्वा) ; पिच्छी (पृथ्वी) ; विज्जं (विद्वान्) ; वुज्झा (वुध्वा) ;

॥ र्त्तस्याधूर्त्तादौ ॥ २२ ।

र्त्तस्य टो भवति धूर्त्तादीन् वर्ज्जयित्वा ।

Ṭ is substituted for rt except that in the words of the dhúrta class, as केवट्टो (कैवर्त्तः) वट्टी (वर्त्ती) ; णट्टओ (नर्त्तकः) ; णट्टई (नर्त्तकी) ; संवट्टिअं (संवर्त्तिकं) ; अधूर्त्तादाविति किं ?

Aho ! Shrutgyanam

the substitution does not take place in the words dhúrta &c. as धूत्तो, कित्ती धूर्त्तादिर्यथा धूर्त्तः, कीर्त्तिः, वार्त्ता वर्त्तनं, निवर्त्तनं, प्रवर्त्तनं, संवर्त्तनं, आवर्त्तनं, निवर्त्तकः, प्रवर्त्तकः, संवर्त्तकः, वर्त्तिका, वार्त्तिकः, कार्त्तिकः, कर्त्तरि, मूर्त्तिः, मुहूर्त्तः, बहुलाधिकारात् वट्टा bahula being carried on, the word *vártá* takes the form of *vaṭṭá.* *

॥ ह्रस्वात् थ्य, श्च, त्स, प्सा मनिश्चले छः ॥ २३ ।

ह्रस्वात् परेषां, थ्य, श्च, त्स, प्सां छो भवति ।

Chh is substituted for the conjuncts *thya, sch, ts,* and *ps,* when they are preceded by a *short* vowel, as पच्छं (पथ्यं) ; पच्छा (पथ्या) ; मिच्छा (मिथ्या) ; रच्छा (रथ्या) ; श्च—पच्छिमं (पश्चिमं) ; अच्छेरं (आश्चर्यं) ; पच्छा (पश्चात्) ; त्स—उच्छाहो (उत्साहः); मच्छरो (मत्सरः) ; वच्छो (वत्सः) प्स—लिच्छइ (लिप्सति) ; लिच्छा (लिप्सा) ; जुगुच्छइ (जुगुप्सति) ; अच्छरा (अप्सरा) ; ह्रस्वादिति किं ? the substitution does not take place when they are not preceded by a short vowel, as ऊसारिओ (उत्सारितः) ; अनिश्चल इति किं such substitution does not take place in the word *nischala,* as णिच्चलो. According to the Rishis (आर्षे) the word tatthya (तथ्यं) is used as tachcha (तच्चं) ।

॥ द्यय्य जः ॥ २४ । १ ।

---

* मागध्यां त्तट्टयोस्त स्ट इति रूपं केषाच्चिन्मते स्ट इति । In the Mágadhi dialect the conjuncts tt and ṭṭ change into sṭ but according to some they change into s't.

१ । कल्पलतिकायां "पद्यादिष्वनेति" पाठो विद्यते। According to Kalpalatika such substitution does not take place in the words padya &c. as पद्दं, गद्दं, अवद्दं; उद्यमं केचिदिच्छन्ति केचिदिच्छन्ति केवलं as regards the word udyama some up hold the substitution while others do not as उद्दमो उज्जमो ।

Aho ! Shrutgyanam

द्यस्य जो भवति ।

J is substituted for *dya*; as मज्जं (मद्यं); अवज्जं (अवद्यं); वेज्जं (वेद्यं); विज्जा (विद्या);

॥ ध्यस्य झः २५ ।

ध्यस्य झो भवति ।

Jh is substituted for *dhya; as* झाणं (ध्यानं); उवज्झाओ (उपाध्यायः); सज्झाओ (स्वाध्यायः); मज्झं (मध्यं); विंज्झो (विन्ध्यः); अज्झाओ (अध्यायः);

॥ म्नज्ञो र्णः । २६ ।

अनयो र्णो भवति ।

N̤ is substituted for *mn* and *jn*, as निण्णं (निम्नं); पज्जुण्णो (प्रद्युम्नः); णाणं (ज्ञानं); संणा (संज्ञा); पणा (प्रज्ञा); विणाणं (विज्ञानं);

॥ न्मोमः ॥ २७ ।

न्मस्य मो भवति ।

M is substituted for *nm* as जम्मो (जन्म); मम्महो (मन्मथः);

॥ य्य र्य्योः जः २८ । १ ।

---

१ । प्राकृत प्रकाशे "र्य्यशय्याभिमन्युषु जः" इत्येवं सूत्ररूपमस्ति According to Prakritaprakasa, *j* is substituted for the conjunct rya and also for the conjuncts in the words *sayá* and *abhimanyu.* शौरसेन्यां र्य्यस्य स्थाने य्योपि भवति । In the sauraseni yy is also substituted for rya. पैशाच्यां र्य्यस्स्थाने क्वचित् रियादेशः । In the Paisachi riya is substituted for rya in some instances.

Aho ! Shrutgyanam

अनयो र्जः स्यात् ।

J is substituted for *yya* and *rya*, as य्य—जज्जो (जय्यः) ; सेज्जा (शय्या) ; र्य्य—भज्जा (भार्य्या) ; कज्जं (कार्य्यं) ; वज्जं (वर्य्यं) ; पज्जाओ (पर्य्यायः) ; पज्जन्तं (पर्य्यन्तं) ;

॥ स्तस्य थोऽसमस्तस्तम्बे ॥ २८ ।

समस्त स्तम्ब वर्ज्जिते स्तस्य थो भवति ।

Th is substituted for *st* in all words except *samasta* and *stamb*, as हत्थो (हस्तः) ; थोत्तं (स्तोत्रं) ; थोअं (स्तोकं) ; पत्थरो (प्रस्तरः) ; थुइ (स्तुतिः) ; इत्यादि । १ ।

असमस्त स्तम्ब इति किं ? The substitution does not take place in the words, *samasta* and *stamb* ; as समत्तं, तंबो ;

॥ ष्प स्पयोः फः ॥ ३० ।

ष्प स्पयोः फो भवति ।

Ph is substituted for *shp* and *sp*. पुफ्फं, सफ्फं, निफ्फेसो (पुष्पं, शष्पं, निष्पेशो) ; फंदणं पडिफ्फद्धी, फंसो (स्पन्दनं, प्रतिस्पर्द्धी, स्पर्शः) ;

॥ श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ल, क्ष्णां ण्हः ॥ ३१ । २ ।

आदीनां संयुक्तानां णकाराक्रान्तो हकारादेशो भवति ।

---

१ । मागध्यां स्तर्थयोः स्त एव । In the magadhi *st* is substituted for both *st* and *rth*.

२ । पैशाच्यां स्नस्य 'सिन' इत्यादेशो भवति । In the paisachí *sina* is substituted for the conjunct *sn*.

Aho ! Shrutgyanam

nh is substituted for the conjuncts *s'n*, *shn*, *sn*, *hn*, *hn* and *kshn*; *as* श्न–पण्हो, (प्रश्नः) ; ष्ण–विण्हू (विष्णुः) ; कण्हो (कृष्णः) ; उण्हीसं (उष्णीषं) ; स्न–जोण्हा (ज्योत्स्ना) ; ण्हाऊ (स्नायुः) ; ण्हाणं (स्नानं) ; ह्न–वण्ही (वह्निः) ; जण्हू (जह्नुः) ; ह्ण–पुव्वण्हो (पूर्वाह्णः) ; अवरण्हो (अपराह्णः) ; क्ष्ण-सण्हं (श्लक्ष्णं) ; तिण्हं (तीक्ष्णं) ;

॥ श्म, ष्म, स्म, ह्मां म्हः ॥ ३२ ।

श्मादीनां संयुक्तानां स्थाने मकाराक्रान्तो हकार आदेशो भवति ।

The conjuncts, *sm*, *shm*, *sm* and *hm* take the form of *mh*; as श्म-कम्हारो (काश्मीरः) ; ष्म-गिम्हो (ग्रीष्मः) ; उम्हं (उष्म); स्म-अम्हारिसो (अस्मादृशः) ; विम्हओ (विस्मयः) ; ह्म-वम्हा (ब्रह्मा) ; सुम्हो (सुह्मः) ; वम्हणो (ब्राह्मणः) वम्हचेरं (ब्रह्मचर्य्यं) ; क्वचिन्म्भोऽपि दृश्यते, in some instances *mbh* is found in the place of *mh*, वम्भचेरं ; क्वचिन्नभवति to some instances this rule does not apply at all ; as रस्सी (रश्मिः) ; सरो (स्मरः) ;

॥ ह्यस्य झः ॥ ३३ ।

ह्यस्य स्थाने झ इत्यादेशो भवति ।

The conjunct hya is changed into *jh*, as सज्झो (सह्यः) ; मज्झं (मह्यं) ; गुज्झं (गुह्यं) ; इत्यादि ।

॥ ह्लो ल्हः ॥ ३४ ।

ह्ल स्थाने लकाराक्रान्तोहकारादेशो भवति ।

The conjunct *hl* is changed into *lh*, as कल्हारं (कह्लारं); पल्हाओ (प्रह्लादः) ;

Aho ! Shrutgyanam

॥ विप्रकर्षः ॥ २५ ।

अधिकारोऽयं ; आपरिच्छेद समाप्तेर्युक्तस्य विप्रकर्षो भवति ।

This rule being an *adhikara* will be implied in the following *sútras*, we are therefore to understand that the subject of the succeeding sútras to the end of the section will be the separation of conjuncts.

॥ इत् ला ॥ २६ ।

लकारेणान्त संयुक्तस्य विप्रकर्षो पूर्व्वस्येत्त्वञ्च ।

The conjuncts having *l* (ल) as their last are to be separated and an i (इ) shall be added to the first ; as किलिन्नं (क्लिन्नं) ; किलिट्ठं (क्लिष्टं) ; सिलिट्ठं (श्लिष्टं) ; पिलुट्ठं (प्लुष्टं) ; सिलोओ (श्लोकः) ; किलेसो (क्लेशः) ; मिलाणं (म्लानं) ; किलिस्सइ (क्लिश्यति) ; क्वचिन्नभवति this rule does not apply to some instances, as कमो (क्लमः) ; पवो (प्लवः) ; सुक्कपक्खो (शुक्लपक्षः) ;

॥ तन्वीतुल्येषु ॥ २७ ।

उकारान्ता ङी प्रत्ययान्तास्तन्वीतुल्याः, तेषु संयुक्तस्य विप्रकर्षः पूर्व्वस्योकार-योगश्च ।

The conjuncts in the words originally ending in *u* (उ) and having the suffix í (ङी) as तन्वी &c. shall be separated and *an* u (उ) shall be added to the first letter of the conjunct, as तिणुवी, तणुई (तन्वी) ; लहुवी, लहुई (लघ्वी) ; गुरुवी, गुरुई (गुर्व्वी) ; पुहुवी (पृथ्वी) ; क्वचिदन्यत्रापि, we find the application of this rule in some other insances also, as सुरुग्घो (स्रुघ्नः) ; आर्षे सूक्ष्मशब्दस्य सुहुमेति रूपं भवति ।

According to the Rishis, the word *sukshma* assumes the form of *suhuma*.

Aho ! Shrutgyanam

॥ एक पदे श्वःस्वे ॥ ३८ ।

एक पदे यो श्वस् स्व इत्येतौ तयोः, विप्रकर्षः अन्त्यव्यञ्जनात् पूर्व्वं मुच्च भवति ।

When the words *s'was* and *swa* are not compounded but stands before a word, the conjuncts in them are separated and *u* (उ) is added to the first letter, as सुवेकत्रं, (श्वः कृतं) ; सुवे जनाः (स्वे जनाः) ;

अथ तृतीयाध्यायस्य
द्वितीयः पादः ।
प्रत्यय विधानं ।

॥ शीलाद्यर्थस्येरः ॥ १ । १ ।

शील धर्म्म साध्वर्थे[१] विहितस्य प्रत्ययस्य इर इत्यादेशो भवति ।

Ira is substituted for all the affixes which signify the sense of *s'ila* (habit or inclination), ; *Dharma* (merit) or *sádhu* (goodness) ; as हसिरो, रोचिरो, लज्जिरो, भमिरो इत्यादि ; केचित्तु तृण एव इर माहुः, तेषां मते नमिगम्यादीनां णमिर गमिरादयो न सिध्यन्ति । Some authorities would substitute *ira* for the affix *trin* only so according to them the sanskrit words नमी गमी &c. do not change in to णमिर गमिर &c.

---

१ । The affixes which are used to signify sila are tṛin, in, nin &c.

Aho ! Shrutgyanam

॥ क्तास्तुमत् तूण उआण: ॥ २ । २ ।

क्ता प्रत्ययस्य तुम, अत, तूण, उआण इत्येते आदेशा भवन्ति ।

Tum, at, tún and *uáṇa* are substituted for *ktwá* (the affix of the indiclinable past participle); as दड्ढुं, मोत्तुं (दग्ध्वा, मुक्त्वा); भमिअ, रमिअ, (भ्रमित्वा, रमित्वा); घेत्तूण, काऊण (गृहीत्वा कृत्वा); भोत्तुआण, सोउ-आण भुक्त्वा, सवित्त्वा ।

॥ इदमर्थस्य केर: ॥ ३ ।

इदमर्थस्य प्रत्ययस्य केर इत्यादेशो भवति ।

Kera is substituted for the affixes like *yat, tak,* and *aṇ* &c. which in sanskrit are used in the sence "of belonging to;" *as* तुम्हकेरो (युष्मदीय:), अम्हकेर: (अस्मदीय:); क्वचिन्न भवति there are some exceptions, as पाणिणीआ &c.

॥ युष्मदस्मदोऽञ एच्चय: ॥ ४ । ३ ।

आभ्यां परस्येदमर्थस्याञ एच्चय इत्यय मादेशो भवति ।

The affix aṇ (अञ) at the end of the words *yushmad* and *ashmad* to signify the meaning "of belonging to" assumes the form of *echchaya* (एच्चय); *as* तुम्हेच्चयं (युष्मा-

---

२। शौरसेन्यां क्ता स्थाने इय दूणौ आदेशौ भवत:। कृगमस्तु अदुय इति In the sauraseni *iya* and *dúṇa* are substituted for *ktwá* but after the roots *kṛi* and *gama, aduya* is substituted for it. मागध्यवन्त्यो: क्ता स्थाने तूण इत्यादेशो भवति। túṇa is substituted for the affix ktwá in the magadhi and abantí. अपभ्रंशे क्ता स्थाने इइ, उइ, विअवि इत्येता आदेशा भवन्ति In the apabhransa *ii, ui,* and *biabi* are substituted for k*twá.*

३। अपभ्रंशे आर इत्यादेशो भवति। In the apabhransa ara is substituted for the same; as अम्हारो (अस्मदीय:) इत्यादि।

Aho ! Shrutgyanam

कमिदं); अम्हेच्चयं (अस्माकमिदं) ;

॥ त्वस्य वा डिमात्तणौ ॥ ५ ।

त्व प्रत्ययस्य डिमा, त्तण इत्यादेशौ वा भवतः ।

Dimá and *ttana* are optionaly substituted for the affix *twa* ; as पीणिमा, पीणत्तणं (पीनत्वं) ; &c. पीनता इत्यस्य प्राकृते 'पीणआ' इति रूपं भवति 'पीणदा' इतितु भाषान्तरे तेनेह तलो दा न क्रियते । The prakrita form of the word पीनता is पीणआ, while in other dialects it takes the form of 'पीणादा' for in the common prakrita दा is never substituted for the affix तल (ता) ।

वररुचिना सर्व्वास्वेव भाषासु तल् प्रत्ययस्य दा विहितः but according to *vararuchi,* दा is substituted for तल in all dialects (see Pr. ch. 4 sú 22)

॥ अनंकोठात्तैलस्य डेल्लः ॥ ६ ।

अंकोठवर्ज्जिताच्छब्दात् परस्य तैल–प्रत्ययस्य डेल्ल इत्यादेशो भवति ।

In all words except Anko'ṭha (अंकोठ) the affix तैल *taila* takes the form of डेल्ल (della) ; as इंगुदीएल्लं (इंगुदीतैलं); अनंकोठादितिकिं ? why did we except the word Ankóṭha ? compare अंकोल्लतेल्लं ।

॥ यत्तदेतदोडावदादेरित्तिअ एतल्लुक् ॥ ७ ।

एभ्यः परस्य डावदादेः परिमाणार्थस्य इत्तिअ इत्यादेशो भवति, एतदोलुक् ।

Aho ! Shrutgyanam

Ittia is substituted for the affixes ḍávat (डावत्) &c. which affixed to the words यद्, तद् and एतद् give the sense of measure or quantity ; and the word एतद् is elided ; as जित्तिअं (यावत्) ; तित्तिअं (तावत्); इत्तिअं (एतावत्) ;

॥ इदं किमो डेत्तिअ, डेत्तिल्ल, डेद्दहाः ॥ ८ ।

इदं किं शब्दाभ्यां डावतो, डेत्तिअ, डेत्तिल्ल डेद्दहा इत्यादेशा भवन्ति ।

Dettia (डेत्तिअ), ḍettilla (डेत्तिल्ल), and ḍeddaha (डेद्दह) are substituted for the affix ḍávat (डावत्) which affixed to the words *idam* (इदम्) and *kim* (किम्) signify quantity or measure ; as एत्तिअं, एत्तिल्लं, एद्दहं (इयत्) ; केत्तिअं, केत्तिल्लं केद्दहं (कियत्) ; केषांचिन्मते सूत्रमिदं यत्तदेतेष्वपि प्रवर्त्तते according to some authorities this rule applies to the words यत् तत् and एतत् also ; एतदोलोपश्च and the word एतद् is elided, as जेत्तिअं, जेत्तिल्लं जेद्दहं (यावत) &c.

॥ कृत्वसो हुत्तं ॥ ९ ।

कृत्वस् प्रत्ययस्थाने हुत्तमित्यादेशो भवति ।

Hutta is substituted for the affix *kritwas ;* as बहुहुत्तं (बहुकृत्वः) ।

॥ आल्वि, ल्लो, ल्ला, ल, वन्ते, न्ता, मतुपः ॥ १० ।

आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, इन्त, इत्यत आदेशा मतुप स्थाने भवन्ति । १

---

१ । केषाञ्चिन्मते मन्तेरावपि according to some *manta* and ira are also substituted for the same, as सिरिमन्तो (श्रीमान्) ; पुण्णमंतो (पुण्यमान्) ; धणिरो (धनवान् इत्यादि) ।

Aho ! Shrutgyanam

Alu, illa, ulla, âla, vanta, and *inta* are substituted for *matup,* the affix signifying possession ; *as* ईसालू, (ईर्षावान्) णिद्दालू (निद्रावान्) ; विआरिल्लो (विकारवान्) ; धणालो (धनवान्) ; इत्यादि ।

यथादर्शनमेते प्रयोक्तव्या न सर्व्वे सर्व्वत्र ।

These various substitutes for matup must not be used indiscriminately, but with a due regard to the forms observed in classical authors.

इल्लोल्ला वपरे प्राय: शैषिकेषु प्रयुंजते others use the substitutes *illa* and *ulla* in the sense of the affixes technically called *saishika* (see pan. IV. 2, 92 or siddhanta-kaumudi taddhita seshaprakaraṇam) as पुरिल्लं (पौरस्त्यं·पुरोभवं); अप्पुल्लं (आत्मीयं) ;

॥ वतेर्व्वः ॥ ११ ।

वते: स्थाने व्व इत्यादेशो भवति ।

bb is substitutes for the affix vati, as महुव्व (मधुवत्) ।

स्वार्थे प्रत्यया: (१) ।

OR

The affixes which do not affect the sense of the words.

संस्कृतशब्दा:	प्रत्यया:	प्राकृतरूपाणि ;
नव	ल्ल	नवल्लो ;
एक	ल्ल	एकल्लो एक्कल्लो

१ अत्र येभ्यः शब्देभ्यो ये प्रत्यया लिखिता स्तेभ्यएव ते भवन्ति नान्येभ्यः । Observe that no other words except those written above can take the affixes standing against them.

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतशब्दाः	प्रत्ययाः	प्राकृतरूपाणि ;
उपरि (संव्यानं)	ल्ल	अवरिल्लो
भ्रू	मया डमया	भुमया, भमया
शनैस्	डिअम	सणिअम्
मनाक्	डिअम् डअम्	मणिअम्, मणअम्
मिश्र	डालिअ	मिसालिअम्
दीर्घ	र	दीहरं
विद्युत्	ल	विज्जुला
पत्र	ल	पत्तलं
पीत	ल	पीवलं, पीअलं
अंध	ल	अंधलो
यम	ल	जमलं

स्वार्थे क प्रत्ययस्तु सर्व्वेभ्यएव शब्देभ्यो भवन्ति । Every word can take the affix *k* after it without being affected in its sense. (१)

सर्व्वेष्वेव प्राकृत व्याकरणेष्वेकैकस्यापि पदविशेषस्योत्पत्ति-साधक कार्य्य विशेष सिद्ध्यर्थम् सूत्रविशेषो विद्यते तादृश सूत्राणाञ्च संख्याधिक-

१। मागध्यां स्वार्थे विहिते के परे दीर्घो वा स्यात्। In the magadhi dialect when the affix *swártha k* joins to a word the final short vowel of it becomes optionally long, as पवणाके, पवणके (पवनः)।

Aho ! Shrutgyanam

तया केवलं ग्रन्थ-गौरवं जातम्। वयन्तु तद्दोष परिहारार्थमत्राकारादिक्रमेण तत्तत्पदानां संस्कृत—स्वरूपं प्रदर्श्य तदग्रे प्राकृत रूपं दर्शयामो येन सौलभ्यादिष्टसिद्धि र्भवेत्।

The Prakrita grammarians have enlarged the bulk of their work by framing *sútras* which explain particular words only. We do not find necessity of retaining these special *sútras* when a list of such sanskrit words together with their prakrita forms can as well serve the purpose.

An alphabetical list of these sanskrit words with their special prakrita forms is appended below.

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
अकाण्डं	अत्थक्कं	अन्तश्चारी	अंतेआरी
अग्निः	अग्गी, अगणी	अन्योऽन्यं	अण्णण्णं, अण्णुण्णं
अङ्कोठः	अंकोल्लो	अपस्मारः	अम्हालो
अङ्गारः	इंगलो, (१) अंगालो		अहिवण्णू,
अचलपुरं	अलचपुरं	अभिमन्युः	अहिमण्णू,
अतसी	अलसी		अहिमञ्जू,
	अणिमुत्तअं,		अहिमज्जू
अतिमुक्तकं	अणिउंत्तअं,	अयस्कारः	एक्कारो
	अदिउंत्तअं	अयि	ऐ
अधः	हेट्ठं	अरण्यं	रण्णं, अरण्णं
अन्तःपुरं	अंतेपुरं, (२) अंतेउरं	अर्द्धः	अड्ढं, अद्धं

१। शौरसेन्यां अंगार शब्दस्य अंगारो इति रूपं भवति।

२। शौरसेन्यां "अन्तःपर" स्य अंदेउरं इति रूपं भवति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं
अर्हः	अरिहो, अरहो
अर्हन्	अरुहंतो, अरहंतो, अरिहंतो
अलाबुः	लाऊ, अलाऊ
अवटः	अडो, अवडो
अवहृतं	अवहडं, (आर्षे)
अष्टादश	अट्ठरह
असुराः	अगया
अस्थि	अट्ठी
अस्पर्श	आफंसो
आगतः	आओ, आअओ
आचार्य्यः	आइरिओ, आअरिओ
आतोद्यं	अवज्जं आओज्जं
आत्मा	अप्पा, अत्ता
आत्मीयं	अप्पणं (१)
आदृतः	आढिओ
आपीडः	आपेलो, आमेलो, आवेडो
आम्रं	अम्बं
आरब्धं	आढत्तं, आरद्धं
आर्द्रं	उल्लं, आल्लं, अल्लं, अद्दं
आर्द्रयति	उल्लेइ, ओल्लेइ
आर्य्यः	आइरिओ, अज्जो
आलानं	आणालं
आली	उली, (श्रेणी) आली (सखी)
आवर्त्तमानः	आत्तमाणो आवत्तमाणो
आशीः	आसीसा
आश्चर्य्यं	अच्छेरं, अच्चरिअं, अच्छरिअं, अच्छअरं, अच्छरिज्जं, अच्छरीअं
आश्लिष्टं	आलिट्ठं, आलिद्धं
आसारः	उसारो, ओसारो
आहृतं	आहडं, (आर्षे)
इक्षुः	उच्छू, इक्खू
इङ्गुदं	अंगुअं, इंगुअं

१। शौरसेन्यां आत्मीय शब्दस्य अप्पणकेरक मिति रूपं भवति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
	एह्निं	ऋतुः	रिउ, उऊ, उदू
इदानीम्	एत्ताहे	ऋद्धिः	रिड्ढी, रिद्धी, इड्ढी
	इआणीं (१)	ऋणं	रिणं, अणं
ईदृशः	एरिसो (२)	ऋषभः	रिसहो, उसहो
ईषत्	ईसी	ऋषिः	रिसी, इसी
ईषत्पक्वा	कूरपिक्का (३)	एकादश	एआरह
उच्चैस्	उच्चअं		एकम्मि,
उत्करः	उक्केरो, उक्करो	एकदा	एक्कम्मिअं,
उत्सवः	उच्छवो, ऊसवो		एक्कइआ,
उत्साहः	उत्थारो, उच्छाहो		एगआ
उत्सुकः	ऊसुओ	एतावत्	इत्तिअं
उदुम्बरो	उम्बरो, उउम्बरो	ऐरावतः	एरावणो
उदूखलं	ओखलं (४)	औषधं	ओसढं, असहं
उलूखलं	उलूखलं	ककुदं	कउहं, ककुधं
उद्व्यूढं	उव्वीढं, उव्वूढं	ककुभ्	ककुहा
उपरि	उवरि (५) अवरिं	कण्डूयनं	कण्डुअणं
उभयं	अवहं, उवहं, उभयं	कतमः	कइमे
ऊर्द्ध्वं	उभं, उद्धं	कतिपयं	कइवाहं, कइअवं
ऋक्षः	रिच्छो, रिक्खो	कदनं	कडणं, कअणं
ऋजुः	रिज्जू, उज्जू	कदम्बः	कलम्बो, कअम्बो

१। शौरसेन्यां इदानीमो "दाणिं" इति रूपं भवति।
२। शौरसेन्यां ईदृशस्य "ईदिसं" इति रूपं भवति।
३। समासस्थितस्येषत्-शब्दस्य "कूर" आदेशो भवति ; अन्यत्र ईषत्पक्वं।
४। शौरसेन्यां उदूखलस्य "उऊ-हलं" इति रूपं। ५। शौरसेन्यां "उवरि"।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं
कदर्थितं	कवट्ठिअं
कदलं	केलं, कअलं
कदली	केली, कअली ; करली (अद्रुमे)
कन्दरिका	कण्डलिआ
कन्दुकं	गेंदुअं
कबन्धः	कमंधो, (१) कअंधो
करवीरः	कणवीरो
करेणु	कणेरू (२)
कर्णिकारः	कणेरो, कण्णिआरो
कर्परं	खप्परं
कामुकः	काउंओ
कार्षापणः	काहावणो, कहावणो
कालायसं	कालासं, कालाअसं (३)
काश्मीरः	कम्हारो
कासितं	खासिअं
किंशुकं	कंसुअं, केसुअं, किंसुअं, किसुअं

संस्कृतं	प्राकृतं
किरातः	चिलाओ (पुलिन्दे), किराओ (कामरूपे) (४)
किरि	किडी
क्रिया	किरिआ
किसलयं	किसलं, किसलअं
क्लिन्नं	किलिन्नं
कीदृशः	केरिशो (५)
कीलकः	खीलओ
कुतूहलं	कोउहल्लं, काउहल्लं, कोहल्लं, कुउहल्लं
कुब्जः	खुज्जो, कुज्जं (पुष्पे)
कुष्माण्डी	कोहण्डी (६), कोहली, कोहडी
कूर्परं	कोप्परं
कृत्तिः	किच्ची
कृशं	किसं, कसं

१। शौरसेन्यां "कवन्ध" शब्दस्य न रूप-परिवर्त्तनं भवति।

२। शौरसेन्यां करेणु शब्दस्य न रूप-परिवर्त्तनं भवति।

३।४। शौरसेन्यां "कालायस" "किरात" शब्दयोर्न विशेष-नियमानुवृत्ति र्भवति।

५। शौरसेन्यां "कीदृश" शब्दस्य "कीदिसं" इति रूपं भवति।

६। शौरसेन्यां "कुष्माण्डी" शब्दस्य "कुम्हण्डी" इति रूपं भवति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
कृष्णः	कसिणो, कसणो (वर्णे), कह्नो (विष्णौ)	गद्गदं	गग्गरं
		गर्त्तः	गड्डो
		गर्द्दभः	गड्डहो, गद्दहो
कृत्स्नं	कसिणं	गर्भितं	गब्भिणं
कृप्तं	किलित्तं	गवयः	गउओ
केसरं	किसरं, केसरं	गाम्भीर्यं	गंभिरीअं
कैटभः	केढवो	गायनः	घायणो
कौक्षेयकं	कुच्छेअअं, कोच्छेअअं	ग्राह्यं	गेज्झं
		गुडुची	गलोई
क्षणः	छणो (उत्सवे), खणो (समये)	गृहं	घरं
		गृहपतिः	गहवई
क्षमा	छमा (पृथिव्यां), खमा (क्षान्तौ)	गोदावरी	गोला, गोआवरी
		गौः (पुं)	गोणो, गओ ; गावो, गाओ
क्षिप्तं	छूढं, खित्तं		
क्षुत्	खीअं, छीअं	गौः (स्त्री)	गावी, गावीओ
क्षुधा	छुहा	गौरवं	गारवं, गउरवं (१)
क्षुप्तं	छिक्कं, छुत्तं	चतुर्गुणः	चोणो, चउणो
खेटकः	खेडओ	चतुर्थः	चोट्ठो, चउट्ठो
क्ष्मा	छमा, खमा	चतुर्थी	चोट्ठी, चउट्ठी
खचितः	खसिओ, खइओ	चतुर्द्दश	चोद्दह, चउद्दह
खण्डितं	खुडिअं, खण्डिअं	चतुर्द्दशी,	चोद्दसी, चउद्दसी
खल्वाटः	खल्लीडो	चतुर्द्वारं	चोद्दारं, चउद्दारं

१। शौरसेन्यां "गौरव" स्य "गोरवं" "गउरवं" इति रूप द्वयं;

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं
चत्वरं	चच्चरं
चपेटः	चविलो, चविडो
चपेटा	चविडा, चवेडा
चन्द्रिका	चंदिमा (१)
चामुण्डा	चाउंडा
चिकुरः	चिउरो
चिह्नं	चिन्धं, चिह्लं
चैत्यं	चइअं
चौर्य्यं	चोरिअं
छागः	छालो
छागी	छाली
छाया	छाहा (अनातपे), छाआ, छाआ (कान्तौ)
छद्म	छउमं, छम्मं
छर्द्दिकः	छड्डिओ
जटिलः	झडिलो, जडिलो
जन्म	जम्मणं, जम्मो
जिह्वा	जीहा, जिभा
जीर्णं	जुण्णं, जिण्णं
जीवः	जीओ, जूओ
जीवितं	जीअं, जीविअं

संस्कृतं	प्राकृतं
ज्या	जीआ
तगरं	टगरं
तप्तं	तविअं, तत्तं
ताम्रं	तम्बं
ताम्बूलं	तम्बोलं
तावत्	ता, ताव (२), तित्तिअं
तित्तिरिः	तित्तिरो
तिर्य्यक्	तिरिच्छी, तिरिआ (आर्षे)
तीक्ष्णं	तिक्खं, तिह्णं
तीर्थं	तेहं, तूहं, तित्थं
तुच्छं	चुच्छं, छुच्छं
तूणं	तोणं, तूणं
तूणीरं	तोणीरं
तूर्य्यं	तूरं
तूवरः	दुवरो
त्रसरः	टसरो
त्रयोदश	तेरह
त्रयोविंशतिः	तेवीस्
त्रयस्त्रिंशत्	तेत्तीस्

१। शौरसेन्यां चन्द्रिकायाः "चंदिया" इति तथा "चिह्न" स्य चिण्हं इति रूपं भवति

२। तावच्छब्दस्य शौरसेन्यां दाव इति रूपं भवति। अपभ्रंशेतु तवञ्चं, ताम, ताउं, ताहिं. तेत्तुल ; इति रूपाणि भवन्ति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
त्रिंशत्	तीसा	दुकूलं	दुअल्लं, दुऊलं,
त्रिचत्वारिंशत्	तेअलीसा		दुगुल्लं (आर्षे)
त्रिपञ्चाशत्	तेवण्णा	दुर्गादेवी	दुग्गावी, दुग्गाएवी
दंष्ट्रा	दाढा	दुर्भगः	दुहवो, दुहओ
दग्धं	डड्ढं, दड्ढं	दुष्कृतं	दुक्कडं, (आर्षे)
दण्डः	डंडो, दंडो	दुहिता	धुआ, दुहिआ
दत्तं	दिण्णं	दृप्तः	दरिओ
दनुजवधः	दणुवओ, दनुओ	देवरः	दिअरो, देअरो
दम्भः	डंभो, दंभो	देवकुलं	देउलं, देवउलं
दरः	डरो (भये), दरो (अल्पे)	दैवं	देवं, दइव्वं (२)
दश	दस, दह	दोहदः	डोहलो, दोहलो
दशनं	डसनं, दसणं	दोलः	डोलो, दोलो
दशमुखः	दहमुहो, दसमुहो (१)	द्वादश	वारह
दष्टः	डट्ठो, दक्को, दट्ठो	द्वारं	देरं, दुआरं,
दक्षिणः	दाहिणो, दक्खिणो		दारं, दुवारं,
दाहः	डाहो, दाहो, दाघो		वारं
दिवसः	दिवहो, दिवसो	धनुष्	धणुहो, धणू
दीर्घः	दिग्घो दीहो	धात्री	धाई, धारी
दुःखं	दुहं, दुक्खं	धिक्	धिद्

१। शौरसेन्यां संज्ञायां दशशब्दीय "श" कारस्य हकारो न भवति ; यथा दसमुहो (रावणः)।

२। शौरसेन्यां "दैव" शब्दस्य केवलं "दैव्व" इति रूपं भवति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
धिगस्तु	धिरत्थु	निशीथः	णिसीढो, णिसीहो
धूर्य्यः	धोरिओ	निश्चलः	णिच्चलो
धृतिः	दिही, धिई	निषण्णः	णुमण्णो, णिसण्णो
धृष्टः	धिट्ठो, धट्ठो	निषधः	णिसढो
धृष्टद्युम्नः	धट्ठज्जुणो (१)	नीचैस्	णीचअं
धैर्य्यं	धीरं, धिज्जं	नीडं	णेड्डं, णेडं, णीडं
ध्वजः	झओ, धओ	नीपः	णीमो णीवो
ध्वनिः	धुनी	नीविः	णीमी, णीवी
नग्ना	णत्तिओ, णत्तुओ	नूपुरं	णेउरं, णिउरं णुउरं
नमस्कारः	णमोक्कारो	नैयायिकः	णिआइओ
नवफलिका	णोहलिआ	नौः	णावा
नवमालिका	णोमालिआ	पक्वं	पिक्कं, पक्कं
नारकिकः	णेरइओ	पक्ष्म	पम्ह
नापितः	ण्हाविओ, नापिओ	पञ्चदश	पण्णरह
निकषः	णिहसो	पञ्चपञ्चाशत्	पंचावण्णा, पण्णपण्णा
निम्बः	लिम्बो, णिम्बो	पञ्चाशत्	पण्णासा
निर्झरः	उज्झरो, निज्झरो	पताका	पडाआ
निलयः	णिहेलनं	पत्तनं	पट्टणं
निवृत्तं	णिवुत्तं, णिउत्तं, णिअत्तं	पदातिः	पाइक्को, पाआई
		पद्मं	पोम्मं, पउमं, पम्मं
		पनसः	फणसो

१। शौरसेन्यां "धृष्टद्युम्न" शब्दस्य "धट्ठज्जुणो" इति रूपं;

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
पन्था	पहो	पाषाण:	पाहाणो, (२) पासाणो
परस्परं	परोप्परं (१)	पिठर:	पिहडो, पिढरो
परकीयं	पारक्कं, पारिक्कं, पारकेरं, पाराकेरं	पितृस्वसा	पिउसिआ, पिउच्छा
		पिशाच:	पिसल्लो, पिसाओ
परिखा	फलिहा	पीठं	पेढं, पीढं
परिघ:	फलिहो	पीतं	पीअं
परुष:	फरुसो	पीतलं	पीवलं, पीअलं
पर्द्द:	वड्डो	पीयूषं	पेऊसं
पर्य्यन्त:	पेरंतो, पज्जंन्तो	पुन्नाग:	पुन्नामो
पर्य्यस्तं	पल्लट्टं, पल्लत्थं	पुरुष:	पुरिसो (३)
पर्य्याणं	पल्लाणं, पडायणं	पूगफलं	पोप्फलं
पलितं	पलिअं, पलिलं	पूगफली	पोप्फली
पल्यङ्क:	पल्लङ्को, पलिअंको	पूतर:	पोरो
पादपतनं	पाअवडणं, पावडणं	पूरणं	पोणं
पादपीठं	पावीडं, पाअवीडं	पूर्व्वं	पुरिमं, पुव्वं (३)
पान्थ:	पहिहो	पृथक्	पिधं, पिहं, पुधं, पुहं
पापर्द्धि:	पारद्धी		
पारावत:	पारओ, पारावओ	पृथिवी	पुहइ, पुढवी पुहवी,
पारिभद्र:	फालिहद्दो		

१। अपभ्रंशे "अवरोप्परु" इति रूपं भवति।

२। शौरसेन्यां "पाषाण" शब्दस्य "पाहाण" इति रूपं भवति।

३। शौरसेन्यां "पुरुष" स्य "पुरुसो" तथा पूर्व्वस्य "पुरवं" इति रूपं भवति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
पैण्डपातिः	पिण्डपाई	प्रावारकः	पावारओ, पारओ
पौरुषं	पउरिसं	प्लक्षः	पलक्खो
प्रकोष्ठो	पवट्ठो, पओट्ठो (१)	बलीवर्द्दः	वइल्लो
प्रतिज्ञा	पइण्णा	ब्रह्मचर्य्यं	वम्हचेरं, वम्भचेरं, वह्मचरिअं
प्रतिश्रुत्	पडंसुआ		
प्रतिष्ठानं	पइट्ठीणं		
प्रतीपं	पईवं	भगिणी	वहिणी, भइणी
प्रत्युषः	पच्चुहो, पच्चुसो	भरतः	भरहो
प्रथमं	पुढुमं, पढुमं पढमं	भव्यं	भविअं
प्रभूतं	वहुअं	भवान्	भवन्तो
प्रवासी	पावासू	भस्म	भस्सं, भप्पं
प्रवृत्तं	पअट्टं, पउत्तं	भागिनी	भामिणी
प्रशिथिलं	पसढिलं, पसिढिलं	भाजनं	भाअणं, भाणं (३)
प्राकारः	पारो, पाआरो	भार्य्या	भारिआ
प्राभृतं	पाहुडं	भिन्दिपालः	भिण्डिवालो (४)
प्रायः	पाओ (२)	भीष्मः	भिप्फो (५)
प्रावरणं	पांगुरणं, पाउरणं, पावरणं	भेरः	भेडो
		भैक्षाजीवः	भिक्खाजीओ
		भ्रमरः	भमरो, भसलो

१। शौरसेन्यां "प्रकोष्ठ" शब्दस्य "पओट्ठो" इति रूपं भवति।

२। अपभ्रंशे "प्रायः" शब्दस्य "प्राओ," "प्राइ," "प्राइम्व," "प्राविम्व" इत्यादि रूपाणि भवन्ति।

३। ४। ५। शौरसेन्यां "भाजन" स्य केवलं "भाअणं" मिति, भिन्दिपालस्य "भिन्दिवालो" भिण्डिवालो इति रूप द्वयं तथा "भीष्म" स्य भिप्पो इति रूपं भवति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं
भ्रुकुटिः	भिउडी
भ्रुलता,	भूलदा
मघवान्	मघोणो
मदकलः	मअगलो
मध्यमः	मज्झिमो
मध्याह्नः	मज्झह्लो, मह्यह्लो
मधूकं	मऊअं, मह्अं
मनोहरं	मणोहरं, मणहरं
मन्मथः	वम्महो
मन्युः	मन्नू, मस्सू
मयूखः	मोहो, मऊहो
मयूरः	मोरो, मउरो, मयुरो
मरकतं	मरगअं
मर्द्दितं	मड्डिअं
मलिनं	मइलं, मलिणं
मसृणं	मसिणं, मसणं
महान्	महन्तो (१)
महाराष्ट्रं	मरहट्ठं
माकन्दः	मअन्दो
मातृष्वसा	माउसिआ, माउच्छा
माधुर्य्यं	महुरिअं

संस्कृतं	प्राकृतं
मार्ज्जारः	मञ्जरो, खञ्जरो, मज्जारो
मिरा	मेरा
मुक्तं	मुक्कं, मुत्तं
मुषलं	मूसलं, मुसलं
मूर्खः	मुरुखो, मुक्खो
मूर्द्धा	मुड्ढा, मद्धा
मूल्यं	मोल्लं
मूषिकः	मुसओ
मृगाङ्कः	मिअंको, मअंको
मृतकं	मडअं
मृत्तिका	मट्टिआ
मृत्युः	मिच्चू, मच्चू
मृदङ्गः	मिअंगो, मुअंगो
मृदुकं	माउअं, मउअं, माउक्कं
मृदुत्वं	माउत्तणं मउत्तणं, माउक्कं
मृषा	मुसा, मूसा, मोसा ;
मृषावाक्	मुसावाआ
मेथिः	मेढी

१ । शौरसेन्यां " महान् " इत्यस्य " महन्तो " इतिरूपं भवति ।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
यथा	जहा (१)	ललाटं	णडालं, णिडालं, णलाडं
यमुना	जउंणा	लवणं	लोणं, लअणं
यष्टिः	लट्ठी (२)	लाहलः	णाहलो, लाहलो (५)
यावत्	जित्तिअं, (३) जा, जाव	लाङ्गलः	णांगलो, (६) लांगलो
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो,	लाङ्गूलः	णाङ्गूलो, लांगूलो (७)
	जहिट्ठिलो (४)	वज्रं	वइरं, वज्जं
रक्तं	रणं, रत्तं	वण्डं	वुंडं, वण्डं
रत्नं	रअणं	वदरं	वोरं (८)
राजकीयं	राइक्कं	वदरी	वोरी
	राअकेरं	वनस्पति	वणस्सई
	रायक्कं		वनप्फई
राजकुलं	राउलं, राअउलं	वनिता	विलया, वणिदा
रात्रिः	राई, रत्ती	वर्य्यं	वरिअं
रुग्णः	लुक्को, लुग्गो	वल्ली	वेल्ली, वल्ली
रुदितं	रुणं	वसतिः	वसही
लघुकं	हलुअं, लहुअं	वहिस्	वाहिं, वाहिर
लज्जावति	लज्जालुइणी	वातूलः	वाउलो

१। यथा शब्दस्य शौरसेन्यां "जधा" तथा अपभ्रंशे जेम, जिह, जिध इति रूपाणि।

२। "यष्टि" शब्दस्य शौरसेन्यां "जट्ठी" इतिरूपं।

२। "यावत्" शब्दस्यापभ्रंशे जेवड्डुअं जेत्तुलो, जाम, जाहिं इति रूपाणि।

४। "युधिष्ठिरस्य सौरसेन्यां "जहिट्ठिरो" इतिरूपं।

५। ६। ७। शौरसेन्यां "लाहल" स्य "लेहलं" "लाङ्गल" स्य "लंगलं" तथा "लङ्गूल" स्य "लंगूलं" इति रूपं भवति।

८। शौरसेन्यां "वदर" स्य "वोरं" इति रूपं भवति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
वाराणसी	वाणारसी	वृद्धिः	वुड्ढी
वाष्पः	वाहो (अशनिः) वाप्पो (धुमे)	वृन्तं	वेण्टं, वोण्टं, विण्टं
विंशतिः	वीसा	वृन्दारकः	वुंदारओ
विचकिलं	वेइल्लं, विअइल्लं	वृश्चिकः	विञ्छुओ, विच्छुओ, विंचुओ, विंछिओ
विच्छर्द्दः	विच्छड्डो	वृषभः	उसहो, वसहो
वितर्द्धिः	विअड्डी	वृष्टं	विट्ठं, वुट्ठं
विदग्धः	विअड्ढो	वृष्टिः	विट्ठी, वुट्ठी
विभीतकः	वहेडअडो	वृहत्तरं	वहअरं
विश्रम्भः	वीसंभो	वृहस्पतिः	विहप्फई (२) वुहप्फई, वहप्फई, वहस्सई भयप्फइ, भयस्सई विहस्सई, वुहस्सई
विश्वक्	वीसुं	वेणुः	वेलू
विश्वस्तः	वीसत्थो	वेतसः	वेडिसो (३)
विषमः	विसढो, विसमो	वेदना	विअणा, वेअणा
विसंष्ठुलं	विसंठुलं	वैदूर्य्यं	वेरुलिअं
विहीनः	विहूणो, विहीणो		
विह्वलः	भिभलो, विभलो, विहलो		
वीर्य्यं	वीरिअं		
वृक्षः	रुक्खो, वच्छो (१)		
वृत्तं	वट्टं		
वृद्धः	वुड्ढो		

१। शौरसेन्यां "वृक्ष" स्य रूपं "रुक्ख" इत्येव।

२। ३। शौरसेन्यां "वृहस्पतेः" "विहप्पइ" इत्येकं रूपं भवति "वेतस" स्य "वेडस" इति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं
व्याकरणं	वारणं, वाअरणं
व्यापृतः	वावडो
व्युत्सर्गः	विउसग्गो
व्युत्सर्जनं	वोसिरणं
शकटं	सअडं
शक्तः	सक्को, सत्तो
शनैश्चरः	सणिअरो
शमी	छमी
शबरः	समरो
शावः	छावो (१)
श्रावकः	सुवओ
शार्ङ्गं	सारंगं
शिथिलं	सिढिलं, सढिलं
शिरोवेदना	सिरोवेअणा, सिरविअणा
शीकरः	सीभरो, सीहरो, सीअरो (२)
शुक्तिः	सिप्पी
शुक्लं	सुङ्गं, सुक्कं
शृङ्गं	सिंगं, संगं

संस्कृतं	प्राकृतं
शृङ्खलं	संकलं
शौण्डीर्यं	सोंडिअं
शौर्यं	सोरिअं
श्वा	सा, साणो
श्मशानं	मसाणं, सीआणं, सुआणं
श्मश्रु	मस्सू
श्यामाकः	सामओ
श्लाघा	सलाहा
श्लेष्म	सेलिम्फो, सेलिम्हो
षण्मुखः	छम्मुहो
षष्ठः	छट्ठो
षष्ठी	छट्ठी
सटा	सढा
सप्ततिः	सत्तरी
सप्तदश	सत्तरह
सप्तपर्णः	छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो
समर्थः	अलं, समत्थो
समर्द्दः	समड्डो
समस्तं	समत्तं

१। २। शौरसेन्यां "शाव" स्य सावो इति तथा "शीकर" स्य "सीकर" इति रूपं भवति।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
सरोरुहं	सररुहं, सरोरुहं	सूर्यः	सूरिश्रो
सर्व्वाङ्गीणः	सव्वंगिश्रो	सोच्छ्वासः	सूश्रासो
साक्षी	सक्खिणो	सैन्धवं	सिंधवं
सातवाहनः	सालवाहनो	सैन्यं	सिन्नं सेन्नं
साध्वसं	सज्झसं	स्कन्दः	खंदो, कंदो
सामर्थ्यं	सामच्छं, समत्थं	स्तब्धः	ठड्ढो
साम्ना	सुण्हा	स्ताम्बः	तंबो
सिंहः	सीहो	स्तम्भः	खंभो (स्थुणायां); थंभो, ठंभो (निश्चले)
सिंहदत्तः	सिंहदत्तो	स्तवः	थवो, तवो
सिंहराजः	सिंहराश्रो	स्तेनः	त्थेणो त्थूणो
सिरा	छिरा	स्तोकं	छोक्कं, थोवं, थेवं, थोश्रं
सुकुमारः	सोमालो, सुउमालो, सुकुमालो	स्त्याणं	ठीणं, थीणं, थिणं
सुकृतं	सकडं (आर्षे)	स्त्री	इत्थी, थी (१)
सुधा	छुहा	स्थविरः	थोरो
सुभगः	सूहश्रो, सुहश्रो, सुहवो	स्थानं	ठीणं थीणं
सूक्ष्मं	सुण्हं, सण्हं, सुहमं (आर्षे)	स्थाणुः	खाणू (वृक्षस्कन्धे); थाणू (शिवे)
		स्थूणा	थोणा, थूणा
		स्थूलं	थोरं, थूलं

१। शौरसेन्यां केवलं "इत्थी" इति रूपं।

Aho ! Shrutgyanam

संस्कृतं	प्राकृतं	संस्कृतं	प्राकृतं
स्थैर्यं	थोरिअं	हरीतकी	हडडई, हरडई
स्निग्धं	सणिद्धं, सिणिद्धं, णिद्धं	हरितालः	हलिआरो, हरिआलो
स्नुषा	सुण्हा, सुसा,	हरिद्रा	हलद्दी, हलिद्दी, हलदा, हलद्दा
स्नेहः	सणेहो, णेहो	हरिश्चन्द्रः	हरिअंदो
स्पृहा	छिहा	हीनः	हूणो, हीणो
स्फटिकं	फलिहं	हृदयं	हिअं, हिअअं (२)
स्फिटिकः	खिडिओ, फिडिओ	ह्रदः	ह्रदो, हदो ; हरओ (आर्ष)
स्फोटकः	खोडओ, फोडओ (१)		
स्यात् (क्रिया)	सिआ		
स्वप्नः	सिविणो, सिमिणो		
हनूमान्	हणुमन्तो		
हरः	हीरो, हरो		

शौरसेन्यां विशेष-नियमानुसृताः शब्दाः ।

The following is a list of the words the forms of which have some peculiarities in the saurasenī dialect.

सं	शौ	सं	शौ
अतिशीघ्रं	अदिसीग्घं	अन्यथा	अण्णधा (३)
अतुलितं	अतुलिदं, अतुलितं	अन्यादृशः	अण्णादिसो (४)

(१) शौरसेन्यां स्फोटकस्य फोडओ इति रूपं भवति ।
(२) पैशाच्यां हृदय स्य हितपं इति रूपं भवति । शौरसेन्यां हिअअमिति ।
(३) अपभ्रंशे अन्यथा शब्दस्य अनु, अण्ण इति रूपद्वयं भवति !
(४) अपभ्रंशे अन्यादृशस्य अन्नादिसो अवराइसो इति रूपद्वयं ।

Aho ! Shrutgyanam

सं	शौ	सं	शौ
अपूर्वं	{ अवरुवं, अउव्वं	तावत्	तेत्तिअं, दाव
अज्जुका	अज्जुआ	त्वदीयं	तवकेरकं
अवस्था	अवित्था	दुहितृका	दुहिदिआ
अस्मदीयं	अम्हकेरकं	निश्चिन्तः	निच्चिंदो
आश्चर्यं	अच्चरीअं	पितृकः	पितुको
इव	विअ	प्रगुणं	उज्जवं
इह	इध	भरतः	भरधो
उत्थितं	उत्थिदं	भर्त्ता	भट्टा
एतावत्	एत्तिअं	भर्तृदारिका	भट्टिदारिआ
एव	ज्जेव, य्येव	मदनिका	मदणिआ
कौरवः	कोरवो	मदीयं	ममकेरकं
क्षणः	खणः	मातृकः	मातुको
क्षारं	खारं	मूर्ख	मुरुखो
कथं	कधं	यथा	जधा (१)
खलु	क्खु	यावत्	जित्तिअं
गणिका	गणिआ	वदनं	वदणं
ग्रथितं	{ गथिदं, ग्रथितं	वृक्षः	रुक्खो
चूतलतिका	चूदलदिआ	सदृक्षं	सरिक्खं
तथा	तधा	सह	{ सहसत्थि, सहभा
		सौदामिनी	सोदामिणी

(१) अपभ्रंशे यथा शब्दस्य जेम, जिह, जिध, इति रूपाणि भवंति ।

Aho ! Shrutgyanam

प्राच्यायां वक्ष्यमाणकारिकैव विशेषविधायिनी ।

The following káriká points out the peculiarities of the Práchya dialect :

हीही भो परितोषे स्यात् हीमान हीच विस्मये, युजेअ, ज्जेअ ज्जिआ शब्दा एवार्थे सम्मताः सतां । वक्के वङ्क तरङ्गौ द्वौ सम्बुद्धाचे-पयोररे । दूणं, दूमं, दूदं त्रीणि दृश्यन्ते दूदमर्थके वीदा विहित विप्रोक्तौ प्रकृते वहिदं तथा ;

अवि, भाविद्राविव्वेदे प्रायोयाम्योपमा वङ्क ।

अवन्त्यां विशेषनियमानुगाः शब्दाः ।

The following are the words which have special forms in the Abantí dialect :

सदृक्षं सरिक्खं

अवन्त्यां दृश्यते ते मे द्वयोः प्रायस्तहं मह्‌ं, ते—तहं ; मे—महं ;

मागध्यां विशेषनियमानुगताः ।

For the following words, special rules are laid down in the Mágadhí :

आर्द्रं	ओल्लं	मृतं	मडे, मदे
कोष्णं	कोश्णिणं	रत्नं	रदणे
कृतं	कडे, कदे	वयस्यः	वयंश्शो
ग्रीष्मः	गिम्हो	वसतिः	वसधी
गतं	गडे, गदे	बुभुक्षा	भुभ्क्का
तस्मात्	ता (१)	शृगालः	शिआला, शेआल

(१) शौरसेन्यामपि तस्मादित्यस्य त्ता इति भवति ।

ही—विस्मयेच, तापेच, कुत्सार्थेच विदुर्व्वुधाः ; लेले, अरे, हे शब्दाश्च सम्बुध्याक्षेपयोर्मताः। मात्रार्थे मात्रिकं ख्यातं ; किञ्चातश्च पिशातके ; गणनयां मता गञ्चा ; पुरुषो पुलिशस्तथा ; हीमानहे विस्मये स्यात् ; लुक् च छन्दोवशादिह ; वटोर्वडुव मिच्छन्ति ; हडुकं हृदये तथा ; अहञ्च दृश्यतेऽपि अहमर्थे हगे, हके ; युष्मदर्थे पदद्वन्द्व तुप्पं तुम्हे च सम्मतं ;

पैशाच्यां विशेष नियमानुगताः शब्दाः ।

Words for which special rules are laid down in the Pais'áchí dialect :

सं	पै	सं	पै
इव	पिच	ग्टहं	किंऊ, खरञ्च
उष्णं	उसनं, उह्नं	पद्म	पखमं
कार्य्यं	कच्चं	पृथिवी	पुथुपी
		प्रथमं	पुथुमं

पैशाच्यां टुस्थाने तुर्भवति ; in the pais'áchi, तु is substituted for टु as कुतुम्बके ।

अपभ्रंशे विशेषनियमानुगताः शब्दाः

The following are the words under special rules in the *Apabhransa.*

सं	अप	सं	अप
अद्भुतं	ढक्करि	दिवा	दिवे
अन्यथा	अनु, अरुह ;	ध्रुवं	ध्रुवु

Aho ! Shrutgyanam

सं	अप	सं	अप
अन्यादृशः	अन्नाइसो, अवराइसो	नव	नवखः
		नहि	नाहि
अपस्कन्दः	दडवडो	परं	पर
आपत्	आवइ	पुनः	पुणु
ईदृक्	एह	पृथक् पृथक्	जुअं, जअ
ईदृशः	अइसो	प्रायः	प्राइ, प्राओ, प्राइम्व, पाविम्व
उक्तं	वुत्तं		
कथं	केम, किह, किध	मा	मं
किल	किर	मनाक्	मणाओ
कीदृक्	केह	यत्र	जेत्थु, यत्तु,
कीदृशः	कइसो	यथा	जेम, जिह, जिध
कुतः	कउ, कहं	यादृक्	जेह
कुत्र	केत्थु	यादृशः	जइसो
कुकटः	घंपल्लो	वर्त्म	विच्चं
कौतुकं	कोड्डु	विणा	विणु
क्रीडा	खेड्डु	विपत्	विवइ
ततः	तो	विषण्णं	वुन्नं
तत्र	तेत्थु, तत्तु	शीघ्रं	वहिल्लं
तथा	तिम, तिह, तिध	संपत्	संवइ
तदा	तो	समं	समा
तादृक्	तेह	सह	सहुं
तादृशः	तइसो		

———

पाञ्चाल्यां विशेष-नियमः ।

॥ रलोर्व्यत्ययः ॥

The only special rule in the *pánchalí* is that *r* and *l* are optionally interchangeable.

टक्क भाषायां विशेष नियमः ।

॥ उद्बहुलं ॥

The only special rule in the Takka dialect is that *u* is added to the end of nearly every word.

आभीर्यां विशेष नियमाः ।

Following are the special rules in the *A'bhírí* dialect ;

॥ कीचके कस्याद्वा ॥

In the word *kíchaka* the final *k* optionally assumes the form of *á* कीअआ ; पक्षे जीअओ ।

॥ क्वचित् डरयोर्लः ॥

In some words *l* is substituted for both ḍ and *r*.

॥ न लोपोऽरण्ये ॥

In the word *araṇya* the initial *a* is not elided.

॥ समासेऽड्लोपश्च ॥

The medial vowels of the compound words are elided.

अव्ययं ॥

Indiclinable words.

Aho ! Shrutgyanam

तं — वाक्योपन्यासे
आम — अभ्युपगमे
णवि — वैपरीत्ये
हंदि — { विषादे, विकल्पे, निश्चये, पश्चात्तापे, सातत्ये
हंद, हंदि — } गृहाणार्थे
मिव, पिव, विव, विअ, व्व, व — } इवार्थे
णइ, चेअ, चिअ — } अवधारणे च
जेण, तेण — लक्षणे
वले — निर्द्धारणे, निश्चये च
किर, इर, हिर — किलार्थे
णवर — केवले
णवरि — आनन्तर्य्ये
अलाहि — निवारणे
आण, णइ — निषेधार्थे
माइ — मा (अ) र्थे
हद्धी — निर्व्वेदे
वेव्वे — { भय, वारण, विषादे, आमन्त्रणे च

मामि, हला, हले — } सख्या आमन्त्रणे
दे — सख्या सम्मुखीकरणे
ऊं — दाने, पृच्छायां, निवारणेच
ऊ, खु — } निश्चये, वितर्के, सम्भावने, विस्मये च
ऊ — } गर्हायां, आक्षेपे, विस्मये सूचनायां च
धू — कुत्सायां
रे, अरे — सम्भाषणे, रतिकलहे च
हरे — { सम्भाषणे, रतिकलहे, क्षेपे च
ओ — सूचनायां, पश्चात्तापे
अव्वो — { सूचनायां, दुःखे, संभाषणे, अपराधे, विस्मये, आनन्दे, आदरे, भये, खेदे, विषादे, पश्चात्तापे च
अइ — सम्भावनायां
वणे — { निश्चये, विकल्पे, अनुकम्पायां च
मणे — विमर्शे
अम्मो — आश्चर्य्ये
अप्पणो — स्वयमर्थे

Aho ! Shrutgyanam

पाडिक्कं पाडिएक्कं	प्रत्येकार्थे	मोरउल्ला	मुधार्थे
उह	पश्चार्थे	दर	अल्पार्थे, ईषदर्थे च
इहरा	इतरार्थे	किणो	प्रश्ने
एक्कसरिअं	झटिति, सम्प्रति	इ, जे, रोरा	पादपूरणे

शौरसेन्यां अव्ययं ।

दाणिं	इदानीं	हला	सख्याह्वाने
ज्जेव, (य्‌जेव)	एव	हीमाणहे	विस्मये, निर्व्वेदे हर्षे
एवंणेदं	एवमिदं		
किंणेदं	किमिदं	अम्महे	हर्षे
इडात्य	द्रागार्थे	हीही	विदूषकस्य हर्षोक्तौ
हंजे	चेट्याह्वाने	इव, विअ, व्व	इवार्थे

शेषं प्राकृतवत् ।

एते ह्यव्ययशब्दा मागध्यामपि तत्तदर्थेषु व्यवह्रियन्ते। केवलं "अधुना" शब्दस्य अऊरि इति रूपं भवति ।

अपभ्रंशे विशेषाव्ययशब्दाः । जइ यदि

झुञ्झु इत्यादयः शब्दानुकरणे, घुग्घी इत्यादयः चेष्टानुकरणे ।

नं, नउ, नाइ, नवाइ, जणि, जणु	इवार्थे	घइं, खाइं	इत्यादि अनर्थकाः
		पच्छइ	पश्चात्
हेल्लि	हे सखि	एम्मइ	एवमेवं
एयवारा	एकशः	अवह	अथवा
केहिं, तेहिं, रेसि, रेसिं, ताण	तादर्थे	पच्चलिउ	प्रत्युत
		एत्तहे	इतः
पुण	पुनः	एम्बाहि	इदानीं
अवसें, अवस	अवश्यं		

अथ चतुर्थोऽध्यायः।

शब्द साधन विधिः।

Declension of Nouns.

॥ साधारण नियमाः ॥

General rules.

(१) ॥ प्राकृते संस्कृतवत् त्रीण्येव पुंस्त्रीक्लीबाख्यानि लिङ्गानि सन्ति। येषां संस्कृतशब्दानां प्राकृते लिङ्गविपर्य्ययो भवति प्रथमाध्याये तद्विवेकः कृतः।

Prákrita like the sanskrita has three genders, masculine, faminine. and neuter. We have in the first chapter laid down rules how sanskrita words change their gender in Prákita. (१)।

(२) ॥ प्राकृते द्विवचनं नास्ति ॥

As stated in the first chapter, Prakrita has two numbers, singular and plural. The latter being also used in the place of sanskrita dual.

(३) प्राकृते षड्विभक्तयश्चतुर्थ्या अभावः।

Prákrita has all the *sanskrita* cases except the dative which is replaced by the genetive.

---

(१) शौरसेन्यां भागधेयं पुंसि; The word *Bhágadheya* which is held neuter in general Prakita, is used in masculine in the Saurasení.

सुप्तिङ् लिङ्ग विभक्तीनां शाकार्य्यान्तु विपर्य्ययः। In the *sákári* dialect the change from sanskrit of the affixes denominated *sup* and *tiń* and also of the genders and the cases, is most arbitrary.

Aho ! Shrutgyanam

(४) प्राकृते पञ्चविधाः शब्दा दृश्यन्ते—अवर्णान्ता, इवर्णान्ता; उवर्णान्ताः; ऋवर्णान्ताः; तथा हलन्ताः।

For the purposes of declension, *Prákita* nouns may be divided into five classes; (1) those ending in *a* and *á*; (2) those in i and í; (3) those in u and ú; (4) tbos ending originally in ṛi; (5) those ending originally in consonant. (१)।

अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दरूपाणि।

General rules for Declension of nouns ending in *a* (masculine):

(१) अदन्तात् पुंसि प्रथमैकवचनस्य सोः स्थाने ओ स्यात्।

The affix *su* of the nom. sing. becomes *o* (२).

(२) जस्, शस्, ङसि, आम्, एषु परतोऽदन्तस्यान्तस्य दीर्घो भवति जश्शसोर्लोपश्च। (३)

The final *a* becomes *á* before the affixes जस् (nom. plu.) शस् (ac. plu.) ङसि (the oblative sing.) and आम् (the

---

१। वस्तुतस्तु त्रिविधा एव शब्दा ऋकारान्तहलन्तानां कार्यकालेऽभावात्। In fact there are only three classes, for the final ṛi changes generally to u, or in the some cases to *ara* or *ára* and the final consonants are either dropped or takes an 'a' after them.

२। मागध्यां सौपरेऽकारस्य 'ए' कारो भवति सुलोपश्च। In the *Mágadhí* dialect the final *a* becomes *e* (ए) before the affix su and the affix *su* itself is dropped, as वृक्षः-रुक्खे एषः-एशे, मेषः-मेशे, अपभ्रंशे स्यमोः परयोरकारस्योकारो भवति। In the Apabhrans'a *u* is substituted for the final a of a noun when the affix *su* or *am* is applied to it.

३। अपभ्रंशे सर्वदेव जश्शसोर्लोपः In the apabhrans'a *jas* and *sas* are always elided.

Aho ! Shrutgyanam

genetive plu.) ; and *jas,* and *sas* (the affixes nom. and acc. plu.) are also elided.

(३) अतः परस्यामोऽकारस्य लुग् भवति ।

The *a* of am, the affix of the accusative singular is elided.

(४) अतः परस्य टा इत्येतस्य षष्ठीबहुवचनस्य चामो णो भवति ।

Ṇ is substituted for ṭá and ám, the affixes of the instrumental singular, and genetive plural. (१)

(५) ङि ङसौ वर्ज्जयित्वा सुपि परतः अकारस्य एत्वं भवति ।

The final *a* of nouns ending in *a* becomes *e* in all the cases except ङि (loc. sing.) and ङस (gen. sing.)

(६) अतः परस्य भिसःस्थाने केवलः सानुनासिकः सानुस्वार श्च हि भवति ।

Hi, hin, or *him* is substituted for bhis, the affix of the instru. plu. (२)

(७) अतः परस्य ङसेः त्तो, दो, दु, हि, हित्तो इत्येत आदेशा भवन्ति । दकारस्य लुक् च ।

---

१ । अपभ्रंशे 'टा' स्थाने णकारानुस्वारौ विहितौ In the apabhrans'a either ṇ or *anuswará* is substituted for ṭá.

अपभ्रंशे टा परतोऽकारस्य नित्यमेत्त्वं भिसि च विकल्पेन ; In the apabhrans'a *e* is invariably substituted for the final *a* in instr. sing. and optionally in instru. plu. अपभ्रंशे अकारात् परस्यामो 'हं' इत्यादेशो भवति In the *apabhransa 'ham'* is substituted for *ám* the affix of the gen. plu.

मागध्यां आमो डाहं वा In the magadhi *daham* is optionally substituted for *ám.*

२ । प्राकृत प्रकाश कल्पलतिकयोः केवलं 'हिम्' इत्यादेशो विहितः According to Prakritaprakasa and Kalpalatika only 'him' is substituted for *bhis.*

Aho ! Shrutgyanam

tto, do, du, hi, and *hitto* are severally substituted for *ṅasi* the affix of the ablative sing. (१) The *d* of do and du is also elided.

(८) अतः परस्य भ्यसः स्थाने त्तो, दो, दु, हि, हिंतो सुंतो इत्येत आदेशा भवन्ति ।

Bhyas the affix of the ablative plural is replaced by tto, do, du, hi, hintto or sunto (२)

(९) अतः परस्य ङसः स्थाने स्स इत्यादेशो भवति ।

Ssa is substituted for *ṅas* the genetive, sing. (३).

(१०) अतः परस्य ङे रेकारो म्मिश्चादेशो भवति ।

E and *mmi* are substituted for *ṅi* the affix of the locative singular. (४)

---

१ । प्राकृत प्रकाश कल्पलतिकयोः ङसेः स्थाने 'आदो' 'दु' तथा 'हि' इति त्रय एव आदेशा विहिताः । According to Prákritaprakasa and Kalpalatiká the substitutes for *ṅasi* are only three in number *ado, du* and *hi* ;

शौरसेन्यां ङसेः स्थाने आदो, आदु इत्यादेशौ भवतः ; कल्पलतिकामते केवलं दो । In the *saurasení ádo* and *ádu* are substituted for *ṅasi* but according to kalpalatika only do is substituted for it.

पैशाच्यां ङसेः स्थाने आतो आत्तो इत्यादेशौ भवतः । In the *paisachi áto* aud *átto* are the substitutes for *ṅasi.* अपभ्रंशे ङसे हे, हु In the apabhrans'a *ha* and *hu* are substituted for *ṅasi.*

२ । अपभ्रंशे भ्यसोऽकारात् परस्य हुं इत्यादेशो भवति । In the *apabhrans'a hum* is substituted for bhyas after nouus ending in *a*.

३ । मागध्यां ङसो विकल्पेनाहादेशो भवति । In the mágadhi *áha* is optionally substiuted for *ṅas* अपभ्रंशे ङसः सु, हो, स्सो, इत्येत आदेशा भवन्ति । In the apabhrans'a the substitutes for ṅas are *su ho* and *sso*.

४ । शौरसेन्यां अदन्तात् ङेः केवलं एकार एव । In the sauraseni only *e* is substituted for *ṅi* after nouns ending in *a*.

Aho ! Shrutgyanam

उदाहरणम् ।

Examples of the above rules.

	एकवचनं Singular.	बहुवचनं Plural.
प्रथमा (nom.)	देवो	देवा
द्वितीया (acc.)	देवं	देवे, देवा
तृतीया (instr.)	देवेण (१)	देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं
पञ्चमी (abl.)	देवत्तो देवाओ देवाउ देवाहि देवाहित्तो इत्यादि	देवाहिंतो देवासुंतो देवेहिंतो, इत्यादि
षष्ठी (gen.)	देवस्स	देवाण, देवाणं
सप्तमी (loc.)	देवे, देवेम्मि	देवेसु, (२) देवेसुं
सम्बोधनं (voc.)	देव, देवो	देवा

सर्व्वे अदन्ता-देव शब्दवत् ज्ञातव्याः ।

All nouns ending in *a* are declined like देव।

पुंलिङ्गेकारोकारान्त–शब्दानां-रूपाणि ।

Declension of nouns (masculine) ending in (इ) *i* or *u* (उ.)

नियमाः (rules.)

(१) इदुदन्तानां सु, जस्, भिस्, भ्यस्, सुप इत्येतेषु परतोऽन्तस्य दीर्घो भवति ।

Before *su* (nom. sing.) *jas* (nom. plu.) *bhis* (instr. plu.) भ्यस (oblative plu.) the final *i* or *u* of nouns becomes long.

---

१ । कल्पलतिकामते देवेणं देवाणं इति टामो रूपं ।

२ । अपभ्रंश सुपो हिं रूच क्वचिद्भवति ।

Aho ! Shrutgyanam

(२) इदुदन्तयो र्जस ओकारादेशो भवति, णोच ; जसोलुक् च क्वचित् ।

O or ṇo is substituted for *jas* (nom. plu.) ; in some instances *jas* itself is elided.

(३) इदुदन्तयोः शसो णो भवति । ङसश्च वा । (१)

Ṇo is substituted for *sás* (the affix acc. plu.) ṇo is also optionally substituted for ṅas (ङस) the gen. sing.

(४) इदुदन्तेभ्यः टा विभक्तेर्णा इत्यय मादेशो भवति ।

Ṇá is substituted for tá (intr. sing.) (२)

(५) ॥ शेषमदन्तवत् ॥

The remaining declension is like that of nouns ending in *a*.

उदाहरणानि Examples.

	एकवचनं	बहुवचनं
प्रथमा (nom.)	गिरी	गिरीओ, गिरिणो
द्वितीया (acc.)	गिरिं	गिरिणो (३)
तृतीया (instr.)	गिरिणा	गिरीहिं
पञ्चमी (abl.)	गिरिदो इत्यादि	गिरिहिंतो, गिरीसुंतो इत्यादि
षष्ठी (gen.)	गिरिणो, गिरिस्स	गिरिण, गिरिणं (१५)
सप्तमी (loc.)	गिरिम्मि	गिरीसु, गीरीसुं,
सम्बो (voc.)	गिरि	गिरीओ

१ । अपभ्रंशे इदुद्भ्यां ङसि, भ्यस्, ङीनां यथा क्रमं हे, हुं, हि इत्यादेशा भवन्ति । In the *apabhrans'a he hum* and hi are substituted for ṅ*asi, bhyas* and ṅ*i* respectively after nouns ending in *i* or *u*.

२ । अपभ्रंशे टा स्थाने ए सानुस्वारो णकारश्च भवति । In the apabhransa *e* as well as *anuswara* and ṅa are substituted for ṭá after nouns ending in *i* or *u*.

३ । केषाञ्चिन्मते शसि च गिरीओ गिरि ; गुरुओ, गुरु इति रूप द्वयं । According to some authorities these nouns may have two other forms in *sás* as गिरीओ, गिरि, गुरुओ, गुरु ।

Aho ! Shrutgyanam

प्रथमा	गुरू	गुरूओ, गुरुणो
द्वितीया	गुरुं	गुरुणो (१)
तृतीया	गुरुणा	गुरूहिं
पञ्चमी	गुरूदो इत्यादि	गुरूहिंतो इत्यादि
षष्ठी	गुरुणो, गुरुस्स	गुरूणं, गुरूण (२)
सप्तमी	गुरुम्मि	गुरूसु, गुरूसुं
सम्बोधनं	गुरु	गुरूओ

सर्व्वे इकारान्ता गिरिशब्दवदुकारान्ताश्च गुरुशब्दवत् रूपाणि भजन्ते।

All nouns ending in *i* or *u* are declined like *giri* or *guru* respectively.

ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द रूपाणि (नियमाः)।

Rules for Declesion of nouns ending in *ṛi* (ऋ) (masculine.)

(१) ऋकारान्तस्य सुपि परत आर इत्यादेशो भवति। अदन्त वच्चास्य रूपाणि।

The final ṛi of words becomes *ára* before all case affixes, and such words are declined like those ending in *a*.

(२) स्वमौ वर्ज्जं सुपि परत ऋकारस्य स्थाने विकल्पेनोकारादेशः उत्व पक्षे चोकारान्तशब्दवद्रूपाणि भवन्ति।

U is optionally substituted for final *ṛi* before all case-affixes except सु (nom. sing.); and अम (acc. sing.); when *u* is substituted for ṛi, the rules of declension prescribed for nouns ending in *u*, shall apply.

१। अपभ्रंशे आमो हुं हं, च भवति। In the apabhransa, *húm* as well as *ham* are substituted for *ám* after nouns ending in *i* or *u*.

२। शौरसेन्यां भर्तृ शब्दस्य 'भट्टा' इति रूपं भवति। In the saurasení the word bhartṛi take the form of *bhattá*.

Aho ! Shrutgyanam

(३) सम्बोधने सौपरे ऋदन्तस्य विकल्पेनाकारादेशो भवति विशेषणवाचिनि तु न।

A is optionally substituted for the final ṛi (ऋ) of nouns in vocative singular, as हे पिअ, हे पिअर, (हे पितः); but this rule does not apply to words ending in ṛi (ऋ) used as adjectives, as हे कत्तार।

(४) पितृ, भ्रातृ, जामातॄणां सुपि परत ऋस्थाने 'अरो' भवति आरापवादः।

The ṛi of the words *pitṛi, bhrátṛi,* and *jámátṛi* becomes *ara* instead of *ára* before the case affixes; तेषामदन्तवत् रूपाणि च they are declined like words ending in *a*; सौ परत आकारस्त्ववा before the affix *su,* the ṛi of these words may also optionally become *á.*

Examples उदाहरणानि।

भर्त्तृशब्दः।

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	भत्तारो	भत्तुणो, भत्तारा
२या (acc)	भत्तारं	भत्तुणो, भत्तारे
३या (instr.)	भत्तुणा, भत्तारेण	भत्तारेहिं, भत्तुहिं
५मी (abl.)	भत्तारादो, भत्तुणो इत्यादि	भत्तारहिं, भत्तुहिंतो
६ष्ठी (gen.)	भत्तुणो, भत्तारस्स	भत्तुणं भत्ताराणं
७मी (loc.	भत्तारे, भत्तारम्मि, भत्तुम्मि	भत्तुसु, भत्तारेसु
सं (voc.)	हे भत्तार	हे भत्ताराः

सर्व्वेषामृकान्तपुंलिङ्गानां भर्तृशब्दवत् रूपाणि भवन्ति।

All nouns ending in ṛi are declined like the word bhartṛi.

Aho ! Shrutgyanam

पितृ-शब्दः।

एकवचनं		बहुवचनं
१मा (nom.)	पिआ (१) पिअरो	पिअरा (२)
२या (acc.)	पिअरं (३)	पिअरे, पिदुणो
३या (instr.)	पिअरेण, पिदुणा	पिअरेहिं
५मी (abl.)	पिअराद्दो, पिदुणो इत्यादि	पिअरहिंतो, पिदुहिंतो इत्यादि
६ष्ठी (gen.)	पिअरस्स, पिदुणो	पिअराणं, पिदुणं
७मी (loc.)	पिअरे, पिअरम्मि, पिदुम्मि	पिअरेसु, पिदुसुं
सं (voc.)	हे पिअ, हे पिअर	हे पिअरा

एवं भ्रातृ, जामातृो रूपाणि भवन्ति ।
The words *bhrátri* and jámátri are declined like *pitri*.

ईकारोकोरान्तानां पुंलिङ्गानां रूपाणि ।
Declension of words (masc.) ending in í or ú.

(१) प्राकृतप्रकाश कल्पलतिकयोरीकारोकारान्तानां शब्दानां साधनार्थं न पृथक् सूत्राणि विद्यन्ते। प्रतीयते तत् तेषामपि यथाक्रम मिकारोकारान्तवत् कार्य्याणि भवन्तीति ।

१। शौरसेन्यां प्रथमैकवचने "पिदा" इतिरूपं भवति। यथा "ताद कस्सो वि एदाए पिदा" In the sauraseni the word *pitri* becomes pidá in nom. singular.

२। भ्रातृशब्दस्य जसि 'भादरो' इतिरूपम् दृश्यते। We find also the form 'भादरो' in nom. plu. of *bhrátri* as अणुगेह्णन्दु एदं ववसिदं ते भादरो।

३। भाषान्तरे अमि 'पिदरं' इति रूपम्। In some dialects we find also the form पिअरं in acc. sing.

Aho ! Shrutgyanam

In the *Prákritaprakas'a* and *kalpalatiká* no special rules are given for declension of masculine words ending in í or ú. Such words are declined like those ending in *i* or *u* respectively.

(२) हेमचन्द्रेणतु क्विवन्तानां ईकारोकारान्तानां सर्व्वस्यामेव विभक्तौ ह्रस्व विधानं कृतं, सम्बोधनेतु विकल्पेन ।

According to Hemachandra the final *í* or *ú* of words, which are formed by the application of the suffix *kwip* to the roots, becomes short before all case affixes. This rule is optional in the vocative singular.

गो शब्दस्य पुंलिङ्गे गाव इति रूपं भवति । ततोऽस्यादन्तवत् रूपाणि भवन्ति ।

The word *go* takes the form of गाव in the masculine and is declined like words eding in *a*.

स्त्रीलिङ्ग शब्दाः ।

Feminine nouns.

स्त्रीलिङ्ग शब्दानां रूपकथनात् प्राक् स्त्री प्रत्यया विविच्यन्ते । तेच प्रायः संस्कृतवत्, कचित्तु विशेष नियमानुगताः ।

Before proceeding to decline feminine nouns it would be necessary to state that the rules for feminine suffixes in sanskrita are in general also applicable to *prákrita*. Some words in prákrita are however subject to special rules, which we enumerate below.

विशेष स्त्री–प्रत्ययाः ।

Suffixes which are applied to some special feminine nouns.

Aho ! Shrutgyanam

(१) अणादि प्रत्यय निमित्तो योङीस्त्रस्त्रियां तस्य विकल्पः ।

The suffix *ní* which is, prescribed by pánini's sútra (4/1/15) to faminine nouns is optionally applied in *Prákrita.*

(२) अजातिवाचिनोनाम्नः स्त्रियां विकल्पेन ङीः ।

Except in words signifying species, the suffix *ní* is optionally applied to all feminine nouns, as काली, काला इत्यादि ; कुमार्य्यादौ नित्यमेव the suffix *ní* is invariably applied to the words *kumári* &c.

(३) छाया हरिद्राभ्यां वा ।

Ní is optionally applied to the words *chháyá* and *Haridrá*, as छाहा, छाही ; हलद्दा, हलद्दी ;

(४) स्वस्रादेः स्थाने ससादय, आदन्तवत्स्वरूपाणि ।

The feminine words *swasri* &c. assume the forms of *sasá* &c. and are accordingly declined like words ending in á ; as ससा, नणंदा, दुहिआ ।

(५) अनामि सुपि किं-यत्-तद्भ्यः स्त्रियां ङीर्व्वा ।

When the pronouns *kim, yat,* and *tat* are used in the feminine gender *ní* the suffix is optoinally applied to them, as कीओ, काओ &c. (१) ।

॥ स्त्रीलिङ्ग शब्द साधन नियमाः ।

The following are the rules for the declension of feminine nouns.

(१) स्त्रियां जश्शसोः स्थाने उत्, ओत् इत्येतौ वा भवतः ; दीर्घश्च वा ह्रस्वस्य ।

---

१ । शौरसेन्यां नेष विधिः प्रवर्त्तते । This rule has no force in the *saura-seni* dialect.

Aho ! Shrutgyanam

In feminine nouns either *ut* or *ôt* is substituted for both the affixes *jas* and *sas* and the final short vowels become optionally long (१) ।

(२) स्त्रियां वर्त्तमानात् नाम्नः परे टा, ङस, ङीनां स्थाने आत् अत्, इत्, एत्, इत्येत आदेशा भवन्ति । आदन्तात्तु टादीनां स्थाने आन्न भवति ।

In the declension of feminine nouns the affixes *tá*, *ṅas* and *ṅí* change to either *át*, *at*, *it* or et; (२) these affixes do not change to *át* after feminine nouns ending in *á*.

(३) सर्व्वत्र प्रागदीर्घो ङसेर्व्वा ।

The final short vowel of a feminine noun becomes long before all case affixes ; but before *ṅasi* the rule is optional. (३) ।

(४) स्त्रीलिङ्गस्य नाम्नोऽमि परे ह्रस्वो वा भवति ।

The final long vowel of a feminine noun becomes short before the affix *am* (acc. sing.)

(५) स्त्रियां वर्त्तमानादीकारान्तात् सोः जश्शसोश्च स्थाने आकारो वा भवति ।

---

१ । शौरसेन्यां जसि स्त्रियां उत् नस्यात् In the *sauraseni ut* is not substituted for the affix *jas* in the feminine nouns.

२ । अपभ्रंशे टास्थाने एदेव । In the apabhrans'a only *e* is substitutes for *tá* (instr. sing.)

३ अपभ्रंशे ङसि ङसोःस्थाने हे, भ्यस्आमोः स्थाने हुं, तथा ङेः स्थाने हिँ भवति In the *apabhrans'a he* is substituted for ṅasi and ṅas ; *hum* for bhays and *ám* and *him* for ṅi.

Aho ! Shrutgyanam

In the declension of feminine nouns ending in í (ई) *á* (आ) is optionally substituted for *su* (nom. sing.) *jas* (nom. plu.) and *sas* (acc. plu.)

(६) आबन्तात् सम्बोधने आप एत्वं ।

The final á of the feminine nouns formed by the application of the suffix *áp* after them, changes to *e* in vocative singular ; as हेमाले, अन्यत्रतु न भवति। This rule is not applied to nouns ending in *á* not so formed ; as हेपिउच्छा ;

आकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्दाः ।

Declension of feminine nouns ending in á.

लता शब्दाः ।

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	लदा	लदा, लदाओ, (१) लदाउ
२या (acc.)	लदं	लदा, लदाओ, लदाउ
३या (instr.)	लदाए, लदाइ लदाअ	लदाहि, लदाहिं, लदाहिँ
५मी (abl.)	लदादो, लदाए इत्यादि	लदह्निंतो इत्यादि
६ष्ठी (gen.)	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाणं, लदाण
७मी (loc.)	लदाए लदाइ लदाअ	लदासु लदासुं
सं (voc.)	हे लदे	लदाओ

सर्व्वे आकारान्ता लतावत् ।

---

१ । Observe that in Prakrita, no sandhi, is allowed between the vowel of a case affix and the final vowel of the word to which it is applied. प्राकृते प्रातिपदिक विभक्तिस्वरयोर्न सन्धिः ।

Aho ! Shrutgyanam

All feminine nouns ending in *á* are declined like लता ।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दाः ।

Feminine nouns ending *i*.

	एकवचनं	वज्ञवचनं
१मा (nom.)	वुद्धी,	वुद्धी, वुद्धिओ, वुद्धिउ
२या (acc.)	वुद्धिं	वुद्धी, वुद्धिओ, वुद्धिउ
३या (instr.)	वुद्धीए, वुद्धीइ वुद्धीआ वुद्धिअ	वुद्धीहि वुद्धीहं
५मी (abl.)	वुद्धीए, वुद्धीइ इत्यादि	वुद्धीहिंतो, वुद्धीसुंतो इत्यादि
६ष्ठी (gen.)	वुड्डीए, वुड्डीइ वुड्डीआ, वुड्डीअ	वुड्डीणं, वुड्डीण
७मी (loc.)	वुड्डीए, वुड्डीइ वुड्डीआ, वुड्डीअ	वुड्डीसु, वुड्डीसुं
सं (voc.)	वुड्डी	वुड्डी, वुड्डीओ इत्यादि

सर्व्वे इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दा वुड्डिशब्दवत् ।

All feminine nouns ending in *i* are declined like the word वुड्डि।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दाः ।

Feminine nouns ending in *u*.

	एकवचनं	वज्ञवचनं
१म (nom.)	धेणू	धेणू, धेणूओ, धेणूउ
२या (acc.)	धेणुं	धेणू, धेणूओ, धेणूउ

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दाः ।

Feminine nouns ending in *ú*

वधू शब्दः ।

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	वहू	वहू, वहूओ इत्यादि
२या (acc.)	वहूं	वहू, वहूओ इत्यादि
३या (instr.)	वहूए, वहूइ इत्यादि	वहूहि, वहूहिं
५मी (abl.)	वहूदो, वहूए इत्यादि	वहूहिंतो वहूसुंतो
६ष्ठी (gen.)	तृतीयावत्	वहूणं, वहूण
७मी (loc.)	तृतीयावत्	वहूसु, वहूसुं
सं (voc.)	वहू इत्यादि ।	

सर्व्वं ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दा वधूवत् ।

All feminine nouns ending in ú are declined like the word वधू ।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दाः ।

Feminine nouns ending in ṛi (ऋ)

मातृ शब्दः ।

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	माआ	माआः
२या (acc.)	माअं (१)	माए
३या (instr.)	माआइ, माआअ इत्यादि	माएहिं माएहि

---

१ । शौरसेन्यां द्वितीयैकवचने 'मादरं' इति रूपं भवति । In the saurasení acc. sing. form of the word मातृ (mátri) is मादरं (madaram.)

Aho ! Shrutgyanam

५मी (abl.) माश्रादो, माश्राए इत्यादि	माश्राहिंतो, माश्रासुंतो
६ष्ठी (gen.) तृतीयावत्	माश्राणं, माश्राण
७मी (loc.) तृतीयावत्	माश्रासु, माश्रासुं
सं (voc) माश्र इत्यादि (१)	

गो शब्दस्य स्त्रीलिङ्गे गावी, गाई इतिरूपद्वयम्, ततश्च ईकारान्त-स्त्रीलिङ्ग वद्रूपाणि । The word *go* in the feminine gender becomes गावी or गाई and is declined like the words ending in *í*.

अजन्त क्लीव लिङ्गशब्दाः ।

Neuter nouns ending in a vowel.

नियमाः (rules.)

(१) क्लीवे वर्त्तमानात् स्वरान्तान्नाम्नः सोः स्थाने म् भवति ।

M is substituted for *su* (nom. sing.)

(२) क्लीवे वर्त्तमानात् स्वरान्तान्नाम्नः परयोर्जश्शसोः स्थाने इँ, इं, णिश्चेत्येत आदेशा भवन्ति । (२) ।

In, *im* or ṇi is substitutëd for *jás* and *sás*.

(३) क्लीवे सम्बोधने सुलोपो भवति ।

The voc. sing. affix *su* vanishes after all neuter nouns.

---

१ । हेमचन्द्र मते मातृ शब्दस्य 'माई' 'माअरा' इति रूपद्वयं भवति । According to Hemchandra the word *mátri* assumes also two other forms viz : माई' and 'माअरा.'

२ । शौरसेन्यां क्लीवे जश्शसोः स्थाने केवलं णिरादेशः । In the Saurasení dialect, only ṅi is substituted for *jas* and *sas* after neuter nouns. अपभ्रंशे 'इं' एव and in the *apabhransa*, only *im* is the substitute for *jas* and *sas*.

Aho ! Shrutgyanam

(४) क्लीबे सौपरे इदुतोर्नदीर्घः ।

The final *i* or *u* of a neuter noun does not become long before *su* (nom. sing.)

अकारान्त क्लीव लिङ्ग शब्द रूपाणि । Declension of neuter nouns ending in *a*.

कुल शब्दः ।

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा	(nom.) कुलं	कुलाणि, कुलाइं, कुलाइँ
२या	(acc) कुलं	कुलाणि, कुलाइं, कुलाइँ
सं	(voc.) हे कुलं	

पुम्वदन्यत् । The remaining are like masculine words ending in a.

इकारान्त क्लिव लिङ्ग शब्द रूपाणि । Declension of neuter nouns ending in *i*.

दधि शब्दः ।

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा	(nom.) दहिं, दहि	दहीणि, दहीइं, दहीइँ
२या	(acc.) दहिं, दहि	दहीणि, दहीइं, दहिइँ
सं	(voc.) दहि	

पुम्वदन्यत् । The remaining like masculine in *i*.

उकारान्त क्लीव लिङ्ग शब्द रूपाणि । Declension of neuter nouns ending in *u*.

मधु शब्दः ।

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा	(nom.) महुं, महु	महूणि, महूइं, महूइँ

Aho ! Shrutgyanam

२या (acc.) मङ्कं, मङ्क मङ्कणि, मङ्कइं, मङ्कइँ

सं (voc.) मङ्क

पुम्वदन्यत् । The remaining like masculine in *u*.

हलन्ता शब्दाः । Declension of nouns ending in consonants.

प्राकृते हलन्ताः शब्दा एव न सन्ति । केषाञ्चिदन्त्य-हलां लोपः केषाञ्चाजन्ते परिणामस्तत एव हलन्त शब्द साधनार्थं न नियम विशेषा लभ्यन्ते । प्राकृताचार्यैर्हि केवलमात्मन् राजन्नित्येतयोः शब्दयोः साधनार्थं कति नियमान् कृत्वा तएवान्यत्र नान्तेषु यथादर्शनं प्रवर्त्तिताः।

As final consonants in sanskrita words are elided in *Prakita* or such words are transformed into others ending in vowels, Prakita granmarians do not give rules for declension of words ending in consonants ; some special rules are however found for declesion of átman and *Rájan* and these are said to be applicable to words ending in *n* as far as usage of old authorities may allow.

राजन् शब्द रूपाणि ।

Declension of the word *rájan*.

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा	(nom.) राआ (१)	राआणो, राआ
२या	(acc.) राअं	राए, राआणो

---

१ हेमचन्द्र मते नाम्नस्य पुंसि विकल्पेनाणादेशो भवति । According to Hem chandra, áṇa is optionally substituted for the final letter of the nouns-ending in n as राआणो राआ इत्यादि ।

Aho ! Shrutgyanam

३या (instr.) रण्णा, राइणा	राएहिं
५मी (abl.) राआदो, रण्णो, राआदु, राइणो	राआहिंतो, राइहिंतो
६ष्ठी (gen.) रण्णो, राइणो, राअस्स	राआणं, राइणं, राआण
७मी (loc.) राअम्मि, राए, राइम्मि	राएसु, राएसुं
सं (voc.) राआ, राअं इत्यादि	

आत्मन् शब्द रूपाणि ।

Declension of the word *Atman*.

एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.) अप्पा, अप्पाणो	अप्पाणा, अप्पाणो, अप्पा
२या (acc.) अप्पाणं, अप्पं	अप्पाणे, अप्पणो
३या (instr.) अप्पाणेण, अप्पणा	अप्पाणेहिं, अप्पेहिं
५मी (abl.) अप्पाणाओ, अप्पणो, अप्पाओ, अप्पादो इत्यादि	अप्पाणाहिंतो, अप्पाहिंतो इत्यादि
६ष्ठी (gen.) अप्पाणस्स, अप्पणो	अप्पाणाणं, अप्पाणं
७मी (loc.) अप्पाणम्मि, अप्पे	अप्पाणेसु, अप्पेसु
सं (voc.) अप्पं इत्यादि ।	

युवन्, ग्रावन्, ब्रह्मन् इत्यादयो नकारान्ता आत्मन् शब्दवत् ।

All other nouns ending in n as युवन् &c. are declined like á*tman*.

प्राकृत कल्पलतिकायां सौ परे भवद्भगवद्भ्रांतस्यानुस्वारो विहितः ।

According to *prákrita kalpalatiká* the final t of the words *bhabat* and *bhagabat* changes to *anuswara* before

Aho ! Shrutgyanam

su. (both nom. and voc. sing.) भवं (भवान्), हे भवं (हेभवन्) भअवं (भगवान्), हे भअवं (हे भगवन्) ; (१) ।

प्राच्यायां भवच्छब्दस्य स्त्रीलिङ्गे भोदी इतिरूपं भवति ।

In the Práchyá *dialect* the feminine form of bhabat is bhôdi.

सर्व्वनाम शब्दाः ।

The Pronouns.

प्राकृते सर्व्वनाम-सम्बन्धिनः केऽपि साधारण नियमा न दृश्यन्ते, सर्व्व एव नियमा विशेष-स्वभावाः । केवल मदन्तसर्व्वनामशब्दानां साधनार्थं कति साधारण नियमाः सन्तीति तेषामुल्लेखः क्रियते । अन्येषान्तु साधन नियमा स्तत्तदुदाहरणेभ्योऽवगन्तव्याः । (२) ।

There are no general rules in the prakrita grammar for the declension of pronouns. Almost every pro-noun is specially treated. But the declensions of the pronouns ending in *a* are subject to some common rules which we shall here notice. The declension of other pronouns may be gathered from the several examples given below.

---

१ शौरसेन्यां नियम एष मघवत् शब्देऽपि प्रवर्त्तते। In the saurasení this rule is also applied to *Maghabat*, तत्र दुर्व्वाससः सौ दुव्वासा इति रूपं In the Sauraseni the word *Durbásas* becomes dubbásá before nom. sing.

२। सर्व्वनामशब्दा अथवा सर्व्वादिगणाः (The *sarvádi* class) सर्व्व, विश्व, उभ, उभय, डतर, डतम, (प्रत्ययान्त) ; इतर, अन्यतर, त्वत्, त्व, नेम, सम, सिम, त्यद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवत्, किम्।

Aho ! Shrutgyanam

अदन्तसर्व्वनाम साधन नियमाः ।

Special rules for the declensions of pronouns ending in *a*.

(१)। सर्व्वादे रतः परस्य जस एङ्भवति ।

E is substituted for *jas* (nom. plu.) after the word *sarva* &c. when used in the masculine gender. (१)

(२)। सर्व्वादेरदन्तात् आमो एसिं इत्यादेशो वा भवति । ङेस्स स्सिं, म्मि, त्थ इत्येत आदेशा भवन्ति, तथेदमेतदौ वर्ज्जयित्वा ङेर्हिंआदेशो भवति ।

After the pronouns of the *sarvádi* class used in the masculine or neuter gender, the affix *ám* becomes *esim*, and ṅi becomes *smim*, *mmi*, *tth* or *him* optionally. But it does not become *him* after *idam* and *etad*. (२)

सर्व्व शब्द पुं रूपाणि ।

Declension of the word *sarva* masculine.

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	सव्वो	सव्वे
२या (acc.)	सव्वं	सव्वे

१। शाकर्य्यां सर्व्वनाम्न एत्व, In the Sákari, *e* is optionally substituted for first a of *sarvadi* as सेव्वे, सव्वे ।

२। शौरसेन्यां इदम् किं यत्तद्भ्य आम एसिं न स्यात् । In the *Sauraseni*, *esim* is not substituted for *ám* in *idam*, *kim*, *yat* and *tat*, टक्क भाषायां किमादेरामो 'हं' स्यात् । In the *Takka* dialect, *ham* is substituted for *ám* after kim &c. अपभ्रंशे अकारान्तात् सर्व्वनाम्नो ङे र्हिंमेव केवलं । In the *Apabhransa*, only *him* is substituted for ṅi after sarvádi ending in *a*.

Aho ! Shrutgyanam

३या (instr.)	सव्वेण	सव्वेहिं
५मी (abl.)	सव्वदो सव्वत्तो इत्यादि	सव्वेहिंतो इत्यादि
६ष्ठी (gen.)	सव्वस्स	सव्वेसिं सव्वाणं
७मी (loc.)	सव्वस्सिं सव्वम्मि सव्वत्थ सव्वहिं (१)	सव्वेसु सव्वेसुं

सर्व्वादीनां स्त्रीलिङ्गे आदन्त स्त्रीलिङ्ग शब्दवत्, क्लीवे अदन्त क्लीव लिङ्ग शब्दवत् रूपाणि ।

In the feminine gender *sarvadi* are declined like feminine words ending in á, and in the neuter like those ending in *a*.

एवं विश्वादयः। The word *viswa* &c. which come under *sarva* class are thus declined.

अपभ्रंशे सर्व्वस्य साहादेशः ।

In the *Apabhransa*, साह is substituted for सर्व्व ।

यत् शब्द पुं रूपाणि ।

Declension of the word *yat* (masculine.)

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	(२) जो	जे
२या (acc.)	जं	जे
३या (instr.)	जेण, जिण	जेहिं
५मी (abl.)	जत्तो, जदो जम्हा जाओ	जाहिंतो, जासुंतो इत्यादि

१। अपभ्रंशेऽदन्तात् सर्व्वादेः ङसे र्हां इत्यादेशो भवति। In the *apabhransa ham* is substituted for *nasi* after *sarvadi* तथा ङेः केवल हिम् एव and only *him* for *ni* (loc. sing)

२। अपभ्रंशे ध्र इति रूपं भवति।

६ष्ठी (gen.)	जस्स जास (१)	जाणं जेसिं (२)
७मी (loc.)	जस्सिं, जम्मि, जहिं (३) जत्थ	जेसु

यच्छब्दस्य स्त्री लिङ्गे आम वर्ज्जिते ङीर्व्वा भवति। यथा जी, जीया, इतयादि।

The suffix ṅí is applied to the feminine of *yat* before all the case affixes except *ám* (gen. plu.)

तत् शब्द रूपाणि।

Declension of the word *tat* (masc.)

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	सो	ते, दे
२या (acc.)	तं, णं	ते, दे
३या (instr.)	तेण, तिणा, (४) णेण	तेहिं, णेहिं
५मी (abl.)	तत्तो, तदो, ता, तम्हा, ताओ	ताहिंतो इत्यादि
६ष्ठी (gen.)	तास, से, तस्स (५)	ताणं तेसिं, सिं (६) दाणं
७मी (loc.)	तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं (७)	तेसु इत्यादि

१। अपभ्रंशे (In the apabhransa) पुं masc 'जासु' स्त्री (fem.) जहे।

२। शौरसेन्यां (In the sauraseni) केवलं (only) जाणं; टक्कभाषायां (In the takka) जाहं, जाणं, इति रूप द्वयं।

३। कालार्थे जाहे, जाला when ṅi (loc. sing.) signifies time the word *yat* assumes the forms जाहे and जाला before it.

४। पैशाच्यां (in the paisáchi पुं masc) 'नेन' स्त्री (fem.) नाए।

५ सौरसेन्यां ङसि 'तस्य,' 'से' इति आमि च ताणमिति The form 'तास' is not used before ṅas in the sauraseni, and 'ताण' is the only form before ám. अपभ्रंशे (in the *apabhransa*) ङसि (before gen. sing.) पुं (masc) तसु, स्त्री (fem.) तासु; टक्कभाषायां (in the takka) आमि (before gen. plu.) ताहं ताणं

६। कालार्थे when *ṅi* signifies time ताहे, ताला, शौरसेन्यां ङेर्म्मि न भवति। in the saurasení *mmi* is not substituted for ṅí. अपभ्रंशे In the *apabhransa* पुं masc तहिं, स्त्री तहे।

७। अपभ्रंशे नं इति रूपं।

Aho ! Shrutgyanam

तच्छब्दस्य स्त्रीलिङ्गे प्रथमैक वचने सा इति रूपं।

The word *tat* assumes the form of 'सा' in feminine nom. sing. क्लीवे (in neuter) 'तं'; स्त्रियामाम्-वर्ज्जिते ङी च। The suffix *ní* (ङी) is also applied to it before all case affixes except *ám* (gen. plu.) यथा ती, तीआ इत्यादि।

एतच्छब्द पुं रूपाणि।

Declension of the word *etad* (*masculine.*)

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	एस, एसो, (१)	एते, एदे;
२या (acc.)	एतं,	एते, एदे
३या (instr.)	एदिणा, एदेण, एणं	एतेहिं, एदेहिं, एएहिं
५मी (abl.)	एत्तो, एत्ताहो, एआओ इत्यादि	एतेहिंतो, इत्यादि
६ष्ठी (gen.)	एअस्स, एदस्स, (२) एअस्स, से	सिं, एएसिं, एदाणं (३)
७मी (loc.)	अयम्मि, एत्थ, इअम्मि, (४) एअम्मि, एअस्सिं इत्यादि	एएसु, एदेसु, इत्यादि

अदस् शब्द पुं रूपाणि। Declension of the word अदस् masculine.

१। क्लीवे (in the neuter) इदं एअं इति रूपद्वयं; स्त्रियां (in the feminine एसा, इणमा इति रूपद्वयं; अपभ्रंशे (In the *Apabhrans'a*) पुं (masculine) एहो स्त्री (feminine) एह, क्ली (neuter) एहु; शौरसेन्यां एस इति रूपं न स्यात् the form 'एस' is not used in the *Sauraseni* dialect.

२। अपभ्रंशे (In the *Apabhransa*) ङसि (before gen. sing.) एअहां इति रूपं।

३। शौरसेन्यां (In the *Sauraseni*, केवलं (only) एदाणं, टक्क भाषायां (In the *Takka*) "एदहं" "एदाणं" इति रूप द्वयं

४। अपभ्रंशे (In the *Apabhransa* 'एह' इति रूपं।

Aho ! Shrutgyanam

एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.) अमू (१)	अमूणो
२या (acc.) अमुं	अमूणे
३या (instr.) अमुणा	अमूहिं
५मी (abl.) अमूओ, अमूउ, इत्यादि	अमूहिंतो इत्यादि
६ष्ठी (gen.) अमुणो अमुस्स	अमूणं
७मी (loc.) अमुम्मि, अयम्मि, इअम्मि	अमूसु इत्यादि

इदम् शब्द पुं रूपाणि । Declension of the word इदम् (*masculine.*)

एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.) इमो (२) (अअं)	इमे
२या (acc.) इमं, णं	इमे
३या (instr.) इमिणा, इमेण, णेण	एहिं, इमेहिं, णेहिं
५मी (abl.) इदो, इमादो, इत्तो इत्यादि	इमेहिंतो इत्यादि

१। अदस् शब्दस्य प्रथमैकवचने सर्व्वत्र अह इति च रूपं भवति। The form (अह) also is used in all genders in the sing. शौरसेन्यां अह इति रूपं न भवति। In the *Sauraseni* this form is not used. साधारणतः स्त्रियां अमू, तथा क्लीवे अमुं, इति। But the forms अमू and अमुं are generally used in feminine and neuter respectively.

२। इदम् शब्दस्य स्त्रीलिङ्गे सौ, इअं, इमिआ तथा क्लीवे सौ, अमिच, इदम् इणम् इति रूप द्वयं भवति। In feminine nom. sing. it has two forms इअं इमिआ; and the forms in neuter before nom. and acc. sing. are इदम् and इणम्। शौरसेन्यां (In the *Sauraseni* the feminine form in the nom. sing.(स्त्रियां सौ) is इअं, and (क्लीवे) in the neuter इदम् इमम्। अपभ्रंशे (In the *Apabhransa*) इदमो आयादेशः (आय is substituted for इदम्)।

Aho ! Shrutgyanam

६ष्ठी (gen.)	अस्स, इमस्स, से	इमाणं, सिं (१)
७मी (loc.)	अस्सिं, इमस्सिं, इह, णे	एसु

किं शब्द पुं रूपाणि (२)। Declension of *kim* (masculine.)

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	को (३)	के
२या (acc.)	कं	के
३या (instr.)	किणा, केण	केहिं
५मी (abl.)	कीणो, कीस, कम्हा, कम्हो कदो (४)	केहिंतो इत्यादि
६ष्ठी (gen.)	कास, कस्स (५)	कास, केसिं, काणं
७मी (loc.)	कहिं, कस्सिं कम्मि, कत्थ (६)	केसु इत्यादि

कालार्थे (when *ṅi* (ङि) signifies time it has the following forms काहे, काला, कइआ।

१। शौरसेन्यां आमि केवलं इमाणं इति रूपं। In the *Sauraseni* it has only one form इमाणं in the (gen. plu.)

२। अपभ्रंशे किमः स्थाने 'काइ' 'कवणौ' इत्यादेशौ च In the *Apabhransa* 'काइ' and 'कवण' are optionally substituted for *kim.*

३। स्त्रियां (in feminine) का and क्लीवे (in neuter) किं।

४। शौरसेन्यां (In the *Sauraseni*) ङसौ the form before *ṅasi* is कुदो अपभ्रंशे (in the *Apabhransa*) कहां।

५। स्त्रियां (in the feminine the forms before *n's* are किस्सा, कीसे) कीअ, कीआ, कीइ, कीए ; शौरसेन्यां पुंसि कास न भवति। the form कास is not used before ṅas masculine in the *Sauraseai* अपभ्रंशे (in the *Apabhransa*) पुं) masculine कासु, स्त्रियां (in the feminine) कहे।

६। शौरसेन्यां कम्मि इति रूपं न। The form 'कम्मि' is not used in the *Sauraseni.*

Aho ! Shrutgyanam

युष्मच्छब्द रूपाणि । Declension of the word युष्मत् (*yush-mat.*)

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	तुमं, तं, तुं, तुवं, तुह	भे, तुब्भे, तुज्झ तुम्ह, तुम्हे, उम्हे, तुय्हे
२या (acc.)	तं, तुं, तुवं, तुमं तुह, तुमे, तुए	वो, तुज्झे, तुज्झ, तुम्हे, तुय्हे,
३या (instr.)	दे, ते, तइ, तुए, तुमं तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	तुम्हेहिं, तुय्हेहिं, उम्हेहि, उज्झेहि, तुज्झेहि, इत्यादि
५मी (abl.)	तत्तो, तइत्तो, तुवत्तो तुमत्तो, तुज्झत्तो, तुम्हत्तो, तुहत्तो, तुय्हत्तो तदो, तुव, दुहि, तुमहिंतो, इत्यादि।	तुम्हाहिंतो तुज्झाहिंतो तुज्झत्तो, तुम्हत्तो तेहिंतो, दुहिंतो इत्यादि ।
६ष्ठी (gen.)	तुह, तुज्झ, तुम्ब, तुइ, तु, ते, तुम्ह, तुह, तुहं, तुव, तुम, तमे, तुमाइ, दे, तुय्ह	वो, भे, तुज्झ, तुय्हाण, तुम्हाण, तुमाण, तुहाण उम्हाण, तुवाण इत्यादि
७मी (loc.)	तइ, तए, तुमए, तुमे, तुमाइ तइ, तुम्मि, तुमम्मि, तुवम्मि, तुहम्मि, तुज्झम्मि, इत्यादि	तुसु, तुम्हेसु, तुय्हेसु तुहसु, तुमसु, तुहेसु इत्यादि

मागध्यां युष्मद् शब्दस्यस्थाने तुप्पं, तुम्ह इत्यादेशौ भवतः ।

In the mágadhí तुप्पं, and तुम्ह are substituted for yusmad.

शौरसेन्यां युष्मच्छब्द रूपाणि ।

Aho ! Shrutgyanam

एकवचनं	बहुवचनं
१मा, (nom.) २या, (acc.) तुमं	तुम्हे
३या (instr.) तए,	तुम्हेहिं
५मी (abl.) तुम्हादो	तुम्हाहिंतो
६ष्ठी (gen.) ते, दे, तइ, तुम्ह	तुम्हाणं
७मी (loc.) तइ, इत्यादि	तुम्हेसुं

अपभ्रंशे युष्मच्छब्द रूपाणि ।

एकवचनं	बहुवचनं
१मा तुहु	तुम्हे, तुम्हाइं
२या तइं, पइं	तुम्हेहिं
५मी तउहोंत,	तुमहं
तध्रुहोंत, तुह्युहोंत	
(आमि) तुम्हहं, (सुपि) तुम्हासुं	

अस्मच्छब्द रूपाणि । Declension of the word *asmad*.

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	अहं, अहम्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहअं, म्मि	भे, वअं अमह, अम्हे अम्हो, मो
२या (acc.)	णेणं, मि, अम्मि, अम्हं, मं, ममं, मिमं, अहं	अम्हे, अम्हा, णो, णे, अम्ह
३या (instr.)	मिसे, ममं, ममए, मए, ममाइ, मइ, इणो, मआ	अम्हेहिं, अम्हाहिं, अम्ह, अम्हो, णे
५मी (abl.)	मइत्तो, ममत्तो, मत्तो, महत्तो, मज्झत्तो, मइदो, ममदुहि इतयादि	ममत्तो, अम्हत्तो, ममा- हिंतो, ममासुंतो, ममेसुंतो, अम्हेहिंतो इत्यादि

Aho ! Shrutgyanam

६ठी (gen.)	मे, मम, मइ, मह, महं, मज्झ, नह्यं, अम्ह, अम्हं	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, मम, अम्हाणं, महाणं, मज्झाणं
७मी (loc.)	मि, मइ, ममाइ, मए, मे, अम्हम्मि, मम-म्मि, महम्मि, इत्यादि	अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मएसु, एवं अम्हसु, ममसु इत्यादि

(१) शौरसेन्यां "अस्मच्छब्दरूपाणि" declension of *asmad* in the *saursani* dialect.

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	हो, अहं	अम्हे, वयं
२या (acc.)	मं	अम्हे
३या (instr.)	मए	अम्हेहिं
५मी (abl.)	मत्तो, ममादो	अम्हेहिंतो इतयादि
६ष्टी (gen.)	मे, मम, मह	अम्ह, अम्हाणं
७मी (loc.)	मइ, मए	अम्हेसु

मागध्यां अहं वयमोःस्थाने "हगे" "हके" इत्यादेशौ भवतः। In the *mágadhi* हगे and हके are substituted for अहं and वयं।

अपभ्रंशे "अस्मद्" शब्दरूपाणि। Declension of "*asmad*" in the *apabhransa.*

	एकवचनं	बहुवचनं
१मा (nom.)	हउ	अम्हे, अम्हइ
२या (acc.)	मइ	अम्हे, अम्हइं

Aho ! Shrutgyanam

३या (instr.) मइ — अम्हेहि

५मी (abl.) मज्झ, मह्य — अम्हेहिंते

६ष्टी (gen.) मज्झ, मह्यु — अम्हहे

७मी (loc.) मइ &c. — अम्हासु

दि शब्दस्य रूपाणि। Declension of the word *dwi.*

बहुवचनं		बहुवचनं	
१मा (nom.)	दो, दुवे, दोणि, वेणि, दुणि, विणि	५मी (abl.)	दोहिंतो वेहिंतो, इत्यादि
२या (acc.)	दो, दुवे, दोणि, वेणि, दुणि, विणि	६ष्टी (gen.)	दोण्हं, (१) दोसं वेसं
३या (instr.)	दोहिं, दोहि, विहि	७मी (loc.)	दोसु, वेसु

त्रि शब्दस्य रूपाणि। Declension of the word *tri* (त्रि)

बहुवचनं		बहुवचनं	
१मा (nom.)	तिण्णि	५मी (abl.)	तीहिंतो
२या (acc.)	तिण्णि	६ष्टी (gen.)	तिसं
३या (instr.)	तीहिं	७मी (loc.	तीसु

चतुः शब्दरूपाणि। Declension of the word *chatur* (चतुर्)

बहुवचनं		बहुवचनं	
१मा (nom.)	चत्तारो, चउरो, चत्तारि	२या (acc.)	चत्तारो, चउरो, चत्तारि

१। संख्यावाचकेभ्य आमो ण्हं ण्ह इत्यादेशौ भवतः ण्हं or ण्ह is substituted for *ám* after the words signifying number as पंचण्ह, छण्ह, सत्तण्ह इत्यादि विंशत्यादे र्न भवति This rule is not applied to विंशति। &c.

Aho ! Shrutgyanam

३या (instr.) चऊहिं   ६ष्ठी (gen.) चउण्हं
५मी (abl.) चऊहिंतो   ७मी (loc.) चउसु

॥ शेषाणामदन्तवत् ॥ उत्तेभ्योऽन्येषां संख्यावाचकानामदन्तवत् रूपाणि भवंति ।

All other words signifying number are declined like words ending in *a*.

पञ्चन् शब्दस्य स्त्रियां 'आप' भवति The suffix *áp* is applied to *panchan* पञ्चन् (in the feminine) *as* पञ्चा, पञ्चाहिं इत्यादि ।

विभक्त्यादेश विधिः ।

तादर्थ्ये षष्ठी वा ।

The genetive is optionally used for the dative when the latter signifies 'तादर्थ्य' "for it."

प्राकृते विभक्ति व्यवहारस्य नियमो नास्ति, क्वचित् द्वितीयातृतीययोः सप्तमी, पञ्चम्यास्तृतीया, सप्तम्याद्वितीया, प्रथमाया अपि द्वितीया; The use of the cases in the prakrita dialects is very anomalous, we find in some instances the use of locative for acc. and instr., that of instr. for the ablative, in others the acc. is used for the locative and even for the nominative. (१)

१। शावर्य्यां सप्तम्यां पञ्चमी। In the sábari ablative is used for the locative.

इति चतुर्थोऽध्यायः ।

Aho ! Shrutgyanam

अथ पञ्चमोध्यायः।

प्रथमः पादः ।

(तिङन्त प्रकरणम्) Verbs.

प्रत्यय—विवेकः ।

Of the affixes.

प्राकृते क्यङ् यङादि प्रत्ययानां न विशेषनियमा वर्त्तन्ते। केवलं हेमचन्द्रस्य व्याकरणे "क्यङोर्यलुक्" । इत्येकं सूत्रं दृश्यते।

Prákrita grammars in general do not give special rules regarding suffixes *kyan*, *yan*, &c. In Hemchandrá's vyákarna only we find the rule '*kyanoryaluk*' ie the 'y' of the suffix *kyan* is elided, as, गरूआइ (अगुरुर्गुरुर्भवति)।

(२) प्राकृते गणभेदव्यवस्थैव नास्ति ।

In prákrita the distinction of gana or classes of roots is not observed. All roots are conjugated alike.

(३) प्राकृते तिबादीनां तिङां वर्त्तमान काले वक्ष्यमाण रूपाणि भवन्ति। तथादन्तांश्चवर्ज्जयित्वा धातूनां नात्मने परस्मैपदित्व-भेदोऽपि ।

The conjugation affixes *tip* &c. of roots in several pronouns are changed to the following in the present tense, no distinction being recognized between parasmai and atmnepadi roots except in those ending in *a*. (१)

---

(१) अत्रहि पाणिनीयप्रस्थानानुसारत तिबादीनां स्वरूप मवगन्तव्यम्। We must understand here by tip &c. the affixes mentioned in the *sútra* 3/4/38 of *Panini*. यथा तिप, तस, झि ; सिप, थस, थ ; मिप, वस्, मस् ; त, आताम् झ ; थास, आथां, ध्वम् ; इवहि, महिङ ; शौरसेन्यां सर्व्वे धातवः परस्मैपदिनो भवन्ति। In the sauraseni all roots are used in the Parasmaipadi.

Aho ! Shrutgyanam

वर्त्तमानकाल-प्रत्ययाः । (the affixes of the present tense.)

Singular एकवचनं	Plural बहुवचनं
प्रथम पुरुषस्य (3rd person) i इ (१) ;	nti, nte, ire, न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुषस्य (2nd person) सि si ;	इत्था, ह (itthá, ha)
उत्तम पुरुषस्य (1st person) मि, mi ;	मो,मु,मा ,(mo, mu, má)(२)

(४) अकारान्तानामात्मनेपदिधातूनां प्रथम मध्यमयोरेकवचनस्य स्थाने यथासंख्यं ए, से इत्यादेशौ वा भवतः ।

The atmanepadi roots ending in *a* take optionally e and *se* in the 3rd and 2nd person singular instead of *i* and *si* ; as तुवरए, तुवरसे, (त्वरते, त्वरसे) ;

(५) अदन्ताद्धातोर्मौपरे अत आत्वं वा भवति ।

A' is optionally substituted for the final a of roots ending in a, when *mi* follows, as हसामि, हसमि इत्यादि ।

---

(१) । स्मर्तव्यं हि प्राकृते द्विवचनं नास्तीति ; The reader should remember that there is no dual number in the Prákṛita.

(२) । अपभ्रंशे वर्त्तमाने तिबादीनां स्वरूपाणि यथा In the apabhrans'a the affixes *tip* &c. are changed into the following in the present tense.

sing. एकवचनं	plu. बहुवचनं
प्रथम पुरुषस्य (3rd person) *i* (इ)	nti (न्ति) &c.
मध्यम पुरुषस्य (2nd person) *hi* (हि)	hu (हु)
उत्तम पुरुषस्य (1st person) *u* (उ)	(hum) हुं

पैशाच्यां ति स्थाने ति, ते, इत्यादेशौ भवतः । In the Paisachi *ti* and *te* are substituted for 3rd person singular.

शौरसेन्यां तिस्थाने 'दि' भवति In the sauraseni *di* is substituted for ti as होदि, भोदि (भवति) इत्यादि ।

Aho ! Shrutgyanam

(६) अकारान्ताद्धातो र्मोमुमेषु परेषु अत इत्त मात्त्वञ्च भवति, क्वचिदेत्त्वमपि ।

I or *á* is substituted for the final a of root when *mo, mu,* or *ma* follows, in some instances *e* is also substituted for the same, as हसिमो, हसामो, हसेमो ; हसिमु, हसेमु इत्यादि ।

अकारान्त धातूनां वर्त्तमान रूपाणि ।

The conjugation of roots ending in *a* in the present tense.

भण धातुः । root bhana.

	Singular. एकवचनं	Plural. बहुवचनं
प्र. पु. (3rd per.)	भणइ, भणए	भणन्ति, भणन्ते, भणिरे
म. पु. (2nd per.)	भणसि, भणसे	भणह, भणित्था
उ. पु. (1st per.)	भणामि, भणमि	भणामो, भणिमो, भणेमो इत्यादि

एवं हसपठादयः-

अस धातुस्तु विशेषनियममनुसरति The root *as* is conjugated in the following (way) ; as.

अस धातु रूपाणि ।

	एकवचनं	बहुवचनं
प्र. पु. (3rd per.)	अच्छइ, अत्थि	अच्छंति, अत्थि
म. पु. (2nd per.)	सि, अच्छसि, अत्थि	अत्थि, अच्छित्था, अच्छह
उ. पु. (1st per.)	म्हि, अत्थि, अच्छामि	म्हो, म्हा, इत्यादि

Aho ! Shrutgyanam

(७) भूतार्थे विहितस्य प्रत्ययस्य स्थाने स्वरान्तात् ही, सी, हीअ, इत्येत आदेशा भवन्ति ।

In the past tense *hi, si, hiya,* is indiscriminately used for the affixes after roots ending in a vowel in all persons and numbers, as कासी, काही, काहीअ, (अकार्षीत् अकरोत्, चकार इत्यादि); ठासी, ठाही, ठाहीअ (अस्थात्, अतिष्ठत् तस्थौ);

(८) व्यञ्जनान्ताद्धातोः परस्य भूतार्थे विहितस्य प्रत्ययस्य स्थाने 'ईअ' आदेशो भवति ।

In the past tense *iya* is substituted for all the affixes in the roots originally ending in consonant (१), as गेण्हीअ (अग्रहीत् अग्रह्णात्, जग्राह); असधातो भूतार्थेन प्रत्ययेन सह 'आसि' 'अहेसि' इत्यादेशौ भवतः । आसि or अहेसि is substituted for the root *as* in the past tense, as आसि, (सः, त्वं, अहं इत्यादि) प्रकाशेत्वेकवचनेष्वयं विधिः । According to the Prákṛitaprakas'a this rule is used in the singular only.

(९) भविष्यति तिबादीनां रूपाणि ।

In the future tense the conjugation affixes *tip* &c. assume the following forms.

---

(१)। प्राकृतप्रकाशमते भूते प्रत्ययस्य ईअ आदेशो भवति, एकाचस्तु धातो-र्हीयादेशः । According to prákṛita prakasa *Iya* is substituted for the affix, after roots in the past tense and *hiya* after a monosyllabic root, as हुवीअ, (अभूत्, अभवत्, बभूव); काहीअ, (अकार्षीत, अकरोत्, चकार); प्रायोभूते निष्ठान्त प्रयोग एव दृश्यते। In the past tense generally the verbs formed with the affixes *kta* and ktabatu are used.

Aho ! Shrutgyanam

Singular. एकवचनं	Plural. बहुवचनं
प्र. पु (3rd per.) *hi-i* (हिइ)	*hinti, hinte, hire* (हिन्ति, हिन्ते, हिरे)
म. पु (2nd per.) *hisi* (हिसि)	*hitha, hiha* (हित्थ हिह)
उ. पु. (1st per.) himi, hami, ssami, or ssam (हिमि, हामि, स्सामि, स्सम्	*hissá, hihá* हिस्सा, हिहा (१)

भविष्यति धातु रूपाणि ।

The conjugation of the roots in the future.

भू धातु रूपाणि।

Singular. एकवचनं	Plural. बहुवचनं
प्र. पु. (3rd per.) होहिइ, (भविष्यति भविता वा)	होहिन्ति, हूतगादि (भविष्यन्ति, भवितारो वा)

(१) । शौरसेन्यां भविष्यदर्थे प्रत्यये परे स्सिर्भवति । स्स इति कल्प लतिका । In the sauraseni the syllable *ssi* is used after roots in the future, according to kalpalatika *ssa* is used instead of *ssi* ; मौतु न but this auxilary is not used before *mi* धातोरकारत इकाराख, and *i* is also joined to the roots, as भविस्सिदि, करिस्सिदि इत्यादि ।

अवन्त्यां धातुतिङोर्मध्ये भविष्यद्विषये ज्ज, ज्जा, स्सा तां In the *abanti* jj or jjá is used between affixes and roots in the future, as होज्जइ, होज्जाइ, (भविष्यति) पैशाच्यां भविष्यति तेः 'एस्स' 'एव' In the Paisachi essa is substituted for the affix ti 3rd person singular in the future.

अपभ्रंशे भविष्यदर्थे विषयस्य त्यादेः आसो वा भवति, कल्पलतिकामते इस्स । In the apabhransa *ása* is optionally substituted for affixes in the future, according to kalpalatika *isa* is also substituted for them.

Aho ! Shrutgyanam

म. पु.(2nd per.)	होहिहि (भविष्यसि, इत्यादि)	होहित्था, होहिह (भविष्यथ (इत्यादि)
उ. पु. (1st per.)	होहिमि, होस्सामि, होस्सं, (भविष्यामि इत्यादि)	होहामो, होस्सामो इत्यादि (भविष्यामो इत्यादि)

कृ धातु रूपाणि।

प्र. पु. (3rd per.)	काहिइ (करिष्यति, कर्त्ता, अकरिष्यत्)	काहिंति (करिष्यन्ति कर्त्तारः अकरिष्यन्त)
म. पु. (2nd per.)	काहिसि, (करिष्यसि (इत्यादि) एवमन्यत्रापि ।	काहित्था, (करिष्यथ,) इत्यादि
उ. पु (1st per.)	काहं, काहिमि	काइमो

हस धातु रूपाणि ।

	Singular. एकवचनं	Plural. बहुवचनं
प्र. पु. (3rd per.)	हसिहिइ, (हसिष्यति इत्यादि	हसिहिन्ति, हसिष्यन्ति इत्यादि ।
म. पु. (2nd per.)	हसिहिसि, (हसिष्यसि, इत्यादि	हसिहित्था, (हसिष्यथ,) इत्यादि
उ. पु (1st per.)	हसिस्सं, इत्यादि हसिष्यामि इत्यादि	हसिस्सामो, हसिहामो (हसिष्यामः इत्यादि ।

एवं भण, पठादयः ।

Aho ! Shrutgyanam

(११) वच्यमाणधातवो भविष्यति विशेष नियमाननुसरन्ति। तेषामुत्तमपुरुषैकवचन रूपाण्य च लिख्यन्ते अन्यत्तु श्रुधातु वदवगन्तव्यानि ।

The following roots are specially conjugated in the future tense. Their 1st singular forms are given against them. In other persons, they are like *shru* which is conjugated below.

धातवः	उत्तम पुरुषैकवचन रूपाणि
कृ	काहं, काहिमि
दा	दाहं, दाहिमि
सं—गम	संगच्छं
रुद	रोच्छं
विद	वेच्छं
दृश	देच्छं
वच	वेच्छं
भिद	भेच्छं
बुध	भोच्छं
श्रु	सोच्छं, सोच्छिस्सं, सोच्छिमि इत्यादि
गम	गच्छं
मुच	मोच्छं
छिद	छेच्छं

श्रु धातु रूपाणि ।

	Singular. एकवचनं	Plural. बहुवचनं
प्र. पु (3rd per.)	सोच्छिइ,सोच्छिहिइ (श्रोष्यति) इत्यादि	सोच्छिन्ति, सोच्छिहिन्ति, (श्रोषन्ति इत्यादि)

Aho ! Shrutgyanam

म. पु. (2nd per.) { मोच्छिसि, मोच्छिहिसि (ओष्यसि इतयादि) । } { मोच्छिहत्था, इतयादि (ओष्यथ इतयादि) }

उ. पु. (1st per.) { मोच्छं, इतयादि (ओषयामि) इतयादि । } { मोच्छिमो, मोच्छिहिमो इतयादि (ओष्यामः इत्यादि) }

(१२) Potential mood (लोट, विधि-लिङ &c.)

Sing. (एकवचनं) Plu. बहुवचनं

प्रथम पुरुषस्य (3rd person)	(उ) (१)	(न्तु)
मध्यम पुरुषस्य (2nd person)	सु, हि (२)	ह
उत्तम पुरुषस्य (1st person)	मु	मो

विध्यादिषु धातु रूपाणि । The conjugation of the roots in potential mood.

हस धातुः ।

Singular. Plural.

एकवचनं बहुवचनं

प्र. पु. (3nd per.) { हसउ, (हसतु हसेत्) इतयादि } { हसन्तु, हसेन्तु, (हसेयुः) इतयादि }

---

(१) । शौरसेन्यांमनुज्ञायां उस्थाने 'दु' रादेशो भवति । In the sauraseni du is substituted for *u*.

(२) । अकारात् परस्य सोःस्थाने 'इज्जसु,' 'इज्जहि,' 'इज्जे,' इत्येत आदेशा भवन्ति After roots ending in *a*, *su* becomes optionally *ijjasu*, *ijjahi*, *ijje*, अकारात्मात् सुलोपश्च वा After roots ending in *a* the affix *su* is also optionally elided ; दण्डिमते एकाच एव हिः according to dandin he is used only after monosyllablic root.

Aho ! Shrutgyanam

म. पु. (2nd per.) { हससु, हसहि, हस, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, (हस, हसेः) इत्यादि } { हसह, (हसत, हसेत) इत्यादि

उ. पु. (1st per.) { हसमु, (हसानि, हसेयं) इत्यादि } { हसामो (हसाम, हसेम) इत्यादि

एवं पठादयः ; केषाञ्चिन्मते जिधातो र्विध्यादिषु वर्त्तमानवत् रूपाणि भवन्ति ।

According to some authorities in the potential mood the root ji is conjugated like in the present tense, as जअइ इत्यादि । (१) ।

(१३) वर्त्तमाने, भविष्यति, बिध्यादिषु चोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य ज्ज ज्जा, इत्येतावादेशौ वा भवतः । पक्षे यथाप्राप्तं ।

jja and jjá are optionally substituted for the affixes in the present and future tenses, and also in the potential mood ; there being an option the forms previously mentioned are also allowed. हेमचन्द्रमते स्वरान्तधातुना मेवायं विधिः, according to Hemchandra this rule applies only to the roots ending in vowel, *as* हसेज्ज, हसेज्जा (हसति, हसिष्यति, हसतु, हसेत् इत्यादि) (२) ।

१। शौरसेन्यां 'जि' धातो र्विध्यादिषु 'जेदु' इत्यादि रूपाणि भवन्ति। In the s'auraseni the root *ji* assumes the form of *jedu* &c. in the potential mood.

२। शौरसेन्यां नैषविधिः। This rule is not applied in the s'aurasení dialect.

Aho ! Shrutgyanam

(१४) वर्त्तमाने, भविष्यति, विध्यादिषु च धातुप्रत्यययोर्मध्येऽपि ज्ज ज्जा इत्यादेशौ वा भवतः ।

jja and jjá are also used between roots and affixes in the present and future tenses and also in the potential mood, as होज्जइ, होज्जाइ (भवति, भविष्यति, भवतु, भूयादित्यादि) ।

(१५) शतृ, शानच् इत्येतयोरेकैकस्य न्त माण इत्येतावादेशौ भवतः ।

Nta and máṇa are respectively substituted for the present participle *satri* and *sáṇach* (१) as पढन्तो, पढमाणो ; हसंतो हसमाणो (पठन्, हसन्) ;

(१६) स्त्रियां वर्त्तमानयोः शतृ शानचोरीकारादेशो भवति, न्ती, माणा च।

I is substituted for *sátṛi* and *sáṇach* when used in the feminine *nti* and *máṇá* are also substituted for them respectively.

(१७) वर्त्तमान, विधिलिङ्, शतृषु परतोऽकारस्य स्थाने एकारो वा भवति ।(२)

E is optionally substituted for the final *a* of a root in the present, and potential, and also in the present

---

१। अपभ्रंशे त्रि काले शतृ प्रत्ययः। In the apabhranśa the participle *satṛi* is used after a root in three tenses viz : the present, the past and the future, as भोन्तो-भवन् भविष्यन्: &c.

२। शौरसेन्यां धातुतिङोर्मध्ये वक्तव्यं एदातौस्थातां In the s'aurasení *e* or *á* is optionally inserted between the roots and affixes as, भणेदि भणादि ।

Aho ! Shrutgyanam

participle before *satri,* as **हसेइ, हसइ (हसति) ; हसेउ, हसउ (हसेत्) ; शतृ हसेंतो हसंतो, (हसन्) ; क्वचिन्नभवति** there are exeptions of this rule, as **जअइ (जयति) ; क्वचिदात्वमपि** in some instances *á* is also substituted for *a* as **सुणाउ (शृणोतु) ; (१)**

भाव कर्म्मणोः ।

Passive forms.

(१८) भाव कर्म्मविहितस्य यकः स्थाने इअ, इज्ज इत्येतावादेशौ भवतः ।

For *yak* (the suffix indicating passive form) *ia* and ijja are substituted, as **हसिअइ, हसिज्जइ, (हस्यते) ; दृशवचोस्तु भावकर्म्मणोर्यथासङ्ख्यं 'दीस' 'वुच्च' इतिरूपं भवति ।** The roots dṛis, and bach assume the forms *dísa* and *buchcha* respectively in the passive, as **दीसइ, (दृश्यते) ; वुच्चइ (उच्यते) ; (२)**

क्त्वादीनां कार्य्यविशेषः ।

(१९) क्त्वा, तुम, तव्य, भविष्यत्-काल-विहिते च प्रत्यये परे अत एत्वं इच्च भवति ।

---

१ । शौरसेन्यां यकः स्थाने इअ इत्यादेशो भवति । In the s'auraseni ia is substituted for *yak* (the affix of the passive). पैशाच्यान्तु 'इय्य' इत्यादेशः in the pais'áchi iyya is substituted for *yak.*

२ । According to prákṛitaprakás'a only *e* or *áb* is substituted for ṇich, and an a in the first syllable of the root becomes *á* ; प्राकृतप्रकाश मते णिचः स्थाने ए आवौ भवतः धातोरकारस्य चात्वं ।

Aho ! Shrutgyanam

When the affixes ktwá, tuman, and tabya follow, and also in the future *e* or *i* is substituted for the final a of root, as हसेउण हसिऊण (हसित्वा), हसेउं, हसिउं (हसितुं); हसेअव्वं, हसिअव्वं (हसितव्यं); इत्यादि।

क्त प्रत्यये परत अत इर्भवति। *I* is substituted for the final *a* when *kta* (the affix of the past participle) follows, as हसिअं (हसितं); पठिअं (पठितं);

णिजन्तानां।

(२०) णेः स्थाने अत्, एत्, आव, आवे इति चत्वार आदेशा भवन्ति। (१)

A, *e*, *ába*, or *ábe* is substituted for ṇich, the causal affix.

(२१) क्ते, भाव कर्म्मविहिते च प्रत्यये परतः णेर्लुक् अवीतगादेशश्च।

The causal affix Ṇich is optionally elided in the passive voice and also when the affix kta follows it; when elision does not occur, *abi* is substituted for it, as कारिअं, कराविअं (कारितं); हासिअं, हसाविअं (हसितं); शोसिअं, सोसविअं (शोषितं), तोसिअं, तोसविअं (तोषितं); कारीअइ, करावीअइ, कारिज्जइ कराविज्जइ (कार्य्यते) इत्यादि णिचि भमस्थाने विकल्पेन भमाडादेशः।

१। In the *abanti s'ru* &c. assume the forms of subba &c. in the passive. अवन्त्यां शृणोत्यादेः सुब्ब इत्यादिरूपं यथा सुव्वए (श्रूयते), भण्णए (भण्यते) गम्मए (गम्यते)

Aho ! Shrutgyanam

Bhamada is optionally substituted for *bhrama* before the affix ṇich as, भमाडइ, भमाडेइ, भामेइ, भमावइ (भ्रामयति)।

इति प्रथमः पादः ।

अथ पञ्चमोध्यायस्य ।

द्वितीयः पादः ।

(धात्वादेशविधिः)

साधारण नियमाः ।

General rules.

(१) व्यञ्जनान्ताद्धातोरन्ते 'अकारो' भवति ।

A is added to every sanskrit roots ending in consonants, as हसई, (हसति) इत्यादि ।

(२) अकारान्तान् वर्ज्जयित्वा स्वरान्ताद्धातोरन्तेऽकारागमो वा भवति ।

A is optionally added to roots ending in vowels, except those which have already *a* at their end, as पाइ, पाअइ, (पाति) ; इत्यादि ।

Aho ! Shrutgyanam

(३) चि, जि, ह्रु, श्रु, स्रु, लू, पू, धूना मन्ते णकारागमो भवति एषां दीर्घस्वरस्य ह्रस्वश्च ।

Ṇa is added at the end of the roots *chi, ji, hu, s'ru, sru, lú, pú* and *dhú* and the preceding long vowel is shortened, as चिणइ &c. च्यादीनां कर्म्मणि भावे च वर्त्तमानानामन्ते द्विरुक्तो वकारागमो वा भवति ।

In the कर्म्मवाच्य and भाववाच्य i e the true passive and the impersonal passive neuter of a verb vv is also optionally added to the root and the suffix यक (ज्ज) if applied to it is elided, as चिव्वइ, चिणिज्जइ (चीयते) इत्यादि ।

चिञ् हन खनां कर्म्मणि भावेचान्ते द्विरुक्तो मो वा भवति । यको लोपः। At the end of the roots *chi, han* and *khan* when in the (भावकर्म्म) passive voice *mm* is opptionally added, and the suffix *yak* (यक् ज्ज) is elided after it ; as चिम्मइ (चीयते), हम्मइ (हन्यते), इत्यादि (१)। हन्तेः कर्त्तर्य्यपि। This rule is also applied to the root *han* even when in the active voice.

(४) दुह, लिह, वह, रुधामन्त्यस्य भावकर्म्मणो द्विरुक्तो भो भवति । यक् लोपश्च ।

The final letter of the roots *duh, lih, bah* and, rudh when in the passive (भावकर्म्म), becomes *vv* and the suffix *yak* (यक्-ज्ज) is elided after it, as दुब्भइ, दुहिज्जइ (दुह्यते) इत्यादि ।

(५) गमादीना मन्त्यस्य भावकर्म्मणो द्वित्वं वा भवति । यक् लोपश्च।

---

(१) शौरसेन्यां नियम एष न वर्त्तते In the s'auraseni this rule is not applied.

Aho ! Shrutgyanam

The final letter of the roots *gama* &c. is optionally doubled in the passive voice (भावकर्म्मणोः), as गम्मइ, गमिज्जइ (गम्यते) ; हस्सइ, हसिज्जइ (हस्यते) ;

वक्ष्यमाणा धातवो भाव कर्म्मणोर्विशेष नियमाननुसरन्ति ।

To the following roots special rules are applied in the passive voice.

(roots.)	their forms in the passive voice.
धातवः	(भावकर्म्म रूपाणि)
दह	डज्झइ, डहिज्जइ (दह्यते)
वध	वंज्झइ वंधिज्जइ (वध्यते)
सं—रुध	संरुब्भइ, संरुधिज्जइ (संरुध्यते)
अनु—रुध	अणुरुब्भइ, अणुरुधिज्जइ (अनुरुध्यते)
उप—रुध	उवरुज्झइ, उवरुधिज्जइ (उपरुध्यते)
हृ	हीरइ (ह्रियते) ; हरिज्जइ
कृ	कीरइ करिज्जइ (क्रियते)
तृ	तीरइ तरिज्जइ (तीर्य्यते)
जृ	जीरइ, जरिज्जइ (जीर्य्यते) ;
अर्ज	विढप्पइ, विढविज्जइ अजिज्जइ (अर्ज्यते) ;
ज्ञा	णव्वइ णज्जइ, जाणिज्जइ, णाइज्जइ (ज्ञायते)
वि-आ-हृ	वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ (व्याह्रियते)
आ-रभ	आढप्पइ, आढवीअइ (आरभ्यते) ;

Aho ! Shrutgyanam

क्लेद — खिप्पइ (क्लिद्यते) ;

खिप — खिप्पइ (खिच्यते) ;

ग्रह — घेप्पइ गण्हिज्जइ (गृह्यते) ;

स्पृश — छिप्पइ

(६) धातोरन्त्यस्योवर्णस्यावादेशो भवति ।

Aba is substituted for the final *u* of a root, as ऋु-एहव, इत्यादि ।

(७) धातोरन्तस्य 'ऋ' वर्णस्यारादेशो भवति ।

Ara is substituted for the final ṛi of a root, as कृ-कर इत्यादि । वृषादीना मृकारस्यतु 'अरि' इत्यादेशो भवति । But *ari* is substituted for ṛi in the roots bṛisha &c. as वृष—वरिस, कृष-करिस इत्यादि ।

(८) धातोरिवर्णस्योवर्णस्य गुणो भवति ।

The final *i* and *u* of roots assume the forms of é and ó respectively, as नेइ (नयति), मोत्तुण (मुक्ता) ;

(९) रुषादीनां स्वरस्य दीर्घः ।

The short vowel of the roots *rush* &c. becomes long, as रूसइ, पूसइ (पुष्णाति), सीसइ (शिष्यति) ;

(१०) धातुषु स्वराणां स्थाने स्वरा बहुलं भवन्ति ।

The final vowels of sanskrit roots arbitarily change to new ones, use being our only guide in such cases.

(११) अग्रे-लिखिता धातवो विशेषनियम—वशात् रूपान्तरं प्राप्नुवन्ति ।

Aho ! Shrutgyanam

The following roots change their forms under special rules.

The original sanskrit roots	The Prakrit forms which the sanskrit roots optionally assume at the time of conjugation.
संस्कृत धातव:	(संस्कृत धातूनां प्राकृत रूपाणि)
कथ	वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, संघ, वोल्ल, चव, जंप, सीस, साह ; णिव्वर (दुःखार्थे)
जुगप्सा	झुण, दुगुच्छ, दुगुंछा
बुभुक्ष	णीर
ध्या	झा
गै	गा
ज्ञान	जाण, मुण ;
उत्–ध्मा	धुमा ;
श्रुत्–धा	सद्दह ;
पा (पाने)	पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट
उत–वा	ओरुम्मा, वसुआ
नी–द्रा	उहीर, उंघ
आ–घ्रा	आइग्घ (१)
खा	अवभुक्क
सम्–स्त्यै	खा

(१) शौरसेन्यां घ्रास्थाने जिंघ (in the s'auraseni *jinha* is substituted for *ghrá*.

Aho ! Shrutgyanam

स्था (१)	ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प
उत्-स्था	ठ, कुक्कुर
म्ला	वाप, वाय
निर्—मा	निम्माण, निम्मव
चि	निव्भर
छदि-णिच्	नुम, णुम, सन्नुम, ढक्क, पच्छाल
नि-वृ-णिच	णिव्होड, निवार
नि-पत-णिच	णिव्होड
दू-णिच	दूम,
धवल—णिच	दुम, धवल, (दूमस्य)
तुल-णिच	उद्दाम (वा)
वि-रिच-णिच	ओलुण्ड, उल्लण्ड, पल्हत्थ, विरेअ
मिश्र-णिच	वीसाल, मेलव ; (वा) ;
भ्रम-णिच	तालिअण्ट, तमाड, (वा) ;
तड-णिच	आह्होड, विह्होड (वा)
नश-णिच	विउड, नासव,, हारव, विप्पगाल, पलाव ;

(१) अपभ्रंशे स्था स्थाने ठक्कश्च in the apabhrans'a thakka is also substituted, for stha. शौरसेन्यां स्था स्थाने केवलं चिट्ठ उदः परस्य तु उत्थ in the sauraseni only *chitta* is substituted for sthá but when the profix *ut* is joined to it the substitute is *uttha*. शाकारी भाषायां स्था स्थाने चिष्ट इत्यपि, in the sákari-dialect chista is also substituted for stha.

Aho ! Shrutgyanam

दृश-णिच	दाव, दंस, दक्खव, दरिस ;
उत्-घट-णिच	उग्ग, उग्घाड
स्पृह-णिच	सिह
सं-भू-णिच	आसंघ, (वा)
उत्-नम-णिच	उत्थघ, उल्लाल, गुलुगंच्छ उप्पेल, उन्नाव ;
प्र-स्था-णिच	पट्ठव, पेण्डव, पट्ठाव ;
वि-ज्ञा-णिच	वोक्क, आवुक्क, विण्णव
अर्प-णिच	अल्लिव, चच्चुप्प पणाम, अप्प ;
या-णिच	जव, जाव ;
प्लु-णिच	उम्बाल, पव्वाल, पाव ;
विक्रोश-णिच	पक्खोड (वा)
रोमन्थ-णिच	उग्गाल, वग्गोल, रोमंथ
काम-णिच	णिहुव
प्रकाश-णिच	णुव्व, पआस ;
कम्प-णिच	विच्छोल (वा)
आ-रुह-णिच	वल, रोव ;
दोल-णिच	रंखोल, ढोल ;
रञ्ज-णिच	राव (वा)
घट-णिच	परिवाड (वा)
वेष्ट-णिच	परि-आल

Aho ! Shrutgyanam

क्री	किण (१)
वि-क्री	क्के क्किण
भी	भा, बीह ;
आ-ली	अल्ली
नि-ली	णिली, अणि, लुक्क, णिरिग्घ, लिक्क लिह्क्क, निलिक्ज
वि-ली	विरा, (वा)
रु	रुंज, रुंट, रव
श्रु	हण, सुण
धु	धूव, धुण
भू (२)	हुव, हो, हव, भव, (वकारेत् वर्ज्जे प्रत्यये) हु इत्यादेशः, (पृथग्भूत स्पष्टार्थयोः) णिव्वड इत्यादेशः, (प्रपूर्व्वकस्यतु भूधातोः) हुप्प इत्यादेशः, (क्त प्रत्यये परे) 'हु' इत्यादेशो वा

(१) अपभ्रंशे क्री धातोः 'कीसु' इति रूपं भवति in the *apabhransa kísu* is substituted fo *kṛí.*

(२) अपभ्रंशे पर्य्याप्तार्थे भुवोहुच्च इत्यादेशो भवति। In the apabhransa *huchch* is substituted for bhú when it is used in the sense of planty (पर्य्याप्त)।

शौरसेन्यां भूधातोः स्थाने 'भो' चो'स्य लुटयपोर्भव इति as, भविस्सदि, भविय क्ते भू in the s'auraseni 'bho' as well as *'ho'* are optionally substituted for *bhu,* but bhava is substituted for it in the future and before the suffix yap (ktwá) and when the suffix kta is joined to it bhú is substituted.

Aho ! Shrutgyanam

कृ (१)	कुण, कर, (काणेच्छितार्थे) णिआर, (निष्टम्भविषये) णिट्ठुह, (अवष्टम्भ विषये) संदाण, (श्रमविषये) वम्फ, (क्रोधेनोष्ठमालिन्यकरणार्थे) णिव्वोल, (शैथिल्य लम्बन करणार्थे) पयल्ल, पदल्ल, (निष्पाताच्छोटनार्थे) णीलुञ्छ, (क्षौरकरणार्थे) कम्म, (चाटु करणार्थे) गुलल।
स्मृ (२)	कर, कूर, भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह, सर, (विपूर्वकस्य स्मरतेः) पम्हुस, विम्हर, वीसर।
वि—आ—हृ	कोक्क, पोक्क, वाहर।
मुच	छड्ड, अवहेड, मेल्ल, रेअव, णिलुञ्छ, धंसाड, मुञ्च ; (दुःखमोचनार्थे) णिव्वल।
वञ्च	वेहव, वेलव, जूरव, उमच्छ ;
रच	रगाह, अवह, विडविड्ड
सम्—आ—रच	उवहत्थ, सारव, समारव, केलाय।
सिच	सिञ्च, सिम्प, सेअ,

---

(१) शौरसेन्यां कृञोःस्थाने केवलं कर इति आदेशः। क्त्वायपोः क इति, तथा क्त्वायपोः स्थाने दुअ इति च। तुम तव्ययोः का इति in the s'auraseni only kara is substituted for kriṉ and before ktwá and *yap ka* substitutited for it and ktwa and yap themselves are replaced by *duya*. Before the affixes *tum* and tabya the substitute is *ká*·

(२) शौरसेन्यां स्मृस्थाने सुमर इत्यादेशो भवति in the sauraseni *sumara* is substituted for *smri*.

प्रच्छ	पुच्छ
गर्ज्ज	बुक्क, (वृषगर्ज्जने) ढिक्क ;
राज	रग्ध, छज्ज, सह, रीर, रेह (१)
प्र—सृ	पयल्ल, उव्वेल्ल, (गन्ध प्रसारे) महमह ।
नि—सृ	नीहर, नील, धाड, वरहाड, नीसर
जागृ	जग्ग, जगार ;
वि—आ—पृ	आअड्ड, वावार ;
सं—वृ	साहार, साहट्ट ;
आ—दृ	सन्नाम, आदर ;
प्र—हृ	सार, पहर ;
अव—तृ	ओह, ओरस, उत्तर ;
शक	चय, तर, तीर, पार; सक्क ;
त्यज	चय ;
त्वर	तर ;
पृ—णिच	पार
फक्क	थक्क
श्लाघ	सलह
खच	वेअड, खच ;
पच	सोल्ल, पउल, पच्च ;

(१) In the s'auraseni *ráa* is substituted for *raj* शौरसेन्यां राजस्य राअ इति रूपं ।

Aho ! Shrutgyanam

मस्ज (१)	आउड्ड, णिउड्ड, वुड्ड ; खुप्प ;
पुंज	आरोल, वमाट, पुंज ;
लज्ज	जीह, लज्ज ;
उत्—विज	उव्विव
तिज	ओसक्क ;
मृज (२)	उगघुस, लुञ्छ , पुञ्छ, पुंस, फुस, पुस, लुह, कुल ;
भंज	वेमअ, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पविरंज, करञ्ज, नीरंज
व्रज (३)	वच्च,
अनु—व्रज	परिअण, अणु वच्च ;
अर्ज्ज	विढव, अज्ज ;
युज	जुंज, जज्ज, जुप्प ;
भुज	भुंज, जिम, जेम, कम्म, अण्ह, समाण, चमड, वड्ड (उपपूर्व्वकस्य भुजधातोः । कम्मव इत्यादेशो।
घट	गढ, घढ ;
सं—घट	संगल, संघट्ट

---

(१) शौरसेन्यां मस्जधातोः स्थाने वुड्ड मज्जौ भवतः in the s'aurasení *budda* and *majja* are substituted for *masj*.

(२) शौरसेन्यां मृजस्थाने घस इत्यादेशो भवति in the s'aurasení *ghasa* is substituted for *mrija*.

(३) मागध्यां व्रजधातुस्थाने वञ्ज इत्यादेशो भवति, in the mágadhi baṉja is substituted for *braja*.

Aho ! Shrutgyanam

स्फुट	फुट्ट, फुंड,
स्फुट (हास्ये)	मुर।
मण्ड	चिंच, चिंचग्र, चिंचिग्र, रीड, विडिग्र;
तुड	तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उखुड, उल्लुक्क, णिलुक्क, लुक्क, उल्लूर
घूर्ण	घुल, घोल, घुम्म, पहल्ल (१)
नृत	नच्च ;
वि-वृत	ढंस, विवट्ट
नृत	नच्च ;
क्वथ	अट्ट, कढ ;
ग्रन्थ	गण्ठ
मंथ	विरोल, घुसल ;
ह्लाद	अत्र अच्छ, (ण्यन्तस्याप्यस्यैवं रूपं)
नि—सद	णुमज्ज
छिद	दुहाव, णिच्छल्ल, णिज्झोर, णिव्वर, णिल्लूर, लूर, छिंद ; (आपूर्व्वकस्य छिदेः) उग्रोद, उद्दाल इत्यादेशौ
विद	विज्ज ;
मृद	मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड ;

(१) In the s'aurasení only *ghumma* is substituted for *ghurṇa* (शौरसेन्यां केवलं घुम्म इति ।

Aho ! Shrutgyanam

स्पन्द	चुलुचुल, फंद
पद	पज्ज
नि-पद	निव्वल, निप्पज्ज ;
वि-सं-वद	विअट्ट, विलोट्ट, फंस; विसंवअ ;
रुद	रुव, रोव ;
शद	झड, पक्खोड
आ-क्रन्द	णीहर, अक्कन्द ;
खिद	जूर, विसूर, खिज्ज,
स्विद	सिज्ज
रुध	रुञ्छुण्ड, रुम्भ, रुज्झ
नि-षिध	हक्क, निसेह ;
क्रुध	जूर, कुज्झ ;
जन	जाअ, जम्म ;
तन	तड, तड्ड, तड्डव, विरल्ल
तृप	थिप्प,
उप—सृप	अल्लिय, उवसप्प ;
सं-तप	झंख ;
वि-आप	ओअग्ग, वाव
सम्-आप	समाण, समाव
क्षिप	गलत्थ, अड्डक्ख, छोल्ल, पेल्ल, णोल्ल, छुह, हुल, पर, घत्त, णुल, खिव

उत्-क्षिप	गुलुगुञ्छ, उत्थंघ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क हक्खुव, उक्खिव ; (आपूर्वस्य क्षिपतेः) णीरव, अक्खिव
स्वप	कमवस, लिस, लोट्ट, सुअ ;
वेप	आअम्व, आअज्झ ;
वि-लप	झंख, वडवड, विलव
लिंप	लिंप
गुप	विड, णड, गुप्प
क्रपांकरोति	अवहावेइ
प्र-दीप	तेअव, संदुम, संधुक्क, अब्भुत्त ;
लुभ	संभाव, लुब्भ ;
क्षुभ	खउर, पड्डुह ;
आ-रभ	आरंभ, आढव, आरभ ;
उप-आ-लभ	झंख, पच्चार, वेलव ; उवालभ ;
अव-जृंभ	जंभा, जंभाअइ
नम	णव ;

नम (भाराक्रान्ते कर्त्तरि) णिसुढ, नव ;

वि-श्रम	णिव्वा, वीसम
आ-क्रम	ओहाव उत्थार, छुंद, अक्कम ;
भ्रम	टिरिटिल्ल, ढुंढुल्ल, ढंढल्ल, चक्कम्म, भम्माड, भमड, भमाड, तलअंट, झंट, झंप, भुम, गुम, फुम, फुस, ढुम, ढुस, परी, भम ;

Aho ! Shrutgyanam

गम (१)	अइ, अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस, उक्कुस, अक्कस, पच्चड्ड, पच्छंद, णिम्मह, णी, णीण, णीलुक्क, पदअ, रंभ, परिअल्ल, वोल, परिअल, णिरिणास, णिवह, अवसेह, अवहर, गच्छ ; (आपूर्व्वस्यगमेः स्थाने अहिपच्चुअ इत्यादेशो भवति वा पक्षे आगच्छ) ।
इम्म (गतौ)	इम्म
सं-गम	अब्भिर, संगच्छ
अभि-आ-गम	उम्मत्थ
प्रति-आ-गम	पलोट्ट, पच्चागच्छ ;
शम	परिसाम, पडिसा, सम
रम	संखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिकिंच, कुट्टुम, मोट्टाअ, णीसर, वेल्ल, रम ;
पूर	अग्घा, अग्घव, उद्धुम, अंगुम, अहिरेम, पूर
त्वर	तुवर, जअड, तूर, (क्तादौ) तुर इत्यपि ;
क्षर	खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिव्वल, णिट्टुअ
चल	चल्ल, चल ;

(१) शौरसेन्यां क्त्वायपो र्गमेःस्थाने ग इति क्त्वायपो डूयस्, in the s'aurasení *ga* is substituted for *gam* before the affixes *ktwá* and *yap* and the affixes themselves too assume the form of dúya, मागध्यां गमेःस्थाने 'गश्च' in the ma'gadhi gas'cha is substituted for *gam*.

Aho ! Shrutgyanam

उत्-कल	उत्थल,
वि-गल	थिप्प, णिट्टुह
दल	विसट्ट, दल ;
मील	मिल्ल, मील ;
वल	वम्फ, वल ;
भ्रंश	फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल, भस ।
नश	णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह अवहर, नस्स ।
अव क्रोश	ओवास ।
सं-दिश	अप्पाह :
दृश (१)	निअच्छ, पिच्छ, अवअच्छ, अकअख्ख, वजज, सच्चव, देक्ख, उअक्ख, अवक्ख, अवअक्ख, पुलअ, निअ, अवआस ।
स्पृश	फास, फंस, फरिस, छिव, छिह, आलंख आलिह ;
प्र-विश	परिअ, पविस ; (२)
प्र-मृशमुषोः	पम्हुस ;
पिष	णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोंच चड्ड, पीस ।

(१) शौरसेन्यां दृशेः पेच्छ, *pechch*, is substituted for dṛis in the s'auraseni, अपभ्रंशे दृश प्रस्स, in the *apabhransa* prassa is substituted for *dṛis*, कल्पलतिकामते देक्खश्च, according to kalpalatika dekkha is also substituted for it.

(२) In the apabhrans'a *paisaba* is substituted for pra-*bis* अपभ्रंशे प्रपूर्वकस्यविशतेः पइसव इत्यादेशो भवति ।

Aho ! Shrutgyanam

भाष	भुक्क, भस ।
कष	कट्ट, साअट्ट, अञ्च, अणच्छ, अअच्छ, आइंच्छ, करिस ; (असिकर्षणार्थे) अरकोड
गवेष	ढुढुल्ल, ढंढोल, गमेस, घत्त, गवेस ।
श्लेष	सामग्ग, अवआस, परिअंत, सिलेस ;
मृत्त	चोप्पड, मरक
कांच	आह, आहिलंघ, आहिलंख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुंप, कंख
प्रति-ईत्त	सामाय, विहीर, विरमाल, पडिख
तत्त	तच्छ, चच्छ, रम्प, तस्क, रम्फ ;
वि-कस	कोआस, वोसढ्ढ, विअस ;
हस	गुंज, हस
स्रंस	ल्हस, डिंभ, संस ;
त्रस	डर, वोज्ज, वज्ज ;
नि-अस	णिम, णुम ;
परि—अस्	पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्हत्थ ।
नि-श्वस	झख, नीसस ;
उत्-लस	ऊसल, ऊसुम्भ, णिल्लस, पुलआअ, गुंजल्ल, आरोअ ;
भास	भिस, भास ;
ग्रस	घिस, गस ;
अव-गाह	ओवाह, ओगाह ;
आरुह	चड, वलग्ग, आरुह ;
मुह	गुम्म, गुम्मड, मुज्झ ;

Aho ! Shrutgyanam

दृह	अहिऊल, आलुंख, डह ;
ग्रह (१)	वल, गेण्ह, हर, पंग, णिरुवार, अहिपचुअ; क्ता, तुम, तव्येषु ग्रहस्थाने घेत् इत्यादेशो भवति ।
वच (२)	(क्ता, तुम, तव्येषु) वोत्

क्ता, तुम, तव्येषु परतः रुद, भुज, मुचामन्त्यवर्णस्य तो भवति । Before the affixes *ktwá tum* and tavya final consonants of the roots *rud, bhuj* and mucha becomes *t*.

कृञःस्थाने भूतभविष्यतोः क्ता, तुम, तव्येषु च परतः का इत्यादेशो भवति । The root kriṇ becomes ká in past and future tenses and before the affixes *ktwá, tum* and *tavya.*

दृष	दुच्छ (३)	क्रुध	कुह्य,
यम	जच्छ,	सिध	सिह्य,
श्रम	अच्छ,	सद	सड,
छिद	छिंद,	पत	पड,
भिद	भिंद,	वृध	वढ,
युध	जुह्य,	वेष्ट	वेड,
बुध	बुह्य,	सं—वेष्ट	संवेल्ल,
गृध	गिह्य,	उत्—वेष्ट	उव्वे , उव्वेढ,

(१) शौरसेन्यां ग्रहधातोः 'गेह्न' इतिरूपं भवति । कस्यचिन्मते क्त तव्ययोः 'गे' इति । in the s'aurasení genha is substituted for *graha* but according to some (*ge*) is substituted for it before the affixes *kta* and tabya. भावकर्म्मणोः गेज्झ, घेप्पौ *gejja* and gheppa are substituted for graha in the passive (भावकर्म्मणोः), अपभ्रंशे ग्रहस्थाने गृह्ण इत्यादेशो भवति, in the *apabhrans'a gṛihna* is substituted for *grah.*

(२) शौरसेन्यां ब्रुवचोःस्थाने वच्च इति, in the s'auraaení *bachcha* is substituted for the roots *bru* and *bacha* in all affixes.

(३) शौरसेन्यां इच्छतेः पुच्छ, in the s'aurasení *puchh* is substituted for *isha.*

Aho ! Shrutgyanam

खाद् धावोरन्त्यस्य लुग्भवति। The final letter of the roots *khád* and *dhav* are optionally elided, as खाइ, खाअइ (खादति) ; धाइ, धाअइ (धावति) ;

सृजधातो रन्त्यस्य रोभवति।

R is substituted for the final letter of the root srija, as, सिरइ (सृजति) ;

शकादीना मन्त्यस्य द्वित्वं भवति।

The final letter of the roots *s'ak* &c, is doubled, as सक्क, लग्ग, कुप्प, नस्स &c.

अफुण्णादयः शब्दाः आक्रमि प्रभृतीनां
धातूनां स्थाने क्तेन सह निपात्यन्ते।

Aphuṇṇa &c. are used for ákrami &c. with the affix kta, as अफुण्णो (आक्रान्तः) ; उक्कोसं (उत्कृष्टं) ; फुडं (स्पष्टं) ; वोलीणो (अतिक्रान्तः); वोसट्टो (विकसितः); लुग्गो (रुग्णः) ; विल्हक्को (नष्टः) ; पम्हट्टो (प्रमृष्टः) ; विढत्तं (अर्ज्जितं) ; छित्तं (स्पृष्टं) ; जढं (त्यक्तं) , झासिअं (चिप्तं) ; निम्छुढं (उद्धृत्तं) ; चक्खिअं (आस्वादितं) ; निमिअं (स्थापितं) इत्यादि।

Roots which have special forms in the *s'auraseni.*

सं धातुः	प्रां रूपं
चर्व्व	चव्य,
मृज	पुस,
क्षप	छिर, छिप्प ;
तुद	तुक्ख,

Aho ! Shrutgyanam

ऊ	ऊण,
स्तु	थुण
दा	दे, (भविष्यति) दइ, (कतव्ययोः) दा

Pachadi &c. are used for *pachayati* &c. शिष्ट प्रयोगमाद रणीयं। In these cases old authorities are our only guides.

पाचयत्यादीनां 'पचदि' इत्यादयो निपात्यन्ते।

In the *apnbhrans'a* (अपभ्रंशे) ब्रु स्थाने व्वुव इत्यादेशो भवति in the *apabhrans'a bbuba* is substituted for *bru.*

अपभ्रंशे चिप्तादीनां स्थाने कोल्ल इत्यादय आदेशा भवन्ति। In the *apabhrans'a,* chilla &c. are substituted for *kship-ta* &c.

अपभ्रंशे आपूर्व्वं चत्त स्थाने अक्ख इत्यादेशो भवति। In the *apabhrans'a akkh* is substituted for *áchaksha.*

अपभ्रंशे वद्स्थाने वोल्ल इत्यादेशो भवति । In the apabhansa bolla is substituted for vada.

सम्पूर्णम्।

THE END.

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

NOTICE.

This book is available only in the Sanskrit Book Depôt, Lahore.

ग्रन्थकारकृत अपर पुस्तकों का नाम

संस्कृत श्रुतबोध मूल्य २ आने (ग्रन्थकार समीप में प्राप्य)

कवितावली मूल्य ४ आने (कलिकाता गिरिश विद्यारत्न यन्त्र में प्राप्य)

विद्योदय संस्कृत मासिक पत्र मूल्य वार्षिक २ रूपै
(ग्रन्थकार समीपे भाटपाड़ाग्राम में प्राप्य)

হিন্দী ব্যাকরণ বাঙ্গালিদিগের মূল্য ।।০ কলিকাতা কানিঙ্গ
হিন্দী শিক্ষা করিবার অতি সহজ উপায় লাইব্রারিতে প্রাপ্য।

दत्तक चन्द्रिका मूल्य ८ आने (लाहोर संस्कृत
(हिन्दी अनुवादसहिता) पुस्तकालय में प्राप्य)

तर्कामृत मूल्य १२ आने (लाहोर संस्कृत
(हिन्दी अनुवाद सहित) पुस्तकालय में प्राप्य)

Aho ! Shrutgyanam